श्री फार्बस गुजराती सभा ग्रंथावलि, अंक ५.

दशाह मार्कस् ओरेलियस एन्टोनिनसना विचारो.

(मि० ज्योर्ज लोन्ग एम्. ए. ना करेला इंग्रेजी भाषान्तर उपरथी.)

गुजराती भाषान्तरकर्त्ता

श्री ईडरनरेश

सद्गत श्रीमन्महाराजा सर श्रीकेसरीसिंहजी

महाराजाधिराज बहादुर सी. आइ. इ., के. सी. एस. आइ.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्री फार्बस गुजराती सभा—मुंबई

मुख्य एजंट—

एन्. एम्. त्रिपाठी एन्ड कंपनी.

प्रिन्सेस स्ट्रीट, मुंबई.

प्रथम आवृत्ति.

वि. सं. १९७८ सने १९२२.

मूल्य रु. २

श्री फार्बस गुजराती सभानां साहित्यकार्यो.

प्रसिद्ध—

(१) **रासमाळा–१–२** (भाषान्तर) दि. ब. रणछोडभाई उदयराम दवे. **आवृत्ति १ ली, सचित्र**; मळवानुं ठेकाणुंः–मेसर्स एन. एम्. त्रिपाठीनी कुं. प्रीन्सेसस्ट्रीट मुंबाई.

(२) **फार्बस जीवनचरित**–रा. रा. मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठी.

(३) **मॅटर लींकना केटलाक निबंधो**–(भाषान्तर). रा. रा. धनसुखलाल कृष्णलाल महेता.

(४) **वैष्णव धर्मनो संक्षिप्त इतिहास**–शास्त्री दुर्गाशंकर केवळराम.

(५) **मार्कस ओरेलियस एन्टोनिनसना सुविचारो**–ईडरना महाराजश्री केसरीसिंहजी.

मुद्रालयमां—

(१) **रासमाळा–१–२** (भाषान्तर) सचित्र–तृतीय आवृत्ति–दि. ब. रणछोडभाई उदयराम दवे.

(२) **देह, जीव ने आत्मानी वैज्ञानिक मीमांसा** (भाषान्तर)–रा. रा. प्रेमशंकर नारणजी दवे.

(३) **श्री फार्बस गुजराती सभानां हस्तलिखित पुस्तकोनी सविस्तर नामावलि**–रा. रा. अंबालाल बुलाखीराम जानी, बी. ए.

(४) **काठीयावाडनुं कंठस्थ साहित्य**–(प्राचीन संग्रह) रा. रा. हरगोविन्द प्रेमशंकर.

तैयार थतां—

(१) **लोर्ड मो[illegible]**–(भाषान्तर) रा. रा. महादेव हरिभाई देसाई, बी. ए. एलएल. बी.

(२) **बौद्ध अने जैन मतना संक्षिप्त इतिहासादि** (नवो निबंध)–रा. रा. मोहनलाल दलीचंद देसाई, बी. ए. एलएल बी.

(३) **केशवकृत भागवत दशमस्कंध** (प्राचीन)–रा. रा. अंबालाल बुलाखीराम जानी, बी. ए.

(४) रा. रा. नरसिंहराव भोळानाथ दिवेटीआनां "फाइलोलोजीकल लेक्चर्स" –गुजराती भाषा अने साहित्यनां भाषणोनुं भाषान्तर–रा. रा. रामप्रसाद प्रेमशंकर बक्षी, बी. ए.

(५) शैव मतनो संक्षिप्त इतिहास, गुजरातमां तन्मूलक संप्रदायो अने सिद्धान्तो–रा. रा. दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री.

(६) रुस्तम वहादूरनो पवाडो–(प्राचीन)–रा. रा. अंबालाल बुलाखीराम जानी, बी. ए.



મહારાવ શ્રી કેશરીસિંહજી સાહેબ

સંસ્થાન ઈડર

જન્મ-સંવત ૧૯૧૭ જેઠ સુદ ૨ અવસાન-સંવત ૧૯૫૭ ફાગણ સુદ ૨

श्री फार्बस गुजराती सभा ग्रंथावलि, अंक ५.

बादशाह मार्कस् ओरेलियस एन्टोनिनसना विचारो.

(मि० ज्योर्ज लोन्ग एम्. ए. ना करेला इंग्रेजी भाषान्तर उपरथी)

गुजरातीभाषान्तरकर्त्ता

श्रीईडरनरेश

सद्गत श्रीमन्महाराजा सर श्रीकेसरीसिंहजी

महाराजासाहेब बहादुर सी. आइ. इ., के. सी. एस्. आइ.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्री फार्बस गुजराती सभा–मुंबई.

प्रथम आवृत्ति.

वि. सं. १९७७ सने १९२१.

मूल्य रु. २

Published by Uttamalal Keshavlal Trivedi, B. A. LL. B.
High Court Pleader; Hon. Secretary Forbes Gujarati
Sabha, Morarji Gokuldas Buildings No. 5
Khetwadi Main Road, Bombay.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the
Nirnaya-Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

प्रस्तावना.

इंग्रेजी भाषामां एकसो पुस्तको विद्वानोए अमर ग्रन्थो एटले हमेशने माटे उपयोगी तरीके गणेला छे. ते सर्वनी नामावलिने मथाळे आ रोमन बादशाह "मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसना विचारो"ना पुस्तकनुं नाम विराजे छे. ए उपरथी ज तेना भाषान्तरनी पण उपयोगिता स्पष्ट रीते सिद्ध थाय छे. आ पुस्तकमां रोमना सुप्रसिद्ध तत्वनिष्ठ अने कर्मयोगी बादशाह मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसना विचारो छे. मूळ पुस्तक रोमन भाषा(ल्याटिन्)मां छे; अने तेनुं विद्वत्ताभरेलुं भाषान्तर इंग्रेजीमां करवानुं मान मी. ज्योर्ज लोंग एम्. ए. ने घटे छे. एनुं एक बीजुं भाषान्तर पण मारा जोवामां आवेलुं छे पण ते मी. लोंगना भाषान्तर जेवुं शुद्ध अने सुश्लिष्ट नथी.

मी. लोंगकृत इंग्रेजी भाषान्तर कैलासवासी श्रीईडरनरेश, नेक नामदार सर श्रीकेसरीसिंहजी महाराजा साहेब बहादूरना हाथमां विदेहमुक्त, साक्षरोत्तम, तत्त्वविद्वरिष्ठ श्रीयुत् मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठी द्वारा आव्युं. तेनुं मनन करतां महाराजा साहेबने एनुं गुजरातीमां भाषान्तर करी प्रसिद्ध करवानी घणी प्रबल इच्छा थई. तेओश्रीए प्रथम बीजां बे इंग्रेजी पुस्तकोनां भावार्थ-भाषान्तर करी प्रसिद्ध करेलां हतां. पण तेओश्रीने अक्षरशः भाषान्तर उपर घणो प्रेम हतो तेथी महाराजाश्रीए आ पुस्तक(Thoughts of Emperor Markus A. Antoninus)नुं भाषान्तर पण अक्षरशः करवानो संकल्प कर्यो. तेनी पूर्व सामग्री तरीके " टेलिमेकसनां साहसिक पराक्रमो"नुं मारुं करेलुं भाषान्तर अने मूळ इंग्रेजी पुस्तक तेओश्रीए अभ्यासदृष्टिथी वारंवार अवलोक्यां; अने पछी पोते पण आ प्रस्तुत पुस्तकनुं भाषान्तर अक्षरशः करवा मांड्युं. आ "मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसना विचारो"ना पुस्तकनुं भाषान्तर करवुं ए अधिक कठिन छे; कारण के आमां तत्वज्ञाननी चर्चा छे. मूळे इंग्रेजी भाषांतरकर्त्ताने पण भाषान्तर करवामां घणो श्रम पडेलो छे, ते छतां पण तेने केटलेक ठेकाणे मूळ ल्याटिन् ग्रंथमांनी अशुद्धिने अथवा संदिग्धताने जेवी ने तेवी राखवी पडी छे. आवुं कठीन कार्य पण महाराजाश्रीए समग्र राज्यकारभारना अध्यक्ष तरीके पोतानुं कर्त्तव्य बजावतां छतां पण पोताना कैलासवास पहेलां थोडाक समय उपर पार पाडी राख्युं हतुं. फक्त फुटनोटो(पृष्ठने अंते आपेली टिप्पणी)ना अक्षरो घणा ज झीणा होवाथी आंख्यो खेंचवी पडे, तेथी ज तेनुं भाषान्तर करवुं बाकी राख्युं

हतुं. ते टिप्पणीओ मोटे अक्षरे लखी आपवा तेओश्रीए मने आज्ञा करी हती. ते अरसामां ज महाराजश्रीनुं कैलासगमन थयुं; अने महाराजश्रीना हाथे ते टिप्पणीओनी बाबतमां ज मात्र आ भाषान्तर अधुरुं रह्युं.

महाराजश्रीए श्रीयुत् मनःसुखरामभाईनी सलाहथी मूळ इंग्रेजी भाषान्तरकर्त्तानी अनुमति आ गुजराती भाषान्तर करी प्रसिद्ध करवा मंगावी राखी हती. तेथी श्रीयुत् मनःसुखरामभाईए आ भाषान्तर छपावी प्रकट करवा माटे प्रयास करवानो निश्चय मारी आगळ जणाव्यो. ते विषे तेओए सर्व दिशामां प्रयत्न करी जोया, पण जो “ श्री फार्बस् गुजराती सभा–मुंबाई ” ए आ बाबत हाथ उपर न धरी होत, तो आ गुजराती भाषान्तर कदि पण प्रसिद्ध थवा पामत नहि. तेटला माटे जनसमाज आ पुस्तकनी प्रसिद्धि माटे एओ उभयनो आभारी छे.

श्रीयुत् मनःसुखरामभाईए पुस्तक प्रसिद्ध करवानुं तथा टिप्पणीओनां भाषान्तर अने संस्कृत ग्रन्थोमांथी समानार्थ वचनो पण तेमां दाखल करवानुं कार्य मने महाराजा साहेबना सहवासी अने सेवक तरीके सोंप्युं. ते सघळुं काम करवामां मारा अति व्यवसायी जीवनने लीधे घणां वर्षो वीती गयां छे; छतां पण आ पुस्तक आखरे बहार पडे छे–ते जोवानो अवसर मारे अने जनसमाजने आव्यो छे, ते माटे सर्वशक्तिमान् परमेश्वरनो अकथ्य आभार मान्या विना हुं रही शकतो नथी.

महाराजाश्रीनो विचार मर्हुम शाहनशाहबानु श्रीमती विक्टोरिया महाराणीने आ भाषान्तर अर्पण करवानो हतो. पण ते पछी ते भलां चक्रवर्त्तिनी पण यशःशरीरशेष थयां. त्यार पछी थोडा ज समयमां आ भाषान्तरना कर्त्ता राजर्षिनो पण कैलासवास थयो. आ भाषान्तर छापवानुं काम चालतुं हतुं, ते दरम्यान छपावी बहार पाडवाना कार्यने उपस्थित करी, ते पार पाडवामां मुख्य सहाय्यक तत्त्वविद्वर्य श्रीयुत् मनःसुखरामभाई पण विदेहकैवल्य पाम्या. तो पण आ भाषान्तरनी प्रसिद्धिथी उक्त महानुभाव व्यक्तियोना आत्माओ तृप्ति पामो एवी श्रद्धामयी सद्भावना अत्रे अस्थाने गणाशे नहि.

Stoic Philosophy = विरक्त तत्त्वज्ञानना सिद्धान्तो अने आपणा विविध संप्रदायोना वेदान्तविचारोनो मुकाबलो वगेरे करी विद्वत्ता दर्शाववानो एक सारो लाग छे. तो पण तेवो कोई लोभ न करतां रोमन् बादशाहना तात्त्विक विचारोनुं एक राजर्षिए करेलुं आ भाषान्तर गुजराती वाचकवर्ग आगळ धरवानुं मारुं मुख्य कर्त्तव्य ज बजावीने हुं संतोष मानवो वधारे योग्य धारुं छुं. परन्तु Stoicism(विरक्त संप्रदाय)ना सिद्धान्तोनो उपयोग

रोमन बादशाह मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसे जनसंगथी विमुख थवामां नहि पण जनसमाजनी सेवा बजाववाने समर्थ थवामां अने निष्काम कर्मयोग सेववामां ज करेलो छे–एटलुं तो अत्रे कह्या विना चाले तेम नथी.

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ॥
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

इत्यादि श्रीमद्‌भगवद्गीताना भावोनी छाया ते रोमन बादशाहना विचारोमां वारंवार प्रतीत थती जणाय छे.

गुर्जर भाषान्तर विषे विद्वान् जनसमाज जे अभिप्राय बांधे ते खरो. परन्तु कैलासवासी भाषान्तरकर्त्ता राजर्षिना परिश्रमने न्याय आपवानी खातर मारे अत्रे जणाववुं जोईए के—आ भाषान्तर अंग्रेजी भाषान्तरनो भाव स्पष्ट जणावे छे, एटलुं ज नहि पण अंग्रेजी भाषान्तरनो भाव ज्यां संदिग्ध छे त्यां ते ज संदिग्धता कायम राखी वाचकनी अर्थोद्घाटनशक्तिने माटे कसरतनुं क्षेत्र खुल्लुं राखे छे.

सद्गत प्रसिद्ध गुर्जर साक्षरश्री छोटालाल सेवकराम (श्रीकच्छ नरेशना अमात्य)–एमणे पण "मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसना विचारो"ना एक बीजा इंग्रेजी भाषान्तरनुं गुजराती भाषान्तर करवा मांड्युं हतुं तेमने ज्यारे में श्री महाराजा साहेबे करेला भाषान्तर विषे अमदावादमां वात करी, त्यारे तेमणे ते जोवानी इच्छा मारी आगळ दर्शावी. ते उपरथी फरीने ज्यारे हुं ईडरथी रजा उपर अमदावाद आव्यो त्यारे महाराजाश्रीए करेला आ भाषान्तरना केटलाक भाग नमुना तरीके उतारी लाव्यो हतो. महाराजाश्री अने श्रीयुत् छोटालालभाई वच्चे घणो गाढ स्नेह हतो ए वात घणा सद्गृहस्थो जाणे छे. तेथी तेओश्री पण श्रीयुत् छोटालालभाई जेवा साक्षरनो अभिप्राय पोताना भाषान्तर विषे जाणवा उत्कंठा धरावता हता. श्रीयुत् छोटालालभाईए पण महाराजश्रीना करेला भाषान्तरना नमुना जोईने कह्युं के—"महाराजाश्रीए वापरेलुं मूळ इंग्रेजी भाषान्तर पण वधारे चोक्कस छे अने महाराजाश्रीए तेटली ज चोकसीथी तेनुं गुजराती भाषान्तर कर्युं छे; तेथी गुजराती साहित्यमां में करवा धारेलो उमेरो आथी यथेच्छ रीत्ये थई शकशे." आ उपरथी आ भाषान्तर केवुं छे ते विषे वाचकवर्गने कांईक प्रतीति थशे.

मूल ग्रंथकार बादशाहे करेला रोमन् ग्रंथना इंग्रेजी भाषान्तरना आ गुजराती भाषान्तर करनार राज्यकर्त्ता ईडरनरेश श्रीकेसरीसिंहजीनुं जीवन

चरित्र संक्षेपमां आनी साथे आपेलुं छे; अने मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसनुं जीवनचरित्र तथा तेमना तात्त्विक विचारो विषेनुं विवरण इंग्रेजी भाषान्तर-कर्त्ता मी. लोंगे आपेलां छे. आटली सामग्री आ गुजराती भाषान्तर वांचवा तत्पर थनारने माटे उपयोगी सेवा बजावशे एवी आशापूर्वक विरमुं छुं. सूक्ष्म अक्षरवाळी टिप्पणीओमां तथा ग्रन्थमां आवतां ग्रीक् तथा ल्याटिन् वाक्यो वगेरेनां भाषान्तर सेइन्ट् झेवियर कोलेजना प्रोफेसर झीमरमने करी आपवा कृपा करी श्रम लीधो छे, ते माटे ते विद्वान् सद्गृहस्थनो आभार मान्या-सिवाय आ प्रस्तावना हुं पूर्ण करी शकतो नथी.

लि०

ता. ४–६–१९२१ } **नगीनदास पुरुषोत्तमदास संघवी.**

इंग्रेजी भाषान्तरकर्त्तानी प्रस्तावना.



में एन्टोनिनसनां जीवनचरित्र अने तत्त्वविचारनुं काळजीपूर्वक पुनरवलोकन कर्युं छे, अने तेमां थोडाक सुधारा कर्या छे तथा थोडीक टिप्पणीओ उमेरी छे.

में ज्यां एम धार्युं के हुं ग्रंथकारना आशयनी वधारे निकट पहोंची शकीश, त्यां भाषान्तरमां थोडाक फेरफार पण कर्या छे; अने में थोडीक टिप्पणीओ तथा उतारा उमेर्या छे.

हजु पण जे हुं दूर करी शकुं तेवी नथी एवी मुश्केलीओ रहेली छे, केमके मूळ पाठ केटलीक वखते समजवाने माटे घणो ज अशुद्ध छे अने खरा पाठ फरी दाखल करवानो कोई पण प्रयत्न सफल थाय तेम नथी.

ई० स० १८७३. } ज्योर्ज् लोन्ग्.

इंग्रेजी भाषान्तरकर्त्तानी नोंध.

मने खबर मळी छे के अमेरिकन् पुस्तको प्रसिद्ध करनाराए आ मार्कस एन्टोनिनसना भाषान्तरनी पहेली आवृत्ति छापी छे. जो तेणे तेमाथी कांई नफो मेळव्यो होय तो तेनी मने कांई बलतरा नथी. युनाइटेड स्टेटसमां एवां घणां स्त्रीओ अने पुरुषो छे के जेओ रोमन् बादशाहाना विचारो प्रसन्नताथी वांचशे. जेओ अमेरिकन राजनीतिज्ञ मनुष्यो कहेवाय छे तेओ पण जो ते वांचशे तो मने घणो आनंद थशे ज, पण हुं नथी धारतो के रोमना बादशाहनी नीति तेओनी रुचिने अनुकूल आवे.

मने वळी एवी खबर पण मळी छे के ते अमेरिकन् प्रसिद्धकर्त्ताए आ भाषान्तर एक अमेरिकनने अर्पण कर्युं छे. ते पुस्तक एक अमेरिकनने अर्पण करवामां आवे तेमां मारे कांई वांधो नथी; पण मारी अनुमति विना आ प्रमाणे करवामां ते प्रसिद्धकर्ताए सभ्यतानी मर्यादानुं उल्लंघन कर्युं छे. में कोई पण माणसने कोई पुस्तक अर्पण कर्युं नथी, अने जो मारे आ पुस्तक अर्पण करवुं होत, तो मारे एवो माणस पसंद करवो जोइतो हतो के जेनुं नाम तेरोमन् राजा अने तत्त्वानुरागीना नाम साथे जोडवाने, मने सर्वथा योग्य जणायुं होय. हुं ते पुस्तक जे हाल युनाइटेड स्टेटसनो प्रेसिडेन्ट् छे ते विजयी सेनापतिने अर्पण करत, ते एवी आशाथी के तेनी प्रामाणिकता अने न्यायीपणुं, तेनाथी बने त्यांसुधी, जे दुःखी संस्थानोए लडाई अने दुष्ट मनुष्योनी निर्दय शत्रुताथी आटलुं बधुं सहन कर्युं छे, ते संस्थानोने पुनः शान्ति अने सुख अर्पण करे.

पण पेला—रोमन् कविए कह्युं छे तेम—

अने मारे जो कोई माणसने आ नानुं पुस्तक अर्पण करवुं होत तो ते एने अर्पण करत, के जेणे ते मळतिया सैन्यने पेला शक्तिमान् हुमलो करनारनी सामे दोर्यां अने बळिया साथेनी लडाईमांथी हारेलो पण गेर आबरु नहि पामेलो जे पाछो फर्यो; ए वर्जिनिआना योद्धाने अर्पण करत के जेनी बुद्धि अने सद्गुणो तेने, बादशाही सीझरोनी गादी उपर जे बेठो हतो ते उत्तम अने सर्वथी डाह्या पुरुषनी जोडाजोड, मूके छे.

ज्योर्ज् लोन्ग्.

संस्थान ईडरना महाराजा
श्री सर केसरीसिंहजी के. सी. एस. आईनुं
संक्षिप्त जीवनचरित्र.



आ ग्रंथनुं गुजराती भाषान्तर करनार कैलासवासी महाराजाश्री सर केसरीसिंहजीनो जन्म संवत् १९१७ ना जेठ सुद ३ ने दिवसे थयो हतो. तेओश्री जोधपुरना राजकुटुंबनी शाखाना राठोडवंशी रजपुत थाय. इ. स. ११९३ मां कनोजना छेल्ला रजपूत राजा प्रख्यात जयचंद राठोड उपर शाहबुद्दिन गोरीए चढाई करी तेनो मुलक घेर्यो, त्यारे ते नासीने गंगा नदी उतरतां डूबी मुआ हता. तेमना दीकरा शिओजी राठोड सने १२१२ मां पोतानी जन्मभूमि छोडीने राठोड रजपूतो साथे मारवाडमां जईने वस्या हता. त्यां तेमणे धीमेधीमे बीजा राजाओनो मुलक दबावीने मारवाडमां राठोड राज्यनी स्थापना करी. तेमने असोधाम, सोनींग अने अजमाल नामे त्रण कुंवरो हता. तेमांथी असोधाम पोताना पितानी पछी मारवाडना राजा थया, अने सोनींगे ईडरना भीलराजा सामळिया सोर्द पासेथी राज्य पडावी लेईने ईडरमां राठोड राज्यनी स्थापना करी, अने "राव"नी पदवी धारण करी, तेथी तेमना वंशजो 'राव राठोड" कहेवाया. तेमना वंशमां राव खेहमलजी, धवलजी, लुणकरजी, खनहतजी, रणमलजी, राव पुंजोजी, नारणदास, राव भाण, सुरजमल, भीमसिंहजी, भारमलजी, पुंजोजी, नारणदास, विरमदेवजी, कल्याणमल्ल, जगन्नाथ, पुंजोजी, अर्जुनदास, गोपीनाथ, करणसिंह अने चंद्रो (चंद्रसिंहजी), एम अनुक्रमे राजा थया. तेमांना छेल्ला चंद्रसिंहजीए सने १७१८ मां वलासणाना सरदारसिंहने ईडरनुं राज्य सोंपी दईने पोळोमां जई त्यां पोतानी राजगादी स्थापी. तेमना वंशज अद्यापि सुधी पोळोमां राज्य करे छे.

पछी ए ज शिओजी राठोड के जेमणे सन १२१२ मां मारवाडमां राज्य स्थाप्युं हतुं, तेमना वडा कुंवर असोधाम पछी १९ मी पेढीए जोधपुर(मारवाड)नी गादीपर अजितसिंह नामे राजा थया; तेमना बीजा कुंवर आनंदसिंहजीए सने १७३१ मां ईडरमां आवीने राज्यनी स्थापना करी. ए आनंदसिंहजी पछी तेमना पुत्र शिवसिंहजी ईडरनी गादी उपर बेठा. तेमने भवानीसिंह, संगरामसिंह, अमरसिंह, अने इंद्रसिंह, ए चार

पुत्र हता. तेमां वडा भवानीसिंहजी पोताना पितानी पछी गादीए बेठा. परंतु ते मात्र १२ दिवसमां गुजरी जवाथी तेमना १३ वर्षना पुत्र गंभीरसिंहजी गादीए बेठा. तेमने मारी नांखवा तेमना काकाए कावतरुं रच्युं, ते पकडाई जवाथी तेमने ईडर बहार काढी मूकवामां आव्या. पछी सगरामसिंहे अहमदनगर जईने गादी स्थापी, अने जालिमसिंहे तथा अमीरसिंहे मोडासा तथा बायड प्रगणां कबजे करी लीधां. थोडा वखत पछी जालमसिंहजी अने अमीरसिंहजी वगर संताने मरण पामवाथी तेमनी जागिरना हक्क बाबत ईडर अने अहमदनगरवाळा वच्चे केटलोक वांधो चालतो हतो, तेनो निवेडो करवानुं काम कप्तान औट्रामने सोंपवामां आव्युं हतुं. तेवामां जोधपुरना महाराजा विना संताने गुजरी जवाथी अहमदनगरवाळा तख्तसिंहजीने दत्तक लेवामां आव्या. तेथी ए तकरारनो अंत आव्यो. केमके ईडरवाळी वडी शाखानो हक्क हवे अहमदनगरनी जागिर उपर थयो. आ हक्कना संबंधमां जोधपुरना महाराजा तख्तसिंहजीए वांधो उठाव्यो हतो. परंतु छेवटे सने १८४८ मां हिंदुस्ताननी सरकारे निर्णय कर्यो के–अहमदनगरवाळा तख्तसिंहजी जोधपुरवाळा कुटुंबमां दत्तक थईने गया, माटे ईडरवाळी शाखा वडील होवाथी अहमदनगरना हक्कदार मालिक छे. तेथी अहमदनगर असलनी माफक ईडर राज्य साथे जोडाई जवुं जोइए, अने ते बंने उपर ईडरना राजानो अधिकार छे. ए रीते अहमदनगरनुं राज्य ईडरने पाछुं मळ्युं.

महाराजा गंभीरसिंहजी पछी तेमना कुंवरश्री जुवानसिंहजी गादीए बेठा. तेओ घणा चालाक अने निपुण हता. तेमने इंग्रेजी भाषानुं सारुं ज्ञान हतुं. गुजरात अने काठियावाडना राजाओमां इंग्रेजी भाषा शिखवानी पहेल तेमणे ज करी हती. तेमनी योग्यता जोई नामदार ब्रिटिश सरकारे तेमने मुंबाईना गवर्नरनी "लेजिस्लेटिव काउन्सिलमां" ओनरबल सभासद नीम्या हता. एटलुं ज नहि पण सने १८६८ मां तेमने "नाईट ग्रान्ड कमान्डर ओफ धी स्टार ओफ ईन्डीआ"नो मानवंतो खेताब बक्षीस कर्यो हतो. महाराज सर जुवानसिंहजीए प्रजाने सुखी करी लोकप्रियता मेळवी. तेओ ३८ वर्षनी युवावस्थामां ता. २६ मी डीसेंबर सन १८६८ ने रोज कैलासवासी थवाथी सर्व ठेकाणे भारे शोक फेलायो हतो.

महाराज सर जुवानसिंहजी पछी आ ग्रंथनुं भाषान्तर करनार तेमना कुमार श्रीकेसरीसिंहजी गादीए बेठा. ए समये तेमनुं वय मात्र सात वर्षनुं ज हतुं. तेथी तेओ योग्य वयना थतां लगी राज्यनो सघळो वहीवट चलाववा माटे महिकांठाना पोलीटिकल एजंट साहेबनी देखरेख नीचे

रा. ब. ओच्छवराम मीठारामने नेटीव आसिस्टंट पोलिटिकल एजंट तरीके नीमवामां आव्या हता.

महराजा श्रीकेसरीसिंहजीने विद्याभ्यास कराववा माटे एक लायक शिक्षकनी नीमनोक करवामां आवी हती. तेनी पासे ते नामदार पोतानो अभ्यास घणी खंत अने काळजीथी करता. तेओ नानपणथी ज घणा चालाक अने बुद्धिमान् हता. तेनी साथे स्वभावे घणा आनंदी हता.

सने १८७५ ना जुलाई मासनी ता. ११ मी ने रोज नामदार महाराज श्रीकेसरीसिंहजीनां व्हेन श्रीतख्तजीलालनां लग्न उदपुरना महाराणा श्रीसज्जनसिंहजीनी साथे मोटी धामधुमथी करवामां आव्यां हतां. ए ज वर्षमां नामदार महाराणी श्रीविकटोरियाना पाटवी कुमार श्रीप्रिन्स ओफ वेल्स हिन्दुस्तानमां पधार्या हता, तेमनी मुलाकात लेवा माटे महाराजश्री मुंबई पधार्या हता. सगीर वयमां पण तेओश्रीए बंने प्रसंगोए पोतानां विवेक अने गौरवथी हिंदुसूर्य महाराणाश्री अने नामदार प्रिन्स आफ वेल्स तरफथी सत्कार अने प्रशंसा मेळव्यां हतां.

सने १८७६ मां महाराजश्रीनां लग्न मेवाडमां सलुंबरना रावतजीनां कुंवरी साथे करवामां आव्यां हतां. महाराजश्री मोटा रसाला साथे घणा ठाठमाटथी सलुंबर पधार्या हता. महाराजश्रीनां आ पट्टमहाराणी एवां तो कुशळ हतां के पोताना भाईनी बाल्यावस्थामां सलुंबरनो राज्यकारोबार सघळो पोते ज चलावतां हतां. प्राचीन महाभारतना वीरशिरोमणि श्रीभीष्म-पितामह अने स्पार्टन धर्मोपिलीना वीररत्ननी उपमाने पात्र थई जगत्प्रसिद्ध बनेला श्रीचोंडाजीना वंशनां परंपराप्राप्त ज्वलन्त क्षात्रतेज अने पवित्र पतिव्रतनी मूर्त्ति तरीके हजु पण श्री ईडरराज्यनी प्रजा ए सती महाराणीना नामने पूज्यभावे उच्चारे छे. आ महाराणीश्री थोडा ज समयमां देवलोक पाम्यां, पण तेमनो यश हजु पण सजीवन छे.

सने १८७७ ना जानेवारीनी १ ली तारीखे नामदार महाराणी श्रीवि-क्टोरीयाए "कैसरे हिन्द"नी महान पदवी धारण करी, त्यारे दिल्हीमां भरेला बादशाही दरबारमां महाराज श्रीकेसरीसिंहजीने एक "पादशाही वावटो" बक्षीस करवानुं लोर्ड लिटन् साहेबे जाहेर कर्युं हतुं. ते महाराजा-श्रीने एनायत करवानो विधि महीकांठाना पोलिटिकल एजंट साहेब कर्नल लिथीटे ईडरमां एक मोठो दरबार भरीने कर्यो हतो.

सन १८७८ मां महाराज श्रीकेसरीसिंहजी विद्याभ्यासनी वधारे सारी तालीम लेवा माटे पोलिटिकल एजंट साहेबनी सूचनाथी राजकोटनी

राजकुमार कोलेजमां दाखल थया हता. त्यां तेमणे टुंक समयमां पोतानी चालाकी अने होंशियारीथी पोताना शिक्षागुरुने घणो सारो संतोष आप्यो हतो. बाद सन १८८१ मां कोलेज छोड्या पछी पण महाराजश्री अने तेमना शिक्षागुरु (प्रिन्सिपाल) मी. मकेनोटन साहेबनो स्नेहसंबंध जेवो ने तेवो कायम रह्यो हतो.

महाराजश्रीए कोलेज छोड्या बाद ईडर राज्यना ईनू चार्ज नेटीव आसिस्टंट पोलीटिकल एजंट रा. बा. ओच्छवरामभाई साथे रही राजकाजमां माहिती मेळववा मांडी; अने ज्यारे तेओ ए विषयमां सारी पेठे प्रवीण थया त्यारे ता. ७ मी माहे जुलाई सन १८८२ ने रोज तेमना राज्यनी तमाम सत्ता नामदार ब्रिटिश सरकारे तेमने स्वाधीन करी. ते प्रसंगे महीकांठाना पोलिटिकल एजंट मे० वुडहाउस साहेबे ईडरमां एक दरबार भरीने पोताना भाषणमां महाराजाश्रीनी विद्वत्ता, कुशळता वगेरे सद्गुणोनी घणी प्रशंसा करी हती. तेनो उत्तर महाराजाश्रीए इंग्रेजी भाषामां बहु छटादार अने योग्य रीते वाळ्यो हतो. आटली युवास्थामां पण तेओश्रीना विचारनी गंभीरता अने दक्षता जोई सर्वे आनंदाश्चर्य पामता हता.

सने १८८४ मां नामदार मुंबाईना गवर्नर सर जेम्स फरग्युसन साहेब पोताना गुजरातना प्रवासमां ईडर पधार्या हता. महाराजाश्रीए करेला स्वागतथी तेओ नामदार प्रसन्न थया हता. तेमणे दरबार भरी महाराजाश्रीना उत्तम गुणोनी घणी प्रशंसा करी, तेनो महाराजाश्रीए इंग्रेजीमां बहु योग्य उत्तर आप्यो हतो.

आ ज वर्षमां महाराजाश्रीए पोतानी प्रजाना लाभ माटे राज्य तरफथी एक बेंक उघाडी हती; तथा जुदां नानां मोटां मळी बार गामो नवां वसाव्यां हतां, अने ५० नवा कुवा खोदाव्या हता. तेथी प्रजाना सुखमां सारी वृद्धि थई हती. वळी सने १८८६ मां तेमणे पोताना राज्यना वडाली, अहमदनगर अने सबलपुर तालुकामां एकएक नवुं दवाखानुं स्थाप्युं हतुं. वळी पोतानी प्रजा उपरथी "ट्रान्झिट" (राहदारी) कर काढी नांख्यो हतो. तेथी प्रजा खुशी थई हती, अने नामदार मुंबाई सरकारे पण ते विषे पोतानो संतोष जाहेर कीधो हतो.

राजमाता श्रीजीजीबासाहेबे पोताने खर्चे ईडरमां एक कन्याशाळा स्थापवानो निश्चय कर्यो. ते "श्रीजीजीबा कन्याशाळा" नो पायो नांखवानी शुभ क्रिया महीकांठाना पोलीटिकल एजंट मी. स्कोटनां पत्नीने हाथे कराववामां आवी हती. ते प्रसंगे सभामां महराजश्रीए इंग्रेजी भाषामां

एक भाषण कर्युं हतुं. जेमां प्रजा माटे केळवणीनी अगत्य विषे तेम ज स्त्री-केळवणी विषे घणा उपयोगी विचारो अने सूचनाओ दर्शाव्यां हतां. तेमां बाळको केळववानी जेम राजानी फरज छे तेम ज ते फरज प्रजानी पण छे—ए विचार घणो मननीय छे.

ता. १६ मी माहे फेब्रुआरी सन १८८७ ना रोज नामदार महाराणी श्रीविक्टोरियाना राज्यना ५० मा वर्षनी "ज्युबिली"नो महोत्सव आखा हिन्दमां पाळवामां आव्यो हतो. त्यारे महाराजश्रीए पोताना राज्यमां पण ते उत्सव घणी धामधुम साथे उजव्यो हतो. ए ज्युबिलीनी खुशालीमां नामदार महाराणी श्रीविक्टोरीआए महाराजश्रीने "नाईट कमान्डर ओफ धी आर्डर ओफ धी स्टार ओफ इन्डीआ"नो मानवन्तो खेताब आप्यो. तेनी सनंद आपवानी क्रिया नामदार मुंबाईना गवर्नर लॉर्ड रे साहेब अमदावाद मुकामे ए ज वर्षना डीसंबर मासमां करी हती. ए प्रसंगे गुजरात काठियावाडना घणा राजाराणाओ अमदावाद पधार्या हता. ता. १५ मी डीसेंबरने रोज एक भव्य दरबार भरीने सदहुं खेताब आपवानी क्रिया करी हती. ए क्रिया समाप्त थया पछी ते दरबारमां हाजर रहेला राजवंशीओ तथा ठाकोरोए नामदार गवर्नर साहेब आगळ नजराणां धर्यां अने तेओ नामदारे तेमने पोषाक आप्या. ते पछी नामदार गवर्नर साहेबे इंग्रेजीमां एक विस्तृत भाषण कर्युं हतुं, तेनो गुजरातीमां नीचे प्रमाणे भावार्थ छेः—

ईडरना मानवंता महाराजासाहेब, जे उंचो खेताब मालिका मा आज्ञमाए आपने बक्षीस करवानी मेहरबानी करी छे, ते विदित करवानुं काम नामदार वाइसरोये मने सोंप्युं छे. कैसर हिंदे आपना फतेहमंद राज्यकारभारनी कदरदानीनी आ एक साबीती आपी छे, अने आप तेने लायक थया छो. आपे आपना राज्यनो जुम्मो लीधो, त्यारथी दोड लाख रूपियानुं करज अपाई चूकयुं छे. तेम छतां केळवणी अने आरोग्यतानी वधती जती मागणी तरफ नजर करवाने आप भूल्या नथी. आपे मुंबाई सरकारने हाथमती नहेर तैयार करवामां तथा कपडवणज अने मोडासानो रस्तो बांधवामां सखावतथी मदद आपी, मीठाना बंदोबस्तमां आपे आपनो हिस्सो वफादारीथी कबुल कर्यो, सादरा कोलेज खाते रु. १५,००० भर्या, अने सघळी दलीलोनो पूर्ण विश्वास करीने रु. २५,००० नी उपजनी थोडी मुदतनी पण नुकशानी वेठीने आपे राहदारी जकात काढी नांखी, ए रीते आपे मोकळा वेपारना फायदा कबुल कर्या. मोकळा वेपारनी वृद्धिने अर्थे महीकांठामां, कटोसण, इलोल, तथा आंबालियाराना ठाकोरसाहेबोए आगेवानीथी जे भाग लीधो छे ते, तथा कडोलीना ठाकोर साहेबे साबरकांठाना बीजा ठाकोरोने जे दाखलो

आप्यो छे, ते सांभळीने मने बहु खुशी हांसल थई छे; अने महीकांठाना ठाकोरोए ए ज बाबतमां जे इलाज कर्या छे, तेनी कदर हुं खुशीनी साथे पिछानुं छुं."

नामदार महारजाश्री केसरीसिंहजीने आ प्रमाणे महान् खेताब मळयो तेनी खुशालीमां अमदावादना नगरशेठ वगेरे घणा गृहस्थो तरफथी ए नामदारना माननी खातर मोठी मिजलसो भरवामां आवी हती; तथा तेमनी खास पधरामणी करीने सुंदर मानपत्रो आपवामां आव्यां हतां. ए ज प्रमाणे महाराजाश्रीनी स्वारी स्वराज्यमां पधारी त्यारे तेमनी प्रजा तरफथी तेओश्रीने अपूर्व मान मळ्युं हतुं.

सने १८८९ ना उनाळामां महाराजाश्री केसरीसिंहजीए आबु जवा माटे त्यां बंगलो भाडे राख्यो हतो. पण शरीर अस्वस्थ थवाथी त्यां जई शक्या नहोता.

सने १८९० ना डीसेंबर मासमां महाराजाश्री मुंबाई पधार्या हता अने थोडा समय पछी पाछा ईडर आव्या हता.

पोताना शिक्षक मी. मेकनोटने राजकोटनी राजकुमार कोलेजना पोताना विद्यार्थीओने केटलांक भाषणो आपेलां तेनुं एक इंग्रेजी पुस्तक नामे 'Plain Words Of Everyday Life' छे, तेनुं 'व्यवहारोपयोगी वचन ए नामनुं गुजराती भाषान्तरनुं पुस्तक महाराजाश्रीए बनावेलुं हतुं. ते पुस्तक तेओश्रीए सने १८९१ मां छपावी प्रसिद्ध कर्युं.

सने १८९२ ना डीसेम्बर मासमां महाराजाश्री श्रीवल्लभीय वैष्णवोना मुख्य धाम मेवाडमां आवेला श्रीनाथद्वारानी यात्राए मोटा रसाला साथे गया हता. तेओश्री उदेपुर वगेरे स्थळोए थईने सने १८९३ ना जानेवारी मासमां पाछा ईडर पधार्या.

पालनपुरना दिवान साहेब (राज्यकर्ता) श्रीशेरमहमद खानजीने नामदार ब्रिटिश सरकारे 'नाईट कमान्डर ओफ धी इन्डीअन एम्पायर' नो खेताब आपेलो. तेनो चांद तेमने आपवा वगेरे वास्ते, मुंबाईना नामदार गवर्नर लॉर्ड हारीस साहेबे केटलाक रजवाडा वगेरेने आमंत्रण करीने अमदावाद बोलाव्या हता. तेथी महाराजा श्रीकेसरीसिंहजी पण त्यां गया हता. ता. २७ मी तथा ता. २८ मी नवंबर सन १८९३ ने रोज नामदार गवर्नर साहेबे मोटा दरबारो अमदावादमां भर्या हता.

ते पछी ता. ५ मी डीसेंबर सन १८९३ ने रोज महाराजा श्रीकेसरीसिंहजि परभार्यां अमदावादथी मुंबाई सिधाव्या हता. त्यां बार दिवस रहीने पाछा ईडर पधार्यां हता.

सन १८९७ मां महाराजाश्रीने महाराणी श्री चौहाणीजी साहेबथी एक कुंवरीजि थयां, तेओ हाल आरोग्य छे.

सने १९०० ना ओकटोबर मासमां महाराजाश्रीनां मातुश्री झालीजी जीजीबा साहेब पूर्ण वृद्धावस्थाए देवलोक पाम्यां. तेओ घणां विवेकी, सारा स्वभावनां, प्रामाणिक, न्यायी, अने चुस्त वैष्णव हतां. तेमणे श्रीवल्लभसंप्रदायनुं मंदिर महाराजाश्रीनी सगीर अवस्थामां कराव्युं हतुं. ते महामंदिरना नामथी ओळखाय छे. ए मंदिरना खर्चना निभाव माटे राजमाताए पोतानी खानगी बचत रकमथी ईडर संस्थान अंदर एक गाम वेचाण लीधुं अने ते ए मंदिरने अर्पण कर्युं. वळी महाराजाश्री केसरीसिंहजीए वहिवट पोताने हस्तक लीधा पछी एक गाम ते मंदिरने अर्पण कर्युं हतुं. राजमाता देवलोक पाम्यां ते पण तेओने माटे श्रीभगवदनुग्रहरूप हतुं. केमके तेमना देवलोक पाम्या बाद चार के पांच मासमां ता. २० मी फेब्रुआरी सन १९०१ संवत १९५७ना फागण सुद २ ने रोज बुधवारे श्रीईडर भूमिना सौभाग्यभूषण, प्रातःस्मरणीय, परम विष्णुभक्त, गोब्राह्मणप्रतिपाल, प्रजावत्सल, पुण्यमूर्त्ति अने अनेक शुभराजगुणनिधान महाराजाश्री केसरीसिंहजीए कैलासगमन करी पोताना कुटुंब, परिवार, सामंत, सेवक, आश्रित, स्नेही, संबंधी अने प्रजाजनने शोकसागरमां निमग्न कर्यां.

महाराजाश्रीए कैलासवास कर्यो त्यारे तेमनां संमानित महाराणीश्री चौहाणीजी सगर्भा हतां; तेमने संवत १९५७ ना भादरवा वद ६–ता. ३ जी ओक्टोबर १९०१ ने रोज एक महाराजकुमारश्रीनो प्रसव थयो. ईडरनो आशासूर्य पाछो क्षितिजमां जणायो, पण दुर्दैवे ते सूर्यनो त्रण ज मासमां ता. २९ मी नवंबर सने १९०१–संवत १९५८ ना कारतक वद ४ नी रात्रे अस्त करी दीधो. तेथी महाराजाश्रीना वियोगशोकना अंधकारमां फरीने सर्वनां अंतःकरण हमेशने माटे गरक थई गयां.

नामदार महाराजा श्रीकेसरीसिंहजीमां जे दैवी संपत्तिना उच्च भावो अने सद्गुणो हता, तेना उपर मनोहर यशस्वी प्रकाश नांखे तेवा प्रसंगो आ लेखकना तेम ज तेओश्रीथी परिचित एवा घणा सज्जनोना जाणवामां छे. ते प्रसंगो घणा बोधदायक तेम ज त्याज्यग्राह्यविवेक शीखवनार अने वाचकने रस उत्पन्न करे लेवा छे. पण पुस्तकनी प्रस्तावनाना साथी तरीके

प्रसिद्ध थवाना संक्षिप्त जिवनवृत्तान्तमां ए सर्वने माटे स्थळ नथी, अने थोडुं घणुं लखवाथी तृप्तिनो संभव नथी. तेथी ते सर्व प्रसंगोना नवनीत रूपे अत्रे एटलुं ज दर्शाववुं आवश्यक छे के-श्रीईडरनरेश श्रीकेसरीसिंहजी महाराजा साहेब बहादूर एक अदल न्यायी, उदार, गुणज्ञ, विद्वान, विद्याकलाना उत्तेजक अने रसज्ञ, प्रजावत्सल, सच्छास्त्रविशारद, सनातन धर्मनिष्ठ, शूरवीर, गोब्राह्मणवदेपूजक, मर्मज्ञ, विवेकसागर, आनंदी अने कृपालु हता. आ आन्तर सद्गुणोना समुद्ररूप गंभीर मनने वसवा योग्य तेओश्रीनुं शरीर पण घणुं मर्दानी सौन्दर्यवाळुं, राजतेजविभूषित, हसमुखा चहेरावाळुं अने ओजस्वी तथा श्रमसहिष्णु हतुं.

ज्यारे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर अनुकूळता आपशे त्यारे पुण्यपुंज महाराजाश्रीनुं सविस्तर जिवन चरित्र लखी बहार पाडवानो मनोरथ हजु पण आ लेखकना अंतःकरणमां तेवो ज ताजो अने साजो छे.

ता. ३१ मी जुलाई १९१९
सांकडीशेरीमां—लालवसानी
पोळ, अमदावाद.

संघवी नगीनदास पुरुषोत्तमदास.

विषयानुक्रमणिका.



॥ श्री ॥

महाराजाधिराज मार्कस् ऑरेलियस् एन्टोनिनस-जीवनचरित्र.

एम्. एन्टोनिनस्, इ. स. १२१ ना एप्रिल् मासनी २६ मी तारीखे, रोम शहेरमां जन्म्या हता. ते प्रीटर् (न्यायाधिकारी) हता, तेवामां तेमना पिता एन्नियस् वीरस् गुजरी गया. तेमनां मातुश्री डॉमीटिया कॅल्विल्ला हतां, तेमने ल्युसिल्ला पण कहेता. बादशाह टी. एन्टोनिनस् पायस्, एन्नियस् वीरसनी वहेन एन्निया गॅलेरिया फॉस्टीनानी साथे परण्या हता, तेथी ते एम्. एन्टोनिनसना फुवा थता हता. ज्यारे हॅड्रियने एन्टोनिनस् पायसने दत्तक लेइने तेमने प्रसिद्ध रीत्ये बादशाहीना वारस ठराव्या,–त्यारे एन्टोनिनस् पायसे, ईलियस् सीझरना पुत्र एल्. सीओनियस् कॉम्मोडस् अने जेमनुं मूळ नाम एन्नियस् वीरस् हतुं ते एम्. एन्टोनिनस्, ए बन्नेने दत्तक लीधा. ते वखते एन्टोनिनसे एम्. ईलियस् ऑरेलियस् वीरस् एवुं नाम धारण कर्युं, अने तेनी साथे इ. स. १३९ मां सीझरनो खेताब उमेरवामां आव्यो हतो. ईलियस् ए नाम हॅड्रियनना वंशनुं हतुं, अने ऑरेलियस् ए नाम एन्टोनिनस् पायसनुं हतुं. एम्. एन्टोनिनस् ज्यारे ऑगस्टस् थया, त्यारे तेमणे वीरसनुं नाम पडतुं मेल्युं, अने एन्टोनिनसनुं नाम धारण कर्युं. तेथी तेमने सामान्य रीत्ये एम्. ऑरेलियस् एन्टोनिनस् अथवा मात्र एम्. एन्टोनिनस् एवुं नाम आपवामां आवे छे.

ए युवान नरने बहुज संभाळथी उछेरवामां आव्या हता. तेमने भला बापदादाओ, रूडां मातापिता, एक भली बहेन, सारा शिक्षको, सारा सोबतीओ, रूडां सगांओ अने मित्रो,—लगभग दरेक वस्तु सारीज मळी हती; ते माटे ते देवोनो आभार माने छे—(१. १७). ते पोताना फुवा तेमज पोताने दत्तक लेनार पिता एन्टोनिनस् पायसनो दाखलो जोवा पाम्या हता, एटला ते सद्भागी हता, अने तेमणे पोताना पुस्तक (१. १६;६. ३०) मां आ उत्कृष्ट पुरुष अने शाणा राज्यकर्त्ताना सद्गुणो नोंधी राख्या छे. घणा युवान रोमनोनी माफक तेमणे काव्यकलामां पोतानो हाथ अजमाव्यो, अने साहित्यशास्त्रनो तो अभ्यासज कर्यो. हॅरोडीस् एट्टिकस् अने एम्. कॉर्नेलियस् फ्रॉन्टो ए वक्तृत्वकळामां तेमना शिक्षको हता. पोताना शिक्षक प्रति शिष्यनो परम प्रेम, अने पोताना उद्योगी शिष्य विषे शिक्षकनी मोटी आशाओ दर्शावी आपनार पत्रो[1] फ्रॉन्टो अने मॉर्कस् वच्चे चालेला ते हजु पण मोजुद छे. पोतानी केळवणीने माटे पोते जेओना आभार तळे हता ते पुरुषोमांना एक तरीके फ्रॉन्टोने पण एम्. एन्टोनिनस् गणावे छे (१. ११).

ते अगीआर वर्षना थया त्यारथी तेमणे कांइक सादो अने जाडो एवो तत्वशोधकनो पोशाक धारण कर्यो, सख्त विद्याभ्यासी थया, अने अत्यंत महेनत तथा परेजीवाळुं जीवन भोगववा लाग्या—ते पण एटले सुधी के तेमनी तन्दुरस्तीने पण धक्को लाग्यो. छेवटे, तेमणे तत्वज्ञाननो अभ्यास करवाने माटे काव्य अने साहित्यनो अभ्यास छोडी दीधो, अने उदासीन[2] संप्रदायनो अंगीकार कर्यो. पण जे उच्च पदे विराजवाने माटे ते निर्माण थ-

---

[1] M. Cornelii Frontonis Reliquiae, Berlin, 1816. ते फ्रॉन्टो अने एन्टोनिनस् पायस् वच्चे चालेला थोडा एक पत्रो छे.

[2] Stoics.

येला हता, ते उच्च पदने माटे तैयार थवाना एक उपयोगी साधनरूप कायदानो अभ्यास तो तेमणे विसारे नाख्योज नहि. नामीचो धाराशास्त्री एल. वॉल्युसिएनस् मीसिएनस् ए एमनो शिक्षक हतो. पाछलथी पोताना लश्करने एक लडायक जातिना लोको सामे युद्ध करवाने लेइ जनार आ पुरुषनी केलवणीना विभागरूपे जे अवश्ये करीने होवी जोईए एवी रोमन शस्त्रास्त्रविद्यानी तालिम पण तेमणे लीधेली एम आपणे धारीज लेवुं जोईए.

एन्टोनिससे पोताना प्रथम पुस्तकमां पोताना शिक्षकोनां नाम अने तेओमांना प्रत्येके पोताने करेला गुण नोंधी राख्या छे. तेमणे जे ढबमां पोताना विचारो दर्शाव्या छे ते तरफ जो आपणे उपरचोटियो लक्ष आपीशुं तो शिक्षकोनी पासेथी पोते शुं शुं शीख्या हता ते विषे बोलवानी तेमनी ढबमां मिथ्याभिमान अथवा आपवखाणनो गंध रहेलो होय एम भासशे, पण जो कोइ एवुं अनुमान बांधे तो तेमां तेनी भूलज ठरशे. एन्टोनिनसनो आशय तो पोताना जुदा जुदा शिक्षकोना सुगुण, तेओए शुं शुं शीखव्युं, अने तेओनी पासेथी शिष्य शुं शुं शीखी शके एम हतुं—ते सघळानी यादी राखवानोज हतो. वळी आ पुस्तक बीजां अगियार पुस्तकोनी माफक तेमना पोतानाज उपयोग माटे हतुं, अने आपणे प्रथम पुस्तकनी अंते जे नोंध छे तेना उपर भरोंसो राखीए, तो क्वॉडी सामे एम्. एन्टोनिनसे करेली चढाईओमांनी एक चढाईने समये ए लखायुं हतुं, के जे वखते पोताना नामीचा शिक्षकोना सद्गुणनी यादगिरी, तेओना उपदेशो अने तेमांथी मळी शके तेवी व्यवहारउपयोगी बाबतोनुं पोताने ते स्मरण करावे.

पोताने तत्वज्ञान शीखवनारमां प्लुटार्चनो पौत्र चीरोनीआनो सेक्स्टस् हतो. आ उत्तम पुरुष पासेथी जे कांइ पोते शिख्या हता ते तेमणे पोतेज कहेलुं छे (१. ९). पोतानो प्रिय शिक्षक

क्यु. ज्युनियस् रस्टिकस् हतो (१. ७). ते तत्वज्ञानी तेमज लौकिक काममां व्यावहारिक कुशळतावाळो पुरुष हतो. एन्टोनिनस् बादशाह थया त्यारे रस्टिकस् तेमनो सलाहकार हतो. जे युवान पुरुषो उच्च पदने माटे निर्माण थएला होय छे, तेओ पोतानी आसपासना लोको, सोबतीओ अने शिक्षकोनी बाबतमां घणीवार भाग्यशाळी होता नथी; अने कोइ युवान राजानो एवो दाखलो मारी स्मृतिमां नथी के जेनी केळवणीनी सरखामणी एम्. एन्टोनिनसनी केळवणी साथे थई शके. पोतानी काबीलियत अने नीतिरीतिवडे प्रख्याति पामेल शिक्षकोनो आवो समुदाय क्वचितज फरी एकठो थशे; अने विद्यार्थी तो अद्यापि पर्यंत तेमने जोटे आवे एवो कोइ आपणा जोवामां आव्योज नथी.

इस्वि सन १३८ ना जुलाइमां हॅड्रियन् गुजरी गया अने तेमनी पछी एन्टोनिनस् पायस् थया. घणुं करीने लगभग इस्वि सन १४६ मां एम्. एन्टोनिनसे तेमनी फोईनी दीकरी फॉस्टीना जे पायसनी पुत्री थाय तेनी साथे लग्न कर्युं, केमके एन्टोनिनसने १४७ मां एक पुत्री थई हती. तेमने पोताना दत्तक लेनार पिता तरफथी सीझरनो इलकाब मल्यो, अने राज्यकारभारमां तेमने तेमनी साथे सामेल राखवामां आव्या. पिता अने दत्तक पुत्र पूर्ण मित्रता अने एक दिलथी भेगा रह्या. एन्टोनिनस् आज्ञांकित पुत्र हता अने पायस् बादशाह तेमने चहाता ने वखाणता हता.

एन्टोनिनस् पायस् इस्वि सन १६१ ना मार्चमां मरण पाम्या. एम कहेवाय छे के सॅनेटे (राज्यमंडलीए) राज्यनो बधो कारभार लेवाने एम्. एन्टोनिनसने आग्रह कीधो, पण तेमणे पायसना बीजा दत्तक पुत्र एल्. सीओनियस् कॉम्मोडस् जे सामान्य रीत्ये एल्. वीरस् कहेवाय छे, तेने पण पोताना भेगो राख्यो. आ प्रमाणे रोममां आ पहेलीज वार बे बादशाह थया. वीरस् एश-आरामी अने पोतानी जगोने माटे नालायक एवो एक प्रमादी

माणस हतो, तो पण एन्टोनिनस् तेनी साथे निभावी लेता, अने एम कहेवाय छे के वीरसमां पोताना सोबतीने तेनी नीतिरीतिने योग्य मान आपवानी पूरती समज हती. एक सद्गुणी बादशाह अने तेनो एक उन्मार्गी भागीओ सलाहसंपथी भेगा रह्या, अने एन्टोनिनसे वीरसने पोतानी दिकरी ल्युसिल्ला परणावी, तेथी तेमनो संबंध गाढो थयो.

एन्टोनिनसनी कारकिर्दीमां प्रथम पार्थियन् विग्रहथी विक्षेप पड्यो, ते लडाईमां वीरसने सेनापति करीने मोकलवामां आव्यो, पण एणे तो कशुंए कर्युं नहि, अने आर्मीनियामां तथा युफ्रेटिस् अने टाइग्रिस् नदीओना तीरना प्रदेशमां रोमना लोकोए जे फतेह मेळवी हती ते तो तेना लश्करना सरदारोने लीधे मेळवी हती. आ पार्थियन् लडाईनो अंत इस्वि सन १६५ मां आव्यो. पूर्व दिशामां मळेला विजयोने माटे ऑरेलियस् अने वीरसने इस्वि सन १६६ मां आनंदोत्सव थयो. त्यार बाद मरकी चाली, तेथी रोम अने ईटालीमां जथाबंध मनुष्यो मरण पाम्यां, अने ते मरकी युरोपनी पश्चिम सुधी फेलाई.

उत्तर गॅल्लियानी सरहदथी ते हॅड्रियॅटिकनी पूर्व बाजुलगी ईटालीना उत्तर भागने पण आल्प्स पर्वतनी पेली मेरना लोकोए भयमां नाख्यो हतो. जेम जर्मेनिक लोकोए आशरे त्रणसो वर्ष पहेलां प्रयत्न कर्यो हतो तेम आ जंगली लोकोए पण ईटालीमां उतरी पडवानी कोशीस करी; अने वचवचनी केटलीक मुदतो बाद करतां एन्टोनिनसनी बाकी रहेली सघली जिंदगी ते हुमलो करी आवनाराओने पाछा हांकी कहाडवामांज रोकाई हती. १६९ मां वीरस् अचानक रीत्ये मरण पाम्यो, अने एन्टोनिनस् एकलाज राज्य कारभार करवा लाग्या.

जर्मन् विग्रहोना समयमां एन्टोनिनस् डान्युब नदी उपरना

कार्नन्टम् आगळ त्रण वर्ष पर्यंत रह्या. मार्कोमेन्निने पॅन्नोनिया-मांथी हांकी काढवामां आव्या अने पाछा फरी डान्युब नदी उतरतां तेओनो लगभग नाशज करवामां आव्यो हतो; तथा इस्वि सन १७४ मां क्वॉडी उपर सदरहु बादशाहे भारे जय मेळव्यो.

इस्वि सन १७५ मां एवीडियस् केस्सियस् नामनो एक शूर-वीर अने कुशळ रोमन लश्करी अमलदार, जे एशियामां लश्क-रनो उपरी हतो, तेणे बंड करीने पोते ऑगस्टस् छे एवी दवाई फेरवी. पण केस्सियसने तो पोताना अमलदारो पैकी कोइए कतल कर्यो, अने तेथी करीने बळवानो अंत आवी गयो. केस्सियसना कुटुंब अने पक्षकारो प्रति पोतानी वर्त्तणुकथी एन्टोनिनसे करुणा दर्शावी अने जेमां राज्यमंडली(सॅनेट)ने तेमणे दया राखवानी भलामण करी छे, ते पत्र हजु पण मोजुद छे. (वल्केटियस्, एवीडियस् केस्सियस्, सी. १२).

केस्सियसना हुल्लड विषे सांभळतांज एन्टोनिनस् पूर्व तरफ जवा निकल्या. जो के इस्वि सन १७४ मां ते रोममां पाछा आव्यानुं मालुम पडे छे, तो पण ते जर्मन् लोको सामे लडाई चलाववाने पाछा गया, अने एम संभवित छे के ते जर्मन् लडा-ईमांथी परभार्या पूर्व तरफ कुच करी गया. तेमनी स्त्री फॉस्टीना के जे तेमनी साथे एशियामां गई हती, ते तौरसनी तलेटी आ-गळ अकस्मात् मरण पामी, जेथी तेमने मोटी दिलगिरी थई. कॅपिटोलिनस् के जेणे एन्टोनिनसनुं जीवनचरित्र लख्युं छे ते, अने वळी डायोन् केस्सियस् सदरहु हुरम उपर पोताना धणी प्रत्ये निंद्य बेवफाईनुं अने धिक्कारपात्र लंपटपणानुं तहोमत मूके छे. पण कॅपिटोलिनस् एम कहे छे के—एन्टोनिनस् कांतो ते जाणता न हता, अगर तो पोते जाणता न होय एवो डोल करता हता. सघळा जमानाओमां आवी द्वेषी अफवानी कांइ पण नवाई

होती नथी, अने बादशाही रोमनो इतिहास एवी अफवाओथी भरपूर छे. एन्टोनिनस् पोतानी स्त्रीने चहाता हता अने ते कहे छे के ते "आह्लादित, मायाळु अने निखालस हती." एवोज अपवाद फॉस्टीनानी मा, जे एन्टोनिनस् पायसनी स्त्री हती, तेना विषे पण बहार फेलायो हतो, अने तेम छतां पायस् पण पोतानी स्त्रीथी पूर्ण रीत्ये संतोष पाम्या हता. तेना मृत्यु पछी एन्टोनिनस् पायसे फ्रॉन्टोने पत्र लख्यो छे, तेमां ते एवुं लखे छे के एमनी स्त्री वगर रोममां एमना मेहेलमां रहेवा करतां जो एमने पोतानी स्त्री जोडे देशवटे रहेवुं पड्युं होत तो बेहेतर हतुं. आ बे बादशाहोए आप्यो छे तेना करतां पोतानी स्त्रीओनी चाल चलगत विषे वधारे सारो अभिप्राय आपे एवा घणा माणसो नथी. कॅपिटोलिनस् डायोक्लेटियनना समयमां लखी गयो छे. सत्य कहेवाने तेणे इरादो कर्यो हशे, पण ए एक बिचारो दुर्बल चरित्रलेखक छे. डायोन् केस्सियस् ए एक इतिहासकर्ताओमां सउथी द्वेषीलो लेखक छे. ते हमेश हरकोइनी विरुद्ध बदबोईनो हेवाल नोंधे छे, अने कदाच ते ए बदबोईने खरी पण मानतो होय.

एन्टोनिनसे सीरिया अने मिसर देश तरफ पोतानी मुसाफरी आगळ चलावी, अने एथेन्स थइने ईटाली पाछा आवतां एल्युसीनियन् रहस्यमां तेमने प्रवेश कराववामां आव्यो हतो. बादशाहनी ए रीति हती के जमानानी स्थापित थयेली धर्मक्रियाओने अनुसरवुं, अने योग्य विधिथी धर्मसंस्कार करवा. आ उपरथी आपणे एम अनुमान करी शकीए नहि के ए वहेमी हता; तो पण जो तेमनो ग्रंथ ते वहेमी न हता एम न दर्शावी आपतो होत, तो कदाच आपणे एम अनुमान करत पण खरा. पण आ तो फक्त राज्यकर्ताओनां जाहेर कृत्यो उपरथी हमेश तेओना खरा अभिप्रायो केवा छे ते सिद्ध थई शकतुं नथी एवा घणा

दाखलाओमांनो एक दाखलोज छे. शाणो हाकेम कढंगी रीत्ये पोतानी प्रजाना वहेमोनी पण सामे नहि थाय; अने लोको वधारे डाह्या थाय एवी जो के ते इच्छा करशे, तो पण ते समजशे के तेओना प्रथमथी बंधाइ गयेला विचारोने माठुं लगाडवाथी पोते तेमने डाह्या करी शकशे नहि.

इस्वि सन १७६ ना डीसेम्बरनी २३ मी तारीखे कदाच जर्मनीमां मळेली केटलीक फतेहोने लीधे एन्टोनिनस् अने एमनो पुत्र कॉम्मोडस् वाजते गाजते रोम नगरमां पेठा. बीजे वर्षे कॉ-म्मोडसने तेना पिता साथे राजकाजमां सामेल करवामां आव्यो अने तेणे ऑगस्टसनुं नाम धारण कर्युं. आ इस्वि सन १७७ नी साल ख्रिस्ती धर्मसंबंधी तवारिखमां प्रसिद्ध छे. एट्टेलस् अने बीजाओने ख्रिस्ती धर्ममां चुस्त रहेवा माटे लायोन् आगळ मारी नांखवामां आव्या हता. युसीबियसे संघरी राखेलो एक पत्र ए आ जुलमनो पुरावो छे (इ. एच्. ५. १)[1]. ते गेल्लियामां आवेला वियेन्ना (विएन्ने) अने लग्डुनम् (लायोन्) ना ख्रि-स्तीओ तरफथी एशिया अने फ्रीजियामांना तेमना ख्रिस्ती भाई-ओने लखेलो छे; अने ते लगभग आखो ने आखोज जाळवी राखवामां आवेलो छे. गेल्लियामां ख्रिस्तीओ उपर जे रीबामणी गुजरी हती तेनुं एमां घणुं विगतवार वर्णन छे, अने तेमां एम लखेलुं छे के ज्यारे रीबामणीनुं काम चालतुं हतुं त्यारे एट्टेलस् नामना एक ख्रिस्ती अने रोमना शहेरीनी मागणी प्रजा तरफथी घांटो काढीने करवामां आवी अने तेने रीबावनार अगडमां लाववामां आव्यो, पण त्यांना हाकेमे बादशाह तरफथी हुकम आवतां सुधी बीजाओनी साथे तेने केदमां राखवानो हुकम कर्यो.

---

१ Routh's Reliquiae Sacrae, एटले रौथकृत पवित्र इतिहासना प्रथम पुस्तकमां ते टिप्पणसहित छापेल छे.

हाकेमे एन्टोनिनसने अरजी करवानो मनसुबो कर्यो, ते पहेलां घणाने रीबाववामां आव्या हता. ते पत्र उपरथी जणाय छे के राजआज्ञा एवी हती के ख्रिस्ती लोकोने शिक्षा करवी, पण जो तेओ स्वधर्मत्याग करे तो तेमने छोडी देवा. आ उपरथी कार्य नवेसरथी शरू थयुं. जे ख्रिस्ती लोको रोमना शेहेरी हता तेमने गरदन मारवामां आव्या. बाकीनाओने अगडभूमिमां जंगली पशुने नांख्या. ख्रिस्ती धर्म संबंधी इतिहास लखनार केटलाएक अर्वाचीन लेखको ज्यारे आ पत्रनो उपयोग करे छे, त्यारे पोताना धर्मसंप्रदायने माटे प्राणत्याग करनार वीरोनां दुःखनी अद्भुत कथाओ विषे कशुं पण कहेता नथी. ते पत्रमां लख्युं छे के सेंक्टसने, गरम करेला लोढाना पत्रावडे, ज्यांसुधी तेनुं आखुं शरीर आळुं थइ गयुं अने तेनो मनुष्य आकार तदन बदलाई गयो त्यांसुधी बाळयो हतो; पण तेने अंग ताणवाने चापडे चढाव्यो त्यारे रीबामणी वखते तेनो आकार प्रथम हतो तेवो तेने फरीने प्राप्त थयो, के जेथी तेने आ प्रमाणे ते रीबामणी ए एक शिक्षाने बदले दुःख मटाडवाना उपायरूप थई पडी. तेने पछीथी पशुओ पासे फाडी नंखाव्यो अने तेने लोढानी खुरसी उपर बेसाडीने शेकवामां आव्यो. छेवटे ते मरण पाम्यो.

सदरहु पत्र पुरावानो एक आखो भाग छे. गॅल्लिक ख्रिस्तीओना नामे लखनार लेखक गमे ते माणस हतो, तो पण ते वार्तानी लौकिक तेमज अलौकिक एवी बंने प्रकारनी हकिकतने माटे आपणो साक्षी छे, अने ते वार्तोना एक भाग विषेनी तेनी शाहेदी आपणे मंजुर करी शकता नथी. तेमज बीजाविषेनी तेनी शाहेदी नामंजुर पण करी शकता नथी. जे वस्तुने आपणे संभव अथवा शक्यतानी हदमां रहेली मानीए छीए, तेवी वस्तुनी साबीती तरीके कमी पुरावाने आपणे घणीवार ग्राह्य गणीए छीए, अने ते पुरावो जे वस्तुनी साथे संबंध राखतो होय ते वस्तु ज्यारे

घणी असंभवित अने अशक्य जणाय छे त्यारे तेना तेज पुरावाने आपणे अग्राह्य गणीए छीए. जो के केटलाक अर्वाचीन लेखको तपास करवानी आ रीतिने अनुसरे छे, तो पण तपासनी ए रीति खोटी छे. तेओने एक वातमां जे रुचे छे, ते तेओ पसंद करे छे, अने बाकीना पुरावाने अग्राह्य गणीने काढी नांखे छे; अथवा जो तेओ काढी नांखता नथी तो ते पुरावाने तेओ अप्रामाणिक रीत्ये दबावी राखे छे. जो आ आखा पत्रने मान्य करे के कां तो ते आखा पत्रने अमान्य गणे, तोज कोइ माणस एक धोरणसर वर्ती शके; अने जो ते तेम करे तो पछी आपणे तेनो बेमांथी एके बाबत माटे दोष काढी शकीए नहि. पण जे कोइ ए पत्रने अमान्य करे ते पण एटलुं तो कबुल करे के खरी हकीकतने आधारे पण आवो पत्र लखायो होय, अने ते पत्रनुं अस्तित्व प्रतिपादन करवाना एक सउथी संभवित मार्ग तरीकेज ते आवी कबुलत करशे; परंतु तेना धारवा प्रमाणे, जो ते पत्रना लेखके केटलीक बाबतो खोटी लखेली छे, तो तेनी वातनो कयो भाग विश्वासपात्र छे ते ते कही शकशे नहि.

एन्टोनिनस् पूर्व तरफ गया ते दरमियानमां उत्तर सरहद उपर चालती लडाई अटकी न हती एम जणाय छे, अने पूर्वमांथी पाछा आव्या त्यारे फरीने ते बादशाह जंगली लोकोनी सामे थवाने पाछा रोमथी निकल्या. इस्वि सन १७९ मां जर्मन लोकोने एक मोटा संग्राममां हरावबामां आव्या. आ सवारीमां बादशाहने कोइ चेपी रोग लाग्यो हतो, तेथी लोअर पेन्नोनियामां सेवनदी उपर आवेला सिर्मियम् (मिट्रोविट्झ्) आगळ छावणीमां–पण बीजा ग्रंथोमां लख्या प्रमाणे विन्डेबोना (वियेन्ना) आगळ–५९ वर्षनी वये इस्वि सन १८० ना मार्चनी १७ मी तारीखे ते मरण पाम्या. तेमनो पुत्र कॉम्मोडस् तेमनी साथे हतो. बादशाहनुं शब अथवा तो घणुं करीने तेमनी वानी रोम

लेइ जवामां आवी हती, अने त्यां तेमने देवरूप गणीने पूजवामां आव्या. जेओथी बनी शके तेम हतुं, तेओए तो तेमनी आखी अथवा अर्धी प्रतिमा राखी, अने जे समये कॅपिटोलिनसे तवारिख लखी ते समये पण घणा लोकोपासे पोताना घरनी देवपूजामां एन्टो[illegible]नी प्रतिमाओ हती.—एक रीत्ये ते सत्पुरुष तरीके मनाया. कॉम्मोडसे पोताना पितानी यादगिरीमाटे एन्टोनाइन स्तंभ चणाव्यो, जे हाल रोमना पियाझ्झा कोलोन्नामां छे. ते स्तंभनी आसपास [illegible] वांकी रेखामां सपाटीमांथी सहज उपसी आवती जे आकृतियो मूकेली छे, ते मार्कोमेन्नि अने क्वॉडी उपर एन्टोनिनसे मेळवेला विजयोनुं तथा रोमन सिपाईओने ताजा करनार अने तेओना शत्रुओमां भंगाण पाडनार एक चमत्कारिक वरसादना झापटानुं स्मरण आपे छे. एन्टोनिनस्नी प्रतिमा ते स्तंभना मथाळाना भाग उपर मुकवामां आवी हती, पण कोइना जाणवामां आव्युं नहि एवे वखते पोप पांचमा सिक्स्टसे ते प्रतिमा खशेडावीने तेने ठेकाणे सेइन्ट पोलनुं मिश्र पितळनुं एक पूतळुं मूकावी दीधुं.

एन्टोनिनस्ना समयनो ऐतिहासिक पुरावो घणोज खामीवाळो छे, अने जे कांइ पूरावो रह्यो छे तेमांनो केटलोक मानवा जेवो नथी. क्वॉडी साथेनी लडाईमां इस्वि सन १७४ मां जे चमत्कार बन्यो ते विषेनी वात घणीज अजायब जेवी छे. रोमन् लश्कर तरशथी मरी जवानी धास्तीमां हतुं, पण एक अकस्मात् वावाझरडाए तेओने वरसादथी खूब पलाळी ठंडा करी दीधा, तथा तेज वखते तेओना शत्रुओ उपर विजळीना अग्नि अने करानी वृष्टि करी, अने रोमन् लोकोए भारे जय मेळव्यो. जे सघळा प्रमाणरूप लेखो ए लडाई विषे बोले छे ते सर्वे आ चमत्कार विषे पण कहे छे. रोमन् लेखको कहे छे के तेमना देवोए एम कर्युं, अने खिस्ती लोको कहे छे के बादशाहना लश्करमां ख्रिस्ती टुकडी मळी

हती तेथी एम थयुं. ख्रिस्तीओनी हकीकतने पुष्टि आपवाने वळी विशेषमां एम कहेवामां आवे छे के बादशाहे सदर्हु टुकडीने मेघगर्जनानो खेताब बक्ष्यो; पण डेसियर् अने बीजा लेखको जेओ आ चमत्कारविषेनी ख्रिस्ती लोकोनी हकीकतने टेको आपे छे, तेओ एम तो कबूल करे छे के आ सैन्यने जे गाजविजनो इल्काब बक्षवामां आव्यो हतो ते क्वॉडी उपर विजळी पडी हती ते कारणथी बक्षवामां आव्यो न हतो, पण ते सैन्यनी ढालो उपर विजळीनी आकृति हती तेथी एवो इल्काब आपवामां आव्यो हतो, अने वळी सैन्यनो आवो खेताब ऑगस्टसना समयमां पण हतो.

स्केलिजर् पण कही गयो हतो के एन्टोनिनसना राज्य पहेलां ते टुकडी "मेघ-गर्जना" कहेवाती हती. ऑगस्टसना समयनी सघळी लश्करी टुकडीओनुं जे वर्णन आपे छे ते डायोन् केस्सियसना ग्रंथ (पु. ५५, प्र. २३ अने रीमेरसनी नोंध) उपरथी आपणे आ जाणीए छीए. जे ट्रीएस्टथी मळी आव्यो हतो ते ट्रेजनना राज्यना वखतना एक लेखमां पण "गर्जना" अथवा "विजळी" ए नाम आवे छे. तेओए करेली ईश्वरनी प्रार्थनाओथी पोताने जे फतेह मळी ते कारणसर मेलिटीन् लश्करनी टुकडीने बादशाहवडे आ नाम आपवामां आव्युं हतुं, ए बाबतना प्रमाण तरीके युसीबियस् (५. ५.) हीरापोलिसना ख्रिस्ती धर्माध्यक्ष एपोलिनेरियसना लखाणमांथी उतारो करे छे, ते उपरथी आपणे एपोलिनेरियसना पुरावानी किमतनी तुलना करी शकीए एम छे. एपोलिनेरियसना कया पुस्तकमां ए हकीकत छे ते युसीबियस् कहेतो नथी. डायोन् कहे छे के मेघगर्जना नामनी टुकडी ऑगस्टसना वखतमां कॅप्पेडोसियामां राखवामां आवी हती. वॅलेसियस् पण केहे छे के रोमनी बादशाहीनी नोंधमां एम लखेलुं छे के गाजती (थंडरिंग) मेलिटीन् नामनी बारमी पलटननी सरदारी आर्मीनियाना सेनापतिना हाथ नीचे छे; अने ते पलटनने रहेवानुं

आ स्थळ जे आर्मीनियामां बताव्युं ते, कॅप्पेडोसियामां ते पलटनना ठेकाणाविषे डायोन् जे कहे छे, तेनी साथे मळतुं आवे छे. ए उपरथी वॅलेसियस् एवुं अनुमान करे छे के मेलिटीन् ए पलटननुं नाम न हतुं, पण जे शहेरमां ए पलटननो मुकाम रहेतो ते शहेरनुं नाम हतुं. जे तालुकामां आ शहेर हतुं ते तालुकानुं नाम पण मेलिटीन् हतुं. ते कहे छे के पलटनो जे जगाए कामपर हती ते जगो उपरथी तेमनां नाम पड्यां नथी, पण जे देशमां ते पलटनो भरी हती ते देशना नाम उपरथी तेओनां नाम पड्यां छे, अने ते माटे मेलिटीन् विषे जे युसीबियस् कहे छे ते तेने संभवित लागतुं नथी. तो पण वॅलेसियसे एपोलिनेरियस् अने टर्ट्युलियनना लेखोने आधारे एवुं मान्युं छे के उपर कहेलो चमत्कार बादशाहना लश्करमांना ख्रिस्ती सिपाईओए करेली ईश्वरप्रार्थनाने प्रतापे थयो हतो. रूफिनस् आ पलटनने मेलिटीन् एवुं नाम आपतो नथी—एम वॅलेसियस् कहे छे, अने रूफिनसे जाणी जोइने ए मुकी दीधुं होय एवो संभव छे, कारण के ए जाणतो हतो के मेलिटीन् ए नाना आर्मिनियामांना एक शहेरनुं नाम हतुं, के ज्यां एवा वखतमां ते पलटनने राखवामां आवी हती.

एम कहेवाय छे के बादशाहे पोताना जयनी हकीकत राज्यमंडळीने लखी, अने अमे ते खरुं मानीए छीए, केमके एवी रूढि हती. पण पोताना पत्रमां तेमणे शुं लख्युं हतुं ते आपणा जाणवामां नथी. कारण के ते पत्र हाल मोजुद नथी. डेसियर् एम मानी बेसे छे के बादशाहना पत्रनो राज्यमंडळीए अथवा तो ख्रिस्ती धर्मना शत्रुओए जाणी जोइने नाश कर्यो हतो, ते एवा हेतुथी के ख्रिस्तीओने अने तेमना धर्मने जे पुरावो आवो मानप्रद हतो ते पुरावो कायम रहे नहि. ज्यारे ते पत्रनी मतलब ते आपणने कहे छे त्यारे तेना पोतानाज कहेवामां विरोध आवी

जाय छे, तेनी खबर ए खोतरणां काढनारने पडती नथी; केमके ते कहे छे के ते पत्रनो नाश करवामां आव्यो हतो, अने युसीबियसने पण तेनो पत्तो लाग्यो न हतो. पण आ याद राखवा योग्य जय पछी एन्टोनिनसे रोमन लोकोने अने पवित्र राज्यमंडलीने ग्रीक् भाषामां लखेलो एक पत्र हजु मोजुद छेज. कोइ वार ते पत्र जस्टिने आपेला पहेला समाधाननी पाछळ छापेलो होय छे, पण तेनो तेवा समाधाननी साथे विलकुल संबंध नथी. आ पत्र घणाज मूर्खताभरेला जे बनावटना दस्तावेजो मोजुद छे तेमांनो एक छे, अने वळी एन्टोनिनसे राज्यमंडलीने निवेदन करेली हकीकतना असल कागळ उपरथी ते पत्रनी रचना थई होय ए पण शक्य नथी. जो ते पत्र खरो होत तो मनुष्यो उपर तेओ ख्रिस्ती होवाना कारणसर जुलम गुजारवानुं बादशाह उपर जे तहोमत छे तेमांथी एमने निर्दोष करत. केमके आ जुठा पत्रमां बादशाहने एम कहेता दर्शाव्या छे के जो कोइ माणस बीजा माणस उपर ख्रिस्ती होवानो फक्त आरोपज मुके अने ते आरोपी कबुल करे तथा ए सिवाय आरोपी विरुद्ध बीजुं कशुं होय नहि तो तेने मुक्त करवो. एक अथाग अज्ञानवाळा माणसे वळी आनी साथे एक एवुं राक्षसी उमेरणुं कर्युं छे के तेवी खबर आपनारने तो जीवतोज बाळवो.[२]

२ ए वातनी पुष्टिमां, रोमनी राज्यमंडलीने टर्ट्युलियने आपेला समाधाननुं प्रमाण युसीबियस् आपे छे (५. ५.). ते कहे छे के–ख्रिस्तीओए करेली ईश्वरप्रार्थनाने प्रतापे पोताना लश्करनुं रक्षण थयुं हतुं एवुं जेमां पोते जाहेर करे छे, एवा बादशाहना पत्रो मोजुद हता, अने वळी "जेओ अमारा उपर आरोप मूकवाने हिमत धरे तेओने मोतनी शिक्षा करवानी बादशाहे धमकी आपी हती"—एम टर्ट्युलियन् लखे छे. जे बनावटी कागळ हाल मोजुद छे ते टर्ट्युलियने जे पत्रो जोया हता ते पत्रोमांनो एक होय एम संभवित छे, केमके "पत्रो" एवुं बहु वचन ते वापरे छे. ते गाजती पलटनना आ चमत्कार विषे पुष्कळ लखवामां आव्युं छे, अने ते पण वांचवा लायक छे तेना करतां वधारे लखवामां आव्युं छे. आ मानी लीधेला चमत्कार विषे मोयलना ग्रंथो (लंडन, १७२६) मां एक विवेचन छे.

एन्टोनिनस् पायस् अने मारकस् एन्टोनिनसना समयमां जस्टिनसे आपेलुं पहेलुं समाधान बहार पड्युं, अने एम्. एन्टोनिनसना अमलमां ग्रीक् लोकोनी सामे टेटियननुं भाषण बहार पड्युं ते स्थपायेला धर्मो उपर सख्त हुमलारूप हतुं. ख्रिस्तीओनी तरफेणमां एथेनेगोरसनुं एम्. एन्टोनिनस् प्रत्ये भाषण पण बहार पड्युं, अने सार्डीसना धर्माध्यक्ष मेलिटोए वळी बादशाहने आपेलुं समाधान तथा एपोलिनेरियसे आपेलुं समाधान पण बहार पड्यां. जस्टिनसनुं प्रथम समाधान टी. एन्टोनिनस् पायस् अने तेना बे दत्तक पुत्र एम्. एन्टोनिनस् अने एल्. वीरस् प्रत्ये लखेलुं हतुं, पण तेमणे ते वांच्युं हशे के नहि ते आपणे जाणता नथी. जस्टिनसे आपेला बीजा समाधाननुं सरनामुं "रोमन राज्यमंडळीने" ए प्रमाणे करेलुं छे. पण आ सरनामुं कोइ नकल करनारे लखेलुं छे. प्रथम प्रकरणमां जस्टिनस् रोमन लोको प्रत्ये बोले छे. बीजा प्रकरणमां एम जणाय छे के एम्. एन्टोनिनस् अने एल्. वीरसना समयमां जे कार्य ताजुंज बन्युं हतुं ते विषे ते बोले छे, अने वळी अमुक स्त्रीविषे बोलतां साक्षात् बादशाहने संबोधीने ते कहे छे के "ते स्त्रीए आपने अरजी करी अने आपे ते अरजी मंजुर करी." बीजा वाक्योमां ते लेखक बंने बादशाहने अरज करे छे, ते उपरथी आपणे एवुं अनुमान करवुं जोइय के सदरहु समाधान तेओना सरनामे मोकलवामां आव्युं हतुं. युसीबियस् (इ. एच्. ४. १८) कहे छे के बीजुं समाधान एन्टोनिनस् पायसनी पछी गादीए बेसनारने सरनामे मोकलवामां आव्युं हतुं, अने ते तेने एन्टोनिनस् वीरस् कहे छे अर्थात् एम्. एन्टोनिनस् कहे छे. आ बीजा समाधानना एक वाक्यमां (सी. ८) जस्टि-

---

३. ओरोसियस्, ७. १४, कहे छे के—तत्वज्ञानी जस्टिनसे ख्रिस्ती धर्मना बचावमां लखेलो पोतानो ग्रंथ एन्टोनिनस् पायसने निवेदन कर्यो, अने ख्रिस्तीओ तरफ तेने दया उपजावी.

नस् अथवा तो तेनो लेखक गमे ते होय ते कहे छे के जे मनुष्यो उदासीनना मतने अनुसरीने चालता तेओ पण ज्यारे आस्तिकपणाना कारण प्रमाणे पोताना आचारनुं धोरण बांधता, त्यारे तेओनो धिक्कार करवामां आवतो तथा तेओने मारी नाखवामां आवता; दाखला तरीके ते लेखकना पोतानाज वखतमां थयेला हिरेक्लिटस्, म्युसोनियस् अने बीजाओ. कारण के जेओ न्यायबुद्धि प्रमाणे वर्तवा प्रयत्न करता अने दुष्टताथी दूर रहेता ते सघळाओने हमेशां धिक्कारवामां आवता हता; अने आसुरी माणसोना कार्यनो आ परिणाम हतो.

जस्टिनसने पोतानेज रोममां मारी नांखवामां आव्यो हतो एम कहेवाय छे, कारण के देवोने बलिदान आपवानी तेणे ना पाडी. एक ग्रंथमां कहेछे ते प्रमाणे ते हेड्रियनना राज्यमां बन्युं नहि होय; तेमज जो एम्. एन्टोनिनसना समयमां बीजुं समाधान लखायलुं होय तो पछी ते एन्टोनिनस् पायसना वखतमां पण नहि बन्युं होय; अने एवो पुरावो छे के ज्यारे रस्टिकस् ते शहेरनो प्रीफेक्ट (कोटवाळ) हतो त्यारे एम्. एन्टोनिनस् अने एल्. वीरसना समयमां आ बनाव बन्यो.[४]

---

४. जस्टिनसना ग्रन्थोमां (मार्टिरियम् सेन्क्टोरम् जस्टिनी एटले) स्वधर्मार्थे प्राणार्पण करीने जस्टिनसे प्राप्त करेल धर्मवीरत्व वगेरे विषयो जुवो (एड्. ओट्टो पु. २. ५५९). एम्. ओरेलियस् अने एल्. वीरस् ए बे बादशाहो विद्यमान अर्बिइराटना मुतालिक जुनियस् रस्टिकसना समयमां जे बन्युं ते विषे "थेमिस्टियसनुं भाषण ३४ मुं, डिन्डोर्फ पानुं, ४५१ अने केटलाएक आज्ञापत्रोना संग्रहमांथी सार संग्रह पुस्तक ४९. १. १, §. २ (ओट्टो)" जुवो. ते आज्ञापत्रमां "अर्बिना आजम फिदवी मुतालिक जुनियस् रस्टिकसने"–एवा शब्दो छे. जस्टिनसे अने बीजाओए धर्मवीर थइ प्राणार्पण कर्या ते विषेनो लेख ग्रीक् (युनानी) भाषामां लखायलो छे. ते आ प्रमाणे शरु थाय छेः–"मूर्तिपूजाना दुष्ट रक्षकोना समयमां शहेरोमां तेमज प्रगणामां वसता पाक ख्रिस्तीओनी सामे, जुठां पुतळांओनी आगळ अर्घ्यदान आपवानी तेओने फरज पाडवाने माटे, नापाक फर्मानो प्रसिद्ध करवामां आव्यां हतां. ते फर्मान प्रमाणे जस्टिनस्, चेरिटोन्, चेरिटोनी एक ओरत,

पोलिकार्पनेस्मिर्ना आगळ जे जुलम सहन करवो पड्यो ते जुलम एम्. एन्टोनिनसना वखतमां थयो हतो. स्मिर्नाना देवळ तरफथी फिलोमेलियमनां अने बीजां ख्रिस्ती देवळोने लखवामां आव्यो हतो ते पत्र ए तेनो पुरावो छे, अने युसीबियसे तेने संघरी राखेलो छे (इ. एचू. ४. १५). पण विवेचको पोलिकार्पना मृत्युना समयविषे मळता आवता नथी, बे अवधिमां लगभग चार बार वर्षनो तफावत रहेछे. पोलिकार्पे धर्मना टेकने अर्थे करेला प्राणत्यागनी हकीकत जोडे चमत्कार थया हता, जेमांनो एक युसीबियसे (४-१५) मूकी दीधो छे. पण ए बाबत ते पत्रना अशरे प्रसिद्ध करेला जुनामां जुना लटिन् तरजुमामां छे, अने एम धारवामां आवे छे के भाषांतर थयुं त्यारे युसीबियसना समय पछी घणी मुदत वीती न हती. पत्रने अंते नोंधमां लखेलुं छे ते उपरथी जणाय छे के पोलिकार्पना शिष्य इरेनियसनी नकल उपरथी केइयसे उतारी लीधो हतो अने ते उपरथी पछी कोरिन्थ

पइओन, लिबेरियेनस्, वगेरे पवित्र मनुष्योने रोमना मुतालिक अधिकारीनी समक्ष रजु करवामां आव्यां हतां."

तेओना धर्मवीरत्वनो लेख रस्टिकसे करेली आरोपीओनी तपासणी आपे छे. सघळा आरोपीओए खुल्ली रीत्ये कबुल कर्युं छे के पोते ख्रिस्तीओ छे. जस्टिनसने एम पूछवामां आव्युं छे के–जो तेने गुन्हेगार ठरावी मोतनी शिक्षा करवामां आवे तो तेणे सहन करेली यातनाना बदलामां स्वर्गमां जवानी अने इनाम मेळववानी तेने आशा छे ? तेणे जवाब दीधो के तेने मात्र आशा नथी; पण ते बाबतनी तेने खातरीज छे. छेवटे केदीओ हुकमने ताबे थाय छे के नहि तेनुं पारखुं लेवानी आज्ञा करवामां आवी; अर्थात् देवोने बळिदान आपवानुं तेमने फर्माववामां आव्युं. सघळाओए ते प्रमाणे करवानी ना पाडी, अने रस्टिकसे सिजा फर्मावी, ते एवी हती के जेओए देवोने बळिदान आपवानी अने बादशाहनो हुकम मानवानी ना पाडी तेओने कायदा प्रमाणे फटका मारवा अने तेओनो शिरःच्छेद करवो. पछी ते धर्मवीरोने गरदन मारवानी रोजनी जगोए लेइ जवामां आव्या अने गरदन मारवामां आव्या. तेओनां शबने केटलाक विश्वासीओ गुप्त रीत्ये लेइ गया अने तेमने योग्य स्थळे राखी मूक्यां.

आगळ सोक्रेटीसे उतारो करी लीधो हतो; "त्यारबाद पोलिकार्पे पोतानी दिव्य दृष्टिथी मारो ते तरफ लक्ष खेंचवाथी ते नकल शोधी काढीने में पायोनियसे उपर दर्शावेली नकल उपरथी फरीने लखी लीधुं, इत्यादि." पोलिकार्पना स्वमतार्थे प्राणत्यागनी वार्ताने चमत्कारिक बिनाओथी शृंगारेली छे, के जे हकीकत केटलाएक ख्रिस्ती धर्मना अर्वाचीन इतिहासकारोए छोडी देवानी छूट लीधी छे.[५]

एम्. एन्टोनिनसनी सत्ता नीचे ख्रिस्ती लोकोनी स्थितिनो बरोबर विचार बांधवामाटे आपणे पाछळ ट्रेजनना समयनो ख्याल करवो जोइये. नानो प्लिनी बिथीनियानो हाकेम हतो त्यारे ए भागोमां ख्रिस्ती लोको घणा हता, अने पुरातन धर्मना पूजको ओछा थता जता हता. देवळो उजड थयां हतां, उत्सवो बंध थइ पड्या हता अने बलिदाननां पशुओने यज्ञने माटे कोइ खरीदनार न हतुं. प्राचीन धर्मने निभावी राखवामां जे लोकोनो लाभ रहेलो हतो तेओने मालुम पड्युं के तेमनो लाभ जोखममां आवी पड्यो हतो. नानां मोटां सउ ख्रिस्ती स्त्रीओ अने पुरुषोने हाकेमनी आगळ रजु करवामां आव्यां हतां, पण, तेमनुं शुं करवुं तेनी ते हाकेमने कांइ सूज पडती न हती. जेओए पोते ख्रिस्तीओ छे एम कबुल कर्युं हतुं, अने पोताना धर्ममां मंड्या रह्या हता तेओने

---

५. कोनियर्स् मिडल्टन्, अलौकिक चमत्कारिक शक्तियोविषे तपास, वगेरे पृष्ठ १२६. मिडल्टन् कहे छे के पोलिकार्पना शबनी आसपास जे होलो उडतो हतो ते वात युसीबियसे मूकी दीधी छे, अने डोडवेले तथा आर्चबिशप उवेके पण तेमज कर्युं छे. उवेक् कहेछे के—"एवा चमत्कारो तरफ मने एटली थोडी प्रीति छे के बिशप अशरना हस्तलिखित पुस्तकमांथी ते बाबत कहेवा करतां युसीबियसनी पेठे ते वात छोडी देवी मने वधारे सारी लागी." तोपण मिडल्टन् कहे छे के आर्चबिशप उवेक् पाछळथी ते हस्तलिखित पुस्तकने एवुं सारुं साबीतीवाळुं कहे छे के आपणने तेना खरापणानी विशेष खातरीनी कांइ पण जरूर रहेती नथी.

बीजा कांइ माटे नहि तो तेओनी अडग हठने माटे पण शिक्षा करवी जोइये, एवा निर्णय सिवाय बीजा कोइ पण निर्णय उपर ते आवी शक्यो नहि. ख्रिस्ती लोको सामे कोइ गुन्हा साबीत थया होय एम एने लाग्युं नहि, अने फक्त जे वहेम लोकोने पोते स्वीकारेला मतनो इन्कार करवानी तक मले तो बंध पडे, एवा दुष्ट अने धोताळ वहेमनुं लक्षणज फक्त ते तेओना धर्मने आपी शक्यो. प्लिनीए ट्रेजनने पत्रमां आ वात लखी (प्लिनियस्, एप् १०. ९७). तेणे बादशाहनी आज्ञा मागी, कारण के शुं करवुं ते एने सुज्युं नहि. ते सूचवे छे के ख्रिस्ती लोकोविषे न्याय-खातानी रुए काम चलाववामां ते कोइ दिवस गुंथायो न हतो, अने तेथी शी बाबतनी तपास करवी अथवा क्यां सुधी तपास करवी अने केटले सुधी शिक्षा करवी ते ए जाणतो न हतो. आथी एम सिद्ध थाय छे के मनुष्य पोते ख्रिस्ती छे एवुं खुल्ली रीत्ये कहे तेविषे काम चलावीने तेने शिक्षा करवी ए कांइ नवी बाबत न हती. ट्रेजने ते पत्रना उत्तरमां लखेलो आज्ञापत्र मोजुद छे. सदरहु बाबतमां तेणे हाकेमनो फेंसलो बहाल राख्यो, पण तेणे कह्युं के ख्रिस्ती लोको सामे कशो तपास करवो नहि, कदापि कोइ माणसना उपर नवो धर्म अंगीकार कर्यानुं तहोमत मूकी तकसीरवान ठराव्यो होय तो पण जो ते प्रतिज्ञापूर्वक कहे के पोते ख्रिस्ती नथी अने मूर्तिपूजक धर्मना देवो प्रति पूज्य भाव दर्शावीने पोते

---

६ ओरोसियस् (७. १२.) ट्रेजने ख्रिस्ती लोको उपर करेला जुलमविषे अने प्लिनीए तेने करेली अरजी उपरथी ते बादशाह पोतानी सख्ताइ नरम पाडवाने दोरायो तेविषे बोलेछे. जेओ याहुदी लोकोने भ्रष्ट करीने तेओने नवा देवोने अनुसराववाने प्रयत्न करे तेओने माटे मुसा पेगंबरना कायदा प्रमाणे मोतनी सिजा हती. जो कोइ माणसने खबर न पडे तेवी रीत्ये भ्रष्ट करवामां आव्यो होय, तो ते माणसे पोताने भ्रष्ट करनार माणस जो के पोतानो भाइ, पुत्र, पुत्री, स्त्री के मित्र होय तो पण तेने जानथी मारी नांखवो. (Deut ड्युट १३.)

करेला इन्कारनी साबीती आपे तो तेने शिक्षा करवी नहि. वधारामां तेणे एम कह्युं के ननामी खबर उपर कांइ लक्ष आपवो नहि, कारण के एवी बाबतो खोटा दाखलारूप होय छे. ट्रैजन् नरम अने अक्कलवाळो पुरुष हतो, तेथी दया अने राजनीतिना बन्ने हेतुथी घणुं करीने जेम बनी शके तेम ख्रिस्तीओ विषे थोडो लक्ष आपवाने, अर्थात् जो बनी शके तो तेमने शान्तिमां रहेवा देवाने ते दोरायो. ख्रिस्ती धर्मना सबंधमां ट्रैजननो आज्ञापत्र ते आपणा जाणवामां आवेलुं एवुं रोमना राज्यना मुख्य पुरुषनुं पहेलवहेलुं कायदा बांधवा सबंधी कृत्य छे. तेना राज्यमां ख्रिस्ती लोकोने वधारे हरकत थई होय एम जणातुं नथी. ट्रैजननी पोतानी आज्ञाथी इग्नेटियसने धर्मार्थे प्राणत्याग करवो पड्यो ते वात खरी ऐतिहासिक वात होय एम सर्व तरफथी कबुल राखवामां आवतुं नथी[७].

हेड्रियनना समयमां ख्रिस्ती लोकोना मोटा वधारानी अने तेओ तरफ सामान्य प्रकारना लोकोनी दुश्मनीनी दरगुजर करवानुं रोमन राज्यथी बनी शके तेम न हतुं. प्रांतना हाकेमो तेमनो केडो छोडवा खुशी हता तो पण मूर्त्तिपूजक प्रजावर्ग के जे ख्रिस्ती लोकोने नास्तिक तरीके गणता हता तेमना जनूनने तेओ अटकावी शक्या नहि. जेओ रोमना आखा राज्यमां वसेला हता ते याहुदी लोको पण मूर्त्तिपूजकोनी माफक ख्रिस्ती लोको तरफ दुश्मनावट राखता हता. हेड्रियनना समयथी ख्रिस्ती लोको

७. आर्चबिशप अशरे प्रथम ल्याटिन् भाषामां प्रसिद्ध करेलुं "इग्नेटियसना धर्मवीरत्वनुं पुस्तक" ते इग्नेटियसना मृत्युने लगती बिनाओने माटे मुख्य पुरावो छे.

८. [डाइओग्नेटम्. सी. ५] मां जस्टिनसनो पुरावो नीचेनी मतलबनो छे:— "ख्रिस्तीओ जाणे जुदीज जातना माणसो होय तेवी रीत्ये याहुदी लोकोवडे तेओ उपर हुमलो करवामां आवे छे, आ ग्रीक् [युनानी] लोकोवडे तेमने सतावणी करवामां आवे छे; अने जेओ ख्रिस्तीओने धिक्कारे छे तेओ पोतानी शत्रुतानुं कारण बतावी शकता नथी.

तरफनी आजीजीओनो आरंभ थाय छे, जे स्पष्ट रीत्ये देखाडी आपे छे के ते समये लोकोनी लागणी ख्रिस्ती लोको तरफ केवी हती. एशियामांना बादशाही प्रतिनिधि मिन्युसियस् फन्डेनस् उपरनुं हेड्रियननुं आज्ञापत्र के जे जस्टीने[१] लखेली पहेली आजीजी अथवा समाधानने अंते छे ते हाकेमने एवी सूचना करे छे के ते निरपराधी ख्रिस्ती लोकोने हरकत थवी जोइये नहि, अने खोटां तहोमत मुकनाराओने तेमनी पासेथी जबरदस्तीथी पैसा कढाववा देवा नहि. ख्रिस्ती लोको सामे तहोमतनामां बराबर रूपमां बनाववां अने लोकोना पोकार तरफ कशुं ध्यान न आपवुं; ज्यारे ख्रिस्ती लोको उपर गेरकायदे कृत्य कर्या बदल काम चलावी तेमने गुनेहगार ठरावामां आवे त्यारे तेओने गुन्हा प्रमाणे नसियत करवी, अने खोटा आरोप मुकनाराओने पण नसियत करवी. एम कहेवाय छे के एन्टोनिनस् पायसे पण एज मतलबनां आज्ञापत्रो प्रसिद्ध कर्यां छे. हेड्रियनना आज्ञापत्रना शब्दो ख्रिस्ती लोकोने घणाज अनुकूल होय एम देखाय छे, पण आपणे जो तेने एवा अर्थमां समजीए के गेरकायदानां कृत्य करवा माटे फक्त बीजा लोकोनी पेठे तेओने पण नसियत करवी जोइये तो तेनो कशो अर्थज निकळशे नहि, कारणके ते तो बादशाहनी सलाह पुछ्या

---

१. अने युसीबियस् इ. एच् ४. ८, ९. मां, ओरोसियस् (७. १३.) कहे छे के इशु ख्रिस्तना धर्मप्रचारक शिष्योना एक कवॉड्रेटस् नामना शिष्ये अने एथेन्स नगरना एरिस्टाइडीझ् नामना एक प्रामाणिक अने डाह्या माणसे, तथा सेरेनस् ग्रेनियसे ख्रिस्ती धर्मविषे लखेलां पुस्तकोनुं ज्ञान मेळव्या पछी हेड्रियने एशियाना हाकेमनी वती काम करनार अधिकारी मिन्युसियस् फन्डेनसनी उपर आ आज्ञापत्र मोकल्युं. हेड्रियनना आज्ञापत्रनी ग्रीक् भाषानी मूळ प्रतमां एशियाना राज्यकारभारमां मिन्युसियस् फन्डेनसना पूर्वाधिकारी सेरेनियस् ग्रेनियेनसनुं नाम आवे छे.

हेड्रियननो आ आज्ञापत्र ते समाधाननी अरजीमां कोइ आवृत्तिकारे उमेरेलो छे, ए खुल्लुं छे. ते समाधानने अंते आ शब्दो छे:—

सिवाय पण करी शकात. ते आज्ञापत्रनो खरो हेतु तो ए छे के जो ख्रिस्ती लोको पोताना मतनो आग्रह पकडी रहे अने मूर्तिपूजाना धर्मने कबुल करीने पोते ख्रिस्ती धर्म तजी दीधो छे एम साबीत करी आपे नहि तो तेमने शिक्षा करवी जोइये. आ ट्रेजननो नियम हतो अने ख्रिस्ती लोकने ट्रेजनना करतां हेड्रियने कांइ वधारे लाभ आप्यो होय एम मानवाने आपणने कांइ कारण नथी. जस्टिनसना वळी प्रथम समाधानने अंते एशियाना हाकेमने लखेलुं एन्टोनिनस् पायसनुं एक आज्ञापत्र छपायलुं छे; अने ते वळी युसीबियसमां पण छे (इ. एच् ४. १३). ते आज्ञापत्रनी तारिख एन्टोनिनस् पायसना त्रीजा प्रतिनिधिपणाना समयनी छे.[१०] ते आज्ञापत्र एम जाहेर करे छे के ख्रिस्तीओ (केमके ख्रिस्तीओनुं नाम ते आज्ञापत्रमां आवतुं नथी तोपण ख्रिस्तीओने उद्देशीने ते लखेलुं छे) रोमन लोकोनी राजसत्तानी सामे थवाने कोइ पण यत्न करता होय ते सिवाय तेमने हरकत करवानी नथी, अने कोइ पण माणसने मात्र ते ख्रिस्ती होय तेटलाज माटे शिक्षा करवानी नथी. पण आ आज्ञापत्र कृत्रिम छे. रोमन् इतिहासथी सामान्यपणे वाकेफगार होय एवो हरकोइ माणस ते आज्ञापत्रनी इबारत अने मतलब उपरथी समजी शकशे के ए एक लोचाळीओ खोटो दस्तावेज छे.

---

१० जेमां टी. एन्टोनिनस् अने तेना बे दत्तक पुत्रोने संबोधीने लखेलुं छे ते जस्टिनसनी प्रथम आजीजी अथवा समाधाननी अरजीना प्रारंभनो भाग आप्या पछी युसीबियस् (इ. एच् ४. १२.) एटलुं उमेरे छे के "एशियामांहेना बीजा ख्रिस्ती बंधुओए अरज करवा उपरथी तेज बादशाहे एशियाना हाकेमने नीचेनुं आज्ञापत्र बक्षावीने मान आप्युं". जो के युसीबियसे उपरज एम कह्युं छे के ते आपणने एन्टोनिनस् पायसनो पत्र आपवानो हतो, तेम छतां आ आज्ञापत्र के जे युसीबियसना पाछलाज प्रकरणमां छे ते फक्त सीझर मार्कस् ऑरेलियस् एन्टोनिनस् ऑगस्टस् आर्मीनियस् एकलाना नामनो छे. ते आज्ञापत्रनी बे नकलो वचे मथाळाना तफावत उपरांत केटलाक मुद्दाना

एम्. एन्टोनिनसना समयमां जुना अने नवा धर्म वच्चेनो विरोध एथी पण वधारे कट्टो हतो, अने मूर्तिपूजक धर्मना संगीओ ख्रिस्तीधर्म तरफथी थता हुमलानी सामे वधारे नियमबंध अटकाव करवाने सत्तावाळाओने उश्केरता हता. एम्. एन्टोनिनसने मेलिटो पोते लखेला आजीजीरूप समाधानमां एशियाना ख्रिस्ती लोको उपर नवा बादशाही हुकमोने अनुसरीने जुलम गुजरेलो एम जणावे छे. ते कहे छे के जेओ बीजानी मिलकतनो दुर्लभ राखता हता तेवा खोटी खबर आपनाराओ, जेओ कांइ पण नुकशान करता न हता तेओने लुटवाना साधन तरीके, आ हुकमोनो उपयोग करता हता. एक न्यायी बादशाहे आवो कोइ पण अन्यायी हुकम आप्यो होय तेविषे तेने अंदेशो रहे छे, अने जो छेल्लो हुकम खरेखर बादशाह तरफथी थयो होय तो ख्रिस्ती लोको तेने आजीजी साथे अरज करे छे के अमने अमारा दुश्मनोने स्वाधीन करशो नहि''. आ उपरथी आपणे अनुमान करीए छीए के कांइ

तफावतो छे, ते तफावतने लीधे एम कहेवुं अशक्य थइ पडे छे के ए दस्तावेजनी बनावट करनारे ए आज्ञापत्रने पायसना नामनो ठराववाने के एम्. एन्टोनिनसना नामनो ठराववाने धार्यो हशे.

एलेक्झान्ड्राइन् क्रोनिकम् ग्रंथनो कर्त्ता कहे छे के मेलिटोनी अने ख्रिस्ती धर्मना बीजा आगेवानोनी आजीजीओथी मार्कसने असर थवाथी एशियाना कोम्युन (हाकेम) ने तेणे एक पत्र लख्यो तेमां ख्रिस्तीओने तेओना धर्मने लीधेज पजववानी मना करी. वेलेसियम् आने युसीबियस् (४, १३) नांहेलो पत्र अथवा आज्ञापत्र, अने जेनी मतलब हुं थोडाज वखतमां आपवानो छुं ते मेलिटोनी आजीजीनो उत्तर धारे छे. पण युसीबियसना ग्रन्थमां छे ते आ पत्र मार्कसे लख्यो न हतो एतो खातरीपूर्वक छे, अने मेलिटोने तेणे शो उत्तर आप्यो ते आपणे जाणता नथी.

११ जुओ—युसीबियस्, ४. २६; अने राउथ्कृत रेलिक्वी सेक्रे [पवित्र यादगिरी] नो प्रथम ग्रंथ, तथा ते उपरनी टीका. आ भागनो अर्थ करवो सहेलो नथी. मोशेइम् एक वाक्यनो अर्थ एटलो खोटो समज्यो हतो के तेणे एवुं प्रस्थापित कर्युं के जेओ ख्रिस्ती धर्म तजी दे तेओने मार्कसे इनाम आपवानुं वचन आप्युं; जे अर्थ केवळ खोटो छे. मेलिटो ख्रिस्तीधर्मने "आपणुं एवुं तत्व-

नहि तो एम्. एन्टोनिनस्ना एवा बादशाही आज्ञापत्रो अथवा तो धारा हता के जे उपर आ जुलमोनो पायो रचायो हतो. तहोमदारो पोताना धर्मनो इनकार करे नहि तो अमुक माणस ख्रिस्ती छे ए वात खरी होय तो ए समये गुन्हारूप गणाती अने तेने माटे

ज्ञान" कहे छे के जे तत्वज्ञान जंगली [यहूदी] लोकोमां शरु थयुं अने ऑगस्टसना समयमां रोमन प्रजामां विस्तार पाम्युं अने तेथी रोमन पादशाहीने मोटो लाभ थयो,केमके ते समयथी रोमन लोकोनी सत्ता मोटी अने प्रतापी थई हती.ते कहेछे के रोमन बादशाहीनी साथे जे तत्वज्ञान वृद्धि पाम्युं हतुं अने जेनी शरुआत-ऑगस्टसनी साथे थई हती,—जे तत्वज्ञानने एन्टोनिनसना पूर्वजो अथवा पूर्वाधिकारीओ बीजा धर्मोनी साथे मान आपता आव्या छे, ते तत्वज्ञाननुं जो बादशाह रक्षण करशे तो तेने ऑगस्टसनी पाछळ बादशाही सत्ता उपर आवनार तरीके लोकोनी रूडी दवा मळी छे अने मळशे. वळी ते विशेष एम कहे छे के ऑगस्टसना समयथी ख्रिस्ती धर्मे कांइ पण इजा सहन करी न हती पण उलटुं कोइ पण मनुष्य इच्छे तेवां समग्र मानआवरु भोगव्यां हतां. ते कहे छे के फक्त नेरो अने डोमिटियननेज केटलाक द्वेषी माणसोए ख्रिस्ती धर्मनी निंदा करवाने भमाव्या हता, अने आज ख्रिस्तीओ सामेना खोटा आरोपोनुं मूळ कारण हतुं, पण एन्टोनिनसनी लगोलग पहेलां जे बादशाहो थया तेमणे आ भूल सुधारी हती; तेमणे ख्रिस्तीओने हेरान करवानो प्रयत्न करनाराओने वारंवार पोतानां आज्ञापत्रोथी ठपको आप्यो हतो. एन्टोनिनसना दत्तक वडवा हेड्रियने घणाओने आज्ञापत्रो लख्यां हतां अने तेमां एक एशियाना हाकेम फन्डेनसने पण लख्युं हतुं. ज्यारे बादशाहीमां पोतानी साथे मार्कसने भेळववामां आव्या त्यारे एन्टोनिनस् पायसे पोतानी सत्ता नीचेनां शहेरोने लखी मोकल्युं के तेओए ख्रिस्तीओने हेरान करवा नहि; बीजा भेगा लारिस्सा, थेस्सालोनिका अने एथेन्सना लोको तथा सघळा ग्रीसना लोकोने तेणे लख्युं हतुं. मेलिटोए आ प्रमाणे उपसंहार कर्यो छेः—अमे एम समजीए छीए के आ बाबतोविषे जेनुं मन तेओनाज (एटले तारा पूर्वाधिकारीओ अथवा पूर्वजोनाज) जेवुं छे, अरे नहि— जेनुं मन तेओना करतां पण घणुं वधारे दयाळु अने तत्वानुरागी छे एवो तुं—तारीपासे अमे जे जे मागीए छीए ते सघळुं तुं करीश. जे वर्षमां वीरस् गुजरी गयो ते इ. स. १६९ मां आ आजीजीपत्र अथवा क्षमापन लखेलुं हतुं, केमके तेमां फक्त मार्कस् अने तेना पुत्र कोम्मोडस् विषेज लखेलुं छे. मेलिटोना पुरावा प्रमाणे एम जणाय छे के फक्त नेरो अने डोमिटियनना समयमांज ख्रिस्तीओने तेओना धर्मने लीधे शिक्षा करवामां आवी हती, अने

शिक्षा थती. त्यारबाद स्मिर्नाआगळ थयेला जुलमो गुजरवा मांड्या, तेनो वखत केटलाएक अर्वाचीन टीकाकार लायोनना जुलम पहेलां दश वर्ष उपर इ. स. १६७ मां ठरावे छे. एम्. एन्टोनिनसना प्रांतोना हाकेमोने ट्रेजनना आज्ञापत्रमांथी पण ख्रिस्तीओने शिक्षा करवानो तेओने आधार मळे एवुं जोइये तेटलुं मळी आव्युं होय अने जो के हाकेमो पोते जुलम करवाने नाखुश होय तो पण लोकोना धर्मान्धपणाए तेमने पण जुलम करवानी फरज पाडी होय. पण ख्रिस्ती लोको सघळी मूर्तिपूजकोनी क्रियाओनो अनादर करवा उपरांत खुल्ली रीत्ये एम पकडी रह्या हता के सघळा मूर्तिपूजक धर्मो खोटा छे, ए वात आपणे विसरी जवी जोइए नहि. आ प्रमाणे ख्रिस्ती लोकोए मूर्तिपूजनना विधियो विरुद्ध लडाई उठावी, अने आ लडाई ते रोमन् राज्यसत्तानी सामेज शत्रुतानुं नगारुं बजववा बरावर हती एम कहेवुं भाग्येज जरूरनुं छे; केम के ते राज्यसत्ता—ते बादशाहीनी अंदर चालता सघळा वहेमी संप्रदायोने निभावी लेती, अने तेथी बाकीना सघळा धर्मो खोटा छे अने ते बादशाहीमां चालती सघळी भव्य धर्मक्रियाओ ते मात्र भूतप्रेतनीज पूजा छे ए प्रमाणे जे गाजी वगाडीने कहेतो हतो एवा—एक बीजा धर्मने अविरोधी रीत्ये सहन करी शके तेम न हतुं.

जो आपणी पासे ख्रिस्ती धर्म संबंधी खरो इतिहास होत, तो रोमन् बादशाहोए नवो धर्म अटकाववाने केवी रीत्ये प्रयत्न कर्यो तेनी, जस्टिन् पोतानी आजीजी अथवा समाधानमां मक्कमपणे कहे छे—

फरीने तेवी पजवणीओ एम्. एन्टोनिनसना वखतमां शरू थई अने ते तेना हुकमने आधारे करवामां आवती हती; मेलिटोनुं धारवुं एवुं जणाय छे के ते हुकमोनो खोटो उपयोग करवामां आव्यो हतो. ते खुल्ली रीते कहे छे के "एशियामां हाल ताजा बादशाही फरमानोथी दैवी (ख्रिस्तीओनी) जातने पजववामां अने हेरान करवामां आवे छे, के जे पहेलां कदी पण बन्युं न हतुं." पण आपणे जाणीए छीए के आ सघळुं साचुं नथी, अने ख्रिस्तीओने ट्रेजनना समयमां शिक्षा करवामां आवी हती.

अने ते कहे छे ते सत्य कहे छे एमां मने कांइ शक नथी—ते प्रमाणे ख्रिस्तीओने छेवटे ख्रिस्तीओ तरीकेज शिक्षा करवानो तेमनो नियम तेओए केवे प्रकारे अमलमां आण्यो तेनी, आ बाबतमां लोकोना पोकारनी अने हुलडोनी केटली असर थई हती तेनी, तथा घणा झनूनी अने अज्ञान ख्रिस्तीओए (केम के एवा पण घणा हता) सामा पक्षना झनूनने प्रदीप्त करवाने अने रोमन् राज्यसत्ता अने नवा धर्म वच्चेनो झगडो कट्टो बनाववाने बळतामां केटलुं घी होम्युं तेनी आपणने खबर पडत. आपणा ख्रिस्ती धर्म सबंधी इतिहासो जे मोजुद छे ते खुल्ली रीत्ये खोटा ठराववामां आव्या छे, अने तेमां जे कांइ सत्य छे तेमां बहुज अतिशयोक्ति करेली छे; पण ए वात तो नक्की छे के एम्. एन्टोनिनसना वखतमां मूर्ति पूजनार लोको ख्रिस्ती लोकोनी सामे खुल्ली दुश्मनावटमां हता, अने एन्टोनिनसना राज्यमां मनुष्योने तेओ ख्रिस्ती होवाना कारणसर मारी नांखवामां आवता हता. युसीबियस् पोतानी पांचमा पुस्तकनी प्रस्तावनामां इसारो करे छे के एन्टोनिनसना राज्यना सत्तरमा वर्षमां दुनियाना केटलाएक भागमां ख्रिस्तीओ उपरनो जुलम वधारे प्रबळ थयो अने ते जुलम शहेरोमां साधारण वर्गना लोकसमुदाय तरफथी करवामां आवतो हतो; अने ते तेनी हमेशनी अतिशयोक्ति करवानी ढबमां वधारामां एम कहे छे के एक प्रजामां जे बन्युं ते उपरथी आपणे अनुमान करी शकिये छीए के पृथ्वीना वसी शकाय एवा भागमां हजारो धर्मवीरो खपी गया. जे प्रजाविषे ते कहे छे ते गेलियानी छे; त्यारबाद आगळ जतां ते वायेना अने लग्डुनमनां देवळोनो पत्र आपे छे. जुलमनुं खरुं कारण तेणे प्रजानुं झनून कहेलुं छे अने हाकेमो तथा बादशाह बंनेने आवां फितुरथी घणीज तस्दी पडती हती ए संभवित छे. मार्कसने आ क्रूर कामोनी जाण केटली हती ते आपणा जाणवामां नथी, कारण के तेना राज्यनी तवारिखना लेखो घणा

अपूर्ण छे. ख्रिस्ती लोको विरुद्ध कायदो तेणे बांध्यो नथी, कारण के ते तो ट्रेजने बांध्यो हतो; अने जो आपणे एम कबुल करीए के ख्रिस्ती लोकोने एक कोराणे पड्या रहेवा देवाने ते खुशी होत तो पण तेम करवुं तेना हाथमां हतुं एम आपणे छाती ठोकीने कही शकीशुं नहि, कारण के जेवी सत्ता केटलाक अर्वाचीन राजओने हती तेवी बेहद सत्ता एन्टोनिनसने पण हती एम धारी लेवुं ए एक मोटी भूल गणाय. राज्यनां अमुक बंधारणथी, राज्यमंडळीथी अने पोतानी पहेलां थइ गयेला बादशाहोना दाखलाथी तेनी सत्तानी हद बांधवामां आवी हती. जो के तेना पोतानाज शब्दो उपरथी

१२ जुवो ११. ३. आ वाक्यना सबंधमां क्लेमेन्स् के जेनो उतारो गेटेकरे आप्यो छे ते कहेछे तेवां धर्मान्ध माणसोविषे घणुं करीने बादशाह बोले छे. समजु ख्रिस्तीओ तेमने पोताना धर्मभाइ तरीके स्वीकारता न हता. क्लेमेन्स् कहे छे के "वस्तुतः विद्यमान ईश्वरनुं ज्ञान एज धर्मवीरत्वनो खरो पुरावो छे, पण जे माणस ईश्वरना अस्तित्वनी साबीती पोताना मरणथी आपे छे ते तो एक आत्महत्यारो छे" एम कहीने आ धर्मभ्रष्ट मनुष्योमांना केटलाएक पोतानी जिंदगी उपरना मोह वडे अपवित्रता अने कायरता दर्शावी आपे छे. तेमज जेओ मोतमां झंपलावे छे तेओने पण अमे ठपको देइये छीए, केम के जेओ अमारामांनां नथी पण जेओ अमारा जेवुंज 'ख्रिस्ती' नाम धरावे छे तेवां केटलांक माणसो एवां छे के जेओ पोतानी मेळे जइने मोतमां होमाय छे. अमे तेओविषे एम कहीए छीए के जो के तेओने जाहेर रीत्ये देहांत दंड देवामां आवे छे तो पण तेओ धर्मवीर थया विनाज मरण पामे छे, अने जेम हिंदुस्तानना देहकष्टथीज मोक्ष माननार तामस तपस्वीओ जेम मूर्खाइ भरेली रीत्ये अग्निमां बळी मरे छे तेम जेथी कांइ पण अर्थ सरतो नथी एवा मोतमां तेओ पोते पडतुं मूके छे." पहेलांना ख्रिस्ती-धर्मविषेना पोताना पुस्तक २.प्र ७ मां केव् नामनो ग्रंथकार ख्रिस्तीओविषे आ प्रमाणे कहे छेः—"पशुओनां टोळांने हांकीने कसाइखानांमां लेइ जवामां आवे छे तेना करतां पण वधारे जलदीथी तेओ रीबावीने मारी नाखवानी जगोए जइने टोळाबंध एकठां थतां. रीबामणीना पंजामां पडवाने तेओ वळी तलसतां. जो के इग्नेटियस् पोतानो देहान्त दंड भोगववाने माटे ते वखते रोमतरफ मुसाफरीमांज हतो, तो पण तेप्रमाणे मरवानी पोतानी अतिउत्कट इच्छा दर्शाव्या विना तेनाथी रहेवातुं न हतुंः—अहो! मारे माटे तैयार करेलां जंगली पशुओनी पासे

जणाइ आवे छे तेम ख्रिस्तीओविषे तेनो कांइ सारो अभिप्राय न हतो, तो पण आवो समर्याद सत्तावाळो माणस स्वतः प्रवृत्तिथी जुलम करनारो हतो एम आपणे कबुल करी शकीए तेम नथी, कारण के एवो जुलम करनार ते हतो एवो कांइ पण पुरावो नथी.[13] पण रोमन् धर्म प्रत्ये तेमनी दुशमनावट सिवाय ख्रिस्तीओविषे ते बीजुं कांइ पण जाणतो न हतो; अने समाधान [illegible] जे कांइ प्रतीतिनां वाक्यो कहेता ते खरां होय के खोटां होय तो पण तेओ राज्यने भयंकर छे एम पण कदाच ते मानतो हशे. में जे आटलुं कह्युं ते एटला माटे के जे माणसने तेना समयना माणसो अने पाछला जमानाओ सद्गुण अने शुभेच्छाना नमुना तरीके पूज्य गणाता आव्या छे एवा माणसनी विरुद्ध जे कांइ आणी शकाय ते सघळुंए कही देइये नहि तो ते गेरव्याजबी गणाय. जो केटलाएक दस्तावेजोनुं खरापणुं हुं मान्य राखुं तो तो पछी कोइ पण जुलम थवा देवाना तहोमतमांथी पण ते बिलकुल निर्दोष ठरे एम छे; पण हुं तो सत्यने शोधुं छुं अने

जाउं तो केवुं सारूं; हालने हाल हुं तेओने भेटुं एम हुं अंतःकरणपूर्वक इच्छुं छुं; मारो भक्ष करी जवाने अने बीजाओनी उपर हुमलो करतां ते व्हीतां तेम मारा-उपर तूटी पडतां नहि व्हीवाने हुं तेमने नोतरीश अने उत्तेजन आपीश; अरे जो तेओ तेम करवाने ना पाडशे तो हुं तेमने तेम करवानी फरज पण पाडीश". अने एज मतलबनी विशेष हकीकत युसीबियसना ग्रंथमांथी मळी आवे छे; केव् के जे एक प्रामाणिक अने भलो माणस छे ते तो आ सघळुं ख्रिस्तीओना वखाणमां कहे छे; पण हुं धारूं छुं के आ बाबतमां तेणे भूल खाधी छे. मरण पर्यन्त पण जे पोताना सिद्धान्तोने पकडी रहे छे तेवा माणसने आपणे वखाणीए छीए; पण आ धर्मान्ध ख्रिस्तीओ तो जेमने क्लेमेन्स् तिरस्कारमी नजरे जुए छे तेवा तामस तपथी मोक्ष माननार जेवा छे.

१३ ओरोसियस् (७. १५) के जे एम कहे छे के एशिया अने गेलियामां त्यांना हाकेम मार्कसना हुकमोथी पार्थियन् लडाइना समयमां ख्रिस्तीओने महा-पजवणीओ थई हती, अने "घणा माणसोने धर्मवीरनी पदवीनो ताज मल्यो हतो" तेना सिवाय बीजो कांइ पण पुरावो नथी.

मने खातरी छे के ते दस्तावेज जुठा छे तेथी तेमने (बादशाहने) जेटलो घटे तेटलो ठपको हुं तेमने शिर रहेवा देउं छुं."[14] हुं वधारामां एटलुं कहुं छुं के जे धर्मविषे पोते कशुं पण जाणता न हता"[15] ते धर्ममांथी एन्टोनिनसे नीतिशास्त्रना कोइ पण नियमो मेळव्या न हता ए तो तदन चोकसज छे.

ते बादशाहना विचारो अथवा तो सामान्य रीत्ये ते विचारोने तेमनां चिन्तनोनुं नाम आपवामां आवे छे ते वस्तुतः एक ग्रंथ छे एमां कांइ शक नथी. प्रथम पुस्तकमां ते पोतानाविषे पोताना कुटुंबविषे अने पोताना शिक्षकोविषे बोले छे, अने बीजां पुस्तकोमां ते पोताना पिंड विषे बोले छे. स्युइडासे बार (स्कंध) पुस्तकमां रचायला एन्टोनिनसना ग्रंथविषे लख्युं छे (५. मार्कस्), तेने तेणे "तेना जीवननी पद्धति" एवुं नाम आप्युं छे; अने पोताना शब्दार्थकोषमां केटलाक शब्दोनी नीचे सदहु पुस्तकमांथी उतारा आपे छे तेमां ते बादशाहनुं नाम आपे छे पण ते पुस्तकनुं नाम नथी आपतो. वळी ते बादशाहनुं नाम आप्या सिवाय स्युइडासे एन्टोनिनसना ग्रंथमांथी उतारेलां वाक्यो पण छे. पुस्तकनुं खरुं नाम जाणवामां नथी. क्सिलेन्ड के जेणे आ पुस्तकनी प्रथम आवृत्ति प्रसिद्ध करी हती (झ्युरिच्, १५५८, ल्याटिन् तरजुमा साथे अष्टपृष्ठि कद) तेणे जे हस्तलिखित प्रत वापरी हती तेमां

---

१४ डोकटर एफ. सी. बॉरे पोतानां "Das Christenthum and die Christliche Kirche der drei ersten Jahrhunderte&c. —एवा नामना ग्रन्थमां आ प्रश्न मोटी विवेकबुद्धिथी अने न्यायबुद्धिथी तपास्यो छे, अने हुं एम मानुं छुं के आपणा प्रमाणरूप लेखो उपरथी आपणने जेटलुं सत्य जणाइ शके छे तेटलुं सत्य तेणे जणाव्युं छे.

१५ "सारसंग्रह" पुस्तकमां, (४८, १९, ३०,) मोडेस्टिनसना ग्रन्थमांथी नीचेनो उतारो छेः—मार्कस् ओरेलियसनो अवो हुकम छे के जेथी बहेम भरेली देवोनी भीतिथी अदढ मननां मनुष्यो भय पामे एवुं कांइ पण जे कोइ करशे तेने काळेपाणीए मोकलवामां आवशे.

बार पुस्तक (स्कंधो) हतां, पण सदरहु हस्तलिखित ग्रंथ हाल क्यां छे ते जाणवामां नथी. हाथनुं लखेलुं एकज पुस्तक के जे हाल मोजुद छे एम जाणवामां आवेलुं छे ते पुस्तक वेटिकन् पुस्तकालयमां छे; पण तेमां ते पुस्तकनुं नाम अने जुदा जुदा स्कंधोमांहेनां आगळपाछळनां मथाळां लखेलां नथी. मात्र अगियारमा स्कंधमां (मार्कसना विचारो) एवुं लखेलुं छे, अने तेना उपर फुदडीनुं निशान करेलुं छे.—वेटिकन् पुस्तकालयवाली बीजी हस्तलिखित प्रतो अने त्रण फ्लोरेन्टाइन् हस्तलिखित प्रतोमां मात्र बादशाहना पुस्तकमांना इन्तेखाब छे. इन्तेखाबनां सघळां नाम क्सिलेन्डरे पोतानी आवृत्तिना आरंभमां मुकेलां छे तेने लगभग मलतां आवे छे. (मार्कस् एन्टोनिनसना पोतानां पुस्तकसंबंधी तेना विचारो)— पुस्तकनुं ए नाम पाछळथी थयेला सघळा आवृत्तिकाराए वापर्युं छे. एन्टोनिनसे के कोइ बीजा शख्से आ ग्रंथनां पुस्तको अथवा स्कन्धोमां विभाग पाड्या ते आपणे कही शकता नथी; पहेला अने बीजा पुस्तकोने अन्ते जे लखेलुं छे ते खरुं होय तो तेमणे जातेज ते विभाग पाड्या हशे.

ए स्पष्ट छे के बादशाहे जेम जेम प्रसंग मल्या तेम तेम पोताना विचार लख्या; अने ते पोताना उपयोगने माटे राखेला हता तेथी पोतानेज हाथे लखेली एक पूरी नकल ते पोतानी पुंठल मूकी गया छे एवी अटकल असंभवित नथी; कारण के आवा उद्योगी पुरुष आवा कार्यमाटे एक नकल करनारनी महेनत उपयोगमां ले अने पोताना अत्यंत गुप्त विचारोने अन्यनी दृष्टिए नांखे ए वात संभवित नथी. तेमणे सदरहु ग्रंथ पोताना पुत्र कोम्मोडसमाटे पण राखेलो हशे, तो पण तेने तो पोताना पिताना तत्वविचारमाटे कांइ पण रुचि न हती. कोइ काळजीवाळा शख्से ते किमती पुस्तक जाळवी राखेलुं; अने एन्टोनिनसनां पुस्तकविषे स्युइडास् सिवाय बीजा अर्वाचीन लखनाराओवडे पण बोलायलुं छे.

घणा विवेचकोए एन्टोनिनसना मूळपुस्तक उपर श्रम लीधो छे. थोमस् गॅटेकरे सन १६५२ मां करेली चारपृष्ठी आवृत्ति सउ करतां संपूर्ण छे. गॅटेकरनी सन १६९७ वाळी चारपृष्ठी बीजी आवृत्तिनी देखरेख ज्यॉर्ज् स्टॅनहोपवडे रखाई हती. वली सन १७०४ मां थयेली एक आवृत्ति छे. गेटेकरे घणा सारा सुधारा कर्या अने सूचव्या तथा तेणे वळी एक नवुं ल्याटिन् भाषामां भाषांतर कीधुं, पण ते ल्याटिन् भाषानो घणो सारो नमुनो नथी, परंतु ते घणुं करीने मूळनो अर्थ दर्शावे छे अने घणी वार केटला-एक वधारे अर्वाचीन भाषांतर करतां ते वधारे सारी रीत्ये दर्शावे छे. तेणे दरेक कलमनी सामे हांसीआमां बीजां सरखां प्रमाण-वाक्योनो उमेरो कर्यो; अने कोइ पण प्राचीन ग्रंथकारविषे थयेली सघळी टीकाओ करतां संपूर्ण टीका तेणे ते ग्रंथ उपर लखी. आ टीकामां घणाज मुश्केल वाक्योना खुलासा अने मूळग्रंथनो अर्थ प्रकाशमां आणवामाटे सघळा ग्रीक् अने रोमन् ग्रंथकारोनां पुस्तकोमांथी तेणे उतारा आपेला छे. ते एक विद्यानो अने श्रमनो अजायब जेवो स्मरणस्तंभ छे, अने बेशक कोइ पण अंग्रेजे एना जेवुं कांइ पण कर्युं नथी. तेनी प्रस्तावनाने अंते प्रसिद्धकर्ता कहे छे के एक सख्त शियाळामां लंडन नजीक रोथरहाइथ् आगळ तेणे ते लख्युं हतुं; ते वखते तेनी उमरनुं इठोतरमुं वर्ष चालतुं हतुं, ते वर्ष सन १६५१नी सालनुं हतुं-ते समये मिल्टन्, सेल्डन् अने को-मन्वेल्थ एटले प्रजासत्ताक राज्यना वखतना बीजा महान् पुरुषो हयात हता; अने महान् फ्रेन्च विद्वान् सॉमेइस् (साल्मेसियस्) के जेनी साथे गॅटेकरे पत्रव्यवहार चलाव्यो अने एन्टोनिनसना ग्रंथ माटे तेनी मदद मेळवी ते पण हयात हतो. ग्रीक् मूळग्रंथनी आवृत्ति १८०२ नी सालमां जे. एम्. स्कल्ट्से लीपझीगमां, अष्टपृष्ठी (आठपेजी) आकारमां छपावी छे; अने विद्वान् ग्रीक् एडेमेन्टिन-स् कॉरेइझे पारीसमां १८१६ मां आठपृष्ठी (आठपेजी) आका-

रमां तेनी आवृत्ति छपावी छे. स्कल्ट्सवाळुं पुस्तक १८२१ मां टॉच्निट्झे फरी छपाव्युं हतुं.

एम्. एन्टोनिनसना पुस्तकनां इंग्रेजी,जर्मन्, फ्रेन्च् इटालियन् अने स्पेनिश् भाषाओमां थयेलां भाषांतर छे, अने बीजां पण हशे. सघळां इंग्रेजी भाषांतर में जोयां नथी. जेरेमी कॉलियरे १७०२ मां अष्टपृष्ठी (आठपेजी)कदमां करेलुं एक भाषांतर छे, पण ते तो असल उपरथी करेली अत्यंत सफाईवगरनी अने अधम प्रकारनी नकल छे. चार्पेन्टियरना संग्रहमां एलेक्सिस् पाइरोने घणाज थोडा वखत उपर करेलुं फ्रेन्च् भाषान्तर छे, ते भाषान्तर इटालियन् भाषामां भाषान्तर थवा जेटलुं जेने मान मळेलुं छे(ऊडिने,१७७२) एवा डेसियरना भाषान्तर करतां वधारे सारूं छे. १६७५ मां इटालियन् भाषामां एक तरजुमो थयेलो छे, ते मारा जोवामां नथी आव्यो. ते कोइ कार्डिनले (धर्माध्यक्षे) करेल छे. " ख्रिस्ती धर्ममां प्रख्यात पुरुष मोटो कार्डिनल् फ्रांसिस् बार्बेरिनि जे आठमा अर्बन् पोपनो भत्रीजो थाय तेणे विश्वासी लोकोमां फळद्रुप अने सजीवन बीज नांखवामाटे रोमन् बादशाहना विचारोनो पोतानी देशी भाषामां तरजुमो करवामां, उत्तरावस्था कामे लगाडी. ते पोतानी सबळ शैलीमां कहे छे ते प्रमाणे, आ मूर्त्तिपूजक बादशाहना सद्गुणना दर्शनथी पोताना कार्डिनल् तरीके पहेरवाना जामली रंगना झबा करतां पोताना आत्माने वधारे रक्त करवाने तेणे पोताना आत्माने आ भाषान्तर अर्पण कर्युं " (पाइरोन्, प्रस्तावना).

ते पुस्तकनो बहु वर्षपर्यंत उपयोग कर्याबाद में आ तेनुं भाषान्तर थोडा थोडा समयने अंतरे कर्युं छे. ते ग्रीक् पुस्तक उपरथी कर्युं छे. पण हुं हमेशां एकज मूल प्रतने वळगी रह्यो नथी; अने में प्रसंगोपात्त मारा पोताना भाषान्तर साथे बीजां भाषान्त-

रने सरखावी जोयां छे. आ भाषान्तर में खास मारा उपयोगसारु कर्युं हतुं, कारण के ते पुस्तक उपर एवो श्रम लेवो योग्य छे एम मने लाग्युं; पण ते बीजाने पण उपयोगी थइ पडे खरुं, तेथी तेने छपाववाना में निश्चय कर्यो. असल ग्रंथ कोइकोइ वार समजवो बहु मुश्केल छे अने तेनो तरजुमो करवो ते तो तेथी पण वधारे कठिन छे, तेथी सर्वथा हुं भुलचुक टाळी शक्यो होइश ए तो शक्य नथीज. पण हुं धारुं छुं के में घणीवार अर्थने जवा दीधो नथी, अने जेओ कोइ असलनी साथे सदरहु भाषान्तरनो मुकाबलो करवानी तस्दी ले तेओ जो के मारी साथे मलता न आवे तो पण तेओए उतावळथी एवुं अनुमान नहि करवुं के में कर्युं छे ते खोटुं छे. जो के प्रथम जोतां तो केटलांक वाक्यो अर्थ बतावतां होय एम जणाशे नहि, तो पण ते वाक्यो बेशक अर्थ बतावे छेज; अने ज्यारे हुं भाषान्तरकर्त्ताओथी जुदो पडुं छुं त्यारे मारा धारवामां एम आवे छे के केटलीक जगोए तेओनी भूल छे, अने बीजी जगोए तो मने खातरी थाय छे के तेओनी भूल छेज. केटलांक वाक्योमां में एक † आवुं चिन्ह मुकेलुं छे. ते मूळ वाक्यनो बगाडो अथवा अर्थनी घणीज भ्रान्ति दर्शावे छे. हुं भाषाने घणी सरल अने वधारे सहेली करी शकत खरो, पण असल पुस्तकनुं स्वरूप बतावववाने वधारे योग्य गणीने में आ सफाइ विनानी शैलीने पसंद करी छे; अने कोइ वार आ भाषान्तरमां जे अर्थनी अस्पष्टता जणाशे ते ग्रीक् पुस्तकमां रहेली अर्थनी अस्पष्टतानी लगभग खरी नकल छे. आ भाषान्तरने हुं कोइ वार फरी छपावीश तो तो जे कोइ तरफथी सूचववामां आवशे तेवा सुधारानो उपयोग खुशीनी साथे करीश. केटलाक ग्रीक् शब्दोने मळता आवता इंग्रेजी शब्दोनुं एक सांकळियुं में उमेरेलुं छे. जो के ग्रीक् शब्दोने माटे सारामां सारा शब्दो में आप्या नथी, तो पण माराथी बने तेटलुं सारुं काम में कर्युं छे, अने मूळमां तो एक शब्दनो हमेश एकज अर्थ करेलो छे.

विरक्त तत्वज्ञाननुं जे छेल्लुं प्रतिबिंब मारा जोवामां आव्युं छे ते एपिक्टेटसना एन्चिरीडियनविषे सिम्प्लीसियसे करेली टीकामां छे. सिम्प्लीसियस् ख्रिस्ती न हतो, अने आवो पुरुष ज्यारे ख्रिस्ती धर्म घणोज बगडी गयो हतो तेवे समये पोतानो धर्म बदलीने ख्रिस्ती धर्ममां जाय ए संभवित नथी, पण ते एक खरेखरो धर्मिष्ठ पुरुष हतो; अने ईश्वरनी एक एवी प्रार्थना साथे पोतानी टीका तेणे पूरी करी छे के जे प्रार्थनामां कोइ पण ख्रिस्तीने कशुं सुधारवानुं रहेतुंज नथी. झेनोना समयथी ते सिम्प्लीसियसना समयसुधीनी लगभग नव वर्षनी मुदतलगी विरक्ततत्वज्ञानथी केटलाएक सारामां सारा अने मोटामां मोटा पुरुषोना वर्तननुं बंधारण बंधायेलुं हतुं. आखरे ते तत्वज्ञाननो लोप थयो, अने इटालीमां साक्षरत्व फरीने सजीवन थयुं त्यांसुधी तेविषे कांइ पण आपणा सांभळवामां आवतुं नथी. ऍन्जेलो पोलिझिआनोने एपिक्टेटसना एन्चिरीडियननां घणां अशुद्ध अने अपूर्ण बे हस्तलिखित पुस्तको मळी आव्यां, तेनुं भाषांतर तेणे ल्याटिन् भाषामां कर्युं, अने जेना संग्रहमांथी तेने सदहु पुस्तक मळी आव्युं हतुं ते पोताना मोटा आश्रयदाता लोरेन्झो डी मेडिसीने ते भाषान्तर तेणे अर्पण कर्युं. इस्वी सन १५३१मां एन्चिरीडियननी प्रथम बाले–आवृत्तिमां पोलिझिआनोनुं भाषांतर छापेलुं हतुं (एपुड एन्ड.क्रेटेनड्रम्). लोरेन्झोने एना स्वभावने सारी पेठे योग्य अने जे मुश्केलीओथी ते घेरायलो हतो तेमां उपयोगी थइ पडे एवा पुस्तकतरीके एन्चिरीडियन्विषे पोलिझिआनो भलामण करे छे.

एपिक्टेटस् अने एन्टोनिनसना ग्रन्थ प्रथम छपाया त्यारथीज तेना वांचनार हता. एन्टोनिनसनुं लघु पुस्तक तो केटलाएक महान् पुरुषोने एक सोबती जेवुं थइ पड्युं छे. केप्टन् जोहन् स्मिथ् पोते ज्यारे एक युवान माणस हतो त्यारे ते मेकियावेलीकृत

आर्ट् ऑफ् वॉर् (एटले युद्धनी कळा) तथा मार्कस् एन्टोनिनस् ए बे पुस्तको वापरतो हतो, अने सिपाई तथा मनुष्यनुं लाक्षणिक वर्तन बांधवाने माटे ए बे लेखको करतां वधारे योग्य लेखको तेने मळी शकत नहि. पोताना स्वदेश इंग्लेन्डमां स्मिथने लगभग कोइ ओळखतुं पण नथी अने संभारतुं पण नथी, परंतु अमेरिका के ज्यां तेणे वर्जीनियाना नवा संस्थाननुं रक्षण कर्युं त्यां तो कांइ तेम नथी. ते पोताना बहादूर मनथी अने शस्त्रनां पराक्रमथी एक महान् नर हतो, परंतु पोतानां वर्त्तनना उमदापणाथी तो ते एथी पण वधारे महान् पुरुष हतो. कारण के केटलाक हलका लोको धारे छे तेम माणसनी मोटाई पैसा अने स्थितिमां नथी रहेली तेमज वळी बुद्धिबळमां पण रहेली नथी, केम के बुद्धिबळ तो घणीवार नीचमां नीच नीतिवर्तन—एटले उच्च पदवीनां माणसो प्रति अत्यंत नीच गुलामगिरी तथा गरीब अने हलकी स्थितिना माणसो प्रति मगरुरीनी—साथे भळेलुं होय छे; पण मनुष्यनी खरी महत्ता तो—पोतानी जातनी अने बीजी दरेक वस्तुनी खरी तुलना उपर, पोताना अंतःकरणना वारंवार परीक्षण उपर, अने बादशाह एन्टोनिनस् कहे छे तेम बीजाओ शुं धारे छे अथवा कहे छे, अथवा पोते जे धारे छे अने कहे छे अने वर्त्ते छे ते प्रमाणे बीजाओ धारे छे अने कहे छे अने वर्त्ते छे के नहि ते विषे पोते पंचात कर्या विना—पोते जे नियमने खरो जाणतो होय ते नियमने दृढ रीत्ये वळगी रहेवा उपर स्थपायला जीवनना निखालस आशयना भानमां रहेली छे.

एन्टोनिनसनी फिलसुफी.

(तत्वविचार)

एम कहेवाय छे के विरक्त तत्वज्ञान ज्यारे ग्रीसथी रोम् गयुं त्यारे पहेलवहेली तेनी खरी किमत जणाईः झेनो अने तेनी पछी थनाराओना मत रोमन् लोकोनी गंभीरता अने अनुभववाली सारी समजने वधारे बंधबेसता हता; प्रजासत्ताक जमानामां पण एम्. केटो युटिसेन्सीस् जे एक विरक्तना जेवी जीवनपद्धतिथी रहेतो हतो अने जे मत पोते खुल्ली रीत्ये स्वीकारतो हतो ते मतप्रमाणे मरतांलगी पण वर्त्यो—एवा माणसनो आपणी आगळ दाखलो छे. सिसेरो कहे छे के ए एक एवो मनुष्य हतो के पोताने खातरी थई त्यारेज तेणे विरक्त तत्वज्ञाननो अंगीकार कर्यो; घणाखरानी पेठे फोकट चर्चा करवानाज हेतुथी नहि, पण विरक्त सिद्धान्तप्रमाणे पोतानी रहेणी बनाववाना हेतुथीज तेणे ते सिद्धान्तनो अंगीकार कर्यो हतो. ऑगस्टसना मृत्युथी ते डॉमीटियनना खुनसुधीना कंगालियतभरेला समयमां बादशाही जुलमनीचे अने सर्व ठेकाणे फेलायला सडामध्ये जुना धर्मना अनुयायीओने दिलासो आपे अने आश्रय आपे एवुं विरक्त तत्वज्ञान सिवाय बीजुं कांइ पण न हतुं. शुद्ध हृदय अने मनुष्यजीवनना हेतुओना उन्नत विचारोवडे टकी रहेला उत्तम अंतःकरणवाळां मनुष्यो ते वखते पण हतां. पेइटस्, थ्रेसिया, हॅल्वीडियस्, प्रिस्कस्, कॉर्नुटस्, सी. म्युसोनिअस् रुफस् अने जेमनी

[1] नेरोना शिक्षक सेनेकानुं नाम में मूकी दीधुं छे. एक अर्थमां ते एक विरक्त हतो अने तेणे घणी सुंदर रीत्ये घणी सारी बाबतो कही छे. सेनेकाविषे गॅलियसनो (१२.२) अभिप्राय छे, अथवा तो केटलाक लोको तेना तत्वज्ञानविषे केवो विचार धरावता हता तेनी कांइक केफियत छे, अने ते अनुकूल नथी. तेना लेखो अने तेनी जीवनपद्धतिने एक साथे विचारमां लेवां जोइये, अने तेना विषे मारे आ स्थले कांइ विशेष कहेवानुं नथी. मेक्मिलान् अने कंपनीए प्रसिद्ध

सबळ भाषा अने मरदामी भरेला विचार तेमना समयना मनुष्योने जेटला बोधदायक थया हशे तेटलाज बोधदायक अत्यारे आपणने पण थइ पडे एवा छे, ते पर्सियस् अने जुवेनल् नामना कवियो एवा माणसो हता. नेरोना घातकी राज्यमां पर्सियस् मरण पाम्यो, पण जुवेनल् तो सारा भाग्ये जुलमी डॉमीटियन् करतां वधारे जीव्यो, अने ते नर्वा ट्रेजन् अने हॅड्रियनना रूडा समय जोवा पाम्यो. तेनी उत्तम शिक्षाओ विरक्त सिद्धान्तमांथी निकळेली छे, अने ते शिक्षाओ ल्याटिन् भाषाना अनुपम जुस्सावडे तेनी सर्वथी सुंदर कवितामां दाखल करवामां आवेली छे.

अर्वाचीन विरक्त तत्वज्ञानना उत्तम समजावनार ते एक ग्रीक् गुलाम अने एक रोमन् बादशाह ए बे हता. एपिक्टेटस् नामे एक फ्रीजियन् ग्रीकने रोममां लाववामां आव्यो हतो. केवी रीत्ये लाववामां आव्यो हतो ते तो आपणे जाणता नथी, पण जे पोतेज नेरोनो एक छुटो थयेलो गुलाम अने महेरबानीनो माणस हतो ते एपॅफ्रॉडिटस् नामना नालायक शेठनो ए एपिक्टेटस् एक गुलाम हतो अने पाछळथी तेने गुलामगिरीमांथी छुटो करेलो हतो. एपिक्टेटस् पोते गुलाम हतो त्यारेज ते सी. म्युसोनियस् रुफसनो श्रोता थयो हशे, पण तेने गुलामगिरीमांथी छुटो करवामां आव्यो ते पहेलां ते भाग्येज शिक्षक बनी शक्यो

करेला रेवरन्ड एफ्. डब्ल्यु. फरारकृत (Seekers after God) " ईश्वरने शोधनारा " ए नामना पुस्तकमां सेनका अने तेना तत्वज्ञानविषे केटलीक हकीकत वाचकने मळी आवशे.

२ जेमां तत्वज्ञानना उपदेशो समायला छे एवा ते चाबखाओ खरा जुवेनलनी कृति नथी, पण ते तो तेवा चाबखा लखनार एक तेज नामना बीजा माणसनी कृति छे, एम साबीत करवाने माटे रिब्बेके महेनत करेली छे. तो पण ते कविताओ हजु विद्यमान छे अने विरक्त तत्वज्ञानना सिद्धान्तोथी जाणीता एवा कोइ माणसे लखेली छे.

हशे. जेओने डॉमीटियनना हुकमथी रोममांथी देशवटो देवामां आव्यो हतो, ते तत्वज्ञानीओमांनो ते एक हतो. ते एपिरसमांहेला निकोपोलिसमां जइने रह्यो अने त्यां ते गुजरी गयो हशे. बीजा महान् शिक्षकोनी पेठे ते कांइ लखतो नहि, अने एपिक्टेटसनां व्याख्यानोमांनुं आपणी पासे जे कांइ छे, तेने माटे तेना कृतज्ञ शिष्य एरियनना उपकारनीचे आपणे छिये. एपिक्टेटसनां व्याख्यानोनां आठ पुस्तको एरियने लख्यां, तेमांनां फक्त चार पुस्तको अने केटलाक तूटक विभागो रहेला छे. एपिक्टेटसनी मुख्य शिक्षाओनो नानो संग्रह अथवा गुटको पण आपणने एरियनना हाथेथी मळेलो छे. जस्टीनियन् बादशाहना वखतमां थयो हतो ते सिम्प्लीसियसवडे ते संग्रह उपर एक टीका करायली छे[3].

जेमां एन्टोनिनस् पोताना शिक्षकोए करेला उपकारोने आभारी रीत्ये नोंधी राखे छे, ते तेना प्रथम पुस्तकमां (१-७) एम कहे छे के जुनियस् रस्टिकसे तेने एपिक्टेटसनां व्याख्यानोविषे माहितगार कर्यो हतो, अने एपिक्टेटसविषे ते पोतानां बीजां वाक्योमां पण लखे छे (४-४१, ११-३४-३६). एपिक्टेटस् अने एन्टोनिनसना सिद्धान्तो खरेखर एकज छे, अने एन्टोनिनसनी तत्वज्ञानसंबंधी भाषाना विवरणने माटे अने तेना अभिप्रायना स्पष्टीकरणने माटे एपिक्टेटस ए एक उत्तम प्रमाण छे. पण ते बे तत्वज्ञानीओनी प्रकृति तदन जुदी छे. एपिक्टेटसे सळंग भाषण तथा मळतावडी अने सादी रीतिमां पोताना श्रोताओने पोतानो बोध आप्यो छे. एन्टोनिनसे मात्र पोतानाज उपयोगमाटे

---

३ सिम्प्लीसियसनी टीकासहित एरियनना एपिक्टेटसनी एक संपूर्ण आवृत्ति जे. श्वेइग्हुसरे सन १७९९, १८०० मां आठपेजी छ ग्रन्थोमां करेली छे. वळी मिसिस्. कार्टरे करेलुं एपिक्टेटसनुं एक इंग्रेजी भाषान्तर पण छे.

पोताना विचार टुंका असंबद्ध फकराओमां लखी राख्या छे, अने ते फकराओनो अर्थ घणी वार स्पष्ट रीत्ये निकळी आवतो नथी.

विरक्त लोकोए तत्वज्ञानना त्रण भाग पाड्या छे, प्रकृतिशास्त्र, नीतिशास्त्र अने न्यायशास्त्र (८-१३). विरक्त संप्रदायना स्थापनार सिटियमना झेनोवडे अने क्राइसिप्पसवडे आ विभाग करवामां आव्या हता, एम आपणने डायोजिनीसे कहेलुं छे, पण आ तत्वज्ञानीओ ए त्रणे भागने नीचेना अनुक्रमे गोठवताः न्यायशास्त्र, प्रकृतिशास्त्र, अने नीतिशास्त्र. तो पण सिसेरो कहे छे ते प्रमाणे एम जणाय छे के आ भाग झेनोना समयपहेलां पाडवामां आव्या हता अने प्लेटोए मान्य राख्या हता (एकेड. पोस्ट १-९). लॉजिक् (न्यायशास्त्र) ए ते शब्दना वधारे सांकडा अर्थमां वपराता आपणा लॉजिक् शब्दनो पर्याय नथी.

क्लीन्थीस् नामना एक विरक्ते ते त्रण भागना पेटाभाग पाड्या, अने छ भाग कर्या. न्यायशास्त्रमां जेनो समावेश थाय छे ते तर्कशास्त्र अने अलंकारशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, प्रकृतिशास्त्र अने ईश्वरसंबंधी शास्त्र. आ विभाग मात्र व्यवहारोपयोगी हता कारण के तत्वज्ञान तो सघळुं एकज छे. असलमां असल विरक्तोना ग्रंथोमां पण प्लेटोना ग्रंथमां छे तेम लॉजिक् अथवा डाएलेक्टिक् एकज जगो रोकतुं नथी. ते तो फक्त तत्वज्ञानना बीजा भागोने माटे वापरवाना साधन तरीकेज गणाय छे. आगळना विरक्तमतना सिद्धान्तोनुं अने तेनां रूपान्तरोनुं स्पष्टीकरण करवाने तो एक मोटो ग्रंथ जोइये. मारो उद्देश तो मात्र एन्टोनिनसना पुस्तकमांथी मळी आवता तेनाज अभिप्रायोनुं स्पष्टीकरण करवानो छे.

क्लीन्थीसना पेटाभागप्रमाणे प्रकृतिशास्त्र अने धर्मशास्त्र एकसाथे रहे छे, अथवा तो पदार्थोना स्वभावनुं अध्ययन, अने मनुष्य

ईश्वरविषे समजी शके तेटलुं ईश्वरस्वभावविषेनुं अने ईश्वरथी कराता विश्वनि[illegible]विषेनुं अध्ययन एकसाथे रहे छे. आ भाग अथवा पेटाभागने एन्टोनिनसे यथाविधि ग्रहण कर्या नथी, केम के आपणे क्यारनाए कही गया छिये तेप्रमाणे तेना पुस्तकमां कांइ तेवुं नियमित धोरण नथी; पण खरुं जोतां तेवो भाग अथवा पेटा-भाग तेमां आवी जाय छे खरो.

क्रोन्थीस् वळी नीतिशास्त्र अने राजनीतिशास्त्र, अथवा तो नीतिनां तत्वोना अभ्यासने अने सुधरेला जनसमुदायना बंधार-णना अभ्यासने जोडी दे छे; अने नीतिशास्त्रना पेटाभाग करीने तेना वधारे संकुचित अर्थमां वपरातुं नीतिशास्त्र अने राजनीति-शास्त्र एवा जे बे भाग कर्या ते तेणे बेशक ठीक कर्युं; केम के जो के ए बन्ने निकट संबंध धरावे छे तो पण तेओ घणां निराळां छे, अने घणा सवालो ते तफावतने संभाळथी लक्षमां राखिये तोज बरोबर चर्चाइ शके तेम छे. एन्टोनिनस् राजनीतिशास्त्रविषे विवेचन करता नथी, तेमनो विषय नीतिशास्त्र छे; अने ते नीति-शास्त्र एक मनुष्य अने हाकेमतरीके जिन्दगीमां तेमनी पोतानी वर्तणुकने व्यावहारिक रीत्ये लागु पडे तेवुं छे. तेमनुं नीतिशास्त्र मनुष्यप्रकृति, विश्वप्रकृति अने दरेक मनुष्यना अन्य प्रत्येक वस्तु साथे-ना संबंधविषेना तेमना सिद्धान्तो उपर बंधायलुं छे. तेटलामाटे ते-प्रकृतिशास्त्र अथवा पदार्थप्रकृति अने ईश्वरसंबंधी शास्त्र अथवा ईशस्वभावनी साथे निकट अने जुदो न पडी शके एवो—संबंध धरावे छे. आपणा मनउपर पडता सघळा संस्कारोने सारी पेठे तपासवाने अने तेविषे खरो अभिप्राय बांधवाने अने वास्तव अनुमान बांधवाने अने शब्दोना अर्थ तपासवाने अने एटलेसुधी न्यायशास्त्रने लागु पाडवाने ते [illegible] आपे छे, परंतु न्यायशास्त्रनं विवरण करवातरफ ते कांइ पण प्रयत्न करता नथी, अने तेमनुं

तत्त्वज्ञान वस्तुतः केवळ नीतिसंबंधी अने व्यवहारोपयोगी छे. ते कहे छे (८-१३), "निरंतर अने जो बनी शके तो अंतराशर्ये उपर प्रत्येक संस्कार पडे ते प्रसंगे तेने प्रकृतिशास्त्र, नीतिशास्त्र अने तर्कशास्त्रनां तत्त्वो लागु पाडो," ते संस्कारने दरेक बनती रीत्ये तपासवानुं कहेवानो एक बीजो प्रकारज छे. बीजा वाक्यमां ते कहे छे (३०-११), "उक्त साहाय्यकारक साधनोमां हजु एक साधन विशेष उमेरवा द्यो." ते ए के "जे विषय तारी दृष्टिआगळ आवे, ते वस्तुतः स्वतः अने समुच्चयमां केवा प्रकारनो पदार्थ छे ए स्पष्ट रीत्ये जणाइ आवे, अने तुं पोताने तेनुं विशेषनाम, तथा जे पदार्थोना मिश्रणथी ते बनेलो छे ते पदार्थोनां नाम, तथा तेनुं पृथक्करण थइने ते जे पदार्थोमां भली जवानो छे ते पदार्थोनां नाम कही शके तेवी रीत्ये ते विषयनी एक व्याख्या अथवा वर्णन बनावी राख." आवो तपास तर्कशास्त्रनो उपयोग सूचवे छे; ते प्रमाणे एन्टोनिनस् प्रकृतिशास्त्रसंबंधी, ईश्वरसंबंधी, अने नीतिशास्त्रसंबंधी, सिद्धान्तोने स्थापवामाटे तर्कशास्त्रने कामे लगाडतो.

प्रकृति, ईश्वर अने नीतिसंबंधी सिद्धान्तोना केटलाक खुलासा एन्टोनिनसना पुस्तकमां छे; अने में वांच्या छे ते करतां पण वधारे खुलासा छे. एपिक्टेटसना सिद्धान्तोने समजाव्या बाद रिट्टर् (गे-

---

४ मूळपाठनो अर्थ दर्शावे एवो इंग्रेजी भाषामां एके शब्द नथी; केम के 'phantasia' शब्दमां फक्त बाह्य विषयनी साथे इन्द्रियनो संबंध थतां प्रकटता भाननोज अर्थ रह्यो छे एटलुंज नहि,–पण तेमां तो ज्यारे आपणी आगळ कोइ पण बाह्यविषय नथी होतो त्यारे पण जे विचार अथवा लागणी अथवा अभिप्राय उत्पन्न थाय छे तेना अर्थनो पण समावेश थाय छे. तेटलामाटे अंतराशयमां जे असर करे छे ते 'phantaston' छे अने ते 'phantasia'ने उत्पन्न करे छे.

शिक्टे डर् फिलोसोफाइ, ४-२४१) एन्टोनिनसना सिद्धान्तो विषे बहुज संक्षेपमां अने अपूर्ण रीत्ये विवेचन करे छे. पण जेमां ए विवेचन वधारे सारी रीत्ये करेलुं छे तेवा एक टुंका निबंधतरफ ते आपणो लक्ष खेंचे छे. एन्टोनिनसना ग्रंथना जर्मन् भाषामां जे. एम्. शल्ट्झे करेला तरजुमाने अंते मुकेलो ते भाषान्तरकर्त्ताए बनावेलो एम्. ऑरेलियस् एन्टोनिनसना तत्वज्ञानसंबंधी सिद्धान्तोविषे एक निबंध पण छे (श्लेस्विग्. १७९९). आ बे उपयोगी निबंध अने पोताना खंतभरेला अभ्यासनी सहायताथी मनुष्य एन्टोनिनसना सिद्धान्तोविषे पूरतो विचार बांधी शके; पण बीजाओने ते सिद्धान्तो समजाववा तेने वधारे कठिन लागशे. वळी असल ग्रंथमां गोठवणनी अने घणी कलमोमां संबंधनी खामी, मूळ पुस्तकनी अशुद्धता, भाषा अने इबारतनी अस्पष्टता, अने कोइ कोइ वार कदाच लेखकना पोतानाज विचारमां गोटाळो—आ सघळा उपरांत जाणे तेमना सिद्धान्तो कोइकोइ वार अस्थिर होय, जाणे तेमना मनउपर कोइकोइ वार संशयनुं वादळुं छवायुं होय, तेम ते बादशाहना विचारोमां वखतोवखत स्पष्ट विरुद्धता आवे छे. जे मनुष्य निवृत्ति अने चिन्तनवाळी जिन्दगी गाळे छे, जेने घरआगळ अडचण पडती नथी अने जे दुनियाना कामकाजमां वच्चे पडतो नथी, ते माणस पोताना मनने निरांतमां अने पोताना विचारने एक सरखा मार्गमां राखी शके छे. पण आवा मनुष्यनी कसोटी थयेली होती नथी. जो तेने मानवजीवननी कठोर वस्तुताना झपाटाआगळ एकवार खुल्लो मुकवामां आवे तो तेनुं ईश्वरसंबंधी ज्ञान अने तेनो [illegible] सद्गुण मिथ्या कथनरूपज थइ पडशे. जे मनुष्योए कार्यमां प्रवृत्ति करी नथी अने संकट सहन कर्युं नथी तेवा मनुष्योनां सुंदर विचारो अने नीतिचर्चाओ वंचाय खरां पण ते तो वीसरी जवानां. जो कोइ बोधके "प्रेषित-

धर्मसंस्थापकना जेवी “जीवनपद्धति” पाळी न होय, अने जो ते “धर्मवीरनी पेठे प्राणत्याग” करवाने तैयार न रह्यो होय तो कोइ पण धर्म के कोइ पण ईश्वरसंबंधी तत्वज्ञाननी एक फुटी बदाम पण किमत नथी. “बुद्धियुक्त सामाजिक प्राणी (एटले मनुष्यनो) सद्गुण अने दुर्गुण जेम निवृत्तिमां नहि पण प्रवृत्तिमां रहेलो छे तेमज तेणे करेलुं शुभ अने अशुभ पण तेनी निवृत्तिमां (एटले निवृत्तिनां कार्योमां) नहि पण प्रवृत्तिमां रहेलुं छे.” (९-१६) एन्टोनिनस् बादशाह अनुभवसिद्ध नीतिशास्त्री हता. ते तेमनी युवावस्थामांथी श्रमशील आचारपद्धति अनुसरता हता, अने जो के पोताना उच्चपदने लीधे तेमने कशी कमी न हती अथवा कशी कमी पडवानी दहेशत न हती तो पण ते पोते एक गरीबमां गरीब तत्वज्ञानीनी पेठे करकसरथी, मिताहारथी रहेता हता. एपिक्टेटसने थोडानीज जरूर हती, अने एम जणायछे के तेने जे थोडुं जोयतुं हतुं ते थोडुं तेने मळी आवतुं हतुं अने जेम ते पोतानी गुलामनी स्थितिथी संतोष पामतो तेम ते थोडानी प्राप्तिथी पण संतोष मानतो. पण एन्टोनिनस् बादशाह तख्तउपर आव्या त्यार पछी तो तेमने एक बेचेनीभरेला आसने बेसवानुं हतुं. युफ्रेटिस् नदथी ते एट्लेन्टिक् महासागरसुधी, अने स्कोटलॅन्डना ठंडा डुंगरोथी ते आफ्रिकाना उष्ण रेतीनां रणसुधी फेलायली बादशाहीनो अमल तेना हाथमां हतो; अने जो के आपणे अनुभवथी जाणी शकता नथी तो पण आपणे अनुमान तो करी शकिये छिये के पोताथी बने तेटलुं शुभ करवानी इच्छावाळा अने पोते जे शुभ करवाने इच्छे छे तेमांनु घणुंज थोडुं शुभ पोते करी शकशे एम खातरीथी जाणनार, एवा आखी आलमना कामने पोताना हाथमां राखनार ते बादशाहने केवी कसोटीओ, मुश्केलीओ, चिन्ता अने दिलगिरीओ नडती होवी जोइए!

युद्ध, मरकी, तरकट, सामान्य सडानी वच्चे अने पोताना उपरना एवा गंजावर राज्यना बोजानीचे एन्टोनिनसने टकावी राखवाने तेमना पोताना सघळा धैर्यनी वारंवार जरूर पडती हती, ते आपणे सहज समजी शकिये एम छे. उत्तम अने बहादुरमां बहादुर मनुष्योने वेहेम अने मननी दुर्बळतानी पळो आवे छे, पण जो तेओ उत्तम अने बहादुरमां बहादुर होय छे तो एन्टोनिनसनी माफक पुनः प्रथम सिद्धान्तोउपर आवीने पोतानी ग्लानिमांथी फरीने पाछा बहार निकळी आवे छे. ते बादशाह कहे छे के जिन्दगी धुमाडा अने वराळजेवी छे, अने सेइन्ट् जेम्स् पोताना पत्रमां एज विचार दर्शावे छेः—के दुनिया वैरभाववाळां अरिष्या-वाळां, दुष्ट हृदयनां माणसोथी भरेली छे, अने तेमांथी छुटी निकळवामां मनुष्य सारी पेठे संतोष माने एम छे; जेने ते अत्यंत दृढ मानतो होय तेना विषे पण केटलीकवार कदाच तेने शक रहे छे. आ प्रकारनां मात्र थोडांज वाक्य छे, पण तेवां वाक्यो पोतानी हमेशनी रहेणीमां आवती खरेखरी मुस्केलीओ सामे उमदामां उमदा मनुष्यना जण्याने जे टक्करो झीलवी पडती हती तेनी साबीती छे. ते बादशाहना विचारो दर्शावी आपे छे के तेमने जीवनमां सान्त्व-न अने दिलासानी जरूर हती एटलुंज नहि, पण तेमने मरणमाटे तैयार थवामां पण तेवी जरूर हती एवी एक टीका में कोक ठेकाणे जोई छे—ते तुच्छ छे अने ते सदहु बादशाहनुं खोटुं देखाडवानी रीत्ये करेली छे. खरुं छे के तेमने दिलासा अने आधारनी जरूर हती अने तेमणे ते केवी रीत्ये मेलव्या ते आपणे जोइये छिये. ते निरंतर पोताना एवा मूळ सिद्धान्तउपर आवे छे के आ वि-श्वनी व्यवस्था डहापणपूर्वक करवामां आवी छे; प्रत्येक मनुष्य आ विश्वनो एक भाग छे अने विश्वना जे क्रमने ते फेरवी शके तेम नथी ते क्रमने तेणे अधीन थवुं जोइये; जे कांइ परमेश्वरे कर्युं

छे ते सारुंज कर्युं छे; मानवजाति ते मनुष्यनो बंधुवर्ग छे; माणसे पोतानो अपकार करनार मनुष्योने पण चहावां जोइये, पोषवां जोइये अने तेमने वधारे सारां बनाववाने प्रयत्न करवो जोइये. एन्टोनिनसनो आ छेवटनो निर्णय छे (२. १७):– "त्यारे मनुष्यने यथार्थ रीत्ये दोरी शके एवी शी वस्तु छे? एवी वस्तु तो केवळ एकज छे, अने ते तत्त्वविचारज छे. पण ते तत्वविचार आमांज रहेलो छे–के माणसे मनुष्यमां रहेला दिव्य अंशने बळात्कारमांथी मुक्त अने अखंडित राखवो तथा सुखदुःखादि द्वंद्वथी अतीत राखवो (अनुभववो); कोइ पण प्रवृत्ति प्रयोजन विना करवी नहि, तेमां पण असत्यथी अने दंभथी तो कदी पण कोइ प्रवृत्ति करवीज नहि, तथा तेमां बीजा माणस अमुक करे के न करे तेनी बळबळ कर्या विनाज जे कांइ करवुं होय ते करवुंः अने वळी, गमे ते स्थळे जे कांइ बने अने जे कांइ आपणे भाग्ये आवे ते सघळुं माणस पोते ज्यांथी आव्यो छे त्यांथीज आवेलुं छे एम मानवुं; अने छेवटे, जे तत्त्वोनी मेळवणीथी प्रत्येक जीवतुं प्राणी बनेलुं छे ते तत्वोना पृथक्करण सिवाय मृत्यु ए बीजुं कांइ पण नथी एम समजीने आनंदी अंतःकरणथी मृत्युनी राह जोता बेसवुं. पण ज्यारे तत्वो निरंतर विविध रूपान्तर पामे छे त्यारे ते तत्त्वोने कांई हानि थती नथी तो पछी (पोताना पिंडरूप) सघळां तत्त्वोना विकार अने पृथक्करणविषे माणसे शामाटे कोइ पण प्रकारनो भय राखवो जोइये? केम के ए तो कुदरत प्रमाणेज छे; अने जे कुदरत प्रमाणे छे ते कांइ अशुभ नथी.

एन्टोनिनसनुं प्रकृतिशास्त्र ते विश्वनी कुदरतनुं, विश्वव्यवस्थानुं अने ते बंनेनी साथे मानव प्रकृतिना संबंधनुं ज्ञान छे. ते विश्वने 'विश्वना उपादान' नुं नाम आपे छे[६], अने वधारामां

६ केटलांक उदाहरणो हुं अहीं उमेरुं छुं; एन्टोनिनसे (५. २४) मां "विश्वनुं उपादान" एवा शब्दो वापर्यां छे. (१२. ३०) मां ते कहे छे के 'एक सामान्य

एटलुं कहे छे के 'बुद्धि' ए विश्वने नियममां राखे छे. एन्टोनिनस् वळी (६–९) 'विश्वस्वभाव' अथवा 'विश्वनो स्वभाव' एवा शब्दो वापरे छे. विश्व अर्थात् व्यष्टि अने समष्टि के जेनें आपणे अव्यक्त अथवा क्रम कहिये छिये तेने एन्टोनिनस् (६–२५) (कोस्मोस्) महत् कहे छे. जो के ते कदी–सर्व एटले मनुष्य जे कांइ पदार्थोने कोइ पण रीत्ये अस्तित्ववाळा समजी शके ते सर्ववाचक– आवा सामान्य शब्दो वापरता जणाय छे तो पण ते बीजा प्रसंगोए भूत, भौतिक पदार्थो, कारण, मूळ अने बुद्धिनो[७] स्पष्ट रीत्ये

उपादान कारणरूप पदार्थ छे' ते असंख्य कार्यरूप पिंडोमां वहेंचायलो छे (४. ४०). स्टोबियसना ग्रंथ (पुस्तक. १, अध्याय. १, प्रकरण १४) मां आ प्रमाणे व्याख्या आपेली छे. (८.११) मां एन्टोनिनस् 'उपादानरूप अने भौतिक' विषे बोले छे; अने (७. १०) मां एम कहे छे के– 'जे कांई भौतिक छे ते बधुं' "आखा कार्यना उपादान"मां अदृष्य थइ जाय छे. जे दशाने आपणे उच्चतम अथवा अंतिम मानिये छिये, तेने माटे 'विश्वनुं उपादान' ए जातिवाचक शब्द छे, केम के ते दशानी समान तेमज तेथी उंची एवी बीजी कोइ पण दशा नथी एम आपणे समजिये छिये. ए तत्वचिन्तकनुं 'वस्तु' छे: कोइ पण पदार्थना अस्तित्वना अधिष्ठानरूप अथवा तो सत्तारूप आपणे जेने समजिये छिये अथवा धारिये छिये तेने माटे परावधिरूप ए वाचक शब्द छे. "ईश्वर तत्त्व के जे पोतेज उपादान वस्तु, अथवा एकज अने अखिल उपादान वस्तु छे तेमांथी एकेएक सृष्ट पदार्थ पोतानी सत्ता वा अस्तित्वने प्राप्त करे छे." (स्वीडेनबोर्गकृत दैवी ज्ञान, १९८.)

७. कांइ पण गेरसमज थती अटकाववाने माटे हुं ए बाबत उपर ध्यान खेंचवा मागुं छुं के आ सघळा सामान्य शब्दोमां परस्पर विरोध आवी जाय छे. 'प्रत्येक अने सघळा' वगेरे, अने 'आखुं' एमां मर्यादा अथवा हदनो भाव रहेलो छे. 'एक' मां पण मर्यादानो भाव छे; 'सर्व' मां पण मर्यादानो भाव छे; 'आखा' मां पण तेवोज भाव छे. पण एवा शब्दो वापर्या विना आपणो छुटको नथी. जेनुं स्वरूप आपणे मनवडे संपूर्ण लही शकता नथी ते वस्तु वाणीवडे कहेवामां आपणने जोइये तेवा शब्दो जडी शकेज नहि. 'निरपेक्ष' अथवा 'स्वतंत्र' के 'शुद्ध' वगेरे शब्दो उमेरवाथी पण कांई अर्थ सुधरतो नथी. वळी 'ईश्वर' ए शब्दने पण घणा खरा लोको घणीवार अजाणतां एवा अर्थमां वापरे छे के तेमां पण समर्यादपणानो भाव आवी जाय छे अने तेनी साथे वळी एवा शब्दो उमेरे छे के जेमां तेवा समर्यादपणानो अभाव सुचववानो हेतु रहेलो होय.

विवेक (भेद) राखे छे. सर्व वस्तुओना कर्त्ता अने सामग्री एवा बे मुख्य भाग छे ए झेनोना सिद्धान्त साथे मळतुं छे. सामग्री के जेना उपर क्रिया करवामां आवे छे, अथवा क्रियानो विषय थाय छे ते तो अव्याकृत जड वस्तु छेः जे क्रिया करे छे ते बुद्धितत्व छे, तेज ईश्वर छे, ते अविनाशी छे अने समग्र जडमां क्रिया करे छे तथा सघळी वस्तुओने पेदा करे छे. तेज प्रमाणे एन्टोनिनस् पण (५. ३२) मां समग्र उपादानमां जे व्यापी रहे छे अने नियत युगचक्रमां सदाकाळ आ विश्वनो कारभार चलावे छे ते बुद्धितत्त्वविषे बोले छे. ईश्वर अविनाशी छे अने जड पण अविनाशी छे. जडने आकार आपनार ते ईश्वर छे, पण ईश्वरे जड उत्पन्न कर्युं एम कहेवातुं नथी. आ मत के जे एनेक्सेगो-रासना मत जेटलो जुनो छे तेप्रमाणे ईश्वर अने जड एकबीजाथी निरपेक्ष अस्तित्व धरावे छे, पण ईश्वर जडउपर सत्ता धरावे छे.

एम कहेवाय छे के ज्यारे धर्मने माटे प्राणार्पण करनार एक ख्रिस्तीने पूछवामां आव्युं के ईश्वर ए शुं छे, त्यारे तेणे जवाब आप्यो के परमेश्वरने माणसनी पेठे कांई नाम नथी होतुं; अने जस्टिन् पण (एपोले. २. ६) मां एमज कहे छे के– पिता, परमेश्वर, कर्ता, प्रभु अने स्वामी ए नामो कांइ नामो नथी पण उपकारो अने कृतियो उपरथी उपजावी काढेला बिरुदो अथवा विशेषणो छे. (सेनेकाना डी बेनिफ.४.८ साथे सरखावो.) कोइ वस्तुनो आपणा मनमां पूरतो विचार बंधाया विना पण आपणे ते वस्तुनुं अस्तित्व मनमां समजी शकिये छिये,अथवा तो अस्तित्वविषे विचार धरावी शकिये छिये; अहीं "पूरतो विचार" एटले ते वस्तुना जेटलोज विस्तृत अने समान विचार समजवो. जो 'अमर्यादेश' ए शब्द हुं वापरी शकुं तो हुं कहुं छुं के 'अमर्याद देश' नो आपणने कांइ पण विचारज आवी शकतो नथी, तो पण जेने आपणे कोइ समर्याद भौतिक वस्तु कहिये छिये तेना परिमाणउपरथी आपणे समर्याद देशनो विचार बांधिये छिये; अने अमर्याद अथवा अवच्छेदरहित देशविषेनो विचार पण एनो एज होय छे अर्थात् कोइ पण विचारज होतो नथी; तथापि जो के आपणे देशने अवच्छेद रहित मानिये छिये अने तेने हदमर्यादावाळो लही शकता नथी तो पण कोण जाणे केवीए रीत्ये एक अर्थमां आपणे ए अवच्छेदरहित देशनो ख्याल आणी शकिये छिये.

जड अने ईश्वर ए बंनेना अस्तित्वनी वात मात्र दर्शावनारो ज आ सिद्धान्त छे. विरक्ततत्त्वज्ञानीओ (स्टोइक्स्) जडना मूल अने स्वभावविषेना खुलासो न थइ शके एवा प्रश्ननी कडाकूटमां उतरता ज नथी[८]. आपणे जेम जाणिये छिये तेम एन्टोनिनस् पण सर्व वस्तुओना आदि (आरंभ) होय छे एम माने छे; पण एमनी भाषा केटलीक वार घणी अस्पष्ट छे. में एक कठण वाक्यनो अर्थ समजाववानो प्रयत्न कर्यो छे. (७-७५ अने तेनी टिप्पनी.)

---

८. जड पदार्थनो विचार अने देशनो विचार एकबीजाथी जुदा पाडी शकाय तेम नथी. जड पदार्थ अने आकार उपरथी आपणे देशनो विचार उपजावी लेइये छिये. पण जड पदार्थनो के देशनो पूरतो विचार आपणा मनमां होतो नथी. जड पदार्थ पण पोतानी सूक्ष्मावस्थानी पराकाष्ठाए तो माणस जेने मन, आत्मा, अथवा बीजा जे कोइ नामे कार्यथी ज जाणवामां आवती शक्ति कहे तेना जेवो ज अविज्ञेय छे. एनेक्सेगोरासे बुद्धिशक्ति अने जड पदार्थ वचेनो भेद दर्शाव्यो छे, अने ते कहे छे के बुद्धिशक्तिए जड पदार्थने गति आपी, तथा एप्रमाणे जड पदार्थनां तत्वोने जुदां पाडीने तेमनो क्रम स्थाप्यो; पण सिम्प्लीसियस् कहे छे तेप्रमाणे आ स्थले एनेक्सेगोरासे पोताना तत्वज्ञानना अनुशासनना पायातरीके आरंभवाद मात्र मानी ज लीधो होय एम संभवे छे. एम्पिडोक्लीसे कह्युं छे के "विश्व अनादि छे ने छे ज." जे सृष्टि कहेवाय छे तेनो कांइ ख्याल तेना मनमां हतो ज नहि. ओसेलस् ल्युकेनस् (१, § २) ए ज सिद्धान्त पकडी रह्यो हतो के विश्व कोइए सृज्युं नथी तेम ज तेनो नाश पण थइ शकतो नथी. अर्थात् विश्व अनादिसिद्ध छे. ल्युकेनस् परमेश्वरना अस्तित्वने स्वीकारतो; पण एना ईश्वरवाद (Theology) मां केटलीक चर्चानी अपेक्षा रहे तेम छे. स्ट्रेबोना कहेवाप्रमाणे (पृष्ठ ७१३, आवृत्ति केस.), ब्रेचमेन्स् तेथी उलटो ज उपदेश करे छे के– विश्व तो सृजायलुं छे अने ते नाश पामे तेवुं छे; तथा तेनो कर्त्ता अने नियंता समग्रमां व्यापी रहेलो छे. सोलोमन्स् विस्डम् (सोलोमननी दक्षता)ना पुस्तकनो कर्ता [११–१७] कहे छे केः– "तारा सर्वशक्तिमान् हाथे आकाररहित (अव्याकृत) जडमांथी जगत् रच्युं." एनो आशय एवो थाय के जड तो प्रथमथी ज हतुं. जे सामान्य ग्रीक् (युनानी) भाषाना शब्दनो अर्थ आपणे जड (Matter) करिये छिये ते ग्रीक् शब्द Ule छे. ते जड के जेना पदार्थो बनेला छे, ते उपादानकारणरूप द्रव्य छे.

जेना सघळा जड पदार्थो बनेला छे ते सघळा मूलतत्वरूप विभागो (Stoicheia) नो जडमां समावेश थाय छे. पण आकारमां कांइ पण स्थायी नथी. एन्टोनिनसना कथनप्रमाणे (४-३६) "विश्वनी प्रकृतिने, जे पदार्थो अस्तित्वमां होय छे तेनो विकार करवानुं अने तेना जेवा नवा पदार्थो बनाववानुं, जेटलुं गमे छे तेटलुं बीजुं कांइपण गमतुं नथी. केम के, हवणां अस्तित्वमां छे ते प्रत्येक पदार्थ हवे पछी जे थवानुं छे तेनुं एक रीत्ये बीज छे. पण तुं तो जे बीज पृथ्वीमां अथवा गर्भाशयमां नांखवामां आव्यां छे, तेनो ज मात्र विचार करे छे, परंतु ए घणो ज तुच्छ विचार छे." त्यारे सघळा पदार्थो एक संतत प्रवाहमां अने विकारमां ज पडेला छे. केटलाक पदार्थोनुं पृथक्करण थइने तेओ मूलतत्वरूप थइ जाय छे, तेओने स्थाने बीजा पदार्थो थाय छे; अने एप्रमाणे "आखुं विश्व नित्य नवुं अने संपूर्ण रह्या करे छे." (१२-२३)

एन्टोनिनस् जेने "वीर्यरूप तत्वो" कहे छे, तेने माटे ते केटलाक अस्पष्टार्थ शब्दो वापरे छे. एपिक्युरसे कहेला अणुओ करतां आ "वीर्यरूप तत्वो" ने एन्टोनिनस् (६-२४) भिन्न प्रकारनां ज कहे छे, तेथी ए "वीर्यरूप तत्वो" ते अनियत रीत्ये भ्रमण करता करता अने कोइने गम न पडे तेवी रीत्ये जोडाइ जता जड अणुओ नथी. एक वाक्यमां (४-२१) एन्टोनिनस् "सजीवन तत्वो" एटले देह पड्या पछी "विश्वना वीर्यरूप तत्व"-मां प्रवेश पामता जीवात्माओविषे बोले छे. शल्ट्झ एम धारे छे के—"वीर्यरूप तत्वो एटले विविध मूलतत्वोना संबंधो, के जे संबंधोनो निर्णय ईश्वरवडे करवामां आवे छे अने जे संबंधोथी ज मात्र सेन्द्रिय जीवोनी उत्पत्ति थइ शके छे—एम कहेवानो एन्टोनिनसनो आशय छे." आ अर्थ कदी खरो पण होय; पण जो खरो होय तो पण तेमांथी कांइ अर्थसिद्धि थाय

तेवुं निकलतुं नथी.[१] एन्टोनिनस् वारंवार "प्रकृति" ए शब्द वापरे छे, अने तेना अर्थनो निश्चय करवाने आपणे प्रयत्न करवो जोइये. "प्रकृति" नो व्युत्पत्तिशास्त्रानुसार सादो अर्थ "उत्पत्ति" एटले जेने आपणे पदार्थो कहिये छिए तेमनो जन्म. रोमन् लोको Natura (नेच्युरा) शब्द वापरता, तेनो पण मूळ अर्थ तो "जन्म" ज थाय छे. पण ग्रीक् लोको तेम ज रोमन् लोको आ सादा अर्थने वळगी रह्या नथी अने आपणे पण वळगी रहेता नथी. एन्टोनिनस् (१०-६) मां कहे छे के:—"विश्व गमे तो आणुओनो समुदाय छे के प्रकृति एक तंत्र छे, तो पण एटलुं तो सउथी पहेलुं सिद्ध करवुं जोइये के हुं ते समग्रनो एक भाग छुं के जे समग्रउपर प्रकृति सत्ता चलावे छे. अत्र एम जणाशे के जाणे प्रकृतिने एक कर्त्ताहर्ता समर्थ शक्तिने रूपे जोइ छे, अर्थात् प्रकृतिने कोइ एवी वस्तुरूपे जोइ छे के जे वस्तु परमेश्वरथी स्वतंत्र रहीने नहि तो परमेश्वरे तेने आपेला सामर्थ्यथी प्रवर्त्ते छे. जो के घणा लेखको "प्रकृति" (Nature) ए शब्दने तेनो चोकस अर्थ ठराव्या विना वापरे छे ए खुलुं छे तो पण जो हुं उपरना कथनने बरोबर समजतो होउं तो ए (Nature) शब्द उपर कहेवामां आव्युं तेवी रीत्ये हवणां वारंवार वपराय छे. ते ज प्रमाणे केटलाक लेखको 'प्रकृतिना नियमो' एवा शब्दो समजी शकाय ते अर्थमां वापरे छे, पण बीजा लेखको ते शब्दोने कोइपण निर्णीत अर्थमां नथी वापरता ते पण तेटलुंज खुल्लुं

१. जस्टिन् (एपोल. २. ८) ज्यांआगळ स्टोइक्स् (विरक्ततत्वज्ञानीओ) विषे बोले छे त्यां अमुक ल्याटिन् शब्दो वापरे छे; पण ए शब्दो ते एक सविशेष अर्थमां वापरे छे (टिप्पनी, ११). पहेलांना ख्रिस्ती लेखको स्टोइक् तत्वज्ञानना शब्दोथी परिचित हता, अने तेओना लेखोउपरथी एम जणाय छे के ते समये ख्रिस्तीधर्मनुं विवरण करनाराओ अने ग्रीक् तत्वज्ञान वच्चेनुं विवादयुद्ध आरंभाइ चूक्युं हतुं, सेइन्ट् पिटरना बीजा पत्र (२. १, ५. ४)-मां पण एक स्टोइक् परिभाषानुं वाक्य आपणने मळी आवे छे.

छे. बिशप् बटलर् कहे छे केः–"प्रकृतिअनुसार (Natural) ए शब्दनो एक ज स्पष्ट अर्थ 'स्थापेलुं' 'निर्णीत' के 'ठरावेलुं' एवो थाय छे; "केम के, प्रकृतिना नियमथी उपरांत अथवा चमत्काररूप कार्य करवाने माटे एक कार्य एकदम करनार कर्त्तानी जेटली आवश्यकता रहे छे तेटली ज आवश्यकता जे कांइ कार्य प्रकृति-अनुसार छे तेने पण तेवुं करवाने अर्थात् निरंतर अथवा निर्णीत समये ते करवाने माटे कोइएक बुद्धियुक्त कर्तानी आवश्यकता रहे छे, अने एवो कर्ता होवो ज जोइये एम प्रथमथी ज मानवुं पडे छे." एप्रमाणे बिशप् बटलर् जे अर्थ आ प्रकृति (Nature) शब्दनो करे छे, ते सिवाय तेनो बीजो कोइ अर्थ नथी. ज्यारे प्लेटो (डी लेग० ४-७१९) मां कहे छे के "अस्तित्व धरावनार सघळा पदार्थोनो आदि मध्य अने अंत परमेश्वर पोताना हाथमां राखे छे, अने प्रकृति (एटले एक नियतक्रम) प्रमाणे संसारचक्रमां पोताना कार्यक्रममां सीधेसीधो आगळ चाल्या करे छे; अने ईश्वरनी साथे निरंतर न्याय रहेलो छे, ते न्याय ईश्वरी-नियम एटले जे नियम अथवा क्रम परमेश्वर पाळे छे तेथी जेओ आडाअवळा जाय छे तेमने शिक्षा करे छे"–त्यारे तेनो अर्थात् प्लेटोनो उपर कह्यो ते ज आशय छे.

ग्रहोनी गतिओ, जेने आपणे गुरुत्वाकर्षण कहिये छिये तेनुं कार्य, सेन्द्रिय पदार्थोनुं भौतिक संयोगीकरण अने पृथक्करण, छोडवा अने सजीवन शरीरोनी उत्पत्ति, तेमनां जन्म वृद्धि अने लय–के जेने आपणे मरण कहिये छिये–ए बधुं ज्यारे आपणे जोइये छिये, त्यारे व्यतिकरोनो एक एवो नियमित अनुक्रम आपणा अवलोकनमां आवे छे के जे अनुक्रम वर्त्तमान कालना अने आपणे जाणिये छिये तेटला भूतकालना पण अनुभवनी मर्यादामां नियत अने एकधारो छे. पण जो एम न होय, अर्थात् आपणने ज्ञात छे ते व्यतिकरोना नियम अने अनुक्रममां अत्यंत आगळ जतां फेरफार

पडे तेम होय–एवो फेरफार बुद्धिगोचर थाय तेवो होय–तो व्यतिकरोनो एवो आखो नियम अने अनुक्रम आपणे शोधी काढ्यो नथी अने कदी शोधी काढवाना पण नथी के जे अनुक्रममां ते अनुक्रमना ज स्वभावप्रमाणे एटले तेना स्थपायला नियमप्रमाणे जेने आपणे पदार्थोनो क्रम अथवा प्रकृति कहिये छिये तेनो कांइ फेरफार आवेलो होय. वळी एवा फेरफार पण थयेला छे एम समजी शकाय तेम छे खरुं–अर्थात् वस्तुक्रममां एवा फेरफार के जेमने भाषानी अपूर्णताने लीधे आपणे फेरफार कहेवा पडे छे, पण ते कांइ फेरफार छे ज नहि; अने विशेष ए पण निश्चित छे के सघळा वास्तव व्यतिकरो, जेवा के उत्पत्ति, वृद्धि अने लयना व्यतिकरोना खरा अनुक्रमविषेनुं आपणुं ज्ञान सदैव अपूर्ण ज रहेवानुं.

प्रकृतिविषे आपणे बोलिये तेना करतां कारणकार्यविषे बोलिये त्यारे पण आपणने कांइ वधारे फावतुं नथी. जीवनव्यवहारनां कामने माटे आपणे 'कारण अने कार्य' ए शब्दो सगवड भरेली रीत्ये वापरी शकिये, अने ते शब्दोनो आपणे निराळो निराळो अर्थ ठरावी शकिये–कांइ नहि तो एटलो निराळो के जेथी सघळो समजफेर थतो अटकावी शकिये. पण ज्यारे आपणे वस्तुमात्रनां कारण अने कार्यविषे बोलिये त्यारे तो बीजी ज वात बने छे. जे सघळुं आपणने जणाय छे ते व्यतिकरो छे, अथवा आपणा समजवाप्रमाणे ते तो नियमित अनुक्रममां एक एकनी पाछळ आवता देखाता छे, तेथी जो कोइ एक व्यतिकर देखावोनी परंपरामां अटकी जाय तो आपणे समजिये छिये के ते परंपरामां कां तो तूट पडी होवी जोइये के कां तो पेला देखाता बंध थयेला व्यतिकरनी पाछळ बीजुं कांइक देखाशे अने खाली पडेला स्थानने पूरी नाखशे; अने एप्रमाणे ते परंपरामां तेना वृद्धिक्रममां कोइक प्रकारे फेरफार थाय छे अथवा तो केवळ फेरफार थइ जाय छे.तो कारण

अने कार्यनो में कह्यो छे ते उपरांत प्रकृतिना व्यतिकरोना अनुक्रम-मां बीजो कांइ अर्थ थतो नथी; अने प्रत्येक अनुपाती व्यतिकरनुं खरुं कारण अथवा केटलाक कहेवा मागे तेम सर्वोपरि कारण तो सघळी वर्त्तमान, भूत अने भविष्यत् वस्तुओनुं जे कारण छे तेमां ज रहेलुं छे. एप्रमाणे—प्रकृतिना व्यतिकरोना वर्त्तमान क्रममां जो आपणे **आरंभ** समजी शकिये अने तेने सृष्टिनो **आदि** गणिये तो ज **'सृष्टि'** ए शब्दनो कांइ वास्तव अर्थ थाय; पण सामान्य मनुष्यो जेवो अर्थ करे छे तेवा अर्थमां अमुक समये सघळी वस्तु-ओनी सृष्टि अने ते पछी आदिकारणनुं निवृत्त थवुं तथा व्यति-करना सघळा अनुक्रम प्रकृतिना नियमने अथवा तो लोको जे कांइ शब्दो वापरे तेने सोंपी देवा,—ए तो केवळ अशक्य ज छे[10].

हवे, जो के जे वाक्योमां **एन्टोनिनस्** प्रकृतिविषे, वस्तुओना विकारोविषे अने विश्वना निभावविषे बोले छे—ते सघळां वाक्यो समजवामां मोटी कठिनता छे, तो पण मने निश्चय थयो छे के जे अर्थ में दर्शाव्यो छे ते ज अर्थमां **एन्टोनिनस्** पण **प्रकृति** अने

---

१० ज्यारे आपणे कोइ पण वस्तुनो विचार करिये त्यारे ते विचारनी साथे ज तेना देश अने कालनो विचार आवे छे. पण अनंतकाल अने अनंतदेश एक घणी अपूर्ण रीत्ये ज आपणा विचारना विषय थइ शके, तेविना बीजी कोइपण रीत्ये ते आपणा विचारना विषय थइ शकता नथी. ज्यारे आपणे परमेश्वरविषे विचार करिये त्यारे तेमां काल अने देशनो कांइ पण विचार करवो जोइये ज नहि. **स्वीडन्बोर्ग्** कहे छे केः—"प्राकृत मनुष्य तो एम माने के जो काल, देश अने द्रव्यजन्य वस्तुओना विचारो काढी लेवामां आवे तो तेने पछी कांइ विचार रहेवानो नहि; केम के ते त्रणना विचारो उपर मनुष्यना समग्र विचारनो पायो रचायलो छे. पण माणसे जाणवुं जोइये के ज्यांसुधी काल देश अने द्रव्यना विचारनो अंश रहेलो होय छे त्यांसुधी ते प्रमाणमां तेना विचारो सीमा अने मर्यादावाळा होय छे; अने ते त्रणना विचारनो अंश जेटलो नथी होतो तेटला प्रमाणमां तेना विचारो सीमारहित अने विस्तृत होय छे; केम के तेटले अंशे मन भौतिक अने सांसारिक वस्तुओ करतां अधिक उच्च दशाए पहोचेलुं होय छे." (स्वर्ग अने नरक विषे, १६९.)

प्रकृतिअनुसार (प्राकृत) ए शब्दो वापरे छे; अने **एन्टोनिनस्** स्पष्ट रीत्ये अने यथार्थ सामंजस्यपूर्वक शब्दो केम वापरवा ते जाणनार पुरुष हता, तेथी कोइ वाक्योमां तेमनो अर्थ संदिग्ध होय तो पण आपणे एम धारी लेवुं जोइये के **प्रकृतिविषेनो** तेमनो विचार ते सर्वव्यापक, सदा विद्यमान, अने निरंतर प्रवर्त्तती ईश्वरशक्तिविषेनी तेमनी सुदृढ निष्ठानी साथे मळतो ज हतो. (२. ४; ४. ४०; १०. १; ६. ४०; अने बीजां वाक्यो जुवो. **सेनेकाना डी बेनिफ**. ४. ७. साथे सरखावो. **स्वीडेन्बोर्गनुं एन्जेलिक् विझडम्**, २४९-२५७ जुवो.)

एन्टोनिनस्ना लेखमां एवुं घणुं छे के जे समजवुं कठिन छे अने तेमणे जे लख्युं छे ते सघळुं ते पोते पूरेपूरुं समज्या नथी एम पण कही शकाय; पण एम कहेवुं तेमां कोइपण रीत्ये विशेष नथी, केम के हवणां पण एवुं बने छे के पोते तेम ज बीजुं कोइपण जे समजी शके नहि तेवुं कोइकोइ माणस लखे छे. वस्तुओप्रत्ये दृष्टि करवानुं अने ते वस्तुओ–द्रव्य, निमित्त, अने संबंध अथवा प्रयोजन के जेने आपणे कार्य अथवा परिणाम कहिये छिये तेवा प्रकारनुं कांइक पोते कहेवा धारता जणाय छे–तेमां वहेंचाइ जती जोवानुं आपणने **एन्टोनिनस्** (१२. १०) मां कहेछे. 'कारण' (aitia) ए शब्दमां कठिनता रहेली छे. संस्कृतमां तेवो ज शब्द 'हेतु' छे; अने **भारतवर्षना** अने **ग्रीसना** सूक्ष्म भेद जाळवनार सघळा तत्वचिन्तकोए तथा अर्वाचीन समयना ओछी चोकसी राखनार सघळा तत्वचिन्तकोए पण एज शब्द अथवा एनो कोइ पर्याय शब्द संदिग्धरीत्ये वापर्यो छे. तो पण कोइ वार एम पण बने के लेखकना मनमां गुंचवाडो नथी होतो पण भाषानी ज अनिवार्य संदिग्धतामां ज ए गुंचवाडो रहेलो होय छे, केम के केटलाक डाह्यामां डाह्या माणसो पण पोताना

कहेवाना आशयने पोते ज समजता न हता एम हुं धारी शकतो नथी. ज्यारे एन्टोनिनस् (४. ३६) मां एम कहे छे के,-"कोइ एक रीत्ये हाल अस्तित्वमां छे ते वस्तु हवे पछी थनार वस्तुनुं बीज छे," त्यारे केटलाक आर्यावर्त्तना तत्वचिन्तकोए कहेलुं छे ते ज एन्टोनिनस् पण कहे छे एम धारी शकाय, अने एप्रमाणे एक गहन सत्य ते एक मोटी निरर्थक अशक्यताना रूपमां आवी जाय. पण एन्टोनिनस् "कोइ एक रीत्ये" एवा शब्दो वापरे छे, अने कोइ एक रीत्ये ते सत्य कहे छे; अने बीजी रीत्ये जो तमे तेमना कहेवानो अर्थ खोटो समजो तो तेमणे खोटुं कह्युं. ज्यारे प्लेटोए कह्युं के "कोइपण वस्तु छे नहि, पण (निरंतर) थया ज करे छे" त्यारे तेणे एक मूलसूत्र कह्युं के जेमांथी आपणे कांइक अर्थ काढी शकिये, केम के ए कहीने प्लेटो कारणकार्यना सघळा व्यावहारिक विचारोनो नाश करतो नथी, पण कारणकार्यना मनोरचित विचारोनो ज नाश करे छे. आपणने जणाय छे तेम वस्तुओनी आवी श्रेणिनो विचार कालक्रममां एटले परंपरामांज करवो पडे छे, अने एक वस्तुस्थिति तथा अन्य वस्तुस्थिति वच्चे आपणने आंतरा जणाय छे अथवा समजाय छे, तेथी पूर्वापर अने तेवच्चेनो अंतर, तथा भाव, तथा अभाव, तथा आदि अने अंत थाय छे. पण वस्तुप्रकृतिमां तो एवुं कांइपण छे ज नहि. वस्तुप्रकृति तो एक अनंतप्रवाह ज छे. (४. ४५; ७. ७५.). ज्यारे एन्टोनिनस् जन्म अथवा जननविषे (१०. २६) मां बोले छे, त्यारे ते-एक कारणनुं प्रवर्त्तवुं अने तेपछी ते कारणे अमुक स्थितिए आणी मुकेलुं काम बीजा कारणे उपाडी लेवुं एवी परंपराविषे ज बोले छे; अने कदाच आपणने एम पण लागशे के 'प्रकृतिनी स्वयंविकासमान शक्ति' कहेवाय छे तेनो कांइक विचार एन्टोनिनस्ना मनमां हतो; 'प्रकृतिनी स्वयंविकासमान शक्ति'—खरेखर,

ए एक सुंदर कथन छे, पण हुं मानुं छुं के तेना लेखक एन्टो- निनस् ते कथननो पूरेपूरो अर्थ समज्या न हता, अने एथी प्रकृति अथवा द्रव्य, अथवा बीजुं कांइ के जे ईश्वरने स्थाने आवे छे पण जे ईश्वर नथी तेमांथी विकासद्वारा सघली वस्तुओने आवती माननार कोइएक हिंदु संप्रदायना पोते अनुयायी होवानो आरोप तेमना उपर आववा पाम्यो. सउ कोइ पोतानी शक्ति अथवा रुचि प्रमाणे धारे, अने एवी जे छुट हुं बीजाओने आपुं छुं तेवी ज छुट लेवानो हुं पण मारे माटे अधिकार मागुं छुं. ज्यारे कोइ माणस कांइ लखतो होय त्यारे जो के ते लखनारनो जे आशय न होय तेवो आशय तेना शब्दोमांथी निकले एवो परिणाम आवे तो पण तेना सघला शब्दोनो शो आशय होवो जोइये ते शोधी काढवाने माटे आपणे सारी पेठे यत्न करवो जोइये; अने जो एम करतां तेना शब्दो अने आशयमां परस्पर विरोध आवे तो तेमां आपणो दोष नथी, पण तेमां तेनुं ज दुर्भाग्य छे. हवे (१०. २६) मां जो के ते फकराने अंते नेत्रथी अदृष्य रीत्ये वर्त्तनारी तो पण कांइ ओछी स्पष्ट रीत्ये नहि वर्त्तनारी कोइ शक्तिविषे एन्टोनिनस् बोले छे त्यां ते पोते जे कहे छे तेमां ते कांइक एवी ज स्थितिमां छे. केम के, ते शक्ति विविध कारणोनी परंपरामां रहेली जणाय छे एम कहेवानो के बीजा कशामां रहेली जणाय छे एम कहेवानो आ (१०. २६) वाक्यमां एन्टोनिनसनो आशय छे ते कोइ पण कही शके तेम नथी. तो पण बीजां वाक्योमांथी हुं एम समजुं ज छुं के दृष्य विश्वविषेनी तेमनी समज में दर्शावी छे ते छे. जॉबे अथवा जॉबनुं पुस्तक लखनारे जेवी भाषा वापरी छे तेवी भाषा जो आपणे वापरिये तो एम कहेवाय के—'ईश्वर अदृष्य रहीने काम करे छे;' अने कदाच हुं एवी भाषा वापरुं तो कांइ बाध नथी. सेइन्ट् पॉले एथेन्स् नगरना लोकोने कह्युं के—"आपणे

परमेश्वरमां जीविये छिये, फरिये छिये अने रहिये छिये;" अने ए कांइ नवो सिद्धान्त नथी एम पोताना श्रोताओने बतावी आपवाने माटे तेमणे युनानी कविओनां वचनोनां प्रमाण आप्यां. आ कविओमांनो एक विरक्ततत्वज्ञानी क्लीन्थीस् हतो के जेनुं करेलुं ईश्वरस्तवन ते एक भक्ति अने तत्वज्ञाननुं उच्च निदर्शन छे. ते स्तवन प्रकृतिने स्वसत्तारहित बतावे छे अने तेने साक्षात् ईश्वर-सत्तानी नीचे मूके छेः–

माराठी चोपाइ. (एकत्रीसा सवैया)

"भूमंडलनी आगल पाछल फरतुं आ सघलुं आकाश,
तुज आज्ञा मानी वर्त्ते छे तुं दोरे त्यम, हे अविनाश !
महेश ! तुज विण महीमॉं, नभमां, के जलमां कशुंए नव थाय,
पण दुष्टोनी मूर्ख कृतिथी दूर रहे छे तुं जगराय !"

ईश्वरशक्ति अने व्यवस्थाना अस्तित्वविषेनो एन्टोनिनसनो निश्चय तेमने थयेली विश्वक्रमनी प्रतीतिउपर बंधायलो हतो. (झेन्. मेम्. ४. ३, १३ इ०) मां सॉक्रेटीस् कहे छे तेप्रमाणे एन्टोनिनस् एम पण कहे छे के–आपणे दिव्य शक्तिओना आकार जोइ शकता नथी, तो पण तेओनां कार्य आपणे जोइये छिये तेथी आपणे जाणिये छिये के ते शक्तिओ छे खरी.

"देवोने तें क्यां जोया छे, अथवा तेओ छे एम तुं शी रीत्ये समजे छे के तुं तेओने पूजे छे? एवो प्रश्न जे लोको करे छे तेओने हुं एवुं उत्तर आपुं छुं के–पहेली वात तो ए छे के देवो प्रत्यक्ष पण देखी शकाय छे; बीजी वात ए छे के मारा पोताना आत्माने में मारी आंख्योथी देख्यो नथी तो पण हुं तेने मान आपुं छुं. तो देवोना विषयमां पण ए ज प्रमाणे छे. तेओनी शक्तिनो मने जे कांइ अनुभव निरंतर थया करे छे, ते उपरथी तेओना अस्तित्वने हुं जाणुं छुं अने हुं तेमने मान आपुं छुं." (१२. २८, अने तेनी टिप्पनी. कॉम्पू. एरिस्टोटल् डि मन्डो,

प्र. ६; झेनो. मेम्. १. ४, ९; सिसेरो, टस्कलु. १. २८, २९, सेइन्ट् पॉलनो रोमन् लोकोप्रत्येनो पत्र, १. १९, २०. अने रेइमोन्ड् डि सॅबॉन्डेमाटे मॉन्टेइने करेल बचाव, २. प्र. १२.) आ एक घणो जुनो तर्क छे अने तेने घणाखरा लोको बहु वजनदार गणता तथा ते तर्क पूरती रीत्ये सबल जणायो छे. एक विद्वत्ताभरेली टीकामां तेनो विस्तार थवाथी तेना बलमां लेश पण वधारो थाय तेम नथी. तेना सादा कथनमां ज ते जेटलो सुगम्य बनावी शकाय तेटलो सुगम्य छे. जो ए तर्कनो कोइ अनादर करे तो ते अनादर करनारनी साथे कांइ चर्चा करवा जेवुं ज नथी, अने जो तेनो विस्तार करीने तेमां असंख्य सूक्ष्म बाबतो बताववामां आवे तो ते प्रतिपादननी किमत शब्दोना ढगलानीचे दटाइ जवानुं जोखम रहे छे.

मनुष्य पोताना अंतःकरणमां जाणे छे के—ते पोते एक अध्यात्मशक्ति अथवा चेतनाशक्ति छे, अथवा तो तेने पोताने एवी शक्ति छे, पछी भलेने तेने गमे ते रीत्ये एवुं भान थतुं होय—केम के हुं तो एक वस्तुगति ज सादी रीत्ये कहेवा इच्छुं छुं. मनुष्यमां पोतामां एवी शक्ति छे, ते उपरथी, एन्टोनिनस्ना कहेवाप्रमाणे, मनुष्य एम मानवाने दोराय छे के एथी पण वधारे मोटी कोइ शक्ति छे खरी, के जे मोटी शक्ति, प्राचीन विरक्ततत्वज्ञानीओ आपणने कहे छे तेप्रमाणे, मनुष्यमां जेम चेतना[11] शक्ति व्यापीने रहे छे तेम आखा विश्वमां व्यापीने रहे छे.

---

११. इंग्रेजी भाषान्तरकर्ता मि. ज्यॉर्ज् लॉन्ग् कहे छेः—में nous ए शब्दनो अर्थ हमेश "बुद्धि" (intelligence) अथवा "चेतना" (intellect) करेलो छे. ए शब्द "जड" थी उलटो एवो "चेतन" नो भाव दर्शाववाने जुनामां जुना ग्रीक् तत्वचिन्तकोए वापरेलो जणाय छे. में हमेश Logos ए शब्दनो अर्थ Reason करेलो छे, अने Logikos नो अर्थ Rational अथवा कोइकोइ वार Reasonable करेलो छे, केमके noerosनो अर्थ में intellectual करेलो छे. जेणे कोइ तत्वज्ञानसंबंधी लेखो विचार्या छे अने

(एपिक्टेटसनां व्याख्यानो, १. १४. तथा वॉल्टॅर् ऐ मेड् नेकर्, वोल्यु. ६७. पृष्ठ. २७८. आवृत्ति. लॅकूवीन्. ए पुस्तको सरखावो.)

त्यारे ईश्वरनुं अस्तित्व तो छे, पण आपणे ईश्वरनी प्रकृति (स्वभाव) विष शु जाणिये छिये ? एन्टोनिनस् कहे छे के मनुष्यनो आत्मा ईश्वरमांथी निकळी आव्यो छे. आपणने इतर प्राणीओना जेवां शरीरो छे, पण आपणने देवोनी पेठे तर्कशक्ति —बुद्धि छे. इतर प्राणीओने जीवन (psuche), तथा आपणे जेने कुदरती प्रेरणाओ अथवा क्रियानां स्वाभाविक तत्वो कहिये छिये ते छे. पण बुद्धियुक्त एकला मनुष्य प्राणीने ज तर्कशक्तिवाळो,

---

वांच्या छे एवो दरेक माणस जाणे छे के कोइ अमुक भावो दर्शाववाने शब्दो शोधी काढवा ए केवु कठण छे, शब्दो ए भावोने केवी अपूर्ण रीत्ये दर्शावे छे, अने शब्दो वारंवार केवी बिनकाळजीथी वापरेला होय छे. एक Logos शब्दना ज जुदाजुदा अर्थो गमे तेवा माणसने गुंचवणीमां नांखी देवाने पूरता छे. बाइबलनी न्यु टेस्टामेन्ट (सेइन्ट जॉन्, प्र १) ना इंग्रेजी भाषान्तर करनाराओए Logos नो अर्थ, जर्मन् लोकोए das Wort कर्यो छे तेम, the Word एवो कर्यो छे; पण तेओना ईश्वरवादविषयक लेखोमां तो तेओ केटलीक वार असल शब्द Logos ज राखे छे. जर्मनोनी भाषामां एक Vernunft एवो शब्द छे, ते शब्दनो अर्थ इंग्रेजी शब्द Reason अथवा जे जेवां छे एवां ज लही शकाय तेवां अनिवार्य अने निरपेक्ष सिद्धतत्वोना अर्थनी घणी ज पासे आवी जतो जणाय छे. जेने केटलाक लोको विचारना नियमो, देश अने कालना भावो, तथा जेने माटे कांइ प्रमाणनी अपेक्षा नथी अने जे सिद्ध पण थइ शके नहि अने जेनो नकार पण करी शकाय नहि एवां स्वतःप्रमाण वाक्यो अथवा आदि सिद्धान्तो कहे छे–ते एवां स्वतःसिद्ध तत्वो छे. तेथी जर्मनो एम कही शके के–" Gott ist die hõchste Vernunft " God is the Supreme Reason=ईश्वर ए परात्पर स्वतःसिद्ध तत्व छे. जर्मन् भाषामां वळी एक बीजो शब्द Verstand छे, ते स्वतः अस्तित्ववाळी केवळ वस्तु तरीके नहि पण एक व्यक्तिगत जीव–जेवो के मनुष्य–तेनी साथे संबंध राखती वस्तु तरीके इंग्रेजी शब्द understanding, intelligence, intellect (बुद्धि) नो अर्थ धरावतो जणाय छे. तेथी ए Verstand संस्कार (Vorstellungen) ने प्राप्त करवानी, अने तेमांथी निराळा निराळा विचारो (Begriffe) बांधवानी तथा भेदो समजवानी योग्यता छे. हुं

बुद्धिमान् आत्मा छे. एन्टोनिनस् आ वात निरंतर आग्रहपूर्वक कहे छे; मनुष्योमां ईश्वर छे,[१२] अने तेथी आपणे आपणामां रहेला परमेश्वर प्रत्ये निरंतर ध्यान आपवुं जोइये, केम के परमेश्वरना स्वभावविषे आपणे कांइ ज्ञान मेळवी शकिये तेवो मार्ग ए एक ज छे. मानवआत्मा ए एक अर्थमां परमेश्वरनो अंश छे, अने ए आत्माने ज मात्र परमेश्वर साथे कांइ संबंध छे, केम के एन्टोनिनस् (१२. २)मां कहे छे केः—" आ मानवशरीरमां साक्षात् परमेश्वरमांथीज उभराइने उतरी आवेली जे एकली बुद्धि ज छे तेने

नथी धारतो के आ टीकाओ वाचकने एन्टोनिनसनो ग्रंथ समजवामां अथवा तेमणे करेला nous अने logos शब्दना उपयोग समजवामां मदद करशे. बादशाह एन्टोनिनसनो आशय तेमना शब्दोमांथी ज काढवो जोइये, अने जो ते आशय आधुनिक विचारोनी साथे बिलकुल मळतो न आवतो होय तो ते आशयने पराणे मळतो करवो ते आपणुं काम नथी पण आपणुं काम तो तो, जो बने तो तेमनो शो आशय छे, ते शोधी काढवानुं ज छे.

जस्टिनस् (एड् डायोग्नेटम्. प्र. ७)मां कहे छे के सर्व शक्तिमान् अने सर्वस्रष्टा परमेश्वरे सत्यने तथा पवित्र अविज्ञेय Logos (दैवीबुद्धि)ने मनुष्योनां अंतःकरणमां स्थापेल छे; अने आ Logos ते आ विश्वनो कारीगर अने स्रष्टा छे. प्रथम दोषनिवारण अर्थात् बचावना (प्र. ३२)मां ते कहे छे के परमेश्वरमांथी प्राप्त बीजक (Spermo) ते Logos छे. ते परमेश्वरने माननाराओमां रहे छे. तेथी एम जणाय छे के जस्टिनसना कहेवाप्रमाणे ते Logos मात्र एवां आस्तिक जनोमां ज होय छे. द्वितीय दोषनिवारण (प्र. ८)मां ते Logos नुं बीज समग्र मानवजातिमां रोपायानुं कहे छे; पण विरक्ततत्वज्ञानीओ जेवा लोको के जेओ पोताना जीवनने ते Logos ने अनुसरीने नियममां राखे छे तेओमां तो Logos नो एक भाग ज मात्र होय छे, अने समग्र Logos के जे क्राइस्ट छे तेनुं ज्ञान अने चिन्तन तेओने होतुं नथी. स्वीडेन्बोर्गनी (एन्जेलिक् विझडम्, २४० मांनी) टीकाओ जस्टिनसना विचारोसाथे सरखाववा जेवी छे. आधुनिक तत्वचिन्तक स्वीडेन्बोर्ग् प्राचीन तत्वचिन्तक जस्टिनस्साथे तात्पर्यमां मळतो आवे छे; पण स्वीडेन्बोर्ग् वधारे चोकस छे.

१२. कोरिन्थियनो प्रत्येना पत्र, १. ३. १७, अने जेम्स् ४. ८, " तमे परमेश्वरनी समीप जाव अने ते तमारी समीप आवशे. " ए लेखो सरखावो.

ज पोताना एकला बुद्धिअंशवडे ज परमेश्वर स्पर्श करे छे." जे मनुष्यशरीरमां गुप्त रहेलुं छे ते जीवन छे, ते ज मनुष्य पोते छे. बाकीनुं सघळुं वस्त्र, आवरण, इन्द्रिय, साधन छे के जेने जीवतो मनुष्य-वास्तवे[१३] मनुष्य-पोताना वर्त्तमान अस्तित्वने अर्थे वापरे छे.

---

१३. स्वीडेन्बोर्गनो पण आत्माविषे आ ज सिद्धान्त छे. "जेना विषे एम कहेवाय छे के जे मरण पछी पण जीवशे ते आत्माना संबंधमां तो एवुं छे के ते तो शरीरमां जीवे छे ते अर्थात् मांहेलो पुरुष के जे ते शरीरथी जगतमां प्रवृत्ति करे छे अने जेमांथी शरीर पोते पण जीवनशक्ति मेळवे छे–ते स्वयं-पुरुष पुरुष सिवाय बीजुं कांइ नथी." [डब्लिनना आर्चबिशप् (व्हेटली)ने लखेला पत्रमां, "इमेन्युअल् स्वीडेन्बोर्गना ईश्वरवादविषयक लेखोना व्यावहारिक स्वभावलक्षण" ए नामना पुस्तकनी सन १८५९ वाळी बीजी आवृत्तिना पृष्ठ ४५६ नो क्रिस्सोल्डे करेलो उतारो; ए पुस्तक पण वांचवाथी ईश्वरवादीओने लाभ थाय तेवुं छे]—आत्माविषेनो आ एक प्राचीन सिद्धान्त छे; तेनो वारंवार उद्घोष करवामां आव्यो छे, पण जेनो गेटेकरे पोताना "एन्टोनिनस्" ए नामना पुस्तकना पृष्ठ ४३६ मे उतारो आपेलो छे ते "ओक्टर डि मन्डो" प्र. ६ ठावडे ते सिद्धान्त जेवो दर्शाववामां आव्यो छे तेना करतां वधारे सारी रीत्ये कदी पण दर्शाववामां आव्यो नथी. "जे आत्मावडे आपणे जीविये छिये अने शहेरो तथा घरो भोगविये छिये ते आत्मा अदृष्य छे, पण ते तेनां कामोथी जणाय छे; केम के ते आत्माथी ज आखी जीवनपद्धतिनी योजना अने व्यवस्था करवामां आवी छे, तथा जाळवी राखवामां आवी छे. ते ज प्रमाणे आपणे परमेश्वरविषे विचार करवो जोइये, के जे सामर्थ्यमां सर्वथी शक्तिमान्, सौन्दर्यमां सर्वथी मनोहर, जीवनमां अमर, अने सद्गुणमां सर्वोपरि छेः तेथी जो के ते मानुषी प्रकृतिने अदृष्य छे तो पण तेनां कामोथी ज ते जणाय छे." ए ज तात्पर्यवाळां बीजां वाक्योनो पण गेटेकरे उतारो आप्यो छे (पृष्ठ. ३८२). आत्माविषे बिशप् बटलरनुं पण ए ज कहेवुं छेः—"त्यारे बधुं जोतां आपणां ज्ञानेन्द्रियो अने अवयवो ते तो नक्की साधनो ज छे, के जेनो आपणे जीवतां मनुष्यो पोते जाणवाने अने हालवाचालवाने उपयोग करिये छिये." जो आ जोइये तेटलुं स्पष्ट न होय तो ते वळी कहे छे केः—"जेम आपणी आशपाशना बीजा कोइ पदार्थने आपणो पिंड किंवा आपणा पिंडनो भाग गणता नथी तेम ज आपणां सेन्द्रिय शरीरो ते पण आपणो आत्मा किं वा आत्मानो भाग नथी." (एन्टोनिनस् १०. ३८ सरखावो.)

जे कोइ श्वास लेवाने समर्थ छे तेने माटे हवा सर्वत्र प्रसरेली छे, अने ते ज प्रमाणे जे कोइ चेतनशक्ति के जे पोतानी अंदर सर्व वस्तुओने धारण करे छे तेनो उपभोग करवाने खुशी होय छे तेने माटे ते चेतनशक्ति पण हवानी पेठे सर्वत्र अने स्वतंत्र व्यापी रहेली छे. (८. ५४). ईश्वरमय जीवन गाळवाथी मनुष्य ईश्वरना ज्ञानने पामे छे.[१४] एन्टोनिनस् जेने स्वांतस्थ (dæmon अथवा theos) कहे छे तेने अनुसरवाथी मनुष्य सर्वोत्कृष्ट कल्याणरूप परमेश्वरनी अत्यंत निकट आवे छे, केम के पोताना अंतर्यामी नेतानी साथे पूरेपूरी एकता तो मनुष्य कदी पण मेळवी शके नहि. " देवोनीसाथे रहो.—अने ते ज मनुष्य देवोनी साथे रहे छे के जे तेओने निरंतर एम बतावी आपे छे के तेने पोताने माटे जे निर्माण थयुं छे तेथी तेनो पोतानो आत्मा संतुष्ट छे, तथा देवाधिदेवे प्रत्येक मनुष्यने जे पोतानो अंश तेनो रक्षक अने नेता थवाने आपेलो छे ते dæmon (अन्तर्यामी)नी इच्छाप्रमाणे सघळुं करे छे.—अने आ dæmon ते प्रत्येक मनुष्यनी समजण तथा बुद्धि छे. (५. २७).

---

१४. ज्होन् स्मिथनां " ईश्वरना अस्तित्व अने स्वभावविषेनां पसंद करेलां व्याख्यानो " मांना पांचमा व्याख्यानने वाचके विचारवुं. ज्होन् स्मिथे आ व्याख्यानना मूळ आधार तरीके एगेपेटस् पेरीनीस् § ३ नुं लक्षाकर्षक वाक्य प्रथम दाखल करेलुं छे. "जे पोताने जाणे छे ते परमेश्वरने जाणशे; अने जे ईश्वरने जाणे छे ते ईश्वरजेवो ज थशे; अने जे ईश्वरने योग्य थयो छे ते ईश्वरजेवो ज थशे; अने ईश्वरने अयोग्य होय एवुं कांइ पण जे करतो नथी, पण ईश्वरनी बाबतोनो ज विचार करे छे, तथा पोते जे समजे छे ते ज जे कहे छे, तथा जे कहे छे ते ज जे करे छे, ते परमेश्वरने योग्य थाय छे. " हुं धारुं छुं के " तुं तने पोताने जाण " एवुं जूनुं कथन के जे सोक्रेटीस् अने बीजा तत्वचिन्तकोना कथनतरीके गणाय छे ते कथननो सामान्य रीत्ये जे सांकडो अर्थ करवामां आवे छे तेना करतां तेनो वधारे विशाळ अर्थ हतो. (एगेपेटस्, एड. स्टीफन्. शोनिंग्, फ्रेनेकर, १६०८. आ पुस्तकमां नाइलसना पेरीनीसनां कथनो पण छे.)

माणसमां अर्थात् तेनी प्रज्ञामां-बुद्धिमां एक एवी उच्च प्रकारनी शक्ति रहेली छे के जो ते शक्तिनो उपयोग करवामां आवे तो ते बीजी बधी शक्तियोउपर सत्ता चलावे छे. आ शक्ति ते नियामक शक्ति छे, तेने माटे सिसेरो पोताना (ईश्वरस्वभाव, २. ११)मां Principatus एवो ल्याटिन् शब्द वापरे छे, तेनो अर्थ एवो छे के "जेनाथी बीजुं कांइ पण चढियातुं होवुं जोइये नहि." आ शब्द तेम ज बीजा पर्याय शब्दो एन्टोनिनस् वारंवार वापरे छे. ते तेने "नियामक बुद्धि" कहे छे (७. ६४). ते नियामक शक्ति ते जीवात्मानो अधिपति छे. (५. २६). माणसे फक्त पोतानी आ नियामक शक्तिने अने पोताना अंतःस्थ देवने मान आपवुं जोइये. विश्वमां जे सर्वोपरि छे तेने जेम आपणे मान आपवुं जोइये तेमज आपणी अंदर पण जे सर्वोपरि छे तेने पण आपणे मान आपवुं जोइये, अने आ (अंतर्यामी तत्व) ज विश्वमां जे सर्वोपरि छे तेना जेवा ज प्रकारनुं छे (५. २१). तेथी प्लोटिनस् कहे छे तेप्रमाणे जीवात्मा जेटले अंशे पोताने जाणे तेटले ज अंशे ते दिव्यात्माने जाणी शके छे. ज्यारे माणसनी पोतानी अंदरनो दिव्यांश दबी जाय छे तथा ओछा मानपात्र अने विनाशी भागने अर्थात् शरीरने अने तेना स्थूल भोगोने वश थइ जाय छे त्यारे माणस पोते पोतानी मेळे ज पोताने दोषित ठरावे छे तेविषे एन्टोनिनस् एक वाक्य (११. १९) मां बोले छे. टुंकामां, जो के एन्टोनिनसूना शब्दोमां गमे तेवो फरक होय तो पण तेमना आ बाबतविषेना विचारो ते बिशप् बटलर् ज्यारे "प्रतिभाना अथवा अंतःकरणना स्वाभाविक सर्वोपरिपणाविषे" अर्थात् जे शक्ति "आपणा मनना विविध राग अने आपणा जीवननी विविध कृतियोनो तपास करीने ग्रहण अथवा त्याग करे छे" ते शक्तिविषे बोले छे त्यारे जे भाव निकळे छे तेवा ज आबेहुब छे.

आखुं विश्व ए एक ज महान् प्राणी छे एवा एन्टोनिनसना विचारमांथी बहु वस्तु मळी आवे तेम छे. पण शल्ट्झ् कहे छे तेम तेमना कहेवानो सार एटलो ज छे केः—मनुष्यनो आत्मा तेना शरीरसाथे अत्यंत निकट रीत्ये जोडायलो छे, अने ते आत्मा तथा शरीर बंने मळीने एक प्राणी थाय छे के जेने आपणे मनुष्य कहिये छिये; तेम ज परमात्मा आ जगत् अथवा जड विश्वनी साथे अत्यंत निकट रीत्ये जोडायलो छे अने ते परमात्मा अने जगत् मळीने एक आखो पुरुष (विराट्) बने छे. पण एन्टोनिनस् जेम मनुष्यना शरीरने अने आत्माने एक गणता न होता तेम ज ते परमेश्वर अने भौतिक विश्वने पण एक गणता न होता. निरपेक्ष रीत्ये विचारतां परमात्मानो स्वभावधर्म केवो छे तेविषे एन्टोनिनसे कांइ तर्को कर्या नथी. माणस जे समजी शके नहि तेउपर समय गुमाववो एवी पद्धति तेमनी न होती.[15] परमेश्वर छे, ते सघळी वस्तुओनुं नियमन करे छे, तेना स्वभावधर्मनुं ज्ञान मनुष्यने मात्र अधुरुं ज थइ शके छे, अने आ अधुरुं ज्ञान पण माणसे पोताना अंतःस्थ देवप्रत्ये पूज्यभाव राखीने तथा ते अंतर्यामीने पवित्र राखीने मेळववुं जोइये—एटला विचारथी एन्टोनिनस् संतोष पाम्या हता.

जे सघळुं कहेवामां आव्युं छे तेमांथी एम निकळे छे के परमेश्वरनी विश्वंभर शक्ति विश्वनी व्यवस्था चलावे छे, अने सघळी वस्तुओने डहापणपूर्वक नियत करवामां आवी छे. एन्टोनिनस् जेमां शंकाओ दर्शावे छे अने जेमां विश्वना बंधारण अने नियमनविषे जेवा संभवे एवा विविध वाद खडा करे छे एवां वाक्यो छे खरां, पण ते हमेश पोताना ए मुख्य सिद्धान्त उपर पाछा आवे छे के जो आपणे देवनुं अस्तित्व स्वीकारिये तो आपणे ए पण

१५ " आपणी संकुचित शक्तिओ पहोची शके तेनाथी परमेश्वर असंख्य गणो दूर छे. " लोक्कृत,—मनुष्यबुद्धिविषेनो निबंध, २. प्रकरण १७.

स्वीकारवुं जोइये के ते सघळी वस्तुओनुं डहापणभरेली रीत्ये अने सारी रीत्ये नियमन करे छे. (४.२७; ६.१; ९.२८; १२.५; अने बीजां घणां वाक्यो). एपिक्टेटस् (१.६) कहे छे के—जो दरेक वस्तुना संबंधमां जे बने छे ते सघळुं जोवानी शक्ति, अने कृतज्ञ स्वभाव ए बे वस्तुओ आपणामां होय तो आपणे जगत् उपर जे शासन चलावे छे ते विश्वंभर शक्तिने ओळखी शकिये.

पण जो सघळी वस्तुओनुं नियमन डहापणभरेली रीत्ये करवामां आवे छे, तो जेने आपणे शारीरिक अने मानसिक अशुभ कहिये छिये तेवा अशुभथी आ जगत् आटलुं भरेलुं केम छे? जगत्मां "अशुभ छे" एम कहेवाने बदले आपणे जो में वापर्यां छे एवा शब्दो वापरिये के "आपणे जेने अशुभ कहिये छिये" तो ते बादशाह उपरना प्रश्नो शो उत्तर आपशे ते आपणे केटलेक भागे समज्या छिये. जे थोडां वर्षो आपणे जीविये छिये तेमां घणी थोडी वस्तुओनुं आपणने दर्शन, स्पर्शन अने ज्ञान थाय छे, अने ते पण अपूर्ण रीत्ये थाय छे, तथा सघळी मनुष्यजातिनुं सघळुं ज्ञान अने सघळो अनुभव ते अखिल विश्व के जे अनंत छे तेविषेनुं केवळ अज्ञान ज छे. हवे जो आपणी तर्कबुद्धि आपणने एम शीखवे छे के दरेक वस्तु जो बीजी दरेक वस्तुसाथे कोइ पण रीत्ये संबद्ध अने संयुक्त होय छे, तो वस्तुओना विश्वमां कांइ पण अशुभ होवानो विचार ए एक वदतोव्याघात छे, कारण के जो सघळुं एक बुद्धियुक्त सत्तामांथी आवे छे अने ते ज सत्ताथी सघळानुं नियमन कराय छे तो तेमां अशुभ अथवा तो आखी वस्तुपरंपरानो नाश करे एवुं कांइ होय एम समजवुं अशक्य छे. (८. ५५; १०. ६). दरेक वस्तु संतत विकारने पाम्या करे छे, अने ते छतां आखी परंपरा तो चाल्या ज करे छे. आपणे सूर्यमाळाने तेना कारणरूप विभागोमां वहेंचाइ गयेली कल्पिये, अने ते छतां पण हजु ते आखी "नित्य नवी अने संपूर्ण" रह्या करे.

सघळी वस्तुओ अने सघळा आकारो विसर्जन पामे छे अने नवा आकारो दर्शन दे छे. सघळा जीवता पदार्थो तो जे विकारने आपणे मृत्यु कहिये छिये तेने पामे छे. जो आपणे मृत्युने अशुभ कहिये तो विकारमात्र अशुभ छे. जीवतां प्राणिओने वळी दुःख पण थाय छे, अने सघळां जीवतां प्राणी करतां माणसने घणी ज पीडा थाय छे, केम के ते शरीरमां अने शरीरवडे तथा तेना बुद्धियुक्त अंशथी ते दुःख भोगवे छे. मनुष्यो वळी एक बीजाथी दुःख पामे छे अने मनुष्यजातिनां दुःखनो मोटामां मोटो भाग तो माणस जेने पोताना भाइओ कहे छे तेओतरफथी आवे छे. एन्टोनिनस कहे छे (८. ५५),–"सामान्य रीत्ये जोतां, दुष्टता आखा विश्वने कांइ हानि करती नथी; अने विशेष रीत्ये जोतां एक माणसनी दुष्टता बीजा माणसने कांइ हानि करती नथी. जे माणसना हाथमां पोते इच्छे के तरतज ते दुष्टतामांथी छुटा थवानुं छे तेने ज ते दुष्टता हानिकारक छे."–आनो पहेलो भाग ते, आखा विश्वने तो कांइ अशुभ के हानि थतीज नथी–ए सिद्धान्त-नी साथे संपूर्ण रीत्ये बंध बेसतो छे. बीजा भागनो खुलासो ते, जे वस्तु आपणी सत्तामां नथी तेमां कांइ अशुभ छे ज नहि एवा विरक्त सिद्धान्तथी मेळवी लेवो जोइये. जे हानि आपणे बीजाथी सहन करिये ते तेनुं अशुभ छे, आपणुं नथी. पण कोइ एक प्रकारे अशुभ छे खरुं एवो आ अंगीकार छे, केम के जे कोइ खोटुं करे छे ते अशुभ करे छे अने जो ते खोटुं बीजाओ सहन करी शके तो पण ते ते खोटुं करनारमां तो अशुभ ज छे. एन्टो-निनस् (११. १८) खोटां कृत्यो अने अपकृत्योना विषयमां घणा उत्तम उपदेश आपे छे, अने तेमना उपदेशो व्यवहारोपयोगी छे. जे आपणे टाळी शकिये तेम न होय ते वेठी लेवाने आपणने ते बोध आपे छे, अने तेमना उपदेश, जे कोइ परमेश्वरना अस्ति-त्वनो अने नियामकत्वनो निषेध करे छे तेने पण–जे कोइ परमे-

श्वरना अस्तित्व अने नियामकत्व ए बंनेनो अंगीकार करे छे तेने जेटला उपयोगी छे—तेटला ज उपयोगी छे. जगतमां जे नैतिक गोटाळो अने दुःख छे ते कारणने लेइने परमेश्वरना अस्तित्व अने व्यवस्थापकत्व सामे जे वांधाओ उठावाय तेनुं कोइ प्रत्यक्ष उत्तर एन्टोनिनसना लेखमां नथी; मात्र सारामां सारा माणसो पण मृत्युथी नाश पामे ते शुं ? एवी पूर्वपक्षनी कल्पनाना जबाबमां जे आ उत्तर तेमणे आपेलुं छे तेविना बीजुं कांइ प्रत्यक्ष उत्तर नथी. ते कहे छे के जो एम छे तो आपणे निश्चये समजवुं के जो बीजी रीत्ये थवुं योग्य होत तो देवोए तेवी ज व्यवस्था करी होत. (१२. ५). जगतना नियमनमां आपणे जे डहापण अवलोकिये तेमां तेमने जे विश्वास छे ते एटलो तो प्रबल छे के ते वस्तु-क्रममां देखाइ आवती गमे तेवी अनियमितताथी लेश पण क्षोभ पामे तेवो नथी. वस्तुक्रममां अनियमितताओ छे ए वात तो खरी छे, अने तेटला ज उपरथी जेओ परमेश्वरना अस्तित्व अने नियामक-त्वनी सामे अनुमान करे छे तेओ अनुमान करवामां अयोग्य रीत्ये वधारे उतावल करे छे. आपणे सर्वे कबुल करिये छिये के भौतिक जगतमां एक वस्तुक्रम एटले जे अर्थमां "**स्वभाव**" ए शब्दनुं विवरण करवामां आव्युं छे ते, अर्थात् कोइ एक बंधारण छे के जेने आपणे व्यूह कहिये छिये के जे अन्योन्यना अंगरूप संबंध छेः अने समग्र व्यूहनी कोइ पण उद्देशने माटे अनुरूपता छे. ते ज प्रमाणे प्राणिओ अने छोडवाना बंधारणमां एक वस्तुक्रम अर्थात् कोइ हेतु-निर्वाहक योग्यता छे. आपणे जे स्वरूपमां ते वस्तुक्रम समज्या होइये छिये ते स्वरूपमां तेमां भंग पडे छे अने जे स्वरूपमां तेनो हेतु समज्या होइये छिये ते स्वरूपमां ते हेतु पार पडतो नथी. बीज, छोडवो के प्राणी तेना सघळा अवस्थान्तरमां पसार थतां पहेलां अने तेनां सघळां कार्य वजावतां पहेलां नाश पामे छे. केटलांकने माटे वहेलां नाश पामवुं अने केटलांकने माटे तेओनां

सर्व कार्य करवां अने पोताने बदले बीजां पोतानां संतानो मूकता जवुं ए स्वभावनियत होय छे अर्थात् एवा एक स्थापित क्रम-प्रमाणे होय छे. तेप्रमाणे मनुष्यने अमुक उपयोगोमाटे भौतिक तथा बुद्धिमय अने नैतिक बांधो होय छे, अने सर्वाळे जोतां मनुष्य आ उपयोगो करे छे, गुजरी जाय छे अने पोतानी जगोए बीजां मनुष्योने मूकतो जाय छे. एप्रमाणे जनसमाज अस्तित्वमां रहे छे, अने सामाजिक स्थिति ते मनुष्यनी **स्वाभाविक स्थिति** छे, के जे स्थितिने माटे तेनो स्वभाव तेने योग्य बनावे छे; अने जनसमाज असंख्य अनियमितताओ अने अव्यवस्थाओमां पण हजुलगी टकी रहे छे; तथा कदाच आपणे एम कही शकिये के भूतकाळना इतिहास अने आपणुं वर्त्तमान ज्ञान आपणने सकारण आशा आपे छे के जनसमाजनी अव्यवस्थाओ ओछी थती जशे अने व्यवस्थाक्रम के जे तेनुं नियामक धोरण छे ते वधारे दृढ रीत्ये स्थापित थशे. व्यवस्था अर्थात् क्रम—आपणे एम कहो के—वास्तविक अथवा देखवामात्रना क्रमभंगने वश एवो क्रम वस्तुओना समग्र स्वभावमां हयाती धरावे छे एम अंगीकार करवो जोइये,—आपणी दृष्टिप्रमाणे आपणे जेने अव्यवस्था के अशुभ कहिये छिये तेथी वस्तुओना सामान्य बंधारणनी एक **प्रकृति** अथवा नियत क्रम होय छे ए बाबतमां कोइ पण प्रकारे फेरफार थतो नथी. क्रमभंगना अस्तित्वउपरथी कोइ पण एवुं अनुमान करशे नहि के नियत क्रम ए एक स्थापित नियमरूप नथी, कारण के शारीर अने मानस ए बंने नियत क्रमनुं अस्तित्व नित्यना अनुभवथी अने भूतकालना सघळा अनुभवथी सिद्ध थाय छे. विश्वक्रमनुं शी रीत्ये निर्वहण थाय छे ते आपणे समजी शकता नथी; आपणुं जीवन दिनप्रतिदिन शी रीत्ये चालु रहे छे ते पण आपणे समजी शकता नथी, तेम ज आपणा शरीरनां सादामां सादां हलनचलन पण आपणे केवी रीत्ये करिये छिये ते पण आपणे समजी शकता नथी,

तेम ज आपणे केवी रीत्ये वृद्धि पामिये छिये अने विचारिये छिये अने वर्त्तिये छिये ते पण आपणे समजी शकता नथी; पण आ सघळी क्रियाओ करवाने माटे जे संकेतोनी अपेक्षा रहे छे तेमांना घणा संकेतो आपणे जाणिये छिये. त्यारे जे कार्य करवामां आव्युं होय छे ते सिवाय आपणा पोतामां जे अदृष्टशक्ति वर्त्ते छे तेविषे आपणे कांइ जाणता नथी, तेम ज आपणे जेने सर्व काल अने सर्व देश कहिये छिये तेमां जे शक्ति प्रवर्त्ती रही छे तेविषे पण आपणे कांइ जाणता नथी; पण आपणी जाणीती सघळी वस्तुओमां एक **प्रकृति** अथवा नियत क्रम होय छे ते जोइने,—आ विश्वप्रकृतिने एक निरन्तर प्रवर्त्ततुं कारण होय छे अने आपणे जोइये छिये तेवा क्रमभंग अथवा अशुभना कारणउपरथी कोइ अनुमान बांधवाने आपणे केवळ अशक्त छिये—एम मानवुं ते आपणा मनना स्वभावनी साथे बंधबेसतुं आवे तेम छे. जे एन्टोनिनसे कहेलुं छे ते सघळामांथी जे एकठो करी शकाय ते जबाब आ छे एम हुं मानुं छुं.[१६]

अशुभ किंवा अनर्थनुं मूळ शुं?—ए एक पुराणो प्रश्न छे. (इलियड, २४, ५२७)मां एचिलीस् प्रायमने कहे छे—झ्यूस् एटले स्वर्गाधिपतिपासे बे पीप छे, तेमांनुं एक पीप सघळी शुभ वस्तुओथी भरेलुं छे, अने बीजुं पीप सघळी अशुभ वस्तुओथी भरेलुं छे, अने ते देव पोतानी खुशीमां आवे तेम ते दरेक पीपमांथी मनुष्योने आपे छे; तेथी आपणे संतोष मानवो जोइये, केम के आपणे ए देवनी इच्छामां फेरफार करी शकता नथी.

---

१६. क्लीन्थीस् तेना स्तवनमां कहेछे केः—

दोहरो,

"सर्व शुभ अशुभ अर्थ तुं, कल्पे **एकज** हेतु;
(के) नित्य **एक कारण** सकळ, विश्वनियामक रे' तुं."

बिशप् बटलरना धर्मोपदेश जुओ. "मनुष्यना अज्ञान विषे" धर्मोपदेश १५ मो.

ग्रीक् टीकाकारोमांनो एक एवो प्रश्न उठावे छे के आ मतने आपणे ओडिसी काव्यना प्रथम पुस्तकमां जे मत जोइये छिये तेनी साथे शी रीत्ये बंधबेसाडी शकिये,–केम के त्यां तो ए देवाधिपति देव कहे छे के, मनुष्यो कहे छे के अमो देवोनी तरफथी मनुष्योने अशुभनी प्राप्ति थाय छे, पण मनुष्यो तेमनी पोतानीज मूर्खताथी पोतानी उपर अनर्थने आणे छे. ते ग्रीक् टीकाकारने पण आनुं उत्तर जोइए तेटली खुल्ली रीत्ये समजायुं छे. एचिलीस् तथा झ्यूस् बंनेने कवियो ते बंनेना पोतपोताना स्वभाव प्रमाणे बोलावे छे. खरेखर झ्यूस् तो खुल्ली रीत्ये कहे छे के मनुष्यो पोताने पडतां दुःखोनो दोष देवोने माथे नाखे छे. पण तेओ एम खोटी रीत्ये करे छे, कारण के तेओने थता शोकनुं कारण तेओ पोते ज छे.

एपिक्टेटस् तेना एन्चिरिडियोन् नामना पुस्तक (प्र. २७)मां अशुभ अथवा अनर्थ संबंधी प्रश्नने टूंकामां पतावी दे छे. ते कहे छे के—"अशुभ अथवा अनर्थने ओळखवामां भूल न थाय तेवी कोइ निशानी तेना उपर करवामां आवी नथी, ते ज प्रमाणे विश्वमां अनर्थनो कोइ स्वभावधर्म अस्तित्व ज धरावतो नथी." जेओने एपिकटेसनी शैलीनो परिचय नथी तेओने आ कथन संपूर्ण रीत्ये अस्पष्ट जणाशे, पण ते शाविषे बोले छे ते तो ते पोते हमेशां जाणे ज छे. जो के आपणे ओळखवामां भूल करिये तो पण ते ओळखवामां भूल न थाय तेटलामाटे आपणे ते (अनर्थ)ना उपर कांइ निशानी करता नथी. परमेश्वर के जेनुं अस्तित्व एपिक्टेटस् मानी ले छे, ते परमेश्वरे पोतानो उद्देश पडी भागे तेवी रीत्ये सघळी वस्तुओनी व्यवस्था करी नथी. जेने आपणे अशुभ अथवा अनर्थ कहिये छिये ते वस्तु गमे ते होय, तो पण ते अशुभनो स्वभावधर्म–एपिक्टेटसना कहेवाप्रमाणे अस्तित्वमां ज नथी; अर्थात् अशुभ ए वस्तुओना बंधारण अथवा स्वभावनो कोइ पण भाग नथी. जो वस्तुओना बंधारणमां ज अशुभ ए प्रथम तत्वरूपे होत,

तो सिम्पलीसियसनी दलीलप्रमाणे ते अशुभ अशुभरूपे गणात ज नहि, पण ते अशुभ तो शुभरूपज थात. सिम्पलीसियसना पुस्तक (प्र. ३४. [२७])मां एपिक्टेटसना आ मूळ वाक्यउपर एक लांबो अने विलक्षण संवाद छे, अने ते गम्मतनी साथे बोध आपनारो छे.

हवे विशेष एक वाक्यनो विचार करीने आ विषयनो अंत आणीशुं. तेमां एन्टोनिनस् बादशाह जे कांइ कही शक्या छे ते बधानो समावेश थाय छे (२. ११):—"जो देवो होय तो माणसोमांथी निकळीने देवोपासे जवुं ए बाबतथी भय पामवा जेवुं नथी; पण जो देवो होय ज नहि अथवा तो मनुष्योनां कामकाज साथे जो तेओने कांइ लागतुंवळगतुं ना होय तो पछी देवो अथवा विश्वपालक सत्ताविनाना एक विश्वमां रहेवामां मने शो लाभ छे? पण खरुं जोतां तो देवो छे ज, अने तेओ मनुष्योने लगती बाबतोने माटे दरकार राखे छे, अने जेथी मनुष्य वास्तव अनर्थोमां न पडे तेटलो तेने शक्तिमान् बनाववाने माटे तेओए माणसना हाथमां सघळां साधनो मूकेलां छे. अने बाकीनी बीजी बाबतोमां तो, जो कांइ अनर्थ होत तो, देवोए एने माटे पण बचावनी योजना करी होत के मनुष्य अनर्थमां पडे नहि एटलुं तो केवळ तेनी शक्तिमां ज होवुं जोइये. पण जे वस्तु माणसने खराब बनावी शकती नथी ते वस्तु माणसना जीवनने खराब शी रीत्ये बनावी शके? पण अज्ञानने लीधे, के ज्ञान छतां ते (अनर्थरूप) वस्तुओनी सामे बचाव करवानी अथवा तो ते वस्तुओने सुधारवानी पोतामां शक्ति न होय तेथी विश्वप्रकृतिए तेवी वस्तुओ उपर अलक्ष कर्यो होय ए शक्य ज नथी; तेमज ते प्रकृतिए एटले कुदरते पोतानी शक्तिनी अथवा कुशळतानी खामीने लीधे, जेथी सारा खोटा माणसोनो विवेक राख्याविना गमे तेने गमे तेम सारुं अने खोटुं थाय एवी भूल करी होय ते पण शक्य नथी. पण नक्की

मृत्यु अने जीवन, मान अने अपमान, वेदना अने आनंद—आ बधी वस्तुओ सारां अने खोटां माणसोने 'कसरखां रीत्ये प्राप्त थाय छे, केम के ए बधी वस्तुओ एवी ज छे के जे मनुष्यने वधारे सारो के खोटो बनावती नथी. तेटलामाटे ए वस्तुओ शुभे नथी तेम अशुभे नथी.

एन्टोनिनसना तत्वज्ञाननो नीतिसंबंधी भाग तेमना सामान्य सिद्धान्तोमांथी निकळी आवे छे. कुदरत अर्थात् प्रकृतिने अनुसार एटले के मनुष्यनी पोतानी प्रकृति तेम ज विश्वनी प्रकृति ए बंने प्रकृतियोने अनुसार जीवन गाळवुं ए तेमना तत्वज्ञाननो पर्यवसान छे. ज्यारे ग्रीक् तत्वज्ञानीओ प्रकृतिने अनुसार जीवन गाळवानुं कहे छे त्यारे तेओनो शो आशय होय छे ते बिशप् बट्लरे समजाव्युं छे, अने ते कहे छे के—ज्यारे तेणे ते समजाव्युं छे अने तेओ समज्या छे ते प्रमाणे समजाववामां आवे छे, त्यारे "ते कहेवानी रीति शिथिल अने अनिश्चित नथी पण ते चोख्खी अने स्पष्ट, सजड रीत्ये न्यायपुरःसर अने साची रीति छे." प्रकृति एटले कुदरतने अनुसार जीवन गाळवुं एटले मनुष्यप्रकृतिना एकाद अंशने अनुसार नहि पण मनुष्यनी समग्र प्रकृतिने अनुसार जीवन गाळवुं, अने पोतानी अंदर रहेला देवने पोतानां सर्व कर्मना नियन्तातरीके मान आपवुं. "बुद्धियुक्त प्राणिने जे कर्म प्रकृतिने अनुसार होय छे ते ज कर्म बुद्धिने अनुसार पण होय छे." [१७] (७. ११). जे कर्म बुद्धिथी विरुद्ध करवामां आवे छे ते कर्म—जो के मनुष्यप्रकृतिना एकाद भागने तो बेशक मळतुं आवे तेवुं होय छे (केम के जो तेम न होय तो ते कर्म करी पण शकाय नहि)—तो पण ते कर्म मनुष्यप्रकृतिथी एटले मनुष्यनी समग्र प्रकृतिथी पण विरुद्ध ज होय छे. मनुष्यने कर्ममाटे ब-

---

१७. ज्यारे ज्युवेनल् कहे छे के—"जे कुदरतने अनुसार नथी ते तर्कने पण कबुल नथी."—त्यारे ते जे कहेवा धारे छे ते आ छे.

नाव्यो छे, आलस्य अने मोजशोखमाटे नथी बनाव्यो. जेम छोडवाओ अने इतर प्राणीओ पोतानी प्रकृतिप्रमाणे काम बजावे छे तेम माणसे पण पोतानी प्रकृतिप्रमाणे काम बजाववां जोइये. (५. १).

माणसे वळी विश्वनी प्रकृतिने अनुसार (एटले जे सघळी वस्तुओ-मांनो ते पोते पण एक छे ते सघळी वस्तुओनी प्रकृतिने अनुसार) जीवन गाळवुं जोइये; अने एक राजकीय जनसमाजना शहेरीतरीके बीजां कामोभेगुं जेओनी मध्ये अने जेओने माटे ते रहे छे तेओने उद्देशीने ज तेणे पोतानां जीवन अने कर्मोनुं नियमन करवुं जोइये.[१८] माणसे एकान्तमां निवृत्त थइने पोताना मानवबंधुओथी पोतानो संबंध कापी नांखवो न जोइये. महान् एवा अखिल जनसमाजमां तेणे पोताना भागनुं काम बजाववाने सदा कर्मपरायण रहेवुं जोइये. जो के एकलोहीनी सगाइथी नहि, तो पण एक ज बुद्धितत्वमां भाग लेवाथी अने एक ज दिव्यसत्तानो पोते अंश होवाथी सघळां मनुष्यो तेनां सगां छे. पोतानां भांडुओथी माणस वास्तविक रीत्ये दूभाइ शके ज नहि, केम के तेओनुं कोइ पण कृत्य तेने नठारो बनावी शके तेम नथी, अने तेणे तेओनी साथे गुस्से थवुं न जोइये अने तेओने धिक्कारवां न जोइये: " केम के पगनी पेठे, हाथनी पेठे, आंखनां पोपचांनी पेठे, उपला अने नीचला दांतोनी पं-क्तियोनी पेठे, आपणने हळीमळीने काम करवामाटे बनावेला छे. तेथी एक बीजानी विरुद्ध वर्त्तवुं ते कुदरतनी विरुद्ध छे; अने एक बीजाथी चीडावुं अने एकबीजाथी मुख फेरवी चाल्या जवुं ए एकबीजाथी विरुद्ध वर्त्तन छे." (२. १).

वळी ते अधिक एम कहे छे के–" एक वस्तुमां आनंद पामो अने तेमां एक सांसारिक कार्यथी बीजा सांसारिक कार्यतरफ जतां, परमेश्वरविषे विचार करीने, विराम ल्यो." (६. ७).

---

१८. जुओ ८. ५२: अने पर्सियस् ३. ६६.

वळीः—“ मनुष्यजातिने चहाव. परमेश्वरने अनुसरो. ” (७. ३१) पोताना पाडोशीप्रति प्रेम राखवो ए माणसने माटे एक बुद्धियुक्त आत्मानुं लक्षण छे. (११. १). एन्टोनिनस् जुदां जुदां वाक्योमां अपराधो क्षमा करवानो उपदेश करे छे, अने आपणे जाणिये छिये के ते पण तेमना पोताना उपदेशप्रमाणे वर्त्तता हता. बिशप् बटलर् ए बाबतउपर ध्यान खेंचे छे के—“ अपराधोनी क्षमा करवानो अने आपणा शत्रुओने चहावानो दैवी उपदेश, जो के इतरधर्मी नीतिशास्त्रना अनुयायिओमां मळी आवे छे तो पण एक अमुक अर्थमां ए ख्रिस्ती धर्मनो उपदेश छे, केम के आपणा तारके (अर्थात् क्राइस्टे) बीजा कोइ पण सद्गुणकरतां ए सद्गुणविषे वधारे आग्रह कर्यो छे. ” आ सद्गुणने वर्त्तनमां आणवो ए सघळा सद्गुणोकरतां वधारे मुश्केल छे. एन्टोनिनस् ए सद्गुणनो वारंवार जोरथी उपदेश करे छे, त्यारे तेने अनुसरवाने आपणने सहायता आपे छे. ज्यारे आपणो कोइ अपराध करे छे, त्यारे आपणने क्रोध अने वैर लेवानी लागणी थाय छे, अने ते लागणी जनसमाजना संरक्षणने माटे न्यायपूर्वक अने उपयोगनी छे. ए उपयोगी छे के अपराध करनाराओए पोतानां कृत्योना स्वाभाविक परिणाम भोगववा जोइये, के जेमां जनसमाजतरफथी नापसंदगीनो अने जेनो अपराध करवामां आव्यो तेनुं वैर वाळवानो पण समावेश थाय छे. पण वैर वाळवानो अमल ते ते शब्दना पोताना ज अर्थमां (एटले वैर वाळवानी खातर ज) न थवो जोइये. बादशाह एन्टोनिनस् कहे छे के—“ तारुं पोतानुं वैर लेवानो सउथी सारो रस्तो ए छे के तुं सामा अपराधीजेवो थइश नहि.” आथी ए तो खुल्लुं छे के आपणे कोइ पण काममां वेर तो लेवुं नहि; पण जेओ अपराधोने माटे वेर लेवानी वात करे छे तेओने ते कहे छे के—जेणे अपराध कर्यो छे तेना जेवो तुं थइश नहि. साक्रेटीस् क्रिटो (नामना पुस्तक) (प्र.

१०) मां, अने सेइन्ट् पोल् (रोमन् लोकोप्रत्येना पत्र, १२. १७) मां ए ज बोध बीजा शब्दोमां कहे छे. “ ज्यारे कोइ माणसे तारो अपराध कर्यो होय, त्यारे तरत ज तारे विचार करवो के तेणे सारा अथवा खोटाविषे शो विचार करीने ते अपराध कर्यो छे. केम के ज्यारे तारा समजवामां आ आवशे त्यारे तने तेना उपर घृणा आवशे अने तने आश्चर्य लागशे नहि अने क्रोध पण चढशे नहि.” (७. २६). अपराध स्वाभाविक रीत्ये क्रोधवृत्ति अने वैरवृत्तिने उपजावे छे ए वातनो एन्टोनिनस् इन्कार करता नथी, केम के जे माणसे अपराध कर्यो छे तेना मनना स्वभावविषे विचार करवानी, अने पछी वैर लेवाने बदले तमारे ते अपराधीउपर दया करवी, एवी भलामणमां ए तो गर्भित रहेलुं छेः अने तेथी, गुस्से थाव अने पाप करो नहि एवी सेइन्ट् पोलनी शीखामणजेवो ज सार तेमांथी निकळे छे; बटलर् ते सारी पेठे समजावे छे तेम ए गुस्से थवानी भलामण नथी, केम के एवी भलामणनी कोइने जरूर नथी, कारण के गुस्सो ए तो स्वाभाविक लागणी छे, पण उक्त शीखामण ते क्रोध आपणने पापमां दोरी जाय तेनी सामे चेतवणी छे. टुंकामां ते बादशाहनो अपराधनां कृत्योविषे आ सिद्धान्त छेः—अपराध करनाराओ शुं सारुं छे अने शुं खोटुं छे ते जाणता नथीः तेओ अज्ञानने लीधे ज अपराध करे छे, अने विरक्ततत्वज्ञानीओनी समजप्रमाणे आ खरुं छे. जो के आ प्रकारनुं अज्ञान ते कायदेसर बचावतरीके कदी पण कबुल राखवामां आवशे नहि, अने जनसमाजे एवा अज्ञानने पूर्ण बचावतरीके मान्य राखवुं पण जोइये नहि, तो पण केटलाक गंभीर अपराधो एवा छे के जे, जनसमाजने हानि थयाविना ज माफ करवानुं मनुष्यनी सत्तामां छे; अने जो ते माणसना शत्रुओ पोते शुं करे छे ते समजता नथी एम ते समजे छे तेथी, ते माणस क्षमा करे तो “ हे पिता, तेमने तुं क्षमा कर, केम के तेओ शुं करे छे ते तेओ जाणता

नथी." एवी उच्च प्रार्थनाना भावप्रमाणे ते माणस वर्त्ते छे.

जो के माणसनुं सुख अथवा शान्ति तेणे पोतानुं जीवन जे रीत्ये गाळवुं जोइये ते रीत्ये गाळवाथी वृद्धिने तो पामे ज छे, तो पण एन्टोनिनस् बादशाहनुं नैतिक तत्वज्ञान ते एक एवो निर्बल अथवा सांकडो शासनव्यूह न हतो के जे माणसने सीधी पोताना ज सुखप्रत्ये दृष्टि राखवानुं शीखवे. माणसे विश्वनी प्रकृतिने अनुसार रहेवुं जोइये, तेनो अर्थ, एन्टोनिनस् बादशाह घणां वाक्योमां समजावे छे तेम, एवो थाय छे के—माणसनां कृत्यो, एक राजकीय जनसमुदायना शहेरीतरीके अने आखी मानवजातिरूप कुटुंबना एक अंगतरीके—एम बंने रीत्ये—बीजां सघळां मनुष्यप्राणिओसाथेना तेना साचा संबंधोने अनुसार होवां जोइये. आनो सार एवो निकले छे अने ते वारंवार सउथी अधिक जोरदार भाषामां दर्शावे छे के—मनुष्यना शब्दो अने कृत्यो, ज्यांलगी बीजाओने असर करे त्यांलगी एक निश्चित नियमप्रमाणे मपावां जोइये, अने ए नियम ते—जे जनसमुदायनी ए माणस एक अंगरूप व्यक्ति छे ते जनसमुदायना अने आखी मनुष्यजातिना हितना संरक्षणनी साथे बंधबेसतापणुं छे. आवा नियमप्रमाणे जीवन गाळवाने माणसे पोतानां अने पारकां सघळां कृत्योना परिणाम स्पष्ट रीत्ये परखी लेवाने माटे पोतानी सघळी तर्कशक्तिओनो उपयोग करवो जोइये: जो के विचारवडे पोताना आत्माने शान्त करवाने तथा पवित्र करवाने पोताना आत्मामां वारंवार निवृत्त थवुं जोइये तो पण तेणे केवळ चिन्तनमय अने विचारमय जीवन ज गाळवुं जोइये नहि,[१९] पण तेणे मनुष्यना काममां भळवुं जोइये अने सार्वजनिक शुभने माटे तेणे एक साथीतरीके श्रम करनार बनवुं जोइये.

---

१९. अरे रे! कोइ पण पोताना आत्मामां उंडो उतरतो नथी. पर्सियस्, ४. २१.

माणसने पोताना जीवनमां कांइ लक्ष्य अथवा उद्देश होवो जोइये, के जेनी प्रत्ये ते पोतानी सघळी शक्तिओने योजे; अलबत, ते लक्ष्य शुभ होवुं जोइये. (२. ७) जे माणसना जीवननुं लक्ष्य अथवा उद्देश एक ज नथी होतो ते पोताना आखा जीवनमां एकरंगी अने एकधारो होइ शकतो नथी. (११. २१) "मनने सद्गुणमय तथा दैवीसंपत्तिमय करवुं; एटले तेनी शक्तिनी मर्यादामां प्राप्त करवायोग्य गणाय तेवा प्रकारना आ जीवनना शुभ अने सद्गुणी उद्देशो पसंद करवा अने माणसे पोताने ते समजाववा"–एना उत्तम साधनोविषे बेकननी ए ज मतलबनी एक उक्ति छे. ज्यारे पोते युवान् होय अने तेने तेवा प्रसंगो होय ते वखते जे आप्रमाणे करवाजेटलो डाह्यो थयो होय ते सुखी माणस छे; पण एन्टोनिनस् बादशाह सारी पेठे जाणे छे के माणस पोतानी युवावस्थामां हमेश डाह्यो होइ शकतो नथी, अने तेथी ते पोताने ज्यारथी बनी शके त्यारथी तेप्रमाणे डाह्या थवाने अने तेवा थवानो आरंभ करतांपहेलां जिंदगानीने छटकी जवा नहि देवाने उत्तेजन आपे छे. जे माणस पोतानी आगळ जीवनना शुभ अने सद्गुणी उद्देशो धरी शके छे, ते तेना पोताना हित अने विश्वना हितने अनुसार पोतानुं जीवन गाळ्याविना रहेतो नथी, केम के वस्तुओना स्वभावे आत्महित अने विश्वहित एक ज छे. जे वस्तु मधपुडाने माटे सारी नथी होती ते मधमाखने माटे पण सारी नथी. (६. ५४)

एक कथनथी आ विषय समाप्त थाय तेम छे. " जो माराविषे अने मारा उपर जे बनावो बनवाना तेविषे देवोए निर्माण कर्युं छे, तो तेओए ते ठीक ज निर्माण करेलुं छे, केम के कोइ पण देवने अगमचेतीविनानो कल्पवो ते पण सहेलुं नथी, अने मने हानि करवाविषे तो तेओने कांइ इच्छा ज शा माटे होय ? केम के एम करवाथी तेओने अथवा तो जे तेओनी काळजीनो खास विषय छे ते समग्र विश्वने शो लाभ थाय ? पण जो तेओए व्यक्तितरीके

माराविषे कांइ निर्माण कर्युं नहि होय तो पण तेओए कांइ न-हि तो आखा विश्वने माटे तो अवश्ये निर्माण करेलुं होवुं ज जोइये; अने आ सर्वसाधारण व्यवस्थाना क्रमने अनुसरती रीत्ये जे बाबतो बने ते मारे खुशीनी साथे स्वीकारवी जोइये अने तेथी मारे संतोष मानवो जोइये. पण जो देवो कोइ पण वस्तुविषे निर्माण न करता होय–अथवा तो जो के एम मानवुं ए दुष्टता छे, तेछतां पण आपणे एम मानीए (के देवो कशुं पण निर्माण करता नथी) तो आपणे यज्ञ प्रार्थना अने शपथ के कांइ पण करवुं जोइये नहि के जे आपणे देवो हाजर होय अने आपणी साथे रहेता होय एम (मानीने) करिये छिये–पण जो के आपणने लगती कोइ पण वस्तुविषे देवो निर्माण न करे, तो पण मारे पोताने माटे निर्माण करवाने तो हुं शक्तिमान् छुं ज, अने शुं उपयोगी छे ते हुं तपासी शकुं छुं; अने दरेक मनुष्यने ते उपयोगी छे के जे तेना पोताना बंधारणनी अने स्वभावनी साथे बंधबेसे तेवुं होय, पण मारो स्वभाव तर्कानुसारी अने मळतावडो छे; अने मारुं शहेर अने मारो देश, ज्यांलगी हुं एन्टोनिनस् छुं त्यांलगी, रोम् छे; पण ज्यां-लगी हुं एक मनुष्य छुं त्यांलगी, आखी दुनियां ते ज मारुं शहेर अने देश छे. त्यारे जे वस्तुओ आ शहेरोने उपयोगी छे ते ज मात्र मने उपयोगी छे. (६. ४४.)

माणस पोतानी बुद्धिनो पोताने व्यवहारु सद्गुणमां संपूर्ण बना-ववाने माटे जे सघळी रीत्योए लाभकारकरीत्ये उपयोग करी शके ते सघळी रीतियोविषे एन्टोनिनस् बादशाहना अभिप्रायो कही जवा ते कंटाळो आपे तेवुं छे, अने तेम करवुं जरूरनुं पण नथी. आवी मतलबनां वाक्यो तेमना पुस्तकना सघळा भागोमां छे, पण ते कोइ क्रममां अथवा संबंधमां नहि होवाथी, ते पुस्तकमां जे छे ते सघळुं शोधी काढे ते पहेलां मनुष्ये ते पुस्तकनो उपयोग घणा लांबा समयलगी करवो जोइये. अहीं थोडाक शब्दो उमेराय तेम

छे. जो आपणे बीजी बधी वस्तुओनुं पृथक्करण करिये छिये तो आपणने मालम पडे छे के ते मनुष्यजीवनने माटे केवी बिन. पूरती छे, अने तेमांनी घणीक तो साची रीत्ये जोतां केवी तुच्छ छे. सद्गुण एकलो ज अविभाज्य, अद्वितीय अने संपूर्ण रीत्ये संतोष आपनार छे. सद्गुणनो भाव पोतानी जातने संपूर्ण रीत्ये समजाववो अथवा तो मिथ्यावादीनुं मुख बंध थाय तेवी रीत्ये बीजाओने विवरण करी बताववुं कठण मालम पडे तेटला माटे सद्गुणनो भाव अस्पष्ट के अनिर्णीत गणी शकाय तेवो नथी. सद्गुण ए आखो छे, अने मनुष्यनी बुद्धिना जेम विभागो नथी तेम ज सद्गुणना पण विभागो होता नथी, अने ते छतां पण ते माणसनां कृत्योथी तेनी बुद्धि जे विविध शक्तिओने दर्शावे छे ते जणाववानी एक सगवडभरेली रीतितरीके आपणे विविध बुद्धिशक्तिओविषे बोलिये छिये. ते ज प्रमाणे आखा सद्गुणने एटले मनुष्यना स्वभावनी शक्तिमां होय तेटला बधा सद्गुणने अमलमां मूकवाने माटे आपणे कया कया अमुक सद्गुणोनुं आचरण करवुं जोइये ते दर्शाववाना काममाटे, एक व्यवहारु अर्थमां विविध सद्गुणो अथवा सद्गुणना विभागोविषे पण आपणे बोलिये खरा.

मनुष्यनी प्रकृतिना बंधारणमां आद्य तत्व सामाजिक छे. त्यार पछी, जे बुद्धितत्वनो सर्वोपरि अधिकार वर्तवो जोइये ते बुद्धितत्वने बंधबेसती न आवे एवी शरीरनी विषयेच्छाओने ताबे न थवुं ए (बीजुं तत्व) छे. भूल अने वंचनाथी बचवुं ए त्रीजुं तत्व छे. "सर्वोपरि अधिकार चलावनार बुद्धितत्वने आ त्रण बाबतोने सजड वळगी रहीने सीधेसीधुं चालवा द्यो अने तेमां जे छे ते बुद्धि तत्वनुं पोतानुं ज छे." (७. ५५.) जे बाकीना बधानो पायो छे एवा सद्गुणतरीके एन्टोनिनस् बादशाह न्यायने पसंद करे छे (१०. ११), अने (न्याय ए बीजा बधानो पायो छे) ए तो ते बादशाहना समयपहेलां घणा काळथी कहेवातुं आव्युं छे.

ए तो खरुं छे के सर्वे लोकोने मननी वृत्तितरीके न्याय एटले शुं तेनो कांइ विचार होय छे, तथा ते न्यायवृत्तिप्रमाणे वर्तवाविषे पण तेओने कांइ विचार होय छे; पण अनुभव एम दर्शावी आपे छे के मनुष्योनां कृत्यो न्यायवृत्तिना खरा विचारनी साथे बंधबेसतां नथी होतां, तेटला तेमना न्यायवृत्तिविषेना विचारो पण गुंचायला ज होय छे. न्यायवृत्तिविषेनो एन्टोनिनस् बादशाहनो विचार जोइये तेटलो स्पष्ट छे पण सघळी मनुष्यजातिने माटे जोइये तेटलो व्यवहारु नथी. "वस्तुओने जे क्षोभ बहारना कारणथी थाय छे ते क्षोभमांथी मुक्त रहे, अने अंदरना कारणथी जे वस्तुओ करवामां आवी होय तेमां न्याय थवा दे, एटले के—आमां अर्थात् सामाजिक कार्योमां पर्यवसान पामे एवी गति अने क्रिया थवा दे, केम के आ तारा स्वभावधर्मने अनुसार छे." (९. ३१.) बीजे स्थळे (९. १) ते कहे छे के—"जे अन्यायनी रीत्ये वर्त्ते छे ते अपवित्र रीत्ये वर्त्ते छे,"—बादशाह एन्टोनिनस् जे विविध स्थळे कहे छे ते बधामांथी अलबत ए ज निकळी आवे छे. ते सत्यना आचरणनो सद्गुणतरीके अने सद्गुणना साधनतरीके आग्रह करे छे, अने सत्य ए सद्गुण अने सद्गुणनुं साधन छे एमां कांइ शंका नथी: केम के नजीवी बाबतोमां पण असत्य वापरवाथी वुद्धि निर्बल थाय छे; अने दुष्ट बुद्धिथी असत्य योजवुं ते, नठारी टेववाळो स्वभाव दर्शावनार बाबततरीके जोतां अने तेना परिणाम संबंधे जोतां—एम बंने रीत्ये—जेटला मोटा गुन्हाने माटे मनुष्य अपराधी थइ शके एटलो मोटो नीतिसंबंधी गुन्हो छे. एन्टोनिनस् न्यायना विचारने आचरणसाथे जोडे छे. कोइ माणसना मगजमां न्यायनो कोइ सुंदर विचार होय तेथी तेणे पोते गर्व करवानो नथी, पण सेन्ट् जेम्सना धर्मविश्वासना विचारनी पेठे तेणे ते विचारप्रमाणे काम करी बताववुं जोइये. पण आ कांइ ओछुं नथी अर्थात् पूरतुं छे.

विरक्ततत्वज्ञानीओ अने तेमना भेगा एन्टोनिनस् केटलीक वस्तुओने सुंदर (Kalà) अने केटलीकने बेडोळ (Aischrá) कहे छे, अने ते वस्तुओ सुंदर होय छे तेथी सारी होय छे, अने बेडोळ होय छे तेथी अशुभ अथवा नठारी होय छे. (२. १.) आ बधी शुभ अने अशुभ वस्तुओ आपणी सत्तामां छे, एम केटलाक वधारे चुस्त विरक्ततत्वज्ञानीओ (स्टोइक्स्) केवळ स्वतंत्र रीत्ये कहे; जेओ साधारण बुद्धिथी केवळ जुदा न पडे एवा माणसो जेवी रीत्ये कहे तेवी ज रीत्ये स्टोइक्स् एम कहे; व्यवहारु रीत्ये उक्त शुभ अने अशुभ वस्तुओ केटलांक मनुष्योनी सत्तामां अने केटलीक परिस्थितिमां घणे अंशे होय छे, पण बीजां मनुष्योनी सत्तामां अने बीजी परिस्थितिमां थोडे ज अंशे होय छे. मनुष्यनी सत्तामां होय छे एवी वस्तुओना संबंधमां मनुष्य पोतानी स्वतंत्र इच्छाप्रमाणे वर्ते छे ए वात विरक्त तत्वज्ञानीओ (स्टोइक्स्) पकडी राखे छे; केम के जे वस्तुओ मनुष्यनी सत्ताबहार छे तेवी वस्तुओना संबंधमां तो कृत्यमां पर्यवसान पामती स्वतंत्र इच्छा अलबत ए वचनना शब्दोथी ज बातल थयेली छे. मनुष्यनी स्वतंत्र इच्छानो एन्टोनिनस्नो भाव जेवो छे तेवो ज आपणे शोधी काढी शकिशुं के नहि ते हुं भाग्ये ज समजुं छुं, अने ते प्रश्न विचारवाने योग्य ज नथी. एन्टोनिनस्नो जे भाव छे अने जे ते कहे छे ते समजी शकाय तेवुं छे. जे आपणी सत्तामां नथी एवी सघळी वस्तुओमां कांइ विशेषता नथीः अर्थात् ते वस्तुओ नैतिक रीत्ये सारी पण नथी अने खोटी पण नथी. जीवन अने मरण ए सघळा माणसोने भाग्यमां लखेलुं ज छे. आरोग्य, संपत्ति, सत्ता, रोग अने निर्धनता सारां अने खोटां मनुष्योने पण कांइ भेद राख्याविना प्राप्त थाय छे; जेओ प्रकृति (कुदरत) प्रमाणे वर्त्ते छे अने जेओ नथी वर्तता तेओने पण ए बाबतो

तो प्राप्त थाय छे २०. एन्टोनिनस् बादशाह कहे छे के–"जीवन ए एक संग्राम छे अने एक प्रवासीनो मुकाम छे, तथा पाछळ रहेवानी कीर्ति ते एक व्यामोह छे." (२. १७.) जेओए दुनियाने क्षोभ पमाड्यो अने पछी मरी गया एवा माणसोविषे तथा हिराक्लिटस् अने जेने जुओए नाश पमाड्यो हतो ते डेमोक्रिटसविषे, तथा जेनो बीजी जुओए (अर्थात् तेना शत्रुओए) नाश कर्यो हतो ते सोक्रेटीसविषे बोलीने एन्टोनिनस् कहे छे केः–"आ बधानो शो अर्थ थाय छे? तुं वहाणे चढ्यो छुं, तें मुसाफरी करी छे, तुं किनारे आव्यो छुं; हवे उतरी पड. खरेखर जो बीजा जीवनउपर उतरवानुं होय, तो त्यां पण, देवोनी खोट नथी. पण जो कोइ भानरहित स्थितिउपर उतरवानुं होय तो तुं दुःखो अने सुखोवडे पकडातो मटीश, अने जे पोताना उपरिनी सेवा बजावे छे तेना जेटलुं ज उतरता प्रकारनुं छे एवा एक वहाणनो तुं गुलाम थतो अटकीशः केम के एक ज्ञान अने दैवत छे; बीजुं माटी(जड) अने विकार छे." (३. ३.) जेनाथी मनुष्ये डरवुं जोइये ते मृत्यु नथी, पण कुदरतने अनुसार जीवन गाळवानो कदी आरंभ ज न थाय एनाथी ज तेणे व्हीवुं जोइये. (१२. १) प्रत्येक माणसे एवी रीत्ये जीवन गाळवुं जोइये के जेथी ते पोतानी

---

२०. "बधा बनावो सउने एकसरखी रीत्ये बने छेः एक ज बनाव धर्मीने अने पापीने बने छेः साराने अने खोटाने तथा पवित्रने अने अपवित्रने पण तेम बने छे," इ० एक्लिझिएस्ट्स्, ९. ५. २; अने ५. ३: "सघळी वस्तुओमध्ये ए एक मोटो अनर्थ छे के बधाओने एकसरखो बनाव ज बने छे." अहीं "अनर्थ (evil)" नो शो अर्थ धारेलो छे ते कांइक शंका भरेलुं छे. बादशाहना कहेवानो शो भाव छे ते विषे तो कांइ शंका नथी. सरखावो–एपिक्टेटस्, एन्चिरिडिअन्, प्र. १., इ०; अने ब्रेचमन्सनो सिद्धान्त (स्ट्रेबो पृ. ७१३. आवृत्ति—केस०). मनुष्यना उपर जे कांइ आवी पडे छे ते शुभ पण नथी तेम अशुभ पण नथी.

फरज बजावे, अने बीजा कशाविषे ते कांइ माथाकूट करे ज नहि. तेणे एवुं जीवन गाळवुं जोइये के ते मृत्युनेमाटे नित्य तैयार ज रहे, ज्यारे तेडुं आवे त्यारे संतोषपूर्वक प्रयाण करी दे. केम के मृत्यु ए शुं छे ?–" इन्द्रियोद्वारा थता विषयोना भाननुं, अने जेथी विषयोनी इच्छाओनी हीलचाल थाय छे तेवी दोरीओ खेंचवानुं, तथा विचारोना चंचल हलनचलननुं, अने आ मांसमय शरीरनी सेवानुं विरमवुं ए ज." (६. २८.) मरण ए एक जननना जेवो ज कुदरतनो गुप्त भेद छे. (६. ५.) जेनो बरोबर अर्थ कदाच शंकाभरेलो छे एवा एक वाक्यमां एन्टोनिनस् गर्भाशयमांथी बहार निकळता बाळकविषे बोले छे, ते कहे छे के ते ज प्रमाणे मरणसमये आत्मा पोताना आवरणने छोडे छे. गर्भाशय छोडवाथी जेम बाळक जन्मे छे अथवा जीवनमां आवे छे, ते ज प्रमाणे आत्मा शरीरने छोडीने बीजा एवा जीवनमां प्रवेश करे छे के जे जीवन संपूर्ण छे. एन्टोनिनस् बादशाहनो आ आशय होय तो तेनी मने खातरी नथी. मृत्यु ए वास्तव जीवनमां अने जेओए तत्त्व-विचार कर्यो छे तेमने तो सुखी जीवनमां जन्म छे–एवा ब्रेचमे-नना विचारविषे स्ट्रैबोना पुस्तकमां (पृष्ठ ७१२)मां एक वाक्य छे तेनी साथे बटलर् एन्टोनिनस्ना उक्त वाक्यने सरखावे छे; अने ते धारे छे के एन्टोनिनस् आ अभिप्रायने उद्देशीने बोलता हशे.[२१]

भावी जीवनविषे एन्टोनिनस्नो अभिप्राय कोइ पण स्थळे स्पष्ट रीत्ये दर्शावायेलो नथी. तेमनो आत्माना स्वभावविषे जे सिद्धान्त छे तेमांथी अनिवार्य रीत्ये एम निकळी ज आवे छे के आत्मानो

२१. सेनेका (पत्र १०२) पण ए ज कहे छे, ते तेना पोताना वि-चारनुं कथन छे के पोताना लेखोने शणगारवाने माटे तेणे वापरेलुं बीजाओनुं एक सुभाषित छे, ते हुं समजी शकतो नथी. आ जीवन भोगववाने माटे गर्भाशयमां बाळक तैयार थाय छे ते विषे बोलीने आगल एम कहे छे के—

केवळ नाश थतो ज नथी केम के परमेश्वरनो अंश नाश पामी शकतो नथी. आ मत ओछामां ओछो एपिचार्मस् अने युरिपाइडीसना समयजेटलो पुराणो छे; जे पृथ्वीमां आव्युं छे ते पाछुं पृथ्वीमां समाय छे, अने जे स्वर्गमांथी आवे छे ते दिव्य अंश पाछो तेना बक्षनारनी पासे जाय छे. पण जे जीवात्मा तेना पृथ्वीतत्त्वना घट(शरीर)मां रहेतो हतो ते ज ते पोते छे एवा भानपूर्वक मरणपछीनी माणसनी स्थितिना विचारविषे एन्टोनिनसना लेखमां मने कांइ पण स्पष्ट जडी आवतुं नथी. आ विषयमां एन्टोनिनस् गुंचवणीमां पडेला अने आखरे ते आमां आवीने अटकेला जणाय छे के—परमेश्वर अथवा देवो विश्ववस्तुसमाजने माटे सर्वोत्तम अने घटित हशे तेज करशे.

अने मनुष्य तेना पोताना ज कृत्यथी कुदरतना नियमित प्रवाहमां आडे आवे छे–एवो ज एक बीजो विरक्ततत्त्वज्ञाननो सिद्धान्त छे अने जेनुं अनुशीलन केटलाक विरक्ततत्त्वज्ञानीओ करता हता, ते सिद्धान्तविषे पण एन्टोनिनस् कांइ निर्णयकारक रीत्ये बोलता नथी एम हुं धारुं छुं. ए सिद्धान्तने जेमां स्पर्श करेलो छे एवां केटलांक वाक्यो वांचनारने मालम पडशे, अने ते वाक्यो विषे वांचनार पोताथी बने तेम करे. पण जेमां बादशाह एन्टोनिनस् परिणामने माटे धैर्य अने शान्तिपूर्वक राह जोवाने माटे पोताने उत्तेजन आपे छे एवां केटलांक वाक्यो छे; अने ते–मनुष्ये पोताने भाग्ये जे आवे ते सघळुं सहन करी लेवुं जोइये अने ज्यां लगी ते जीवे त्यांलगी तेणे उपयोगी कृत्यो करवां जोइये, एवा

"आप्रमाणे बाल्यवस्थाथी वृद्धावस्थापर्यन्तना समयमां थइने आपणे बीजा जन्मने पामिये छिये. बीजो जन्म अर्थात् बीजी वस्तुस्थिति आपणे माटे तैयार छे–आपणी राह जुए छे." जुओ धर्मसंबंधी लेखो, ६२. ७; अने ल्युकन, १. ४५७: "सुविदित छे के लांबुं जीवन, वचगाळे छे मोत."

एन्टोनिनसना सघळा उत्तम उपदेशनी साथे–खरेखर बंधबेसतुं छे. तेथी माणसे पोताना उपयोगिपणानो वखत पोताना कृत्यथी टुंकावी नाखवो जोइये नहि. जेमां माणसे पोताने हाथे ज मरवुं जोइये एवा कोइ प्रसंगो शक्य छे के नहि तेविषे एन्टोनिनसने कांइ ख्याल छे के नहि ते हुं कही शकतो नथी, अने ते बाबतमां कोइ जिज्ञासा भरेलो तपास करवाजेटलो माल पण नथी, केम के हुं धारुं छुं के एवा तपासथी आ मुद्दाउपर एन्टोनिनसना अभिप्रायसंबंधी कांइ चोकस परिणाम आवे तेम नथी. ज्यारे सेनेका आत्मघातने माटे कारणतरीके जणावे छे के–‘ जे सनातन नियम, (के जेने सेनेका गमे ते समजतो होय) तेणे, आपणे माटे आना करतां वधारे सारुं बीजुं कांइ पण कर्युं नथी–ते ए छे के ते नियमे जीवनमां प्रवेशवानो तो फक्त एक ज मार्ग आप्यो छे अने जीवनमांथी बहार निकळी जवाना तो घणा मार्गो आपेला छे’–त्यारे जो के एन्टोनिनस् सेनेकाविषे सघळुं जाणता होवा जोइये ते छतां पण जे सेनेकानुं नाम पण देता नथी ते एन्टोनिनस् सेनेकाना विचारसाथे मळता हशे एम हुं धारतो नथी. खरेखर जीवनमांथी बहार निकळी जवाना मार्गो घणा छे, अने तेथी मनुष्य पोतानी जातनुं जतन करे तेने माटे घणुं सारुं कारण छे.[२२]

विरक्ततत्त्वज्ञानीना जीवननुं सीधुं लक्ष्य सुख नहोतुं. तेमना उपदेशमां जीवननो एवो कोइ नियम नथी के मनुष्ये तेना पोताना सुखनी पाछळ दोडवुं. ज्यारे पोताना मनोविकारोमांनो जे बळवानमां बळवान् मनोविकार होय छे तेवा कोइ अमुक मनोविकारने तेओ तृप्त करवाने फक्त मथता होय छे त्यारे घणा माणसो एम

---

२२. जुओ प्लिनियस्, एच्. एन्. २. प्र. ७; सनेका, इश्वरी व्यवस्था. प्र. ६; अने पत्र ७०: अविनाशी नियमे जे निर्णय कर्यो छे तेनाथी वधारे सारुं बीजुं कांइ नथी के–जीवनमां प्रवेशवानो मार्ग तो एक ज होवो जोइये पण बहार निकळी जवाना (आत्मघातना) मार्ग अनेक छे.

धारे छे के तेओ सुखने शोधे छे. मनुष्यनुं अंतिम लक्ष्य, आगळ क्यारनुं ए समजाववामां आव्युं छे, तेप्रमाणे प्रकृति (कुदरत)ने अनुसरीने जीवन गाळवुं ते छे; अने आप्रमाणे मनुष्य सुख, मननी शान्ति तथा संतोष प्राप्त करशे. (३. १२; ८. १, अने बीजां स्थळोए जुओ.) कुदरतना अनुसार जीवन गाळवाना साधन तरीके माणसे चार मुख्य सद्गुणोनो अभ्यास करवो जोइये, तेमांना प्रत्येक सद्गुणने पोतानी खास सत्तामर्यादा होय छे. डहापण, अथवा सारा अने खोटानुं ज्ञान; न्याय अथवा दरेक माणसने तेना हकनुं आपवुं ते; धैर्य, अथवा श्रम अने दुःख सहन करवानी शक्ति; अने मिताहार, के जे बधी वस्तुओमां माफकसर रहेवुं ते. आप्रमाणे कुदरतने अनुसार जीवन गाळवाथी विरक्ततत्त्वज्ञानी पोतानी सघळी इच्छाओ अथवा आशाओ संपादन करतो. तेनो बदलो तेना सद्गुणी जीवनमां ज रहेलो हतो, अने तेथी ते संतोष मानतो. कोइ ग्रीक् कवि लांबा समयउपर लखी गयो छे केः—

चोपाई

(केम के) सर्व मानुषी वस्तुंमांय, सद्गुणनो ज सुटेक गणाय;—
के न ग्रहे परहस्त इनाम, निजश्रमफळ पोते ज तमाम. १

केटलाक विरक्ततत्त्वज्ञानीओ डाह्या माणसनी स्वसंपूर्णताविषे खरेखर पोताना विचारो घणा गुमानी अने अशक्य शब्दोमां दर्शावता हता; तेओ तेने एक देवनी पदवीए चढावी देता हता.[२३] पण आ लोको मात्र वातो अने भाषणो करनारा ज हता, एवा लोको सघळा जमानाओमां होय छे, तेओ सुंदर शब्दो बोले छे,

---

२३. जे. स्मिथे "साचा धर्मनी उत्कृष्टता अने उमदापणा" विषेना तेना सुनंदा संवादो (प्र. ६.)मां विरक्ततत्त्वज्ञानीओना आ गुमानविषे कटाक्ष कर्यो छे. एवुं गुमान तेने सेनेकामां अने बीजाओमां मालम पडे छे. सेनेकामां तो नक्की एवुं गुमान छे ज, अने एपिकटेटसमां पण कदाच कांइ एवुं छे; पण एन्टोनिनसमां तो एवुं कांइज नथी.

मनुष्यजातिना कामकाजने थोडा ज समजे छे, अने गमे तेम करीने नाम काढवानी ज फक्त तेमने काळजी होय छे. एपिक्टेटस् अने एन्टोनिनस् बंने जण उपदेशथी तेम ज पोताना उदाहरणथी पोताने अने बीजाओने सुधारवाने परिश्रम करता; अने जो तेओना उपदेशमां आपणने खामीओ जणाइ आवे तो पण मनुष्यना स्वभावमां अने वस्तुओना बंधारणमां एक सद्गुणी जीवन गाळवाने माटे पूरती बुद्धिशक्ति छे एम जेओए दर्शावी आप्युं छे एवा आ महान् पुरुषोने आपणे मान आपवुं जोइये.

जो माणस पोताना आचरणउपर विचार अने पुनरावलोकन करवानी शक्तिनो फक्त साधारण दरज्जे पण उपयोग करशे, तो (तेने जणाशे के) जेप्रमाणे आपणे जीवन गाळवुं जोइये ते प्रमाणे जीवन गाळवुं ए पूरेपूरुं कठण छे, तेने पोताने संतोष थाय ए रीत्ये जीवन गाळवुं ते हर कोइ माणसने माटे कठण छेः अने जो के सघळा माणसोने नीति अने धर्ममां एक सरखा अभिप्रायो उपर आणी शकाय नहि, तो पण तेओने जेटलुं मान्य करवाने समजावी शकाय तेटलाने माटे तेओने सारां कारणो आपवां ते कांइ नहि तो एक करवालायक काम छे.

માર્કસ્ એન્ટોનિનસ્.

૧.

મારા પિતામહ વીરસની[1] પાસેથી સારી નીતિ અને સ્વભાવઉપર કાબુ રાખવાનું હું શીખ્યો.

૨. મારા પિતાની[2] પ્રતિષ્ઠા અને સ્મરણથી વિનય અને પુરુષને છાજે તેવું ચારિત્ર્ય (હું શીખ્યો.)

૩. મારી માતા[3] પાસેથી પવિત્રતા અને પરોપકાર. તથા એકલાં ખોટાં કૃત્યોથી નહિ પણ ખોટા વિચારોથીએ દૂર રહેતાં; અને વળી, શ્રીમંતોની ટેવોથી ઘણી દૂર એવી મારી જીવન ગાળવાની રીતિમાં સાદાઇ (હું શીખ્યો.)

---

૧. વીરસ્ એ એન્ટોનિનસ્‌ના બાપના બાપનું નામ હતું. આ કલમમાં 'પાસેથી' (from) એ શબ્દની સાથે સંબંધવાળું કોઇ ક્રિયાપદ નથી, તેમ જ આ કલમની પાછળ આવતી આ પુસ્તકની બીજી કલમોમાં પણ એવું કોઇ ક્રિયાપદ નથી; અને કયું ક્રિયાપદ અહીં પૂરું પાડવું જોઇયે તે પણ કેવળ ચોકસ નથી. જો કે એવી કલમો પણ છે કે જેને તે ક્રિયાપદ બંધબેસતું નહિ આવે તો પણ જે ક્રિયાપદ મેં ઉમેર્યું છે તે અહીં અર્થ દર્શાવી શકે તેમ છે. જો એન્ટોનિનસનો કહેવાનો ભાવ એવો ન હોય કે–જે વિવિધ મનુષ્યોનાં નામ તેમણે આપેલાં છે તેમની પાસેથી આ સઘળી સારી બાબતો તે પોતે શીખ્યા, તો તે એમ કહેવા ધારે છે કે તેમણે તેઓમાં અમુક સારા ગુણો જોયા અથવા તેમની પાસેથી અમુક લાભ પ્રાપ્ત કર્યો, અને તે ઉપરથી એટલું નિકળી આવે છે કે તેથી એન્ટોનિનસ્‌નો વધારે સુધારો થયો હતો અથવા કાંઇ નહિ તો વધારે સુધારો થયો હોત; કેમ કે માર્કસ્ એન્ટોનિનસ્ (જેવો પુરુષ) એમ કહે કે તેમના સગાંવાહાલાંમાં અને શિક્ષકોમાં જે સદ્ગુણો તેમણે જોયા તે બધા તેમણે મેળવી લીધા–એમ સમજવું એ એક ભૂલ ગણાય.

૨. તેમના પિતાનું નામ એન્નિયસ્ વીરસ્ હતું.

૩. તેમની માતા ડોમીટિયા કેલ્વિલ્લા હતી તેનું બીજું નામ વળી લ્યુસિલ્લા હતું.

४. मारा वडदादाँपासेथी जाहेरशाळाओमां वारंवार नहि जवानुं, अने घेर सारा शिक्षको राखवानुं, अने आवी बाबतोमां उदारताथी खर्च करवो जोइये ते समजतां (हुं शीख्यो).

५. मारा अध्यापकपासेथी रमतना अखाडामां लीली टोळी के वादळी टोळीनो पक्ष नहि लेवानुं, तेम ज मल्लोना युद्धमां पार्म्युलेरियसनो के स्फुटेरियसनो पक्षकार नहि थवानुं (हुं शीख्यो); वळी तेमनी ज पासेथी श्रमसहिष्णुता, थोडी ज हाजतो राखवानुं अने मारे पोताने हाथे काम करवानुं, तथा बीजा लोकोना काममां माथुं नहि मारवानुं, अने निंदा सांभळवाने तैयार नहि रहेवानुं (हुं शीख्यो).

६. डायोग्निटस् पासेथी,—तुच्छ वस्तुओविषे कडाकूटमां नहि पडवानुं, अने घंतरमंतरविषे तथा भूतप्रेतादिकने हांकी काढवा विषे तथा एवी बाबतोविषे चमत्कार करनाराओ अने जादुगरो जे कहेता हता तेने कांइ पण वजन नहि आपवानुं; अने लडाववाने माटे लडायक पक्षीओ नहि उछेरवानुं, तथा एवी बाबतोना नादमां नहि पडवानुं; अने वाणीनी स्वतंत्रता सहन करवानुं; अने तत्त्वज्ञा-

---

४. आ कदाच तेमनी माताना दादा केटीलियस् सेवेरस् होय.

५. जस्टिनसनां पुस्तकोमां एक डायोग्निटस् नामना माणसउपरनो एक पत्र छापेलो छे, तेनो लेखक डायोग्निटस्ने "सर्वोत्कृष्ट पुरुष" कहे छे. ते इतर धर्मनो हतो, पण ते ख्रिस्तीओनो धर्म केवो हतो, तेओ केवा परमेश्वरने पूजता हता, अने आ पूजाथी तेओ दुनियाने अने मृत्युने तुच्छ गणतां, अने ग्रीक् लोकोना देवोने नहि मानतां तथा याहुदी लोकोना वहेमो नहि पाळतां केम शीख्या; अने तेओने एकबीजाउपर प्रेम हतो ते केवो हतो, तथा आ नवा प्रकारनो धर्म हवे केम दाखल करवामां आव्यो अने पहेलां केम दाखल करवामां नहोतो आव्यो—ते जाणवाने माटे घणुं ज इच्छतो हतो. केन्ट् प्रगणामांना लाइमिन्ज् नामना गामना धर्माधिकारी मारा मित्र मि॰ जेन्किन्से मने सूचव्युं छे के आ डायोग्निटस् ते मार्कस् एन्टोनिनस्नो शिक्षक हशे.

ननुं परिशीलन करवानुं; अने प्रथम बेक्कियसनो अने त्यारपछी टेन्डासीसनो अने मार्सिएनसनो श्रोता थवानुं; अने मारी युवावस्थामां संवादो लखवानुं; अने पथारीने माटे एक लाकडानी पाट तथा पाथरवाना चर्मनी ज मात्र अपेक्षा राखवानुं, तथा ग्रीस् देशनी तालीममां जे प्रकारनी जरूर होय छे तेवुं बीजुं जे कांइ होय ते सघळुं; (हुं शीख्यो).

७. रस्टिकस्[६]नी पासेथी मारा मनउपर एवी छाप पडी के मारा चारित्र्यने सुधारानी अने अदबनी जरूर छे; अने तेनी ज पासेथी हुं—तत्त्वज्ञानसंबंधी स्पर्धाने, तथा काल्पनिक [illegible] लखवाने, तथा नानां उश्केरनारां भाषणो आपवाने, तथा जे घणी अदब पाळे छे अने देखाव करवाने माटे जे परोपकारी कामो करे छे एवा माणसतरीके पोताने देखाडी आपवाने, आडे मार्गे दोराइ नहि जवानुं शीख्यो; अने सुभाषितथी तथा कविताथी तथा सुंदर लखाणथी दूर रहेवानुं शीख्यो; अने बहार फरवानां लुगडां पहेरी घरमां आम तेम नहि फरवानुं तथा बीजी एवी बाबतो नहि करवानुं शीख्यो; सिन्युएसामांथी मारी मातुश्रीउपर रस्टिकसे जे पत्र लख्यो हतो तेना जेवा ज मारा पत्रो हुं सादाइथी लखवा शीख्यो; अने जेओए शब्दोथी मारुं अपमान कर्युं होय, अथवा

---

६. क्यु. जुनियस् रस्टिकस् एक विरक्ततत्त्वज्ञानी हतो, अने तेनी योग्यता एन्टोनिनस् उंची समजता, अने घणी वार तेनी सलाह लेता. (केपिटल्. एम्. एन्टोनिनस्. ३.)

एन्टोनिनस् कहे छे के—" एपिक्टेटसनी स्मरणनोंध"

तेनुं भाषान्तर " एपिक्टेटसना लेखो " एवुं नहि करवुं जोइये, केम के एपिक्टेटसे कांइ पण लख्युं नथी. एपिक्टेटसना संबंधमां जे आपणे जाणिये छिये ते सघळुं तेना ज शिष्य एरियने जाळवी राख्युं छे, ते कहे छे, " मनना विचारोनी आ नोंधो—के जे विचारो में मारा मनमां राखवा (पाळवा) यत्न कर्यो." (एप्. एड्. गेल्.)

मारो कांइ अपराध कर्यो होय, तेमना संबंधमां, तेओ सलाह करवाने तत्परता दर्शावे के तरत ज शान्त थवाने अने सलाह करवाने सहेलाइथी वलण धरावतां हुं शीख्यो; हुं काळजीपूर्वक वांचवानुं अने कोइ पण पुस्तकनी उपरचोटिया समजथी संतोष नहि पामवानुं शीख्यो; अने जेओ हदउपरांत वातो करे तेओने उतावळथी हा नहि भणवानुं शीख्यो; जे तेणे मने पोताना संग्रहमांथी संभळाव्यां हतां ते एपिक्टेटसनां संभाषणोना परिचयमाटे हुं रस्टिकसनो आभारी छुं.

८. एपोलोनियँसनी पासेथी संकल्पनी स्वतंत्रता अने उद्देशनी अचल दृढता हुं शीख्यो; अने एक क्षण पण बुद्धिसिवाय बीजा कशा पण तरफ दृष्टि नहि करवाने शीख्यो; अने तीक्ष्ण व्यथाना समयमां, मारा बाळकना मरणना प्रसंगे, तथा लांबा मंदवाडमां हमेश एक सरखो रहेतां शीख्यो; पोतानुं शिक्षण आपवामां एक ज माणस अत्यंत दृढ अने नरम एम बंने प्रकारे रही शके छे अने चीडियो बनतो नथी एम तेना जीवंत उदाहरण उपरथी स्पष्ट रीत्ये हुं जोतां शीख्यो; जे पोताना अनुभवने अने तत्त्वज्ञानना सिद्धान्तोने समजाववामां पोतानी कुशळताने एक अल्पमां अल्प योग्यतातरीके खुली रीत्ये गणतो हतो एवा माणसनो दाखलो मारी नजरआगळ राखतां हुं शीख्यो; अने मित्रोपासेथी मनोभिलषित प्रसादरूप वस्तुओ दैन्य पाम्याविना तेम ज तेमनी उपेक्षा कर्याविना केवी रीत्ये स्वीकारवी ते हुं शीख्यो.

९. सेक्स्टसनी पासेथी परोपकारी स्वभाव, अने एक पिताने छाजे तेवी रीत्ये व्यवस्थामां राखेला कुटुंबनुं उदाहरण, अने कुदर-

---

७. चेल्सिसनो रहीश एपोलोनियस् मार्कसनो शिक्षक थवाने पायसना समयमां रोम् नगरमां आव्यो. ते एक आग्रही विरक्ततत्त्वज्ञानी हतो.

८. चिरोनियानो वासी सेक्स्टस्, प्लुटार्चनो पौत्र, अथवा केटलाक कहे छे तेम तेनो भत्रीजो हतो; पण घणुं करीने कदाच ते तेनो पौत्र हतो.

तने बंधबेसे तेवी रीत्ये वर्त्तवानो ख्याल हुं शीख्यो; अने आंडबर विनानी गंभीरता, तथा काळजीपूर्वक मित्रोनुं हित संभाळवानुं, तथा अज्ञान मनुष्यो अने जेओ विचार कर्या विना अभिप्रायो बांधे छे तेवां मनुष्योप्रत्ये क्षमा राखवानुं हुं शीख्योः ते बधाओने तत्काळ पोते अनुकूळ थइ जाय एवी तेनामां शक्ति हती, तेथी तेनी साथेनो समागम खुशामतना करतां वधारे अनुकूल हतो; अने तेनी साथे जेओ तेना सहवासमां आवता तेओवडे तेने सउथी उच्च मान आपवामां आवतुं. जीवनने माटे आवश्यक सिद्धान्तो बुद्धियुक्त रीत्ये तथा व्यवस्थित रीत्ये शोधी काढवानी तेम यथाक्रमे गोठववानी एवी बंन्ने प्रकारनी बुद्धिशक्ति तेनामां हती; अने ते क्रोध के बीजो कोइ मनोविकार कदी पण दर्शावतो नहि, पण ते मनोविकारथी केवळ मुक्त अने वळी अत्यंत प्रेमाळ हतो; अने ते धांधळियो डोळ कर्या विना पोतानुं अनुमोदन दर्शावी शकतो, अने तेनामां आडंबररहित घणुं ज्ञान हतुं.

१०. व्याकरणशास्त्री एलेक्झांन्डरपासेथी—बीजाओनी भूलो काढवानी टेवथी दूर रहेवानुं, तथा जेओ कोइ भाषानी रुढिविरुद्ध, अथवा अपभ्रंशवाळो अथवा कर्णकठोर शब्द बोले तेओने अवज्ञाभरेली रीत्ये ठपको नहि देवानुं, पण जे शब्द वापरवो जोइतो होय ते ज शब्द—चतुराइथी जबाब आपतां अथवा अनुमोदन आपतां, अथवा जे वस्तुविषे वात चालती होय तेविषे—पण ते शब्दविषे नहि एवी—तपासमां भाग लेइने, अथवा बीजा कोइ उचित इसारानी रीत्ये—वातभेगो वातमां आणीने खरी रीत्ये वापरी बताववानुं हुं शीख्यो.

११. एक जुलमी राजामां केवां ईर्ष्या, कपट अने दंभ होय छे,

---

९. एलेक्झांडर् वैयाकरण फ्रीजियानो वतनी हतो. तेणे होमर् कविना काव्यउपर टीका लखी छे; अने अलंकारशास्त्री एरिस्टाइडीसे तेनी दहनक्रियाप्रसंगे करेला भाषणमां तेनी प्रशस्ति लखी छे,

अने सामान्य रीत्ये आपणामां जेओ उमराववर्गना कहेवाय छे तेओमां कांइक वात्सल्यनी खामी होय छे ते अवलोकतां हुं फ्रोन्टोपांसेथी शीख्यो.[10]

१२. प्लेटोना अनुयायी एलेक्झान्डरपासेथी,—वारंवार अने जरूरविना कोइने एम कहेवुं नहि अथवा पत्रमां लखवुं नहि के मने फुरसद ज मळती नथी—ए हुं शीख्यो; तेम ज जेओनी साथे आपणे रहिये छिये तेओप्रत्येना आपणा संबंधने लीधे आपणे जे फरजो बजाववी जोइये ते फरजो नहि बजाववानां व्हानां—मारे ताकीदनां कामो हतां एम कहिने—निरंतर बताववां नहि (ते पण हुं तेनी पासेथी ज शीख्यो.)

१३. केट्युलसनी[11] पासेथी (हुं ए शीख्यो के)—ज्यारे कोइ मित्र आपणो वांक काढे, अने जो के ते कांइ कारणविना वांक काढतो होय तो पण,—आपणे (तेविषे) बेदरकार रहेवुं नहि, पण तेना मनने हमेशना जेवा समाधानमां पुनः स्थापवानो प्रयत्न करवो; तथा जेम डोमीटियस् अने एथेनोडोटस् करता कहेवाय छे तेम शिक्षकोने विषे सारुं बोलवाने तत्पर रहेवुं; तथा मारां संतानोउपर साचा दिलथी प्रेम राखवो.

१४. मारा भाइ[12] सेवरसपासेथी मारां सगाने चहातां, सत्यने चहातां अने न्यायने चहातां हुं शीख्यो; अने तेनी द्वारा मने थ्रेसिया, हेल्वी-

---

१०. एम्. कोर्नेलियस् फ्रोन्टो एक अलंकारशास्त्री हतो, मार्कस्नो तेना उपर घणो प्रेम हतो. मार्कस् अने फ्रोन्टोनी वच्चेना केटलाक पत्रो हजु पण मोजुद छे.

११. सिन्ना केट्युलस् एक विरक्ततत्त्वज्ञानी हतो.

१२. आ स्थळे "भाइ" ए शब्द खरो नहि होय. एन्टोनिनसने भाइ हतो ज नहि. एम धारवामां आव्युं छे के ते कोइ पित्राइ भाइना अर्थमां "भाइ" शब्द वापरता हशे. शल्टझ् पोते करेला भाषान्तरमां "भाइ" ए शब्द छोडी दे छे, अने कहे छे के आ सेवेरस् ते घणुं करीने क्लोडियस् सेवेरस् छे के जे एक आगळपाछळनो सगो हतो.

डियस् , केटो, डायोन् अने ब्रुटसनो[13] परिचय थयो; वळी तेनी पासेथी सउने माटे जेमां एक ज कायदो छे एवी राजनीतिविषेनो विचार मने प्राप्त थयो, (एकसरखा हको अने एकसरखी वाणीनी स्वतंत्रताने मान आपीने ए राजनीतिनो अमल करवामां आवे छे), अने जेमना उपर राज्य करवामां आवे छे ते सघळानी स्वतंत्रताने जे सउथी वधारे मान आपे छे तेवा राजानुं राज्य केवुं होवुं जोइये तेनो ख्याल पण मने तेनी पासेथी मळ्यो, वळी हुं तेनी पासेथी एकरंगीपणुं अने तत्त्वज्ञानमाटेना मारा प्रेममां अचळ दृढता पण शीख्यो; अने हुं तेनी पासेथी भलुं करवानो स्वभाव, अने बीजाओने तरत ज आपतां अने सारी आशाओ बांधतां, अने मारा मित्रो मने चहाय छे एम मानतां शीख्यो; अने जेओने ते वखोडतो तेओना संबंधमां तेना अभिप्रायोने ते छुपावी राखतो नहि ए तथा ते शुं इच्छे छे अने शुं नथी इच्छतो तेनुं अनुमान करवानी तेना मित्रोने कांइ जरूर पडती नहि, पण ते तदन खुल्लुं ज जणातुं—ए में तेनामां जोयुं.

१५. मेक्सिमस्[14] पासेथी हुं मारा पोताउपर काबु राखतां अने कशाथी आडो नहि दोराइ जतां; अने सघळी परिस्थितिओमां तेमज मंदगीमां आनंदिपणुं; अने नैतिक चारित्र्यमां मधुरता अने प्रभावनुं यथायोग्य मिश्रण, तथा मारी आगळ जे कांइ काम मूकवामां आव्युं होय ते विनाबडबड्ये करवानुं शीख्यो. में जोयुं के ते जे विचारतो तेज उच्चारतो अने जे सघळुं ते करतो तेमां

---

१३. आपणे टेसिटसकृत इतिहास (१३. १६. २१; अने बीजां वाक्यो) उपरथी जाणिये छिये के थ्रेसिया अने हेल्वेडियस् कोण हता. प्लुटार्चे बे केटो डायोन् अने ब्रुटसनां जीवनवृत्तान्तो लखेलां छे. एन्टोनिनस् घणुं करीने युटिकानो रहेवासी केटो जे स्टोइक् हतो तेने उद्देशीने लखे छे.

१४. क्लोडियस् मेक्सिमस् एक विरक्ततत्त्वज्ञानी हतो, तेना उपर मार्कसना पूर्वाधिकारी एन्टोनिनस् पायसनो घणो प्रेम हतो. मेक्सिमसनुं चारित्र्य एक संपूर्ण पुरुषना जेवुं छे. (जुओ ८, २५.)

तेनो कोइ खोटो आशय नहोतो एम दरेक मनुष्य मानतुं; अने ते कदी पण अचंबो अने आश्चर्य दर्शावतो नहि, अने कदी पण उतावळमां जणातो नहि, अने कदी पण कोइ काम करवानुं मुलतवी राखतो नहि, अने ते गभरातो के निराश थतो नहि, तेम ज पोताने थयेला खेदने बीजुं रूप आपवाने ते कदी पण हसतो नहि, तेम ज बीजी बाजुए जोतां ते आवेशी के वहेमी न हतो. तेने परोकारनां कामो करवानी टेव हती, अने ते क्षमा आपवाने तत्पर हतो, अने सर्व प्रकारना असत्यथी ते मुक्त हतो; अने ते एक सुधाराउपर आवेला माणसकरतां वधारे अंशे जे माणस खरे मार्गेथी कदी पण चळी शक्यो न होय एवा माणस जेवो जणातो. में जोयुं के कोइ पण माणस एम धारतो नहि के मेक्सिमस् तेने धिक्कारे छे, अथवा कोइ पण माणस पोताने मेक्सिमस् करतां वधारे सारो माणस धारवाने कदी पण हिमत धरी शकतो नहि. वळी बीजाओने अनुकूळ लागे एवी रीत्ये विनोदी थवानी कळा तेनी पासे हती.[†]

१६. मारा पितोमां[१५]—स्वभावनी नरमाश, अने योग्य विचार कर्या पछी निर्णीत करेली बाबतोमां चळी शके नहि तेवो निश्चय; अने जेने मनुष्यो माननी पदवीओ कहे छे तेवी बाबतोमां मिथ्याभिमाननो अभाव; अने महेनत अने खंतविषे एक प्रकारनो प्रेम; अने जनसमाजना सामान्य कल्याणसंबंधी जेओ कांइ कहेवा मागता होय तेओनी वात सांभळवानी तत्परता; अने दरेक माणसनी योग्यता प्रमाणे तेने आपवामां अचल दृढता; अने जोरथी तथा नरमाशथी काम करवाना प्रसंगोना अनुभवथी प्राप्त थयेलुं ज्ञान में जोयां. अने में जोयुं के छोकराओविषेना समग्र प्रेमावेशने तेणे तदन जीती

१५. अहीं तेमने दत्तक लेनार पिता, तेमना पूर्वाधिकारी बादशाह एन्टोनिनस् पायसविषे मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनस् बोलवा इच्छे छे. ६. ३०. सरखावो.

लीधो हतो; बीजा हर कोइ [१६]शहेरी करतां ते पोताने कांइ विशेष धारतो नहि; अने तेना मित्रोए तेनी साथे ज जमवुं जोइये अथवा तो ज्यारे तेनी सवारी बहारगाम होय त्यारे तेनी हाजरीमां रहेवुं ज जोइये एवा समग्र बंधनमांथी तेणे तेओने मुक्त कर्या, अने कोइ अवश्यनी परिस्थितिना कारणसर जेओ तेनी साथे जइ शक्या न होय तेओ तेने तेवो ज (निर्विकार) जोता. में वळी तेनी विचारवानी सघळी बाबतोमां काळजीभरेलो तपास करवानी टेव अने तेनी खंत जोइ, अने जे पहेलवहलां ज नजरे पडे एवा देखाव मात्रथी संतोष पामीने ते पोतानो तपास कदी पण अटकावतो नहि; अने तेनो स्वभाव–मित्रोने जाळवी राखवानो तथा तेओथी जलदी नहि कंटाळवानो तेम ज पोताना प्रेममां बेहद नहि बनी जवानो; अने सर्व प्रसंगे संतुष्ट अने आनंदी रहेवानो; अने दूरथी भावि बिनाओने आगळथी जोवानो तथा नानामां नानी बाबतने माटे पण देखाव कर्याविना तैयारी करी राखवानो; अने जनसमाजतरफथी थती प्रशंसा अने सघळी खुशामतने एकदम अटकाववानो; अने शहेनशाहतना कारोबारमाटे हमेश जरूरनी बाबतोमाटे सावध रहेवानो, अने खर्चना सारा नियामक थवानो, अने आवी वर्त्तणुक माटे जे ठपको मळे ते धैर्यपूर्वक सहन करवानो;–में जोयो; देवोना संबंधमां ते वहेमी पण नहोतो तेम ज माणसोनो प्रेम प्राप्त करवाने ते बक्षीसोथी के तेओने प्रसन्न करवाना यत्ने करीने, अथवा प्रजासमुदायनी खुशामद करीने मथतो नहि; पण ते सघळी बाबतोमां माफकसरपणुं दर्शावतो, अने ते कदी पण नीच विचार के आचार दर्शावतो नहि तेम ज अवनवी बाबतोप्रत्ये प्रेम पण दर्शावतो नहि. अने जे वस्तुओथी कोइ प्रकारे जीवननी अनुकूलता थाय छे अने जे वस्तुओने प्रारब्ध जथाबंध आपे छे तेवी वस्तुओने ते गर्व कर्याविना तेमज माफ माग्याविना (अर्थात् संकोचायाविना)

---

१६. ते Koinonoemosune शब्द वापरे छे. गेटेकरनी नोंध जुवो.

वापरतो; एटले ज्यारे ते वस्तुओ तेने मळती त्यारे ते तेमने आडंबर कर्याविना भोगवतो अने ज्यारे ते वस्तुओ न होय त्यारे तेने तेमनी जरूर पण सालती नहि. तेने माटे कोइ एम कही शके तेम नहोतुं के ते एक दोढडाह्यो अथवा (घरकुकडी) विषयोनो दास के [illegible] हतो; पण दरेक मनुष्य कबुल करतुं के ते एक परिपक्व, संपूर्ण, खुशामदनी जेने कांइ ज असर न थाय तेवो, पोतानां अने बीजाओनां कार्यनी व्यवस्था करवाने समर्थ पुरुष हतो. आ उपरांत, जेओ खरा तत्त्वज्ञानीओ हता तेओने ते मान आपतो, अने जेओ तत्त्वज्ञानी होवानो ढोंग करता तेओने ते ठपको देतो नहि अने तेम छतां ते तेओवडे सहेलाइथी दोराइ पण जतो नहि. वळी ते वातचित्तमां सरल हतो, अने बीजाओने अणगमो थाय एवो डोळ घाल्याविना ते पोते बीजाओने रुचे तेवो बनी शकतो. ते पोतानी शरीरनी तनदुरस्तीनी व्याजबी संभाळ लेतो, पण ते जीवनने माटे मोटी अनुरक्तिवाळातरीके नहि, तेम ज पोताना शरीरना देखावनी दरकारनी खातर नहि, तेम ज वळी बेदरकार रीत्ये पण नहि, पण एटलामाटे के तेनी पोतानी ज संभाळथी तेने वैद्यनी कळानी के औषध खावानी के लगाडवानी जरूर भाग्ये ज पडती. जेओने वक्तृत्वनी के कायदाना अथवा नीतिना ज्ञाननी, अथवा बीजा कशानी कोइ विशेष शक्ति होय तेओनी आगळ निर्मत्सरपणे पोतानो ममत मूकी देवामां ते घणो ज तैयार रहेतो; अने तेओने ते पोतानी मदद आपतो के दरेक माणस पोतानी योग्यताप्रमाणे प्रतिष्ठा भोगवे; अने ते हमेश पोताना देशना कायदाने अनुसार वर्त्तवानो कांइ पण डोळ कर्यासिवाय कायदाने अनुसार वर्त्ततो. वळी ते फेरफारनो शोखी अने अस्थिर न हतो, पण ते ज स्थानोमां रहेवानुं अने पोते ते ज बाबतोमां रोकावानुं चहातो; अने तेना माथाना दुखाराना वेग मट्यापछी तरत ज ते पोतानां हमेशनां कार्योमां ताजो अने सशक्त बनीने आवतो. तेने गुप्त

राखवानी बाबतो घणी न हती, पण घणी थोडी अने घणी विरल हती, अने आ पण फक्त प्रजासमुदायने लगती बाबतोविषे ज हती; अने जाहेर तमाशाओनां प्रदर्शनमां अने जाहेर मकानो बांधवामां, लोकोने आपवामां आवती सखावतोमां, अने एवी बाबतोमां ते घणुं डहापण अने करकसर दर्शावतो, केम के ते एवो पुरुष हतो के शुं करवुं जोइये तेउपर ज दृष्टि राखतो, अने माणसनां कामोथी जे प्रतिष्ठा मळे छे तेउपर नजर राखतो नहि. ते अयोग्य समये स्नान करतो नहि, ते मकानो बांधवानो शोखी नहोतो, तेम ज शुं खावुं तेविषे पण तेने चट नहोती, तेम ज तेनां लुगडांनी बनावट अने रंगविषे पण ते कुतूहली नहोतो, तेम ज तेनां दासदासीओनी खुबसूरतीविषे पण ते दरकारवाळो नहोतो. साधारण रीत्ये तेनो पोशाक समुद्रकिनारे आवेला तेना विलासभुवन लोरियम[१८]थी अने लेन्युवियमथी आवतो. टस्क्युलम्आगळ राहदारी वेरो उघरावनार के जेणे तेनी माफ मागी हती तेनी साथे ते केवी रीत्ये वर्त्यो हतो ते आपणे जाणिये छिये; अने आवी ज तेनी सघळी वर्त्तणुक हती. तेनामां कांइ पण कठोर, तेम ज वायुं न वराय तेवुं, तेम ज आवेशी, तेम ज जेने कोइ कहे के परसेवो उतरे एटले दरज्जे पहोचेलुं छे एवुं न हतुं; पण तेने पुष्कळ समय होय तेम ते सख्त रीत्ये, अने गुंचवायासिवाय, नियमित रीत्ये, जोरभेर अने बंधबेसे तेवी रीत्ये सघळी वस्तुओने तपासतो. अने सेक्रिटीसने[१९] माटे जे नोंधवामां आव्युं छे ते तेने लागु पाडी शकाय तेम छे के—जे वस्तुओथी घणां माणसो परहेज न रही शके

१७. आ वाक्य अशुद्ध छे, अने तेनो यथार्थ अर्थ शो छे ते अनिश्चित छे.

१८. लोरियम् ए रोमनी उत्तरमां समुद्रकिनारे आवेलो विला (विलासस्थान—बंगलो) हतो, अने त्यां एन्टोनिनस् उछर्यो हता अने गुजरी पण त्यां ज गया. आ वाक्य पण अशुद्ध छे.

१९. झेनोफोन्, नोंध. १. ३. १५.

एटला बधां निर्बळ होय छे अने ते वस्तुओने तेओ अत्याचारसिवाय भोगवी शकतां नथी तेवी वस्तुओथी परहेज रहेवाने तेम ज ते भोगववाने पण ते शक्तिमान् हतो. पण परहेजगी पाळवामाटे अने भोग भोगववामां माफकसर रहेवामाटे पूरती रीत्ये सबळ थवुं ते एक जेने पूर्ण अने अजेय आत्मा होय एवा मनुष्यनुं लक्षण छे के जेवुं लक्षण मेक्सिमसे पोतानी मंदगीमां दर्शावी आप्युं हतुं.

१७. सारा वडवाओ, सारां मातापिता, सारी बहेन, सारा शिक्षको, सारा सोबतीओ, सारां सगां अने मित्रो, लगभग दरेक वस्तु सारी मळवाने माटे हुं देवोने आभारी छुं. वळी, ते उपरांत देवोनो मारा उपर एटलो आभार छे के–जो के लाग आव्यो होत तो हुं कांइक एवुं ज करी बेसवाने दोराइ जात एवो मारो स्वभाव हतो, तो पण देवोना सामे कांइ पण अपराध करवामां हुं खेंचाइ ना गयो; पण तेओनी कृपाथी, परिस्थितिनो एवो संजोग न आव्यो के जेथी मारी कसोटी थाय. वळी हुं देवोनो आभारी छुं के–मारा दादानी रखायत स्त्रीनी साथे मने उछेरवामां आव्यो नहि, अने योग्य समय आवतां पहेलां मारा पुरुषायतननी कसोटी में करी नहि, पण तेम करवानो समय में लंबाव्यो; अने मने एक एवा नियामक अने पिताना ताबामां राखवामां आव्यो हतो के जे मारामांथी सघळो अभिमान दूर करवाने तथा मनुष्यने माटे पहेरेगिरो अथवा भरतवाळा पोषाको, अथवा मशालो अने बावलांओ, अने एवा ज देखावोनी जरूर पड्यासिवाय पण महेलमां रहेवुं शक्य छे एवा ज्ञानउपर मने आणवाने शक्तिमान् हतो. पण एक खानगी मनुष्यनी पद्धतिथी रहेवाना ज कारणथी जाहेर लोकहितने माटे एक राज्यकर्त्ताने छाजे तेवी रीत्ये करवी जोइती बाबतोना संबंधमां विचारमां अधिक नीच अथवा कार्यमां अधिक शिथिल पण थया सिवाय पोताने एक खानगी माणसनी पद्धतिनी धणी पासे आणवानी शक्ति आवा ज पुरुषमां होय छे. जे पोताना नैतिक चारित्र्यथी

મારા મનઉપર સાવધતા રાખવાને મને જાગ્રત કરવાને સમર્થ હતો, અને જે તે જ વખતે તેના માન અને પ્રેમથી મને આનંદ આપતો એવો ભાંઈ મને આપવાને માટે હું દેવોને ધન્યવાદ આપું છું; મારાં સંતાનો જડ બુદ્ધિનાં તેમ જ શરીરે પણ બદસિકલ થયેલાં નથી; સાહિત્યમાં, કવિતામાં અને એવા બીજા અભ્યાસોમાં મેં વધારે કુશળતા મેળવી નહિ તેને માટે પણ હું દેવોનો આભાર માનું છું, કેમ કે જો તેમાં હું મને આગળ વધતો જુવત તો કદાચ હું તેમાં સંપૂર્ણ રીત્યે ગરક થઇ જાત; જેઓએ મને ઉછેરીને માનપાત્ર સ્થિતિમાં આણ્યો હતો તેઓ જે સ્થાનને ચહાતા જણાતા તે સ્થાને તેઓને મૂકવામાં મેં ત્વરા કરી, અને તેઓ હજુ તો જુવાન છે એ કારણથી હું કેટલાક વખત પછી તેમ કરીશ એવી આશાએ તેમને મેં વિલંબમાં નાખ્યા નહિ; મને એપોલોનિયસ્, રસ્ટિકસ્ અને મેક્સિમસનું ઓળખાણ થયું; કુદરતને અનુસાર જીવન ગુજારવાવિષે, તથા તેવું જીવન કેવું છે તેવિષે સ્પષ્ટ અને વારંવાર મારા મનમાં છાપો પડતી, તેથી કરીને જ્યાંલગી દેવો ઉપર તેમની બક્ષીસો, અને મદદ, અને પ્રેરણાઉપર આધાર રાખવામાં આવે છે ત્યાંલગી,—જો કે મારા પોતાના દોષથી અને દેવોએ આપેલી ચેતવણીપ્રમાણે નહિ વર્તવાથી, અને લગભગ હું એમ પણ કહી શકું કે તેઓએ આપેલી પ્રત્યક્ષ સૂચનાપ્રમાણે નહિ વર્તવાથી હજુ પણ કુદરતને અનુસાર જીવન ગુજારવામાં મારી ન્યૂનતા રહી જાય છે, તો પણ—તત્કાળ કુદરતને અનુસાર જીવન ગુજારવામાં મને કાંઇ પણ પ્રતિબંધ નડ્યો નથી, મારું શરીર આવા પ્રકારના જીવનમાં આટલો લાંબો સમય ટકી રહ્યું છે. હું કદી બેનિડિક્ટાને કે થિયોડોટસને અડક્યો નથી, અને ઇશ્કના છંદમાં પડ્યાપછી હું એ છંદમાંથી મુક્ત થયો; અને જો કે હું ઘણી વાર રસ્ટિકસ

૨૦. બાદશાહને તેમના દત્તક ભાઈ એલ્. વીરસ્‌સિવાય બીજો કોઇ ભાઈ ન હતો.

साथे छणकातो, तो पण जेनो मारे पश्चात्ताप करवानो प्रसंग आव्यो होय एवुं में कांइ पण कर्युं नथी; जो के मारी माताना नसीबमां युवानीमां गुजरी जवानुं हतुं, तो पण तेणे पोतानां आखरनां वर्षो मारी साथे गाळ्यां; ज्यारे पण कोइ माणसने तेनी तंगीमां अथवा बीजे कोइ प्रसंगे मदद करवानी मने इच्छा थती त्यारे तेम करवानां साधन मारी पासे नथी एम मने कदी पण कहेवामां आव्युं नथी; अने बीजानी पासेथी कांइ लेवानी मने पोताने तेवी जरूर कदी पण पडी नथी; मारे आवी आज्ञांकित, आवी प्रेमाळ, अने आवी सादी, आवी (सारी) पत्नी[21] छे; मारां संतानो माटे पुष्कळ सारा शिक्षको मने मल्या हता; मुखमांथी लोही पडतुं अने चक्कर आवतां तेना इलाज स्वप्नांथी अने बीजा (प्रकार) थी मने दर्शावातो[22] * * * *; अने ज्यारे मने तत्त्वज्ञानप्रति वळण थतुं त्यारे हुं कोइ [illegible]ना पंजामां सपडातो नहि, अने हुं (इतिहासोना) लेखकोनां पुस्तकोउपर अथवा तो तर्कना सिद्धान्तोनो निर्णय करवामां मारो वखत गुमावतो नहि, अथवा तो आकाशमां थता देखावोना विचारमां हुं कदी रोकातो नहि; आ बधाने माटे हुं देवोने धन्यवाद आपुं छुं; केम के आ बधी बाबतोमां देवोनी अने प्रारब्धनी मददनी जरूर रहे छे.

ग्रेनुआ आगळ क्वादी लोकोमां[23] (मुकाम).

---

२१. एन्टोनिनसनुं जीवनचरित्र जुवो.

२२. आ अशुद्ध छे.

२३. क्वादी लोको बोहेमिया अने मोरेवियाना दक्षिण भागमां रहेता हता; अने एन्टोनिनसे तेओनी सामे सवारी करी हती. (जीवनचरित्र जुवो.) ग्रेनुआ ए घणुं करीने डान्युब् नदीने मळनारी नदी ग्रान् छे.

जो आ शब्दो खरा होय तो एन्टोनिनसे आ पहेलुं पुस्तक क्वादी लोको साथेनी लडाइदरम्यान लख्युं होय. एन्टोनिनसना पुस्तकनी प्रथम आवृत्तिमां अने वधारे जुनी आवृत्तिओमां, बीजा पुस्तकनी पहेली त्रण कलमो प्रथम पुस्तकने छेडे आवे छे. गेटेकरे ते कलमोने बीजा पुस्तकना आरंभमां मूकी.

૨.

પ્રાતઃકાળનો આરંભ તું તને પોતાને એવું કહીને કર કે–મને ધાંધળિયા, કૃતઘ્ન, ગર્વિષ્ઠ, ઠગ અદેખા અને અતડા માણસો મળશે. શું સારું છે અને શું ખોટું છે તેના અજ્ઞાનના કારણથી જ આ બધી બાબતો (દુર્ગુણ) તેઓમાં હોય છે. પણ મેં તો શુભ કે જે સુંદર છે તેનો અને અશુભ કે જે બેડોળ છે તેનો સ્વભાવ જાણ્યો છે, અને જે માણસ ખોટું કરે છે તેનો પણ સ્વભાવ મેં જાણ્યો છે– કે તેનો સ્વભાવ મારી સાથે સગાઇ ધરાવનાર છે–તે સગાઇ તે એકલી લોહીની અને બીજની જ નહિ પણ એક જ બુદ્ધિતત્ત્વ અને દૈવી અંશમાં તે મારો સહભાગી છે,–તો (ઉપર જણાવ્યા) તેવા માણસોમાંના કોઇ પણ માણસથી મને કશું નુકશાન થઇ શકે તેમ નથી, કેમ કે જે બેડોળ (અશુભ) છે એવું કાંઇ પણ કોઇ પણ માણસ મને વળગાડી શકે તેમ નથી, તેમ જ હું મારા સગાઉપર ગુસ્સે પણ થઇ શકું નહિ અને તેને ધિક્કારી પણ શકું નહિ. કેમ કે પગની પેઠે, હાથની પેઠે, આંખ્યોનાં પોપચાંની પેઠે, ઉપલા અને નીચલા દાંતની પંક્તિઓની પેઠે આપણે એકબીજાની સાથે રહી કામ કરવાને સૃજાયા છિયે.[1] તો પછી એકબીજાની વિરુદ્ધ વર્ત્તવું તે કુદરતની વિરુદ્ધ છે; અને એકબીજાથી ચીડાવું અને એકબીજાની તરફ પુંઠ ફેરવીને ચાલ્યા જવું એ એકબીજાથી વિરુદ્ધ વર્ત્તવું છે.

૨. હું આ જે કાંઇ છું તે તો થોડુંક માંસ, શ્વાસ, અને નિયામક (અંતર્યામી) ભાગ છે. તારાં પોથાંથોથાં ફેંકી દે; તું તારે નકામી માથાંફોડ કરીશ નહિ; તે કાંઇ ચાલે તેમ નથી; એ તો (આ શરીર) લોહી અને હાડકાં અને નસજાળ,–જ્ઞાનતંતુઓ નાની નસો અને ધોરીનસોની ગુંથણી છે. વળી આ પ્રાણ પણ જુવો, એ કેવી જાતની વસ્તુ છે? હવા, અને તે પણ હમેશ એક

---

૧. ઝેનોફાન્, મેમ્૦ ૨. ૩. ૧૮.

सरखी नहि, पण दरेक क्षणे बहार काढवामां आवती अने अंदर लेवामां आवती हवा. पछी त्रीजुं तत्त्व ते नियामक (अंतर्यामी) भाग छे; आप्रमाणे विचार कर. तुं एक वृद्ध मनुष्य छे; तुं हवे आ (जीव)ने (मनोविकारोनो) दास बनवा न दे, एक पुतला तरीके हवे तुं (मनोविकारनी) दोरीओथी खेंचाइने अतडां हलनचलन कर नहि, तारा हाल प्राप्त थयेल भाग्यथी तुं असंतुष्ट न था, के भाविथी तुं संकोच न पाम.

३. देवोनी पासेथी जे कांइ प्राप्त थाय छे, ते विश्वनिर्वाहक व्यवस्थाथी पूर्ण होय छे. जे कांइ भाग्यथी प्राप्त थाय छे ते कुद-रतथी जुदुं नथी अथवा विश्वनिर्वाहक शक्तिए जे बाबतो नि-र्माणकरेली छे ते बाबतोनी साथे वणायागुंथायाविनानुं नथी हतुं. ते (विश्वनिर्वाहक कुदरत)मांथी ज सर्व वस्तुओनो प्रवाह चाल्यो आवे छे; अने वळी तेम थवानी जरूर छे, के जें समग्र विश्वना लाभमाटे छे, के जे विश्वनो तुं एक भाग छे. पण समग्र विश्वनी कुदरत जे आणे छे अने जे ते कुदरतने चलाववाना काममां आवे छे ते ते कुदरतना दरेक भागने माटे सारुं छे. हवे आखा विश्वनुं संरक्षण तो भौतिक तत्त्वोना फेरफारथी तेम ज ते भौतिक तत्त्वोना मिश्रणथी बनेली वस्तुओना फेरफारथी थया करे छे. आ सिद्धान्तो तारे माटे पूरता थवा दे, तेओने हमेशने माटे अचल निश्चयो थवा दे. पण पुस्तकोनी पाछलनी तारी तृष्णा छोडी दे के तुं बडबडतो बडबडतो मरे नहि, पण आनंदपूर्वक, साची रीत्ये, अने देवोप्रत्ये तारा अंतःकरणना धन्यवाद आपतो तुं मरवा पामे.

४. तुं याद कर के आ बधी वस्तुओने तुं केटला लांबा वख-तथी मुलतवी राखतो आव्यो छे, अने केटली वारंवार तने देवो तरफथी तक मळी छे, अने ते छतां तें तेनो उपयोग कर्यो नथी. हवे छेवटे तारा समजवामां आव्युं होवुं जोइये के—तुं केवा विश्वनो

एक अंश छे, अने तारुं अस्तित्व ते आ विश्वना केवा व्यवस्थापकनो एक परिवाह (अर्थात् उभरो) छे, अने तारे माटे समयनी एक मुदत ठरावेली छे, तेनो उपयोग जो तुं तारा मननां (सन्देहनां) वादळां दूर करी नाखवामां नहि करे तो ते मुदत चाली जशे अने तुं पण चाल्यो ज जइश, अने फरीने पाछो ते समय आवशे नहि.

५. एक रोमन् अने मनुष्य तरीके, तारा हाथमां जे काम करवानुं छे, ते संपूर्ण अने सादा महत्वथी, अने प्रेमनी लागणीथी, अने स्वतंत्रताथी, अने न्यायथी करवानो;—अने बीजा बधा विचारोमांथी तुं तारे मुक्त थवानो—विचार कर. अने जो तुं तारा जीवननुं दरेक कृत्य जाणे ते तारुं छेल्लामां छेल्लुं कृत्य होय तेवी रीत्ये, समग्र प्रमादने अने बुद्धिनी आज्ञाओप्रत्येनी विमुखताने, अने समग्र दंभने, अने देहाध्यासने, अने जे कांइ तारे भागे आव्युं छे तेना असंतोषने दूर मूकीने करीश तो तुं तारी मेळे मुक्त थइश. तुं जुवे छे के ते बाबतो केटली थोडी छे, के जे बाबतोने माणस पोतानी पकडमां ले तो जेनो प्रवाह शान्तिमां चाल्या करे छे अने जे देवोनी जिंदगी जेवी छे तेवी जिंदगी भोगववाने शक्तिमान् थाय छे; केम के जे माणसो ए बाबतो पाळे छे तेनी पासेथी देवो पोतातरफथी बीजुं कांइ पण विशेष मागता नथी.

६. हे जीव! तुं तने पोताने ज हानि कर! तने पोताने ज हानि कर!! पण तने पोताने मान आपवानी तक हवे वधारे वार (फरीने) मळवानी नथी. दरेक माणसनी जिंदगी पूरती छे.[†] जो के तारो आत्मा पोताने पूज्यभावे मानतो नथी, अने बीजाओना आत्माओउपर तारा सुखनो आधार राखे छे, तो पण तारी पोतानी जिंदगी तो लगभग पूरी थवा आवी छे.

---

२. "तुं तारा पोताना ज उपर बलात्कार करे छे."—एम कदाच आ स्थळे होवुं जोइये. Ubrize नहि, पण Ubrizeis होवुं जोइये.

७. जे बहारनी बाबतो तारा उपर आवी पडे छे, ते तने व्यग्र करे छे? (एम होय तो) तुं तने पोताने कांइ नवुं अने सारुं जाणवाने समय आप अने आगळपाछळ वंटोळीए चढवानुं बंध कर. पण पछी ताराथी बीजे कोइ रस्ते पण चडी जवानुं होय ते पण अटकाववुं जोइये. केम के जेओ पोतानी प्रवृत्तिवडे जिंदगीमां कंटाळी गया होय छे अने तेम छतां जेओनी दरेक गति अने एक शब्दमां कहिये तो सघळा विचारो जेप्रति प्रेरावा जोइये तेवो कोइ लक्ष्य विषय जेमने हतो नथी एवा माणसो पण मिथ्याप्रवृत्तिवाळा होय छे.

८. बीजाना मनमां शुं छे ते नहि जोवाथी भाग्ये ज कोइ माणस दुःखी जोवामां आवे छे; पण तेओना पोताना ज मननी गतिओने जेओ जोता नथी तेओ अवश्ये करीने दुःखी थवा ज जोइये.

९. तारे हमेशां आ तारा मनमां (याद) राखवुं जोइये के—समग्र विश्वनी प्रकृति केवी छे अने मारी प्रकृति केवी छे, अने आ मारी प्रकृति ते पेली समग्र विश्वनी प्रकृतिनी साथे केवी रीत्ये संबंधवाळी छे, अने केवा प्रकारनी समग्र विश्वनी प्रकृतिनो ते केवा प्रकारनो अंश छे; अने जे प्रकृतिनो तुं एक अंश छे ते प्रकृतिने अनुसार बाबतो हमेश करतां अने कहेतां तने कोइ पण अटकावनार नथी.

१०. थिओफ्रेस्टस्,—मनुष्यजातिना सामान्य विचारोने अनुसार कोइ माणस जेवो मुकाबलो करे, तेवा नठारां कृत्योना तेणे करेला मुकाबलामां,—एक खरा तत्त्वज्ञानीतरीके कहे छे के जे अपराधो कामनाथी करवामां आवे छे ते अपराधो जे अपराधो क्रोधथी करवामां आवे छे ते अपराधो करतां वधारे दोषपात्र छे. केम के जे माणस क्रोधथी उश्केरायलो होय छे ते अमुक व्यथाने लीधे अने बेभानमां थता संकोचनथी बुद्धिनी विमुख थइ जतो जणाय

છે; પણ જે પોતાની કામનાથી અપરાધ કરે છે તે વિષયસુખને અધીન થઇ ગયેલો હોવાથી અપરાધોમાં એક રીત્યે વધારે અત્યાચારી અને વધારે બાયલો જણાય છે. તો પછી તેણે ખરી રીત્યે અને તત્ત્વવિચારને યોગ્ય રીત્યે કહેલું છે કે જે ગુન્હો મોજની ખાતર કરવામાં આવ્યો હોય તે ગુન્હો દુઃખને લીધે કરવામાં આવ્યો હોય તે ગુન્હાકરતાં વધારે દોષપાત્ર છે; અને એકંદરે જોતાં પેલો એક માણસ વધારે અંશે એવો છે કે જેને પ્રથમ હાનિ કરવામાં આવી છે અને તેના દુઃખને લીધે તેને ગુસ્સે થવાની જરૂર પડી છે; પણ પેલો બીજો માણસ તો ખોટું કરવાના તેના પોતાના જ વેગથી, તેની ઇચ્છાથી જ કાંઇ કરવાને ખેંચાઇ ગયેલો હોવાથી, પ્રેરાયલો છે.

૧૧. તું આજ ક્ષણે જીવનથી જુદો પડે એ શક્ય[3] છે, તેથી તારા દરેક કૃત્યનું અને વિચારનું તેપ્રમાણે નિયમન કર. પણ, જો દેવો હોય તો, મનુષ્યોમાંથી ચાલ્યા જવું એ એક ભય પામવા જેવી બાબત નથી, કેમ કે દેવો તને અશુભમાં નહિ ગુંચાવે; પણ જો દેવોનું અસ્તિત્વ જ ન હોય, અથવા તો મનુષ્યોનાં કૃત્યો સંબંધી તે દેવોને કાંઇ દરકાર જ ન હોય, તો પછી મારે દેવોવિનાના અથવા તો કોઇ નિર્વાહક સત્તાવિનાના વિશ્વમાં જીવવાથી શું હાંસલ છે? પણ વાસ્તવે દેવોનું અસ્તિત્વ છે જ, અને તેઓ મનુષ્યોને લગતી બાબતવિષે દરકાર રાખે છે, અને મનુષ્ય વાસ્તવ અશુભ બાબતોમાં પડે નહિ એવો તેને સમર્થ બનાવવાને માટે તે દેવોએ સઘળાં સાધન મનુષ્યની સત્તામાં મૂકેલાં છે. અને બાકી તો, જો કોઇ વસ્તુ અશુભ હોય તો, મનુષ્ય તેમાં પડે નહિ તેટલું તેની સત્તામાં જ હોવું જોઇયે—એવી કોઇ વ્યવસ્થા પણ તે દેવોએ કરી જ હોત. હવે જે કાંઇ મનુષ્યને પોતાને ખરાબ કરતું નથી, તે તેના

---

૩. અથવા તો એનો એવો અર્થ થાય કે—"જીવનથી જુદું પડવાનું તારા હાથમાં છે તેથી—" આથી કાંઇક જુદો ભાવ નિકળે.

जीवनने शी रीत्ये खराब करी शके? पण अज्ञानथी, के ज्ञान होवा छतां पण ते (अनर्थो)नी सामे रक्षण करवानी के ए वस्तुओ सुधारवानी शक्ति नहि होवाथी विश्वनी प्रकृतिए तेनी उपेक्षा करी छे—ए वात अशक्य छे; तेम ज सारुं अने खोटुं एकसरखी रीत्ये (विवेकविना) सारां माणसोना तेम ज खोटां माणसोना उपर गुजर्यां करे एवडी मोटी भूल प्रकृतिए शक्ति अथवा कुशळताना अभावे करी छे—ते वात पण शक्य नथी. पण नक्की मृत्यु अने जीवन, मान अने अपमान, वेदना अने आनंद,—आ बधी वस्तुओ सारां अने खोटां माणसोने एकसरखी रीत्ये प्राप्त थाय छे, केम के ए बधी वस्तुओ एवी ज छे के जे मनुष्यने वधारे सारो के खोटो बनावती नथी. तेटला माटे ए वस्तुओ शुभे नथी तेम अशुभे नथी.

१२. विश्वमां सघळी वस्तुओ—तेमनां स्थूळ पण—केवी त्वराथी अदृश्य थइ जाय छे, (एटलुं ज नहि) पण काळे करीने तो तेमनी स्मृति पण जती रहेछे; सघळी इन्द्रियगोचर वस्तुओनो शो स्वभाव छे, अने जे वस्तुओ सुखना गलथी आकर्षे छे, अथवा दुःखथी डरावे छे, अथवा तो वराळजेवी ख्यातिथी बहार जेमना विषे घोंघाट करवामां आवे छे, विशेषे करीने तेवी वस्तुओनो स्वभाव शो छे; ते केवी निर्माल्य, धिक्कारवा योग्य, अने अधम, अने विनाशी, अने मुडदाल छे?—आ सघळुं विचारवुं ते बुद्धि तत्त्वनुं कर्त्तव्य छे. जेओना अभिप्रायो अने मतो प्रतिष्ठा आपे छे तेओ आ कोण छे; तथा मृत्यु शुं छे तेनो,—अने जो माणस मृत्युना स्वरूपमां ज जुवे तथा विचारनी पृथक्करणशक्तिथी विचारमां कल्पनागम्य एवी सघळी वस्तुओनुं तेमना विभागोमां पृथक्करण करे, तो मृत्युने ते प्रकृतिना एक व्यापार करतां कांइ बीजुं गणशे नहि;—आ बाबतनो पण वळी विचार करवो; अने जो कोइ

४. जुवो, सिसेरो, टस्क्युल्. १. ४९.

माणस प्रकृतिना व्यापारथी भय पामे तो ए एक बाळक ज छे. वळी आ एकलो प्रकृति(कुदरत)नो व्यापार ज नथी, पण ते वळी कुदरतना हेतुओने साधनार बाबत पण छे. वळी मनुष्य देवनी निकट केवी रीत्ये आवे छे (अर्थात् देवने वधारे मळतो केवी रीत्ये आवे छे) अने पोताना क्या अंशथी आवे छे, अने मनुष्यनो आ अंश एवा वलणने क्यारे पामे छे ते पण विचारवुं.† (६, २८.)

१३. पोताना अंतर्यामितत्त्वप्रति लक्ष आपवो अने तेनी प्रति साचा मनथी पूज्यभाव राखवो ए ज बस छे—एवुं समज्या सिवाय, पेलो कवि कहे छे तेम, जे माणस दरेक वस्तुनी आगळ पाछळ फर्या करे छे, अने पोताना पाडोशीओनां मनमां शुं छे ते अटकळथी शोधी काढे छे तेना जेवुं कंगाल बीजुं कांइ पण नथी. अने अंतर्यामिप्रत्येनो पूज्यभाव ते तो तेने मनोविकारमांथी अने अविचारिपणामांथी, अने देवो तथा मनुष्यो तरफथी जे आवी पडे तेविषेना असंतोषमांथी मुक्त राखवामां रहेलो छे. केम के देवोतरफथी प्राप्त थयेली वस्तुओप्रत्ये ते वस्तुओनी उत्कृष्टताने माटे मान राखवुं घटे छे; अने मनुष्योतरफथी प्राप्त थयेली वस्तुओ सगाइना कारणने लीधे आपणने प्रिय होवी जोइये; अने वळी कोइक वार तो एक रीत्ये, मनुष्योना साराखोटाविषेना अज्ञानना कारणथी ते वस्तुओ आपणने दयार्द्र करे छे; मनुष्योनी ए (अज्ञानरूप) खामी, आपणने जे खामी धोळी अने काळी वस्तुओनो फरक ओळखवानी शक्तिथी रहित (आंधला) बनावे छे तेना करतां ओछी नथी.

१४. जो तुं त्रण हजार वर्ष जीववानो होय अने तेथी पण तेटलागणां एटले दश हजार वर्ष जीववानो होय, तो पण तुं

---

५. प्लेटोना थियेटीटसमां पिन्डार्. जुवो. ११. १.

याद राखजे के कोइ पण माणस जे जीवनने हाल जीवे छे ते सिवाय बीजुं कोइ जीवन ते जीवतो नथी, अने आ जीवन जे ते हाल खुवे छे तेसिवाय बीजुं कोइ जीवन खोतो नथी. लांबामां लांबानो अने टूंकामां टूंकानो सार आप्रमाणे एक ज आवे छे. केम के, जो के जे नाश पामे छे ते तो तेनुं ते नथी, तो पण जे वर्त्तमान छे ते तो सउने एक सरखुं छे;†[६] जे समय गयो छे ते तो मात्र एक क्षणजेवो ज जणाय छे. केम के माणस कोइ पण गत पदार्थने अथवा भविष्यत् पदार्थने खोइ शकतो ज नथीः केम के माणसनी पासे जे छे ज नहि, ते कोइ पण तेनी पासेथी शी रीत्ये लेइ शके? त्यारे तारे आ बे बाबतो मनमां राखवी; एक तो ए के—अनंत† काळथी बधी वस्तुओ एकसरखा आकारोनी छे अने तेओ एक चक्रमां परिवर्त्तन करे छे, अने कोइ माणस ते ज वस्तुओने सो के बसो वर्षदरम्यान जुवे अथवा तो अनंत काळदरम्यान जोया करे तेमां कांइ पण फरक नथी; अने बीजी बाबत ए के—लांबामां लांबुं जीवनार अने जलदीमां जलदी मरी जनार माणस एटलुं ज खुवे छे. केम के, जे तेनी पासे छे ते आ ज वस्तु छे अने माणसनी पासे जे वस्तु नथी ते ते खोइ शकतो नथी—ए वात सत्य होय तो वर्त्तमान ए ज एक एवी वस्तु छे के जे माणसनी पासेथी पडावी लेइ शकाय.

१५. यादराखो के सघळुं अभिप्रायमात्र छे. केम के केवळ सद्गुणानुरागी **मोनिमसे** जे कह्युं हतुं ते खुल्लुं छेः अने जो, ते कहेलुं जेटले अंशे खरुं होय तेटले अंशे तेमांथी जे सार मेळवी शकाय ते कोइ माणस मेळवे तो जे **मोनिमसे** कहेलुं हतुं तेनो उपयोग पण खुल्लो ज छे.

---

६. **गेटेकरनी** नोंध जुवो.

† धाता यथापूर्वमकल्पयत्=स्रष्टा पूर्वना जेवुं रचता हवा—ए आपणा शास्त्रनो सिद्धान्त; तथा Nature repeats its self ए वाक्यमां पण ए ज तात्पर्य छे.

१६. मनुष्यनो आत्मा सउथी पहेलो पोताना ज उपर बलात्कार करे छे, त्यारे जाण्ये ते एक गुमडाजेवो थाय छे अने विश्वउपर ते बने तेटला प्रसरेला पाठारूपे थाय छे. केम के कोइ वस्तु बने तेथी चीडावुं ते, जेना कोइ पण भागमां बीजी बधी वस्तुओना स्वभाव रहेला छे, तेवी कुदरतथी आपणने पोताने जुदा पाडवा बरोबर छे. बीजी बाबत ए छे के—ज्यारे कोइ जीवात्मा कोइ पण माणस थी (चीडाइने) पीठ फेरवीने चाल्यो जाय छे त्यारे, अथवा तो बीजाने हानि करवाना इरादाथी तेनी तरफ जाय छे त्यारे पण ए जीवात्मा पोताना ज उपर बलात्कार करे छे, जेओ गुस्से होय छे तेओना जीवात्मा आवा होय छे. त्रीजी बाबत ए छे के—ज्यारे जीवात्मा मोजशोख अथवा वेदनाथी पराभव पामी जाय छे त्यारे ते पोताना उपर बलात्कार गुजारे छे. चोथुं ए छे के—ज्यारे जीवात्मा एक वेष भजवे छे अने कांइ पण खोटा दिलथी असत्य रीते करे छे अथवा कहे छे (त्यारे ते पोताना उपर बलात्कार गुजारे छे). पांचमुं ए छे के—ज्यारे जीवात्मा पोतानुं कोइ पण कृत्य अथवा कोइ पण हिलचाल कोइ आशयविना करे छे, अने कांइ पण वस्तु अविचारी रीत्ये अथवा तो ते वस्तु शी छे तेनो विचार कर्या विना करे छे (त्यारे ते पोताना उपर बलात्कार गुजारे छे), केम के नानामां नानी वस्तुओ पण कोइ परिणामने उद्देशीने ज करावी जोइये; अने सघळां बुद्धियुक्त प्राणीओनो अंतिम आशय ते प्राचीनमां प्राचीन शहेरनी बुद्धिने तथा कायदाने तथा राजनीतिने अनुसरवानो छे.

१७. मनुष्यजीवननो समय ए एक बिंदु छे, अने पदार्थ एक प्रवाह छे, अने ग्रहणशक्ति मंद छे, अने आखास्थूलना संयोगी पदार्थो ते सडी जाय तेवा छे, अने जीवात्मा ए एक वमळ छे, अने भविष्य कळवुं ए कठण छे, अने कीर्ति ए कांइ पण विचार विनानी

छे. अने बधुं एक शब्दमां कहिये तो जे कांइ वस्तु स्थूल शरीरनी छे ते दरेक वस्तु एक वहेळो छे, अने जे जीवात्मानी छे ते दरेक वस्तु एक स्वमुं अने वराळ छे, अने जीवन ते एक विग्रह अने मुसाफरनो मुकाम छे, अने मरणपछीनी कीर्ति ए शून्य छे. तो पछी मनुष्यने दोरवाने माटे समर्थ एवुं शुं छे? एक वस्तु अने ते एकनी एकज वस्तु—तत्वविचार ज (मनुष्यने दोरवाने समर्थ) छे. पण आ (तत्वविचार) ते—मनुष्यमां रहेला अंतर्यामीने जबरदस्तीमांथी मुक्त अने अखंडित,—दुःख अने सुखथी अस्पृश्य राखवामां, प्रयोजनसिवाय कांइ पण नहि करवामां—अने तेमां पण कांइ जुठी रीत्ये अने दंभथी नहि करवामां, बीजो माणस कांइ करे के न करे तेनी जरूर नहि जणावामां; अने वळी, जे कांइ आवी पडे, अने जे कांइ पोताने भाग्ये आवे, ते सघळुं ते पोते ज्यांथी आव्यो ते स्थळेथी, पछी ते स्थळ ज्यां होय त्यां खरुं,—त्यांथी ज प्राप्त थतातरीके स्वीकारवामां; अने, छेवटे, जे तत्वोनी दरेक जीवती वस्तु बनेली छे ते तत्वोना छुटा पडवाथी जे बीजुं कांइ नथी एवा मृत्युमाटे आनंदपूर्ण मनथी राह जोवामां-रहेलो छे. पण जो खुद तत्वोमांनुं प्रत्येक बीजा तत्वना आकारमां बदलाय तेमां कांइ हानि नथी, तो बधां तत्वोना फेरफार अने छुटा पडवाविषे माणसे शामाटे कांइ भय धरवो जोइये? केम के ते कुदरतप्रमाणे छे, अने जे कुदरतप्रमाणे छे तेमां कांइ अशुभ नथी.

आ कार्नुन्टममां (लख्युं).

---

७. कार्नुन्टम् ए पेन्नोनियामां, डान्युब् नदीने दक्षिण किनारे, बिन्डोबोना (वियेना)थी पूर्वे आशरे त्रीश माइलउपर एक कस्बो हतो. ओरोसियस् (७. १५) अने युट्रोपियस् (८. १३) मां कहे छे के मार्कोमेन्नी साथेना विग्रहदरम्यान एन्टोनिनस् त्रण वर्षलगी कार्नुन्टम् आगळ रह्या हता.

३.

आपणी जिंदगी नित्य घसाती जाय छे अने तेनो वधारे नानो भाग बाकी रहे छे,—तेनो ज फक्त आपणे विचार करवो जोइये एटलुं ज नहि पण वळी एक बीजी बाबत पण हिसाबमां लेवी जोइये—जो कोइ माणस वधारे लांबो समय जीवे तो वस्तुओने समजवाने माटे जोइये तेटली बुद्धि चालु रहेशे के नहि ते, अने जे शक्ति दिव्य अने मानुषी वस्तुओनुं ज्ञान मेळववाने माटे यत्न करे छे ते चिन्तननी शक्तिने ते धारण करी राखशे के नहि ते केवळ अनिश्चित छे. केम के जो ते (माणस) घडपणना बेभानमां पडवा लागशे तो, परशेवो अने शरीरना पोषणनी क्रिया अने कल्पना अने खावानी रुचि, अने एवा ज प्रकारनुं जे कांइ छे ते तो बंध पडशे नहि; पण आपणो पोतानो उपयोग करवानी, अने आपणी फरजना मापप्रमाणे काम करवानी, अने सघळा देखावोनो स्पष्ट रीत्ये विवेक करवानी, अने मनुष्ये हवे जीवनथी जुदा पडवुं पडशे के नहि तेनो विचार करवानी शक्ति, अने जेमां कह्यागरी तर्कशक्तिनी अनिवार्य जरूर पडे छे एवी जातनुं बीजुं जे कांइ होय ते आ बधुंए कयारनुं ए होलवाइ जाय छे. त्यारे आपणे उतावळ करवी जोइये, केम के आपणे मोतनी वधारे ने वधारे पासे जता जइये छिये एटलुं ज नहि पण वस्तुओना स्वरूपनो विचार करवानी अने तेओने समजवानी शक्ति पहेली ज बंध पडे छे.

२. आपणे ए पण ध्यानमां लेवुं जोइये के जे वस्तुओ कुदरत प्रमाणे उत्पन्न थइ होय छे तेमनी पाछळ जे वस्तुओ थाय छे तेमनामां पण कांइक आनंदजनक अने आकर्षक रहेलुं होय छे. एक दाखलातरीके, ज्यारे रोटली शेकवामां आवे छे त्यारे सपाटी उपर केटलाक भागोमां फाटो पडे छे, अने आ भागो जे खुल्ला थाय छे अने भठियाराना हुनरना हेतुविरुद्ध कोइक प्रकारना होय छे

ते एक विचित्र रीत्ये खावानी रुचिने उत्तेजन आपे छे. अने वळी अंजीर, ज्यारे तदन पाकी जाय छे, त्यारे फाटीने खुल्लां थइ जाय छे, अने पाकां जितवृक्षनां फळमां तेओ सडी जवानी तैयारीमां होय छे ते ज कारणथी ते फळनी विलक्षण सुंदरतामां वधारो थाय छे. अने अनाजनी उंबीओनुं नीचे नमी जवुं, अने सिंहनां भवां, अने रानी डुक्करोनां मुखमांथी उडतुं फीण अने बीजी घणी वस्तुओ–जो माणस तेमने छुटी छुटी तपासे तो तेओ सुंदर लागे तेम छे ज नहि–तो पण जे वस्तुओ कुदरते बनावेली छे तेओनी पाछळ लागेली छे तेथी ते (कुदरते बनावेली) वस्तुओने शणगारवामां सहायभूत थाय छे, अने मनने तेओ आनंद आपे छे; तेथी विश्वमां उत्पन्न थयेली वस्तुओना संबंधमां जो माणसने लागणी होय अने उंडी दृष्टि होय, तो जे परिणामतरीके पाछळ चाली आवे छे तेवी वस्तुओमांनी एक पण, एकाद रीत्ये आनंद आपवाना वलणवाळी न जणाय एवी, भाग्येज छे. अने ए ज प्रमाणे ते (माणस) जे चिताराओ अने कोतरनाराओ अनुकरणथी चित्रमां दर्शावे छे तेने जेटली खुशीथी जुवे छे तेना करतां ओछी खुशीथी जंगली पशुओनां खरेखरां पहोळां थतां जडबांने पण जोशे नहि; अने वृद्ध स्त्रीमां अने वृद्ध पुरुषमां अमुक पुख्ताई अने सुंदरता जोवाने ते शक्तिमान् थशे; अने युवान् मनुष्योनुं आकर्षक सौन्दर्य पवित्र दृष्टिथी जोवाने ते शक्तिमान् थशे; अने घणी एवी वस्तुओ तेनी आगळ आवशे के जे हरेक माणसने आनंदजनक नहि थाय, पण तेने ज आनंदजनक थशे के जे साची रीत्ये कुदरत अने कुदरतनां कार्योथी परिचित थयो छे.

३. हिप्पोक्रेटीस् घणा रोगो मटाड्या पछी पोते ज मांदो पड्यो अने मरी गयो. चाल्डेइए घणानां मृत्युओविषे भविष्य भाख्युं अने पछी तेने पण मृत्युए पकडी लीधो. एलेक्झांडर्, अने पोम्पियस्, अने काइयस् सीझर्, आखां शहेरोनो संपूर्ण नाश

कर्या पछी, तथा लडाइमां दश हजार घोडेस्वारो अने पायदलना कडके कडका करी नाख्या पछी, पोते पण छेवटे जिंदगानीमांथी चाल्या गया. हिरेक्लिटस्, विश्वना अग्निप्रलयविषे आटलां बधां अनुमानो बांध्या पछी, जलमां डूबी तेना पेटमां पाणी भराइ जइ आखा शरीरउपर कादवथी रगदोलायलो मरी गयो. जुओए डिमोक्रिटसनो नाश कर्यो; अने बीजी जुओए सोक्रेटीसने मारी नांख्यो. आ बधानो अर्थ शो थाय छे ? तुं वहाणे चढ्यो छे, तें मुसाफरी करी छे, तुं किनारे आव्यो छुं; हवे उतरी पड. खरेखर जो बीजा जीवनउपर उतरवानुं होय, तो त्यां पण देवोनी खोट नथी. पण जो कोइ भानरहित स्थितिउपर उतरवानुं होय तो तुं दुःखो अने सुखोवडे पकडातो मटीश, अने जे पोताना उपरीनी सेवा बजावे छे तेना जेटलुं ज उतरता प्रकारनुं छे एवा एक वहाणनो तुं गुलाम थतो अटकीशः[†] के केम एक ज्ञान अने दैवत छे; बीजुं माटी (जड) अने विकार छे.

४. ज्यारे तुं तारा विचारोने कोइ सर्वसामान्य उपयोगनी वस्तुने उद्देशीने न करतो होउं त्यारे तारी जिंदगीनो बाकीनो भाग तुं बीजाओविषेना विचारोमां गुमावीश नहि. केम के, फलाणो माणस शुं करे छे, अने शामाटे करे छे, अने ते शुं कहे छे, अने ते शाविषे विचार करे छे, अने ते शी योजना रचे छे,—एवा एवा विचारो तथा जे आपणने आपणी पोतानी नियामक शक्तिना अवलोकनथी दूर रझळावे एवी हरकोइ बीजी बाबतना विचारो करे छे त्यारे तुं बीजुं कांइ करवानो लाग खुवे छे. त्यारे आपणे आपणा विचारोनी परंपरामां जे कांइ निष्प्रयोजन अने निरुपयोगी होय ते दरेक बाबतने, अने तेमां पण सउथी वधारे तो सघळी अतिजिज्ञासानी अने द्वेषबुद्धिनी लागणीने दबावी देवी जोइये; अने माणसे हमेशां पोताने एवी ज वस्तुओविषे विचार करवानी टेव पाडवी जोइये के—तारा विचारोमां हाल शुं छे, एम तेने

ओचिन्तु पूछवामां आवे तो "आ छे" के "ते छे" एम तुं पूर्ण खुल्ला दिलथी तरत ज जबाब आपी शके; एटले के तारा शब्दो-उपरथी ए खुल्लुं होवुं जोइये के तारामां दरेक वस्तु सादी अने शुभेच्छावाळी छे, अने एक सामाजिक प्राणीने तथा मोजशोख अने विषय भोगोना विचारोविषे जे बिलकुल दरकार राखतो नथी तथा जेने—कांइ स्पर्धा के ईर्ष्या अने वहेम अथवा (जो तारा मनमां फलाणुं हतुं एम तारे कहेवुं पडे तो जेथी तुं शरमाय) एवुं कांइ नथी—एवा प्राणीने छाजे तेवुं छे. केम के जे माणस आवो छे अने जे उत्तम पुरुषोनी संख्या पैकीनो एक थवा कांइ पण विलंब करतो नथी ते देवोना एक याजक अने मंत्री जेवो छे, ते वळी तेनी अंदर स्थपायला (दैवत)नो पण उपयोग करे छे के जे तेने मोजशोखना चेपमांथी मुक्त, दुःखथी अव्यथित, हरेक अपमानथी अस्पृष्ट, जेने कांइ माठुं न लागे तेवो, जे मनोविका-रथी कदी पराभव पमाडी शकातो नथी एवो, पोताने भाग्ये जे कांइ आवी पडे छे अने निर्माण थयेली छे एवी हरेक बाबतने पोताना आत्माथी स्वीकारतो होवाथी उंडा न्यायमां रंगायलो एवो, अने घणी वार अने तेमां पण मोटी आवश्यकताविना अने साव-र्जनिक हितना कारणविना बीजो कोइ शुं कहे छे करे छे अने विचारे छे तेनो विचार नहि करनार एवो उच्चमां उच्च संग्राममां झुझ-नार बनावे छे. केम के जे कोइ वस्तुने ते पोतानी प्रवृत्तिनो विषय बनावे छे ते तेनी पोतानी ज होय छे; अने वस्तुओना कुलसर-वाळामांथी जे तेने भागे आवेलुं होय छे तेजविषे ते निरंतर विचार करे छे, अने ते पोतानां कृत्यो न्याययुक्त करेछे, अने तेने एम समजायलुं होय छे के तेने पोताने प्राप्त थयेल भाग सारो ज होय छे. केम के प्रत्येक मनुष्यने भागे जे निर्माण थयेलुं होय छे ते तेनी साथे खेंचायुं आवे छे अने तेने ते पोतानी साथे खेंचतुं जाय छे. †अने तेने वळी एम पण याद रहे छे के दरेक

बुद्धियुक्त प्राणी ते तेनुं सगुं छे, अने सघळां माणसोनी संभाळ राखवी ए मनुष्यना स्वभावने अनुसार छे; अने मनुष्ये बधांए मनुष्योनो मत ग्रहण करवो नहि पण जेओ निःसंशय रीत्ये कुद-रतने अनुसार वर्ते छे तेओनो ज मत ग्रहण करवो. पण जेओ ए प्रमाणे वर्त्तता नथी, तेमना विषे ते पोताना मनमां जाणी रहे छे के—तेओ घेर तेम ज घरबहार, रात्रे तेम ज दिवसे केवा प्रकारना होय छे; अने तेओ केवा होय छे, अने केवा माणसोसाथे तेओ अपवित्र जीवन गाळे छे. तेटलामाटे ते एवा माणसोतरफथी थती प्रशंसानी कांइ पण किमत गणतो नथी, केम के ते माणसो तेमना पोताथी पण संतुष्ट होता नथी.

५. बेदिल रीत्ये, तेम ज सर्वना सामान्य हितपर लक्ष आप्या-विना, तेम ज योग्य विचार कर्याविना, तेम ज घेलछाथी महेनत करीश नहि; तथा तारा विचारोने टापटीपीआ अलंकारथी शोभावीश नहि, अने घणा शब्दो बोलनारो तेम ज हद करतां घणी बाबतोमां रोकायलो माणस तुं थइश नहि. अने अधिकमां, जे तारामां (अन्तर्यामी) देवता छे तेने एक पुरुषत्ववाळा अने पाकी उमरना, अने राजकीय विषयमां रोकायला, अने एक रोमन्, अने एक राज्यकर्ता—के जेणे पोताने आ जीवनमांथी बोलावी लेवानी निशानीने माटे राह जोता अने जीवनमांथी जवाने तैयार माणसतरीके पोतानी जगो लीधी छे, अने जेने सोगंदनी तेम ज कोइ माणसनी साक्षिनी पण कांइ जरूर नथी—एवा जीवता प्रा-णिनो रक्षक बनवा देजे. वळी आनंदी थजे अने बहारनी सहायता तथा जे बीजाओ आपे छे एवी शान्तिने पण शोधीश नहि. त्यारे माणसे पोते ज अक्कड उभा रहेवुं जोइये, बीजाओवडे ते अक्कड रखावो जोइये नहि.

६. जो तने मानव जीवनमां न्याय, सत्य, मिताहार, धैर्य करतां कांइ वधारे सारुं जडे, अने एक शब्दमां (कहिये तो)

जे तने खरी बुद्धिप्रमाणे जे बाबतो करवाने समर्थ बनावे छे तेवी बाबतोमां तथा तारी पोतानी पसंदगीविना जे स्थिति तारे भागे आवी छे ते स्थितिमां ते तारा पोताना मनना संतोष करतां कोइ वस्तु वधारे सारी जडे तो;—हुं कहुं छुं के, आनां करतां कोइ वधारे सारी वस्तु तुं जुवे तो तेप्रत्ये तुं तारा समग्र आत्माथी वळजे अने जे तने उत्तम जणायुं होय तेनो उपभोग करजे. पण जो—तारामां जे देव स्थपायलो छे, अने जेणे तारी सघळी विषयेच्छाओने पोताने वश करी छे, तथा जे बधा विचारोने काळजीभरेली रीत्ये तपासे छे, अने, जेम सोक्रेटीसे कह्युं छे तेम जेणे पोताने इन्द्रियोनी दोरवणीओमांथी जुदो पाडेलो छे, तथा जेणे पोताने देवोने अधीन करेलो छे, तथा जे मनुष्यजातिने माटे काळजी राखे छे, ते देवकरतां तने (बीजुं) कांइ पण वधारे सारुं न जणाय तो; (अने) जो बीजी दरेक वस्तु तने आना करतां वधारे अल्प अने वधारे थोडी किमतनी जणाय तो;—तुं बीजी कोइ पण वस्तुने (तारा मनमां) स्थान आपीश नहिः केम के जो तुं एकवार आडो फंटाइश, अने तेतरफ वलण करीश, तो फरीने व्याकुलता पाम्याविना तुं, पेली सद्वस्तु के जे तारी पोतानी ज मिलकत छे तेने पसंदगी आपी शकीश नहि; केम के बीजी जातनी कोइ पण वस्तु—जेवी के घणां माणसोतरफथी (थती) प्रशंसा, अधिकार, अथवा मोजमझानो उपभोग, ते बुद्धिपूर्वक तथा राजनीतिपूर्वक (अथवा, व्यावहारिक रीत्ये) जोतां जे सद्वस्तु छे तेनी साथे हरीफाईमां आवे ते व्याजबी नथी. आ बधी वस्तुओ, जो के तेओ पेली वधारे सारी वस्तुओनी साथे एक अल्प अंशे पण बंधबेसती जणाय, तो पण तेओ एकदम चढी वागे छे अने आपणने एकदम घसडी लेइ जाय छे. पण हुं तने कहुं छुं के—तुं सरल रीत्ये अने स्वतंत्र रीत्ये वधारे सारी वस्तुने ज पसंद कर, अने वळगी रहे.—पण जे वधारे उपयोगी होय छे ते

वधारे सारुं होय छे.—तो ठीक त्यारे, जो एक बुद्धियुक्त प्राणि तरीके तने ते उपयोगी होय तो तुं ते राख; पण जो ते फक्त पशुतरीके तने उपयोगी होय, तो तुं तेम कहे, अने तारा ठरावने गर्व कर्याविना वळगी रहेः फक्त एटली संभाळ राखजे के तुं जे रीत्ये तपास करे छे ते रीत खरी ज होवी जोइये.

७. तुं कदी एवी कोइ पण वस्तुने तने लाभकारकतरीके किमती गणीश नहि के जे—तने तारा वचननो भंग करवानी, तारुं स्वमान (टेक) शिथिल करवानी, कोइ माणसने धिक्कारवानी, शंकावानी, शाप देवानी, दंभीतरीके वर्त्तवानी, जेने भींतोनी अने पडदाओनी जरूर पडे छे एवी कोइ वस्तुनी इच्छा करवानी जरूर पाडेः—कारण के जेणे बीजी दरेक वस्तुकरतां पोतानी बुद्धिने अने अंतर्यामीने अने तेनी सर्वोत्कृष्टतानी पूजाने पसंद करीछे, ते कोइ शोकजनक वेश भजवतो नथी, दुःखथी बराडो पाडतो नथी, तेने दिलासानी के वधारे जनसंगनी पण जरूर पडशे नहि; अने सर्वमां मुख्य तो ए छे के मोतनी पाछळ पड्या सिवाय तेम ज मोतथी[१] भडकी भाग्यासिवाय ते जीवशे; पण तेनो आत्मा शरीरमां वधारे टूंकोसमय के वधारे लांबो समय पूराइ रहेशे, तेनी ते बिलकुल चिंता करतो नथीः केम के जो तेने हाल तरत ज प्रयाण करवुं पडे, तो पण जाणे सभ्यता अने व्यवस्था पूर्वक करी शकाय एवी कोइ बाबत करवाने जतो होय तेवी तत्परताथी ते जशे; तेमां पण तेना आखा जीवनमां एटली ज काळजी राखशे के तेना विचारो एक बुद्धियुक्त प्राणी अने नागरिक जन समाजना एक सभ्यतरीके जे तेनी पोतानी छे एवी कोइ बाबतथी विमुख थाय नहि.

८. जे पवित्र अने निर्मल थयेलो छे एवा माणसना मनमां तने कोइ बगडेली वस्तु, अने मेल, अने चामडीवडे उपरथी

१. सरखावो. ९. ३

ढांकेलो घा मळी आवशे नहि. तेम ज ज्यारे मृत्यु तेने पकडी पाडे छे त्यारे—पोतानो वेश समाप्त कर्याविना अने खेल संपूर्ण कर्याविना नाट्यनुं जे पात्र चाल्युं जाय तेनाविषे जेम कोइ कहे तेम—तेनुं जीवन अपूर्ण होतुं नथी. वळी, तेनामां कांइ गुलामवेडाजेवुं, अने कृत्रिम, अने (बीजी वस्तुओप्रत्ये) अत्यंत गाढ रीत्ये आसक्तिवाळुं होतुं नथी, तथा तेम छतां वाढी वछुट्यो जेवुं पण—होतुं नथी; वळी तेनामां कांइ ठपकापात्र होतुं नथी, तेम ज जे संतावानी जगो शोधे छे एवुं पण कांइ होतुं नथी.

९. जे बुद्धिशक्ति अभिप्रायने उत्पन्न करे छे तेने मान आप. तारा नियामक अंशमां कुदरत अने बुद्धियुक्त प्राणिना बंधारणनी साथे बंधबेसतो न आवे एवो कोइ अभिप्राय हशे के नहि तेनो आधार केवळ आ बुद्धिशक्तिउपर ज रहे छे. अने आ बुद्धिशक्ति उतावळिया विचारमांथी (मनुष्यने) मुक्त राखवानुं, अने मनुष्यो प्रत्ये मित्रतानुं, अने देवोप्रत्ये आज्ञांकितपणानुं वचन आपे छे.

१०. तो बधी वस्तुओने फेंकी दइने जे आ फक्त थोडी वस्तुओ छे, तेने तुं वळगी रहे; अने तेउपरांत तारा मनमां (याद) राख के—दरेक माणस आ वर्त्तमान समये ज जीवे छे के जे वर्त्तमान समय एक अविभाज्य बिंदुरूप छे, अने तेनी जिंदगीनो बाकीनो समय तो कां तो भूतकाल छे अथवा तो ते अनिश्चित छे. त्यारे दरेक मनुष्य जीवे छे ते काळ थोडो छे, अने पृथ्वीना जे खुणामां ते रहे छे ते खुणो पण नानो छे; अने मरण पछीनी लांबामां लांबी कीर्ति पण टूंकी ज छे, अने आ कीर्ति पण फक्त एवां बिचारां मनुष्यप्राणिओनी परंपराथी ज चालु रखायली होय छे के जेओ घणी जलदीथी मरी जशे, अने जेओ पोताने ज ओळखतां नथी, तो जे कोइ लांबा समयउपर गुजरी गयो होय तेने ओळखवानुं तो क्यांए रह्युं.

---

२. ८. ३४.

११. जे मददमां आवे तेवी सूचनाओ कहेवामां आवी छे तेमां वळी आ एक उमेरावा दे:—तारी आगळ जे कोइ वस्तु रजु करवामां आवी होय तेनी तुं तारे माटे एक व्याख्या अथवा वर्णन रच, के जेथी ते वस्तु तेना वास्तवमां, तेना खुल्ला रूपमां, तेना संपूर्ण आखापणामां, तुं स्पष्ट रीत्ये जोइ शके, अने तुं तने पोताने तेनुं यथार्थ नाम, अने जे वस्तुओ मळीने ते वस्तु बनी होय ते वस्तुओनां नामो, अने जेमां ते वस्तुओ समाइ जशे ते वस्तुओनां नामो कहे. केम के जीवनमां जे तारी आगळ रजु करवामां आवे ते दरेक दृष्य पदार्थने पद्धतिपूर्वक अने खरी रीत्ये तपासवा समर्थ थवुं; अने ते ज वखते आ विश्व केवा प्रकारनुं छे, अने तेमां दरेक वस्तु केवा प्रकारना उपयोगमां आवे छे, अने विश्व समग्रनी अपेक्षाए दरेक वस्तुनी शी किमत छे, अने मनुष्यजाति के जे एक उच्चमां उच्च शहेरना शहेरीतरीके छे के जे शेहरनां बीजां सघळां शहेरो ते कुटुंबोतरीके छे, तथा दरेक वस्तु ए शुं छे अने ते शानी बनेली छे, अने हाल जे आ वस्तु मारा मनउपर छाप पाडे छे ते वस्तुनो स्वभाव केटलो लांबो समय टकी रहेवानो छे, अने तेना संबंधमां—जेवा के मृदुता, मरदामी, सत्य, निमकहलाली, सादाई, संतोष अने बाकीना बीजा सद्गुणोमांना कया सद्गुणनी मारे जरूर छे—ते समजाय तेवी रीत्ये वस्तुओप्रत्ये हमेशां जोवुं; तेना जेवुं मननी उन्नति उपजावनारुं बीजुं कांइ नथी. तेटलामाटे दरेक माणसे (आम) कहेवुं जोइये. आ देवतरफथी आवेलुं छे; अने आ मारा नियत थयेला भागप्रमाणे तथा नियतिना सूत्रनी कातणीप्रमाणे तथा आवा संजोग अने बनवाकाळ प्रमाणे छे; अने आ एक ज वंशना अने सगा अने भागीदार माणस तरफथी बनेलुं छे, पण ते माणस तेनी प्रकृतिअनुसार शुं छे ते जाणतो नथी. पण हुं तो ते जाणुं छुं; अने आ कारणथी हुं तेनी प्रत्ये बंधुभावना कुदरती कायदाप्रमाणे शुभेच्छा अने

न्यायथी वर्तुं छुं. तो पण ते ज समये सारी पण नहि अने खोटी पण नहि ऐवी[3] वस्तुओमां हुं प्रत्येकनी किमत नक्की करवानो प्रयत्न करुं छुं.

१२. जे तारी आगळ छे तेउपर तुं गंभीर रीत्ये, सबळ रीत्ये,—बीजी कोइ पण बाबतथी तने पोताने व्यग्र थवा दीधा विना, पण जाणे तुं तारो दिव्य अंश हमणा ज पाछो आपवा बंधायलो होय एम ते तारा दिव्य अंशने पवित्र राखीने—काम करतो होइश तो; तथा कशानी पण आशा राख्याविना अने कशानी पण ब्हीक राख्याविना, पण कुदरतने अनुसार तारी वर्त्तमान प्रवृत्तिथी अने जे दरेक शब्द अने अवाज तुं उच्चारे छे तेमां रहेला वीरत्ववाळा सत्यथी संतोष पामेलो तुं जो आने वळगी रहीश तो—तुं सुखी रहीश.

१३. जेमां तेओनी कुशळतानी ओचिंती जरूर पडे छे एवा प्रसंगोने माटे वैद्यो जेम हमेशां तेओनां ओजारो अने चप्पांओ तैयार राखे छे, तेम तुं पण दिव्य अने मानुषी वस्तुओ समजवाने माटे, अने जे देवोसंबंधी बाबतोने अने मनुष्योसंबंधी बाबतोने (परस्पर) जोडे छे ते संबंधनी स्मृतिपूर्वक दरेक वस्तु—नानामां नानी बाबत पण—करवाने माटे तुं सिद्धान्तो तैयार राखजे ज. केम के देवोने लगती बाबतोने ते ज वखते उपलक्ष्याविना मनुष्यने लगती कोइ पण बाबत तुं सारी रीत्ये करीश नहि; तेम ज तेथी उलटी रीत्ये पण करी शकीश नहि.

१४. भविष्यउपर आधार राखीने हवे तुं वधारे वार रखड नहि; केम के तुं तारी पोतानी नोंधो[4] वांचीश नहि, तेम ज अस-

---

३. जेने आपणे मध्यम प्रकारनी वस्तुओ कहिये छिये तेमनी वच्चे पण मोटो तफावत छे.

४. Upomnemata अथवा नोंधी राखेली बाबतो, नोंधो वगेरे. जुओ. १.१७.

लना रोमन् अने हेलेनीझ् लोकोनां कृत्यो, अने जे तुं तारी वृद्धावॅस्थाने माटे जाळवी राखतो हतो ते पुस्तकोमांनां पसंद करेलां वाक्यो पण वांचीश नहि. तो अवसान के जे तारी पासे छे तेनी प्रत्ये तुं जलदी जा, अने ज्यांलगी बाजी तारा हाथमां छे त्यांलगी, जो तुं तारे माटे कांइ पण दरकार राखतो होय तो, नकामी आशाओ छोडी देइने तुं तारी पोतानी मददे आव.

१५. शुं करवुं जोइये ते जोतां—चोरवुं, वाववुं, खरीदवुं, मौन राखवुं—ए शब्दोथी केटली बधी वस्तुओ दर्शावाय छे ते तेओ जाणता नथी; केम के ए आ आंख्योथी जणातुं नथी, पण एक बीजा प्रकारनी दृष्टिथी जणाय छे.

१६. शरीर, आत्मा, बुद्धिः शरीरने विषयोनुं भान छे, (जीव) आत्माने विषयनी इच्छाओ छे, बुद्धिने निश्चयो छे. देखावोथी दृश्य आकारोनी मनउपर छाप लेवी ए तो (इतर) प्राणिओने पण छे; विषयतृष्णानी दोरीओथी[६] खेंचावुं ए तो जंगली पशुओने अने जेमणे पोताने स्त्रीभावने पमाडेला छे एवा पुरुषोने—ए बंनेने, तथा फेलेरिस् अने नेरोने पण छेः अने जे फावती आवे तेवी जणाती वस्तुओप्रत्ये दोरी जाय छे तेवी बुद्धि तो—जेओ देवोने मानता नथी, जेओ पोताना देशने फसावे छे, अने ज्यारे तेओए पोतानां बारणां बंध करेला होय छे त्यारे जेओ तेमनां अपवित्र कर्मो करे छे—एवाओने पण होय छे. जो त्यारे हुं कही गयो तेवा सर्वने बीजी दरेक वस्तु सामान्य होय छे, तो सारा माणसमां शुं

---

५. सरखावो फ्रोन्टो, २. ९; फ्रोन्टो के जे ते समये एक न्यायाधीश हतो तेना उपर मार्कसे लखेलो पत्रः—"तो पण आ दिवसोमां में पांच ग्रंथोमां साठ पुस्तको (अथवा प्रकरणो)मांथी सार काढी लखवानुं काम कर्युं." पण ते कहे छे के तेमांनी केटलीक तो नानी चोपडीओ हती.

६. सरखावो प्लेटो, डि लेजिबस्, १. पृष्ठ ६४४, "आ विषयानुराग इ०" अने एन्टोनिनस्. २. २; ७. ३; १२. १९.

विशेष होय छे ते (जोवानुं) बाकी रहे छे, (अने ते आ छे:-) जे बने छे तेथी अने जे सूत्र तेने माटे (भाग्यदेवीवडे) कतायुं होय तेथी प्रसन्न अने संतुष्ट रहेवुं; अरे तेना हृदयमां जे दिव्य तत्त्व रोपायलुं छे तेने अपवित्र नहि करवुं, अने तेने काल्पनिक आकारोनुं टोळुं रचीने विकळ करवुं नहि, पण ते तत्वने एक देवतरीके आज्ञांकित रीत्ये अनुसरीने, अने सत्यथी उलटी कोइ पण बाबत नहि केहेतां तेम ज न्यायथी उलटुं कांइ पण नहि करतां तेने शान्तिमां राखवुं. अने जो बधां एम मानवाने ना पाडे के ते सादी सभ्य अने संतोषी जिंदगी गुजारे छे, तो ते तेओमांना कोइनी साथे गुस्से थतो नथी, तेम ज जिंदगीने जे अंते माणसे पवित्र, शान्त, प्रयाण करवाने तैयार थइने, अने कांइ पण फरज पडाया विना पोताना भाग्यनी साथे संपूर्ण रीत्ये मेळ करीने आववुं जोइये ते जिंदगीना अंतप्रत्ये लेइ जता रस्तामांथी ते चळतो पण नथी.

४.

जे (आपणी) अंदर राज्य चलावे छे ते (तत्त्व) ज्यारे कुदरतने अनुसार होय छे त्यारे जे बिनाओ बने छे, ते संबंधमां तेने एवी असर थाय छे के जे शक्य होय छे अने जे तेनी आगळ रजु थाय छे तेने बंध बेसतुं ते तत्व पोतानी मेळे हमेशां सहेलाइथी–थइ जाय छे. केम के तेने कांइ अमुक पदार्थनी जरूर पडती नथी, पण ते पोताना हेतुप्रत्ये[1] गति करे छे, परंतु ते अमुक स्थिति-ओमां ज तेवी गति करे छे; अने जेथी नानो दीवो तो बुझाइ ज जाय एवुं जे कांइ अग्निमां पडे छे तेने जेम अग्नि पकडी ले छे तेम ते तत्त्वना सामुं जे थाय छे तेमांथी ज ते (पोताने जोइतो) पदार्थ बनावी ले छेः पण ज्यारे अग्नि प्रबळ होय छे त्यारे तेना उपर जे कांइ खडकवामां आवे छे तेने ते पोताने कबजे करी ले छे अने तेने खाइ जाय छे अने ते ज पदार्थथी ते अधिक वृद्धिने पामे छे.

२. कोइ हेतुविना कोइ पण कार्य करावा देवुं नहि, तेम ज (तेने लगता) हुनरना संपूर्ण सिद्धान्तोने अनुसरीने ज ते करावुं जोइये अने बीजी रीत्ये नहि ज.

३. माणसो पोताने माटे एकान्त स्थळो– (जेवां के) देहा-तमां घरो, समुद्र-तीरो अने पहाडो–शोधे छे; तने पण आवी वस्तुओनी इच्छा करवानी बहु टेव पडी छे. पण आ तो एक घणा साधारण प्रकारना माणसनुं ज केवळ लक्षण छे, केम के ज्यारे ज्यारे तुं तारा पोतामां ज निवृत्त थवानुं चहाय त्यारे त्यारे ते तारा अख्त्यारमां ज छे. केम के, ज्यारे माणसना मनमां एवा विचारो होय छे के ते विचारोमां लक्ष नाखवाथी ते तत्काल संपूर्ण शा-न्तिमां स्थित थाय छे, त्यारे विशेषे करीने ते पोताना आत्मामां

---

१ Pros ta eoumena नो शब्दशः अर्थ "जे दोरी जाय छे तेप्रत्ये" एवो थाय छे. तेनुं यथार्थ भाषान्तर शुं थाय ते शकभरेलुं छे. गेटकरनी नोंध जुवो.

जेटली शान्तिथी जेटलो उपाधिरहितपणे निवृत्त थाय छे तेटली शान्तिथी तेम ज तेटलो उपाधिरहितपणे बीजे कोइ पण ठेकाणे निवृत्त थतो नथी; अने हुं सबळ रीत्ये कहुं छुं के शान्ति ए अंतःकरणनी सुव्यवस्थासिवाय बीजु कांइ नथी. तो वारंवार तुं तने आ निवृत्ति आप, अने तुं तने पोताने ताजो बनाव; अने तारा सिद्धान्तोने टूंका अने मूळतत्ववाळा थवा दे के तुं ते सिद्धान्तोपर आवे के तरत ज ते तारा आत्माने संपूर्ण रीत्ये स्वच्छ करवाने तथा जे वस्तुओथी तुं (कंटाळीने) पाछो आव्यो होय ते वस्तुओथी उपजेला सघळा असंतोषथी मुक्त करीने तने पाछो (ते वस्तुओ प्रत्ये) मोकलवाने ते सिद्धान्तो पूरता (समर्थ) थाय. केम के तुं शानाथी असंतोष पामेलो छे? मनुष्योनी असाधुताथी? तुं तारा मनमां पाछो आ सिद्धान्त आण के बुद्धियुक्त प्राणिओ एक बीजाने अर्थे हयाती धरावे छे, अने सहन करवुं ए एक न्यायनो अंश छे, अने माणसो खोटुं करे छे ते तेमनी इच्छाविना खोटुं करे छे; अने परस्पर शत्रुता, आशंका, धिक्कार, अने लडाई पछी अद्यापिलगी केटलां बधां माणसो मरण पामीने लांबा थइ सूतां छे, अने भस्मीभूत थयां छे, ए तुं विचार अने आखरे शान्त था.—पण विश्वमांथी तने जे आपवामां आव्युं छे तेथी कदाच तुं असंतुष्ट छे.—(तो) आ बेमांनी एक वात तुं तारी स्मृतिमां फरीने आण; (के) कां तो विश्वव्यवस्था छे, किं वा तो अणुओ (यदृच्छाथी थयेलो वस्तुओनो संयोग) छे; अथवा जे दलीलोथी एम साबीत थयेलुं छे के आ दुनिया ए एक राजकीय जनसमाज छे ते दलीलो याद कर (अने छेवटे शान्त था).—पण कदाच हजु पण देहाध्याससंबंधी बाबतो तारा उपर आवीने चोंटशे.—त्यारे तुं वळी एम विचार के ज्यारे मन पोते एकवार प्राणथी निराळुं थयुं होय छे, अने तेणे एकवार पोतानी शक्ति जाणी होय छे, त्यारे ते (मन) प्राण गमे तो मंद रीत्ये चालतो होय के प्रबळ

रीत्ये चालतो होय तो पण तेनी साथे भळतुं नथी, अने वळी तें दुःख अने सुखना संबंधमां जे कांइ सांभळ्युं छे अने स्वीकार्युं छे ते सघळाविषे पण तुं विचार कर (अने आखरे शान्त था). पण जे कीर्ति कहेवाय छे ते वस्तुनी इच्छा कदाच तने रीबा-वशे. (पण) जो! दरेक वस्तु केवी जलदीथी विसरी जवाय छे, तथा (वर्त्तमान कालनी) बंने बाजुए अनंत काळनो केवो गोटाळो छे तेप्रत्ये, अने वखाणना पोकळपणाप्रत्ये, अने जेओ वखाण आपवानो दावो करे छे तेओनी विचारशक्तिनी विकारिता अने अभाव प्रत्ये, अने ते विचारशक्ति जे प्रदेशमां मर्यादित थयेली छे तेना सांकडाणाप्रत्ये दृष्टि कर (अने आखरे शान्त था). केम के आखी पृथ्वी एक बिंदु मात्र छे, अने तेमां आ तारुं घर ते एक केटलो नानोसरखो खूणो मात्र छे, अने तेमां पण केटलां थोडां माणसो छे, अने जेओ तने वखाणशे ते लोको केवा प्रकारना छे? (ए विचारवाजेवुं छे).

तो पछी अवशेष आ रहे छेः तो आ तारी पोतानी[२] ज नानी राज्यहद्दमां निवृत थवानुं याद राख, अने सर्वोपरि (बाबत तो ए छे के) तुं तने पोताने व्यग्र न बनाव अने अति प्रयास न आप, पण मुक्त था, अने वस्तुओप्रत्ये एक नरतरीके, मनुष्य-प्राणितरीके, एक नागरिकतरीके, एक मर्त्यतरीके जो. पण जे बाबतोप्रत्ये वळतां सउ करतां वहेली तारे हाथे चढे एवी बाबतोमां आ बाबतो होवा दे, ते बे बाबतो छे. एक तो ए के आत्माने वस्तुओनो स्पर्श थतो नथी, केम के ते वस्तुओ बाह्य छे अने ते स्थावर (जड) रहे छे; पण आपणा विक्षेपो ते आपणा अंतरमां ज छे ते विचारमांथी ज आवे छे. बीजी (बाबत) ए छे के आ बधी वस्तुओ तुं जुवे छे ते तरत ज विकार पामे छे

२. तमे तमारा मन साथे रहो, तमारी सामग्री केवी खामीभरेली छे.– पर्सिअस, ४. ५२.

अने हवे पछी ते रहेवानी ज नथी, अने आ विकारो केटला बधा तें क्यारनाए जोया छे ते सतत तारा मनमां राख. आ विश्व ते एक रूपान्तरनी क्रिया छे; अने जिंदगी ए एक मानी लीघेली वस्तु छे.

४. जो आपणो बुद्धिसंबंधी अंश एक सरखो होय, तो जेना संबंधे आपणे तर्कवाळां प्राणि छिये ते तर्कशक्ति पण एक सरखी होवी जोइये. अने जो आम होय तो आपणे शुं करवुं अने शुं न करवुं तेनी आपणने आज्ञा करे छे ते तर्कबुद्धि पण एक सरखी ज होवी जोइये; अने जो आम छे तो आपणने सउने एक सरखो लागु पडे तेवो फायदो पण छे ज; जो आम छे तो आपणे शहेरी भाइओ छिये; जो आम छे तो आपणे कोइ राजकीय जनसमाजना अंगरूप छिये; जो आम छे तो दुनिया ए एक रीत्ये राज्य[३] छे. केम के बीजा कया राजकीय सर्वसामान्य जनसमाजना अंगरूप आखी मानवजाति छे एम कोइ कही शके तेम छे? अने तेमांथी ज, अर्थात् ए राजकीय जनसमाजमांथी आपणी आ बुद्धिशक्ति अने तर्कशक्ति अने आपणी कायदामाटेनी योग्यता पण आवे छे; नहितर ए सउ शामांथी आवे छे? केम के मारो पृथ्वीतत्त्वनो अंश ते मने अमुक पृथ्वीमांथी आपवामां आवेलो छे, अने जे जळतत्त्वनो भाग छे ते बीजा (जल) तत्त्वमांथी आपवामां आवेलो छे, अने जे उष्ण अने अग्नितत्त्वनो अंश छे ते कोइ अमुक उपादानतत्त्व (अग्नि)मांथी आपवामां आव्यो छे (केम के कोइ पण वस्तु असत्[७]मां समाती पण नथी, तेम कोइपण वस्तु असत्मांथी आवती पण नथी, ते ज प्रमाणे वळी बुद्धिनो अंश पण कोइ (भावरूप) उपादानमांथी ज आवे छे.

५. जेवुं जनन एक कुदरतनो गुप्त भेद छे, तेवुं मरण पण

---

३. सरखावो सिसेरोकृत डी लेजिबस्; १. ७. असत्–जेनुं अस्तित्व (हयाती) नथी एवी वस्तु. अभावरूप वस्तु.

कुदरतनो एक गुप्त भेद छे; अर्थात् ते ज तत्त्वोमांथी संमिश्रण अने ते ज तत्त्वोमां पृथक्करण; अने ते (मरण) ए कांइ एवी वस्तु नथी के माणसे तेनाथी शरमावुं जोइये, केम के ते बुद्धियुक्त प्राणिनी प्रकृतिथी विरुद्ध नथी, अने आपणा बंधारणना तर्क (संकेत)थी विरुद्ध नथी.

६. ए तो स्वाभाविक छे के आ बाबतो आवा मनुष्योथी थवी जोइये, ए तो एक अवश्यनी ज बाबत छे; अने जो कोइ माणसने ए जो न जोइये, तो ते ने अंजीरना झाडमां रस पण न आववा दे. पण सर्व प्रकारे मनमां आ याद राख के घणा थोडा समयमां तुं अने ते बन्ने मरी जशो; अने थोडा ज वखतमां तमारां नाम पण तमारी पाछळ रहेशे नहि.

७. तारुं पोतानुं मानवुं लेइ ले, तो पछी "मने इजा करवामां आवी छे" एवी फरियाद पण जती ज रही छे. "मने इजा करवामां आवी छे"—एवी फरियाद तुं लेइ ले, अने ते इजा पण जती ज रही छे.

८. माणस जेवो होय छे, तेना करतां जे तेने वधारे खराब बनावतुं नथी, ते तेनी जिंदगानीने पण वधारे खराब बनावतुं नथी, तेम ज ते तेने बहारथी के अंदरथी कांइ इजा पण करतुं नथी.

९. जे (आखा विश्वने) उपयोगी छे तेनी प्रकृतिने आ करवानी जरूर पडी छे.

१०. तुं एम विचार के जे बने छे ते दरेक बाबत व्याजबी रीत्ये ज थाय छे, अने जो तुं ध्यानपूर्वक अवलोकन करतो होइश तो तने एम मालम पडशे ज. हुं फक्त वस्तुओनी परंपराना चालुपणाविषे ज कहेतो नथी, पण जे न्याय्य छे अने दरेक वस्तुनी तेने घटती किमत ठरावे छे एवा कोइ (पुरुष)वडे जाणे करायली होय एवी वस्तुविषे पण हुं ए ज कहुं छुं. तो जाणे तें आरंभ करी दीधो होय तेम तुं आ पाळवा मांड; अने जे कांइ तुं करे

ते–सारा थवुं, अर्थात् माणस यथार्थ रीत्ये सारो होवो समजाय छे ते अर्थमां सारा थवुं–ए बाबतनी साथे मळीने कर. दरेक कार्यमां तुं आ (सिद्धान्त)ने वळगी रहे.

११. जे माणस तने हानि करे छे ते जेवो अभिप्राय धरावे छे तेवो अथवा ते जेवो अभिप्राय तने धरावराववो इच्छे छे तेवो अभिप्राय तुं वस्तुओविषे धरावीश नहि, पण वास्तवे ते वस्तुओ जेवी छे तेवीतरीके तेओ प्रत्ये तुं जो.

१२. माणसे हमेशां आ बे नियमो तैयार राखवा जोइये; एक तो ए के–मनुष्योना उपयोगने माटे जे कांइ अमल करनारी अने नियम बांधनारी शक्तिनो विचार सूचवे ते ज मात्र करवुं; बीजुं ए के–जे तारी भूल सुधारे अने तारा अभिप्रायमांथी तने चळावे एवुं मनुष्य तारी पासे होय तो तारो अभिप्राय बदलवो. पण आ अभिप्रायनो फेरफार करवो ते व्याजबी छे अथवा तो जनसमाजना सर्वसामान्य लाभनो छे ए वगेरे समजायाथी करवो, पण ते अभिप्रायनो फेरफार मजा आपे एवो देखाय छे अथवा प्रतिष्ठा प्राप्त करावे एवो छे तेटलामाटे करवो नहि.

१३. तारामां विचारशक्ति छे? हा, छे.–त्यारे तुं तेने वापरतो केम नथी? के जो आ विचारशक्ति पोतानुं काम करे तो तुं बीजुं शुं इच्छे छे?

१४. तुं एक भागतरीके हयातीमां आव्यो छे. जेमांथी तुं उत्पन्न थयो तेमां ज तुं लय पामीश; पण कांइक रूपान्तर थतां थतां तेना बीजरूप तत्वमां फरीने तारो अंगीकार थशे.

१५. एक ज चाचर उपर धूपना घणा कण छेः एक कण पहेलो (अग्निमां) पडे छे, अने बीजो पछी पडे छे; पण तेमां कांइ तफावत पडतो नथी.

१६. जो तुं पुनः तारा सिद्धान्तोउपर अने विचारशक्तिना

पूजनउपर आवीश, तो हाल जेमनी दृष्टिमां तुं एक पशु अने वानर जेवो छे, तेओनी दृष्टिए तुं दश ज दिवसमां एक देव जणाइश.

१७. जाणे तुं दश हजार वर्ष जीववानो होय तेम वर्त्तीश नहि. तारे माथे मोत लटके छे. ज्यांलगी तुं जीवे छे, ज्यांलगी तारी सत्तामां छे, त्यांलगी तुं भलो था.

१८. पोतानो पाडोशी शुं कहे छे, करे छे अथवा धारे छे, ते जोवाने दृष्टि नथी करतो, पण जे कांइ ते पोते ज करे छे ते न्याययुक्त अने पवित्र थाय ते ज जोवाने दृष्टि राखे छे, ते माणस केटली बधी माथाकूटने दूर राखे छे; अथवा तो एगेथोन् +कहे छे तेप्रमाणे बीजाओनी अधम दशाए पहोचेली नीतिप्रत्ये तुं आगळ पाछळ जोइश नहि, पण नीतिनी रेखामांथी आडो अवळो चल्याविना तुं तारे सीधो दोड्यो जा.

१९. जेने मरणपछीनी कीर्तिनी तीव्र इच्छा छे ते विचारतो नथी के जेओ तेने याद करे छे तेमांनो दरेक माणस पण घणी जलदीथी मरवानो छे; पछी पाछा जेओ तेमनी जगोए आवेला होय छे तेओ पण मरी जाय छे, अने एप्रमाणे जेओ मूर्खाई भरेली रीत्ये वखाणे छे अने मरी जाय छे तेवा मनुष्योनी द्वारा ए यादगिरी परंपराथी उतरी आवेली होय छे, तेथी आखरे ते समग्र यादगिरी नाबूद थइ जाय छे त्यांलगी ए (विनाशनो क्रम) चाल्या करे छे. पण धारो के जेओ याद करशे एवां मनुष्यो अमर पण छे, अने ए यादगिरि पण अमर ज थशे, तो पण एमां तने शुं? अने हुं तो एकलुं एम ज नथी कहे तो के 'तेथी मुवेलांने शुं?' पण हुं तो एम पण कहुं छुं के "तेथी जीवताने पण शुं?" हा, प्रशंसानो अमुक उपयोग होवा उपरांत+ प्रशंसा ए शुं छे? केम के (जो तुं प्रशंसातरफ खेंचाय तो) तुं बीजी कांइ वस्तुने वळ-

गीने कुदरते तने आपेली बक्षीस (बुद्धि)नो अयोग्य समये (निष्कारण रीत्ये ?) हाल अनादर करे छे. * * * †.

२०. जे कोइ पण रीत्ये सुंदर होय छे तेवी दरेक वस्तु स्वतः सुंदर होय छे, अने तेनी परिसमाप्ति तेना पोतामां ज थाय छे, अने प्रशंसा ते तेनो पोतानो कोइ भाग नथी. प्रशंसाथी कोइ वस्तु वधारे नठारी के वधारे सारी थइ जती नथी. अधम वर्गना लोकोवडे जे वस्तुओ सुंदर कहेवाय छे तेविषे—दाखला तरीके भौतिक वस्तुओ अने कळाकौशल्यनां कामोविषे पण हुं आ ज कहुं छुं—के नियम, सत्य, शुभेच्छा अने विनयने बीजा कशानी जरूर पडती नथी. (ते ज प्रमाणे जे कांइ वस्तुतः सुंदर छे तेने बीजा कशानी जरूर पडती नथी.) आमांनी केइ बाबत (वखाणवाथी सुंदर छे, अने वखोडावाथी) बगडी जाय छे ? नीलमजेवी वस्तु वखाणवामां न आवे तेथी शुं ते जेवी हती तेना करतां खराब थइ जाय छे ? अथवा सोनुं, हाथीदांत, किरमजी रंग, सारंगी, एक नानुं चप्पुं, पुष्प, छोड—ए शुं नहि वखणावाथी बगडी जाय छे. ?

२१. जो जीवात्माओनुं अस्तित्व चालु ज छे तो अनादि काळथी हवामां तेमनो केवी रीत्ये समास थाय छे ?—पण वळी आटला बधा पुरातन काळथी जेओने दाटवामां आवेला छे तेओनां शरीरोनो पृथ्वी शी रीत्ये समास करे छे ? केम के जेम अहीं अमुक वखत लगी टकीने,—पछी ते गमे तेटलो वखत होय—तो पण आ शरीरोनो अंत अने विशीर्णभाव बीजां मृतक शरीरोने माटे जगो करे छे; तेप्रमाणे जे आ जीवात्माओ केटलोक समय जीवात्मारूपे रह्या पछी वायुतत्वमां नाखी देवामां आवे छे तेओ रूपान्तरने पामी विखराइ जाय छे, अने विश्वना बीजरूप चैतन्यमां अंगीकार पामवाथी अग्नि(तेजो)मय स्वभाव धारण करे छे, तथा आ रीत्ये त्यां रहेवा आवनार नवा जीवात्माओने

माटे जगो करे छे. अने आ एवो जवाब छे के जे जवाब जीवा-त्माओनुं अस्तित्व चालु ज रहे छे ए सिद्धान्तउपर रहीने माणस आपी शके. पण आपणे फक्त आप्रमाणे दटायलां मनुष्यनां मडदां विषे ज विचार करवानो नथी, पण जे प्राणिओ दररोज आपणा खावामां आवे छे ते अने बीजा प्राणिओनी संख्याविषे पण आपणे विचार करवो जोइये. केम के केटलीए संख्या खवाइ जाय छे अने आप्रमाणे एक रीत्ये ते खानार माणसोना शरीरोमां दटाय छे? अने तेम छतां पण तेमनो रुधिररूप परिणाम थवाथी तथा वायु-तत्त्वमां अथवा तेजस्‌तत्त्वमां तेमनुं रूपान्तर थवाथी पृथ्वी तेमनो समास करे छे.

आ बाबतना सत्यविषे शी चोकशी छे? वस्तुओना उपादानमां तथा (आकारक) निमित्तकारणमां विभाग करवा ए ज ए बाबतना सत्यनी चोकसी छे. (७. २९.)

२२. आम तेम घसडाइ जतो मा, पण दरेक हिलचालमां न्यायने माटे मान धरावजे, अने तारा मनउपर दरेक छाप पड-वाने प्रसंगे ते ग्रहण करवानी (अथवा समजवानी) बुद्धिशक्तिने कायम राखजे.

२३. हे विश्व! जे तने मळतुं आवे छे, ते मने पण अनुकूल ज छे. जे तारे माटे योग्य समये छे ते मारे माटे पण घणुं वहेलुं के घणुं मोडुं नथी. हे प्रकृति! तारा ऋतुओ जे कांइ आणी आपे छे ते दरेक वस्तु मारे तो फळ छे. तारामांथी सघळी वस्तुओ उपजे छे, तारामां सघळी वस्तुओ रहे छे, अने तारामां सघळी वस्तुओ पाछी समाय छे. पेलो कहे छे के—'सेक्रोप्सनुं प्रिय नगर;' अने तुं शुं एम नहि कहे के—'देवाधिदेवनुं प्रिय नगर'?

२४. जो तारे शान्त रहेवुं होय तो पेलो तत्वज्ञानी कहे छे के—तुं तने पोताने घणी बाबतोमां रोकीश नहि.—पण जो एम कहेवुं वधारे सारुं न होय तो पण एवो विचार तो राखजे के—'जे

आश्यक होय ते ज, अने जे कांइ स्वाभाविक रीत्ये सामाजिक होय तेवा प्राणिनी बुद्धिने जोइये ते ज, अने जे रीत्ये ते जोयतुं होय ते ज रीत्ये तुं कर.' केम के कोइ वस्तु सारी रीत्ये करवाथी जे शान्ति आवे छे ते ज शान्ति आ आणे छे एटलुं ज नहि पण वळी थोडी वस्तुओ करवाथी जे शान्ति आवे छे ते शान्ति पण आ आणे छे. केम के आपणे कहिये छिये अने करिये छिये तेनो घणो खरो भाग जरूर विनानो होवाथी, जो माणस ए भाग काढी नांखे तो तेने वधारे अवकाश अने ओछी बेचेनी मळशे. तेप्रमाणे दरेक प्रसंगे माणसे पोताने एम पूछवुं जोइये के—'बिन जरूरी चीजोमांनी आ एक तो नथी?' हवे माणसे विनाजरूरनां कामो ज दूर करवानां नथी, पण वळी बिनजरूरी विचारो पण दूर काढवाना छे, केम के आथी फाजल कृत्यो पण पाछलथी थशे नहि.

२५. सारा माणसनी जीवनपद्धति,–(अर्थात्) जे माणस समग्रमांथी पोताना भागे जे आव्युं होय तेथी संतुष्ट तथा पोतानां न्यायी कृत्यो अने परहितैषी स्वभावथी संतुष्ट एवा माणसनी जीवनपद्धति तने केवी रीत्ये फावे छे ते तुं अजमावी जो.

२६. तें पेली वस्तुओ जोइ छे? आ वस्तुओ तरफ पण जो. तुं पोताने व्यग्र करीश नहि. तुं पोताने सघळो सादो बनाव. कोइ खोटुं करे छे. ते खोटुं करे छे ते ते पोताने ज करे छे. तने कांइ पण थयुं छे? ठीक; जे बने छे ते दरेक वस्तु पहेलेथी ज विश्वमांथी तारे भागे नक्की थइ छे अने ते तने काती आपवामां आवी छे. एक शब्दमां तारी जिंदगी टूंकी छे. तर्कबुद्धि अने न्यायथी तारे वर्त्तमान समयनो लाभ लेवो जोइये. तुं तारा आराममां मिताचारी थजे.

२७. कां तो ए एक सुव्यवस्थित विश्व[४] छे, के कां तो एक

---

४. एन्टोनिनस् अत्रे विश्वना अने व्यवस्थाना अर्थमां Kosmos शब्द वापरे छे; अने तेमनो कहेवानो भाव शो छे ते दर्शाववुं कठण छे.

अव्यवस्थ भेगो करेलो खीचडो छे, तोय पण ते एक विश्व तो छे ज. पण अमुक नियम तारामां होय, अने विश्वमां तो अव्यवस्था होय एम बनी शके ? अने आ पण ज्यारे सघळी वस्तुओ आवी निराळी अने वहेंचाइ गयेली तथा एकबीजासाथे मेळवाळी छे त्यारे–एम बनी शके ?

२८. एक काळां काम करनार, बायला, हठीला, पशुजेवा, छोकरमत, जनावरजेवा, मूर्ख, बनावटी, हलकट, दगाखोर अने जुलमी चरित्रवाळो माणस ल्योः—

२९. जो विश्वमां शुं छे ते जे जाणतो नथी ते विश्वथी अजाण्यो माणस छे, तो विश्वमां शुं चाली रह्युं छे ते जे जाणतो नथी ते कांइ ओछो अजाण्यो नथी. सामाजिक तर्कबुद्धिथी जे नाशी छुटे एवो ते एक भागी जनारो माणस छे; बुद्धिनां नेत्र जे बंध करे छे एवो ते एक अंध मनुष्य छे; जेने बीजानी जरूर पडे छे अने जीवनने माटे उपयोगी एवी सघळी वस्तुओ जेने पोतानी ज पासेथी (मळी आवे तेम) नथी एवो ते एक निर्धन मनुष्य छे. जे बाबतो बने छे तेथी नाखुश थइने आपणी सामान्य प्रकृतिनी बुद्धिथी जे पोताने दूर खेंची ले छे अने अळगो करे छे एवो ते विश्वउपर एक पाठारूप छे, केम के ते ज प्रकृतिए आ उपजावेलुं छे, अने तैंने पण ते ज प्रकृतिए उपजाव्यो छे. बुद्धिवाळां (समग्र) प्राणिओनो आत्मा जे एक छे तेनाथी जे पोताना आत्माने जुदो तोडी कोढे छे, एवो ते एक आखा राज्यमांथी फाडीतोडीने जुदो करायलो एक टुकडो छे.

३०. एक तत्त्वानुरागी शरीरे कपडाविनानो छे, अने बीजो एक पण पुस्तकविनानो छेः अहीं वळी बीजो एक अडधो नागो

---

* आ स्थळे तने ए शब्द पेला नाशी छुटनार माणसने संबोधीने मूकेलो छे–एम समजवानुं छे. प्र. क.

छे: ते कहे छे,—मारे खावाने रोटलो पण नथी, अने ते छतां हुं तर्कबुद्धिने अनुसार रहुं छुं. मारी विद्यामांथी मारा निर्वाहनां साधन मने मळतां नथी,† छतां हुं (मारी तर्कबुद्धिअनुसार) रहुं छुं.

३१. तुं जे हुन्नर शीख्यो होय, ते पछी गमे तेवो गरीबी भरेलो होय, तो पण तुं तेने चहा अने तेनाथी संतोष मान; अने जेणे पोताने कोइ माणसनो जुलमी राजा के गुलाम नहि बनावतां, जेणे पोतानुं सर्वस्व पोताना समग्र अंतरात्माथी देवोने सोंपी दीधुं छे, एवा एक माणसतरीके तारी बाकीनी जिंदगीमां पसार करी जा.

३२. एक दाखलातरीके वेस्पासियनना समयोनो विचार कर. तने संघळी आवी ज बाबतो जणाशे—लोक लग्न करता, छोकरां उछेरता, मांदा थता, मरता, विग्रह करता, धंधो करता, जमीन खेडता, खुशामद करता, दुराग्रही रीत्ये गर्व करता, वहेम खाता, कावतरां करता, कोइने मरवो इच्छता, चालु वखतविषे बडबडता, प्रेम करता, खजानो एकठो करता, राजाना प्रतिनिधिपणाने अने राजाजेवी सत्ताने इच्छता. ठीक त्यारे, आ लोकोनी जिंदगानी पण हवे तो बिलकुल छे ज नहि. फरी खसीने ट्रेजनना समय उपर जाव. ते ज रीत्ये समयना बीजा जुगोने अने आखी प्रजाओना जुगोने पण अवलोको, अने जुओ के मोटा प्रयासोपछी केटला बधा मरण पाम्या अने पंचतत्वोमां भळी गया. पण मुख्यत्वे करीने तो तारे ते माणसोविषे विचार करवो जोइये के जेओने तें तारी जाते, जे तेओना खास बंधारणना अनुसार हतुं ते करवानी उपेक्षा करीने नकामी बाबतोविषे मुझवाता जाणेला छे, अने आ विचारने तारे दृढतापूर्वक वळगी रहेवुं. तथा तेथी संतोष पामवो. अने आमां ए याद राखवुं आवश्यक छे के दरेक वस्तुउपर जे ध्यान आपवामां आवे छे तेनी खास किमत अने प्रमाण होय छे. केम के

आप्रमाणे जो तुं नानी नानी बाबतोमां घटे ते करतां वधारे तने पोताने नहि रोके, तो तुं असंतोषने पामीश नहि.

३३. जे शब्दो पहेलां प्रचलित हता ते शब्दो हाल जुना (अप्रचलित) थइ गया छेः ते ज प्रमाणे वळी जेओ जुना समयमां प्रख्यात हता तेमनां नाम हाल एक रीत्ये जुनां थइ गयां छे, (अर्थात् खोचंदे पडवा लाग्यां छे); जेवां के—केमिलस्, सीसो, बोलेसस्, लियोनेटस्, अने तेमनी पाछळ थोडा वखतपछीना स्किपियो अने केटो पण, पछी ओगस्टस्, ते पछी वळी हेड्रिएनस् अने एन्टोनिनस्. केम के बधी वस्तुओ चाली जाय छे, अने तेमनी वात मात्र रहे छे, अने संपूर्ण शून्यकार तेमने दाटी नाखे छे. अने आ हुं कहुं छुं ते जेओ आश्चर्यजनक रीत्ये झळक्या छे तेओना विषे कहुं छुं. केम के बाकीना तो पोतानो प्राण छोडे छे के तरत ज तेओ गयेला ज छे, अने कोइ माणस तेमना विषे बोलतुं ज नथी. अने आ विषय समाप्त करतां (ए पण कहेवुं जोइये के) अमर यादगिरी ए पण शुं छे? ए एक केवळ कांइ नथी. तो जेने माटे आपणे खरा मनथी कष्ट करवुं जोइये एवुं शुं छे? आ एक ज वस्तु—व्याजबी विचारो, अने सामाजिक कार्यो, अने जे कदी असत्य नथी एवा शब्दो, अने एवो स्वभाव के जे, जे कांइ बने छे ते सघळाने आवश्यकतरीके, हमेशनी पेठे, ते ज तत्वमांथी अने ते ज जातना कारणमांथी निकळी आवता तरीके आनंदपूर्वक स्वीकारे छे.

३४ तुं तारे खुशीनी साथे (भाग्यदेवीओमांनी एक) क्लोथोने शरण था, अने तेने तेनी मरजीमां आवे ते वस्तुओ (ना आकार)मां तारा (भाग्य–) तंतुने कातवा दे.†

३५ जे याद करे छे अने जे याद करवामां आवे छे ते बंनेमांनी ते दरेक वस्तु फक्त एक ज दिवसमाटे छे.

३६ तुं निरंतर अवलोकतो रहेजे के बधी वस्तुओ फेरफार

थइने बने छे, अने तुं तारे एवो विचार करवानी टेव पाडजे के जे वस्तुओ होय तेनो फेरफार करवो अने तेओना जेवी (बीजी) नवी वस्तुओ बनाववी जेटली विश्वने गमे छे तेटलुं बीजुं कशुं पण गमतुं नथी. केम के जे (हाल) हयातीमां छे एवी दरेक वस्तु जे (भविष्यमां) थशे तेनुं एक रीत्ये बीज छे. पण तुं तो जे बीजो पृथ्वीमां अथवा (स्त्रीनां) गर्भाशयमां नाखवामां आवे छे ते विषे ज विचारे छे; पण आ तो एक घणो हलको विचार ज छे.

३७. तुं थोडा वखतमां गुजरी जइश, तो पण हजी तुं सादो थयो नहि, व्यग्रताथी मुक्त थयो नहि, बाह्य वस्तुओथी इजा थवाना वहेमथी रहित थयो नहि, अने सर्वप्रत्ये मायाळु स्वभाव वाळो थयो नहि; तथा हजी पण तुं व्याजबी रीत्ये वर्त्तवामां ज डहापण स्थापतो नथी.

३८ माणसोना (वर्त्तननां) नियामक धोरणो तपासो, जेओ डाह्या होय तेमनां पण ए धोरणो तपासो, केवी जातनी वस्तु-ओथी तेओ दूर रहे छे, अने केवी जातनी वस्तुओने तेओ अनुसरे छे ?

३९. जे तने अशुभ छे ते बीजाना नियामक धोरणमां अस्तित्व ज धरावतुं नथी; तेम ज तारा आ शारीर आच्छादनना कोइ वलनचलनमां अने रूपान्तरमां पण ते अस्तित्व धरावतुं नथी. त्यारे ते अशुभ छे क्यां ? ते अशुभ तारा ए भागमां छे के जेमां अशुभ विषेना विचारो बांधवानी शक्ति अस्तित्व धरावे छे. त्यारे आ शक्तिने तेवा विचारो तुं बांधवा दे नहि, तो सघळुं सारुं ज छे. अने जो ते भागनी निकटमां निकट जे छे, ते बिचारुं शरीर कापवामां आव्युं होय, बाळवामां आव्युं होय, परु अने सडाथी भराइ गयुं होय, तो पण जे भाग आ वस्तुओविषे विचार बांधे छे ते भागने शान्त रहेवा दे, अर्थात् तेने एम विचारवा दे के खोटा माणसने तेम ज सारा माणसने जे कांइ पण एक सरखी

रीत्ये बने छे एवुं अशुभ के शुभ कांइ पण नथी. केम के जे कुदरतना विरुद्ध रहे छे तथा जे कुदरतनी अनुसार रहे छे तेने एक सरखी रीत्ये जे आवी पडे छे ते कुदरतने अनुसार पण नथी अने कुदरतनी विरुद्ध पण नथी.

४०. एक ज पदार्थ अने एक ज आत्मावाळुं एक जीवता प्राणि तरीके आ विश्वने तमे निरंतर धारो; अने एवुं अवलोकता रहो के—सघळी वस्तुओ एक ज दृष्टिने उद्देशीने, ते ए एक ज प्राणिनी दृष्टिने उद्देशीने छे; तथा एक ज गतिथी सघळी वस्तुओ केवी चाले छे; तथा सघळी वस्तुओ केवी रीत्ये अस्तित्ववाळी सघळी वस्तुओनां सहकारी कारणोरूप छे; तेम ज वळी सूत्रनी अखंड कातणी तथा आखी जाळनुं संग्रथन पण अवलोको.

४१. एपिक्टेटस् कहेतो तेप्रमाणे तुं एक आ शव (शरीर)-ने उठावीने लइ जनार एक अल्पात्मा छे. (१. प्र. १९).

४२. वस्तुओनुं स्थित्यन्तर थाय ए कांइ अशुभ नथी, अने फेरफार थया पछी वस्तुओ कायम रहे तेमां कांइ शुभ पण नथी.

४३. काळ ए एक बनता बनावोनी बनेली नदी अने तोफानी प्रवाह जेवो छे; केम के एक वस्तु जेवी नजरे पडी के तरत ज ते घसडाइ जाय छे, अने तेनी जगोए बीजी वस्तु आवे छे, अने आ पण घसाडाइ जशे.

४४. जे बने छे ते दरेक वस्तु वसंत ऋतुमां गुलाब अने उनाळामां फळनी पेठे परिचित अने सारी पेठे जाणीती छे; केम के रोग, मृत्यु, कलंक, विश्वासघात अने बीजुं जे कांइ मूर्खाओने आनंद आपे छे अने चीडवे छे ते आवां छे.

४५. वस्तुओनी परंपरामां जे वस्तुओ पाछळ आवे छे ते हमेशां आगळ गयेली वस्तुओने बरोबर बंधबेसती होय छेः केम के आ वस्तुपरंपरा ए फक्त जेनो कांइ पण परिणाम अवश्य थवो जोइये एवी असंबद्ध वस्तुओनी केवळ गणना जेवी ज नथी,

पण तेमां बुद्धिपूर्वक संकलना होय छे अने सघळी अस्तित्व धरावती वस्तुओ संवादी रीत्ये साथे गोठवेली छे, तेथी जे वस्तुओ अस्तित्वमां आवे छे ते फक्त अनुक्रम ज दर्शावती नथी, पण एक अद्भुत संबंध दर्शावे छे (६. ३८; ७. ९; ७. ७५, टिप्पणी.)

४६ हिराक्लिटस् कहेतो हतो ते हमेशां याद राखो के—पृथ्वीनुं मृत्यु तेनुं जळरूप थवुं ते छे, जळनुं मृत्यु ते तेनुं वायुरूप थवुं ते छे; अने वायुनुं मृत्यु ते तेनुं अग्निरूप थवुं ते छे. अने ते ज प्रमाणे विपरीत क्रम पण विचारी लेवो. अने ए रस्तो क्यां जाय छे ते वात जे भूली जाय छे ते माणसविषे पण विचार करो, अने माणसो जेनी साथे घणा ज निरंतर संबंधमां आवे छे ते विश्वनियामक बुद्धिशक्तिनी ज साथे कजियो करे छे—(एम तमने जणाशे); जे वस्तुओने तेओ नित्य मळे छे एवी वस्तुओ तेमने विचित्र भासे छेः अने विचारो के आपणे उंघता होइये तेम आपणे कांइ करवुं के बोलवुं नहि जोइये; अने आपणने शीखववामां आव्युं छे तेम पोतानां माबापनी पासेथी शीखतां छोकरांओनी पेठे ज कांइ करवुं तथा बोलवुं जोइये नहि.

४७. जो कोइ देव तने एम कहे के तुं आवती काले मरी जइश अथवा तो परम दिवस तो तुं नक्की ज मरी जइश, तो—जो तुं अत्यंत अधम भाववाळो नहि होय तो—तुं काले मरवानुं छे के परम दहाडे मरवानुं छे तेनी वधारे दरकार नहि राखे—केम के एमां केवो अल्प फरक छे?—तो कांइक काले मरवा करतां तुं कही शकतो नथी एटलां वर्षपछी मरवाने कांइ मोटी बाबत धारीश नहि.

४८. मांदाओउपर पोतानां भवां संकोची संकोचीने पछी केटला वैद्यो मरी गया छे तेनो सतत विचार कर; अने केटला ए जोशीओ बीजाओनां मोतनी मोटा आडंबर साथे आगाही

करी करीने पछी मरी गया; अने केटला बधा तत्त्वचिन्तको मोत अथवा अमरताविषे व्याख्यानो करी करीने पछी गुजरी गया; अने केटला बधा वीरो हजारोने मारीने पछी मरण पाम्या; अने पोते जाणे अमर होय एवी रीत्ये मनुष्योनी जिंदगानीओउपर क्रूर उद्धताइथी पोतानी सत्ता वापरीने पछी केटला बधा जुलमी राजाओ मरी गया; अने केटलां बधां शहेरो–एम कहिये तो हेलिसॅ अने पोम्पी अने हर्क्लेनस्, अने बीजां अगण्य शहेरो–तदन मरी गयां छे. ए गणतरीमां एक पछी एक जेमने तुं ओळखे छे ते सघळाने उमेर. एक माणस बीजाने दाटीने पछी मरण पामीने पडे छे, अने त्रीजो कोइ वळी तेने दाटे छे; अने आ बधुं ते थोडा ज समयमां बने छे. छेवटे, हमेशां ए तुं जोतो रहेजे के मानुषी वस्तुओ केवी अल्पायुषी अने निर्माल्य छे, अने जे गये काले एक श्लेष्मनो लपको हतो ते आवती काल एक दफनायलुं मडदुं अथवा तो भस्म थशे. तो आ टुंका समयमां थइने कुदरतने बंधबेसती रीत्ये पसार करी जा, अने जेवी रीत्ये जितफळ ज्यारे पक्क थाय छे त्यारे जे कुदरते तेने उत्पन्न कर्युं तेने आशीर्वाद आपतुं अने जे झाडउपर ते उग्युं हतुं तेनो आभार मानतुं तूटी पडे छे तेवी ज रीत्ये संतोषमां तारा प्रवासनो अंत आण.

४९. जेना उपर आवी आवीने मोजांओ निरंतर पछडाय छे पण जे दृढ रीत्ये खडुं रहे छे अने तेनी आशपाशना जळना जुसाने वश करे छे एवा अणियाळा खडकना जेवो तुं था.

हुं दुःखी छुं, केम के मने आ थयुं छे– एम नहि (मानो), पण जो के मने आ थयुं छे तो पण हुं सुखी ज छुं, केम के हुं व्यथाथी मुक्त रहुं छुं, अने वर्त्तमानथी हुं कचराइ गयो नथी अने

---

५. ओविड्, मेट्. १५. २९३.

जो तमे हेलिस् अने एन्चियन् नगर बुरीनने माटे तपास करशो तो ते तमने जळनी नीचे डूबी गयेलां मालम पडशे.

भविष्यथी हुं डरतो पण नथी. केम के आवी बाबत तो दरेक माणसने थइ शके तेवी छे; पण आवे प्रसंगे दरेक माणस व्यथाथी मुक्त रही शकत नहि. तो पछी आ सद्भाग्य छे (एम मानवा करतां) आ कांइक दुर्भाग्य छे एम (मानवुं जोइये) शा माटे ? अने जे मनुष्यनी प्रकृतिथी आडुं फंटातुं न होय तेने तुं सघळाने सघळा प्रसंगे दुर्भाग्य कहे छे के ? अने ज्यारे कोइ वस्तु मनुष्यनी प्रकृतिनी इच्छाथी विरुद्ध न होय, त्यारे तने ते वस्तु मनुष्यनी प्रकृतिथी आडी फंटाती जणाय छे के ? ठीक, त्यारे प्रकृतिनी इच्छा तो तुं जाणे छे. त्यारे आ जे बन्युं छे, ते तने न्यायी, उदार मनवाळो, मिताहारी, डाह्यो, अविचारी विचारो अने असत्यनी सामे सहीसलामत थतां अटकावशे के ? ते तने सभ्यता, स्वतंत्रता, अने बीजी दरेक वस्तु के जेनी हाजरीथी मनुष्यनो स्वभाव जे तेनुं पोतानुं छे ते सघळुं मेळवे छे, ते राखतां तने अटकावशे के ? जे तने चीडतरफ दोरी जाय छे तेने पण आ सिद्धान्त लागु पाडवाने दरेक प्रसंगे तुं याद राख जे के–आ एक दुर्भाग्य नथी, पण उमदी रीत्ये ते सहन करवुं ए सारुं भाग्य छे.

५०. जो के ते एक हलकी वात छे, तो पण जेओ जिंदगीने चिकट रीत्ये वळगी रह्या छे तेओने अवलोकन नीचे काढवा ते पण मृत्युने तुच्छ गणवा (शीखवा) माटे एक उपयोगी मदद छे. त्यारे जेओ जलदी मरी गया छे तेओ करतां पेलाओए शुं वधारे प्राप्त कर्युं छे ? केडिसिएनस्, फेबिअस्, जुलिएनस्, लेपिडस्, अथवा तेमना जेवो बीजो हरकोइ माणस के जेओए घणाओने दाट्या छे अने पछी तेओ पण उपाडी लेइ जवाया छे, तेओ छेवटे तेओनी कबरोमां गमे त्यां पडेला छे. सर्वाळे जोतां (जन्म अने मृत्यु वच्चेनो) गाळो नानो छे; अने आ गाळो पण केटली माथाकुटथी, अने केवा प्रकारना लोकोनी संगतिमां,

अने केवा निर्बल शरीरमां महेनतभरेली रीत्ये गाळवो पडे छे तेनो विचार करो. तो आ जिंदगीने कोइ किमती वस्तु समजशो नहि. † केम के तारी पाछळ गयेला पुष्कळ काळतरफ जो, अने जे तारी आगळ आववानो छे तेतरफ पण जो, ते पण अनंत काळ छे. त्यारे आ जनंत काळमां जे त्रण दिवस जीवे अने जे त्रण जमाना जीवे ए बेमां शो फरक छे[६] ?

५१. हमेशां टूंका रस्ता तरफ दोडी जाव; अने टूंको रस्तो ए स्वाभाविक छे: ते प्रमाणे दरेक वस्तु प्रबलमां प्रबल तर्कबुद्धिनी साथे बंधबेसती आवे तेम कहो अने करो. केम के एवो उद्देश माणसने कडाकूटमांथी†, लडालडमांथी, अने सघळी कृत्रिमता तथा आडंबरी देखावोमांथी मुक्त करे छे.

---

६. आ होमरना नेस्टरने उद्देशीने कहेलुं छे; ते ट्रोयना विग्रहमां दोढसो वर्षना वृद्ध पारनी पेठे अने जे कहेवामां आवे छे ते वात खरी होय तो आधुनिक समयमां थयेला बीजा केटलाक के जेओए पार करतां पण वीस के त्रीस वर्ष वधारे खेंची काढ्यां हतां तेओनी पेठे, त्रीजा जमानालगी जीवतो हतो; तो पण छेवटे तेओ मरी तो गया ज छे. एन्टोनिनसना लेखमां Trigerenion शब्द वापर्यो छे. केटलाक लेखकोवडे नेस्टरने Trigeron नाम आपवामां आव्युं छे; पण अहीं कदाच होमरना Terenios ippota Nestor ने उद्देशीने कहेवामां आव्युं होय.

५.

सवारमां ज्यारे तुं पोतानी खुशीविना उठे, त्यारे (तारा मनमां) आ विचारने हाजर रहेवा दे—के—हुं एक मनुष्यप्राणिना जेवुं कार्य करवा उठुं छुं. त्यारे जेने माटे हुं हयाती धरावुं छुं अने जेने माटे मने दुनियामां आणवामां आव्यो हतो ते वस्तुओ करवाने माटे हुं जाउ छुं तो हुं शामाटे असंतुष्ट छुं? अथवा शुं हुं आटलामाटे ज—पथारीओमां पड्या रहेवाने अने मने पोताने गरम राखवा माटे ज—सृजायो छुं? पण आ (पडी रहेवुं) वधारे मजानुं छे—त्यारे तुं शुं तारी मजा लेवाने माटे जीवे छे, अने काम अथवा श्रममाटे बिलकुल नहि? तुं शुं नाना छोडवाओने, नानां पक्षिओने, कीडियोने, करोळियाओने, मधमांखीओने विश्वमां पोतपोताना विविध (कार्य) भागोने व्यवस्थामां मूकवाने एकठा काम करतां जोतो नथी? अने एक मनुष्यप्राणिनुं कर्तव्य करवाने तुं शुं नाखुश छे, अने जे तारा स्वभावानुसार छे ते करवाने तुं उतावळ नथी करतो?—परंतु आराम लेवो ते पण जरूरनुं छे.—ते जरूरनुं छे खरुं पण कुदरते आनी पण हद ठरावी छे; कुदरते खावाने अने पीवाने बंनेने हद ठरावी छे, अने तें छतां तुं आ हदनी बहार—जे पूरतुं छे तेनी बहार—जतो रहे छे; पण तारां कामोमां तो एम नथी, पण तेमां तो तुं जे करी शके तेम छे ते करतां पण थोडुं करीने अटकी पडे छे. तेथी तुं तने पोताने चहातो नथी, केम के जो तुं तने पोताने चहातो होत तो तुं तारी प्रकृतिने अने तेनी इच्छाने पण चहातो होत. पण जेओ पोतपोताना विविध हुन्नरोने चहाय छे, तेओ नहायाविना अने खाधा पण विना तेमां काम करी करीने थाकी जाय एटलुं काम करे छे; पण एक सराणीओ सराणीआना हुन्नरनी, अथवा नृत्य करनारो नृत्यकळानी, अथवा धनने चहानार तेना धननी, अथवा मिथ्या-

भिमानी तेनी थोडीशी कीर्त्तिनी जेटली किमत गणे छे, तेथी पण ओछी किमत तुं तारी पोतानी प्रकृतिनी गणे छे. अने आवा माणसो, ज्यारे तेओने कोइ वस्तुमाटे तीव्र प्रेम होय छे त्यारे, जे वस्तुओने माटे तेओने काळजी होय छे ते वस्तुओने पूर्ण करवा करतां कांइक खावानुं के उंघवानुं पण पसंद करता नथी. पण जनसमाजने लागतां वळगतां जे कामो छे ते तारी दृष्टिए वधारे हलकां अने तारा श्रमने माटे ओछां योग्य जणाय छे ?

२. जे व्यग्रताजनक अने अयोग्य छे एवा दरेक संस्कारने पाछो हठाववो अने भूंसी नांखवो, अने एकदम समग्र शान्तिमां आववुं केवुं सहेलुं छे.

३. तारे माटे योग्य थवाने जे कुदरतप्रमाणे होय ते दरेक शब्द अने कृत्यविषे विचार कर; अने जे ठपको कोइ लोकोतरफथी आवे छे तेथी तेम ज तेमना शब्दोथी तुं तारे रस्तेथी आडो जइश नहि, पण जो कोइ वस्तु करवा के कहेवा जेवी सारी होय तो तेने तुं तारे माटे अयोग्य गणीश नहि. केम के ते मनुष्योने अमुक दोरनार सिद्धान्तो होय छे तथा तेओ पोतानी अमुक लागणीने अनुसरे छे; ते वस्तुओनी तुं दरकार कर नहि; पण तारी पोतानी प्रकृति अने सर्वसामान्य प्रकृतिने अनुसरतो सीधो आगळ वध्ये जा; अने (तारी प्रकृति तथा सर्वसामान्य प्रकृति) ए बंनेनो रस्तो एक ज छे.

४. जे तत्वमांथी हुं हमेश श्वास लेउं छुं ते ज तत्वमां मारो श्वास छोडीने, जे पृथ्वीमांथी मारा पिताए वीर्य अने माताए रज-सनो तथा मारी धावे दुधनो संचय कर्यो, जेमांथी आटलां बधां वर्षो मने खानपान पूरां पाडवामां आव्यां, जेना उपर हुं पग मूकुं छुं त्यारे अने आटलां बधां कामोमाटे हुं तेनो दुरुपयोग करुं छुं त्यारे जे मने धारण करी राखे छे, ते ज पृथ्वीउपर पडीने हुं

जमीनदोस्त थइश अने विरमीश त्यांलगी जे कुदरतप्रमाणे बन्या करे छे ते वस्तुओमां थइने हुं चाल्यो जाउं छुं.

५. तुं कहे छे, माणसो तारी वार्त्ताविनोदनी शक्तिने वखाणी शकता नथी–भले एम हो; पण बीजी घणी वस्तुओ छे के जेओ विषे तुं एम कही शके तेम नथी के कुदरतवडे हुं तेओमाटे नथी सृजायो. त्यारे जे गुणो केवळ तारी सत्तामां होय एवा गुणो तुं दर्शाव,–(जेवा के) निखालसपणुं, गंभीरता, श्रमसहिष्णुता, मोजशोखप्रत्ये अभाव, तारे भागे जे आव्युं होय तेथी तथा थोडी वस्तुओथी संतोष, परहितैषा, भोळापणुं, अतिपरिग्रहनी अरुचि, क्षुद्र चेष्टाथी रहितपणुं, उदारमन. जेमां कुदरती अशक्तता अने अयोग्यतानुं कांइ पण व्हानुं नथी एवा केटला बधा गुणो दर्शावी आपवाने तुं हाल तत्काळ ज शक्तिमान् छे ते तुं जोतो नथी ? अने ते छतां तुं जाणी बुजीने निर्धारेला निशानकरतां हेठळ रहे छेः अथवा तो कुदरतवडे खामीभरेली रीत्ये तने सामग्री पूरी पाडवामा आवेली होवाथी बडबडवाने, अने कंजुस थवाने, अने खुशामद करवाने, अने तारा निर्माल्य शरीरनो दोष काढ्या करवाने, अने माणसोने खुशी करवाने प्रयत्न करवाने, अने मोटो देखाव करवाने, अने तारा मनमां आटलो बेचेन थवाने तने शुं फरज पाडवामां आवी छे ? देवोना सोगनउपर कहुं छुं के एम तो नथी जः पण तुं आ बाबतोमांथी घणा लांबा वखत उपर मुक्त करायो होत. फक्त जो खरुं जोतां समजवामां कांइक मंद अथवा ठंडो होवाने माटे तारा उपर दोषारोप न थइ शके तेम होय, तो तारे आ बाबतमां पण–तेनी उपेक्षा कर्याविना तेम ज तारी बुद्धिनी मंदतामां आनंद नहि मानतां–तारे (ते बुद्धिनी मंदता दूर करवाने) प्रयत्न करवो जोइये.

६. एक माणस, ज्यारे तेणे बीजानी कांइ सेवा करी होय छे त्यारे तेणे ते बीजा माणस उपर कांइ महेरबानी करी होय तेम

તેને નામે માંડવા તૈયાર હોય છે. બીજો માણસ આમ કરવાને તૈયાર હોતો નથી, તોપણ તેના મનમાં તે પેલા બીજા માણસને પોતાના દેણદારતરીકે ગણે છે અને તેણે પોતે જે કર્યું છે તે તે જાણે છે. એક ત્રીજો માણસ જે તેણે કર્યું હોય છે તે એક રીત્યે જાણતો પણ નથી, પણ જેણે દ્રાક્ષો ઉત્પન્ન કરી છે એવા એક દ્રાક્ષના વેલાની પેઠે તેનું પોતાનું ફળ એક વાર ઉત્પન્ન કર્યાપછી બીજા કશાને શોધતો જ નથી. દોડ્યા પછી ઘોડો, શિકારને પકડી પાડ્યા પછી કુતરો, મધ બનાવ્યા પછી મધમાંખી, જેમ બીજાઓને આવીને તે જોવાને માટે બોલાવતાં નથી, તેમ એક માણસ એક ભલું કામ કર્યા પછી તે બીજાઓને આવીને જોવાને બોલાવતો નથી, પણ જેમ દ્રાક્ષનો વેલો મોશમમાં બીજી દ્રાક્ષ ઉત્પન્ન કરવા આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે તે બીજું કૃત્ય કરવા આગળ વધે છે. ત્યારે એક રીત્યે આગળ પાછળ જોયાવિના જેઓ કામ કર્યે જાય છે તેવાં પેલાં પૈકીના એક માણસે પણ થવું જોઇયે ?—હા. પણ તેમાં આ એક જ બાબત જરૂરની છે, તે એ કે માણસ પોતે જે કરે છે તે ધ્યાનમાં રાખવું તેઃ કારણ કે એમ કહી શકાય કે—પોતે સામાજિક રીત્યે કામ કરે છે એમ સમજવું તથા તેનો સામાજિક ભાગીદાર પણ તે સમજે એમ ઇચ્છવું એ બેશક, એક સામાજિક પ્રાણિનું લક્ષણ છે.—જે તું કહે છે તે સાચું છે, પણ જે હાલ કહેવામાં આવે છે તે તું ખરી રીત્યે સમજતો નથીઃ અને આ કારણને લીધે, જેઓના વિષે હું આગળ બોલી ગયો તેવા માણસોમાંનો એક તું પણ થઇશ, કેમ કે તેઓ પણ અમુક તર્કાભાસથી ખોટે માર્ગે દોરાઇ જાય છે. પણ જે કહેવામાં આવે છે તેનો અર્થ સમજવાનું તું પસંદ કરીશ તો તેથી કોઇ સામાજિક કાર્ય કરવાનું તારાથી પડતું મહેલાશે એવો ભય તું રાખીશ નહિ.

૭. એથેન્સ્ નગરના વાસીઓની પ્રાર્થના (જુઓ): હે પ્રિય (દિવસ્પતિ !) ઝ્યુસ્ ! એથેન્સવાસીઓનાં ખેડેલાં ખેતરોઉપર

अने मेदानोउपर वर्षो, वर्षो.—खरुं जोतां आपणे कांइ पण याचना करवी ज जोइये नहि, अथवा आवी सादी अने उमदा पद्धतिमां याचना करवी जोइये.

८. (वैद्यराज) एस्क्युलेपियसे आ माणसने घोडे बेसवानी कसरत करवानुं, अथवा ठंडापाणीथी न्हावानुं, अथवा पगरखां पहेर्या विना चालवानुं बताव्युं छे एम कहेवामां आवे छे त्यारे जेम आपणे समजिये ए छिये; तेम ज ज्यारे एम कहेवामां आवे के विश्वनी कुदरते आ माणसने माटे व्याधि अथवा खोड अथवा हानि अथवा एवी जातनुं बीजुं कांइ निर्दिष्ट कर्युं छे (एम कहेवामां आवे) त्यारे पण आपणे समजवुं जोइये. केम के पहेला दाखलामां तो 'निर्दिष्ट करवुं' एनो अर्थ ज कांइक आवो छेः—तेणे आ माणसने माटे आरोग्य प्राप्तिमाटे योग्य बाबततरीके आ बताव्युं; अने बीजा दाखलामां तेनो अर्थ एवो छे के—जे दरेक माणसने आवी पडे छे (अथवा योग्य बने छे) ते एक रीत्ये तेना कर्मलेखने अनुरूप ठराववामां आवेलुं होय छे. केम के जेम भींतो अथवा पिरामिडोमां चोरस बनावेला पथ्थरो ज्यारे ते कोइ प्रकारना संबंधमां एक बीजा साथे बंधबेसता आवे छे त्यारे कारीगरो कहे छे के ते योग्य छे, तेम आपणे ज्यारे कहिये छिये के अमुक बाबतो आपणने योग्य छे त्यारे जे कहेवानो अर्थ छे ते आ छे. केम के तेमां एक सरखुं योग्यपणुं (बंधबेसतापणुं) छे. अने जेम सघळां शरीरोमांथी आ विश्वनुं शरीर पण जेवुं छे तेवुं बनेलुं छे, तेम सघळां अस्तित्व धरावतां कारणोमांथी आवश्यकता (नियत भावि) जे कारणरूपे छे ते कारणरूपे बनेल छे. अने जेओ केवळ अज्ञान छे तेओ पण मारा कहेवानो अर्थ समजे छे, केम के तेओ कहे छे के—(अवश्यंभाविताए, नियतिए) अमुक माणसने आ प्राप्त कराव्युं. त्यारे आ तेने प्राप्त थयुं छे अने आ तेने

---

१. आ कलममां Sumbaigeig शब्दना अर्थउपर रमत चलावेली छे.

माटे निर्दिष्ट करायलुं हतुं. त्यारे आ वस्तुओनो तेम ज जे (वैद्य-राज) एस्क्युलेपियस् निर्दिष्ट करे छे ते वस्तुओनो आपणने स्वीकार करवा द्यो. तेणे निर्दिष्ट करेला उपायोमां अलबत घणा उपायो तो (आपणने) रुचे नहि तेवा पण होय छे, पण आरोग्यनी आशामां आपणे तेओने स्वीकारिये छिये. जे सामान्य कुदरतने सारु लागे तेवुं वस्तुओनुं पूर्ण थवुं अने सिद्ध थवुं ते तारावडे तारी तन्दुरस्ती जेवा ज प्रकारनुं गणावा दे. अने जो के ते तने अणगमतुं लागे तो पण जे बने छे ते दरेक वस्तुने तुं ते ज प्रमाणे स्वीकार, केम के ते आ परिणाम तरफ लेइ जाय छे,– अर्थात् विश्वनी तन्दुरस्ती अने झ्युस (विश्व)नी आबादी अने सुख तरफ लेइ जाय छे. केम के जो आखा विश्वने माटे ते उप-योगी न होत तो झ्युसे (अर्थात् विश्वात्माए) माणस उपर जे कांइ आणेलुं होय छे ते ते आणत ज नहि. वळी कोइ पण वस्तुनी प्रकृति, गमे ते होय तो पण तेथी जेनुं नियमन थाय छे तेने योग्य न होय एवुं कांइ पण ते करावती नथी. त्यारे तारा उपर जे कांइ आवी पडे छे तेथी तारे बे कारणोथी संतुष्ट रहेवुं जोइये; एक कारण तो ए के ते तारे माटे करायलुं हतुं अने तारे माटे निर्धारित हतुं, अने तारा नियत प्रारब्धसाथे कतायलां घणा ज प्राक्तन कारणोमांथी पहेलेथी एक रीत्ये ते तने उद्देशीने ज हतुं; अने बीजुं कारण ए के जे कांइ दरेक माणसने निराळी रीत्ये प्राप्त थाय छे ते पण विश्वनियामक सत्ताने तो सुख अने पूर्णतानुं कारण होय छे एटलुं ज नहि पण वळी ते तो ते सत्ताना सांतत्य (एटले चालुपणा)नुं कारण पण होय छे. विभागो अथवा तो कारणो ए बेमांथी एकना पण संबंध अने प्रवाहमांथी जो तुं कांइ पण जुदुं कापी काढे तो आखी रचनानुं अखंडितपणुं तूटी जाय छे. अने ज्यारे तुं असंतोष पामे छे, त्यारे तुं तारी सत्तामां होय तेटले अंशे (कांइ पण) कापीने जुदुं पाडे छे अने कांइ पण वस्तुने

तुं तारा रस्तामांथी दूर करवाने एक रीत्ये प्रयत्न करे छे.

९. जो खरा सिद्धान्त प्रमाणे दरेक वस्तु करवामां तुं फतेहमंद न थाय तो तुं कंटाळीश नहि, तेम ज निराश थइश नहि, तेम ज असंतुष्ट थइश नहि; पण ज्यारे तुं निष्फळ थयो होय त्यारे तुं फरीने पाछो आवजे, अने जे तुं करे छे तेनो वधारे मोटो भाग जो मनुष्यना स्वभाव साथे बंध बेसतो होय तो तुं संतोष पामजे अने तुं जे आनी प्रत्ये पाछो फरीने आवे छे तेने चहाजे; पण तत्त्वज्ञान जाणे तारुं धणी होय तेम तेनो (एटले तत्त्वज्ञाननो) आश्रय लेइश नहि, पण जेओनी आंख्यो आवेली होय तेओ पेठे वर्त्त अने वादळीनो कडको अने ईंडानी रसी लगाड अथवा बीजो कोइ कोइ लेप लगाडे छे, अथवा पाणीनां पोतां मूके छे तेम तुं करजे. केम के आ प्रमाणे तुं बुद्धि शक्तिनी आज्ञा मानवामां निष्फळ थइश नहि, अने तुं ते बुद्धिशक्तिमां विश्रान्ति पामीश. अने याद राख के तारी प्रकृतिने जे जोइये छिये ते वस्तुओ ज तत्त्वज्ञानने पण जोइये छिये; पण तारी इच्छा तो जे प्रकृति प्रमाणे नथी तेवुं बीजुं कांइक मेळववानी होय,—तेनी मना करवामां आवे, (तारा मनमां तो एम होय के) शामाटे (एम थाय), हुं आ (जे करुं छुं) तेनाथी वधारे अनुकूळ शुं छे? पण आपणने मोजशोख ठगे छे तेनुं आ कारण नथी शुं? अने मोटुं मन, स्वतंत्रता, सादाइ, समचित्तता, पवित्रता शुं वधारे रुचिकर नथी के?—तेनो विचार कर. कारण के, ज्यारे समजवानी शक्ति अने ज्ञान उपर जे आधार राखे छे ते सघळी वस्तुओनी सलामती अने सुखमय गतिविषे तुं विचार करे छे, त्यारे खुद डहापण करतां शुं वधारे रुचिकर छे?

१०. वस्तुओ एवा प्रकारना आवरणमां रहेली छे के तेओ, थोडा अने साधारण तत्त्वचिन्तकोने नहि, पण घणा अने असाधारण तत्त्वचिन्तकोने केवळ न समजी शकाय तेवी जणाइ छे;

एटलुं ज नहि पण खुद विरक्त तत्त्वज्ञानीओने पण तेओ समजवी कठण जणाय छे. अने आपणे करेलो सघळो स्वीकार ते फरी जाय तेवो होय छे; केम के जे माणसनो मत कदी फरतो नथी एवो माणस छे क्यां ? त्यारे तारा विचारोने खुद तेमना विषयरूप पदार्थो प्रत्ये तुं लेइ जा, अने विचार के ते पदार्थो केवा टुंका आयुष्यवाळा अने निर्माल्य छे, अने वळी तेओ कोइ गंधाता कृपणना, अथवा कोइ कूटणीना, अथवा कोइ लुटाराना कबजामां होय छे. पछी जेओ तारी साथे रहे छे तेओनी नीति तरफ फर, अने तेओमांना सउथी अनुकूळ माणसो पण भाग्ये ज वेठी शकाय एवा होय छे; माणस पोते पोताने ज वेठी लेवाने मुश्केलीथी समर्थ थाय छे एविषे तो आपणे कांइ कहेता ज नथी. तो पछी आवा अंधकारमां अने कादवमां अने पदार्थ तथा समय ए बंनेना आवा निरन्तर प्रवाहमां, तथा गतिना अने गतिमान् वस्तुओना (पण) आवा निरंतर प्रवाहमां, घणुं किमती गणवा योग्य शुं छे अथवा तो गंभीरपणे तेनी पाछळ लागवा योग्य पदार्थ पण शो छे ते हुं कल्पी (पण) शकतो नथी. पण तेथी उलटी–पोताने पोतानी मेळे सांत्वन आपवानी, अने कुदरती पृथक्करणनी राह जोवानी अने तेमां थता विलंबथी नहि चीडावानी, अने आ (नीचेना) सिद्धान्तोमां पड्या रहेवानी दरेक माणसनी फरज छेः—एक (सिद्धान्त)तो ए के–जे विश्वनी कुदरतने अनुरूप नथी तेवुं कांइ पण मने थवानुं नथी; अने बीजो (सिद्धान्त) ए के–मारा देव अने अन्तर्यामी विरुद्ध वर्त्तवुं ए मारी शक्तिमां नथीः केम के मने एम वर्त्तवानी फरज पाडे एवो कोइ पण मनुष्य छे ज नहि.

११. हाल मारा आत्माने हुं शामां रोकुं छुं ? प्रत्येक प्रसंगे मारे मने पाताने आ प्रश्न पूछवो जोइये, अने जेने सउ नियामक तत्त्व कहे छे एवुं मारा आ कार्यभागमां शुं छे ? अने मारामां हाल कोनो आत्मा छे ?–एक बाळकनो, के एक युवान माणसनो,

के एक निर्बळ स्त्रीनो, के एक जुलमी राजानो, के एक पाळेला पशुनो, के एक जंगली हेवाननो ? तेनो मारे तपास करवो जोइये.

१२. जे घणाओने सारी जणाय छे एवी चीजो केवा प्रकारनी छे ? आमांथी पण आपणे कांइ शीखी शकिये. जो कोइ माणस अमुक बाबतो—जेवी के डहापण, मिताहर, न्याय, हिमत—वगेरेने खरेखर सारी तरीके समजे, तो ते प्रथम आ बाबतोने समज्या पछी वस्तुतः जे सारुं छे तेनी साथे जे एकरागमां न होय एवी कोइ पण वस्तुने† सांभळवाने सहन करशे नहि.† पण जो कोइ माणस जे बाबतो घणा माणसोने सारी तरीके जणाय छे एवी बाबतोने सारी तरीके प्रथम समज्यो हशे, तो कोइ हास्यरसिक लेखके जे कहेली हशे ते बाबतने घणी प्रसंगोचित गणीने सांभळशे अने तरत स्वीकारशे.† आ प्रमाणे घणा माणसो पण फरक समजे छे.† कारण के जो एम न होय तो, (पहेलुं तो) आ *कथनथी कोइने खोटुं लागे नहि अने तेनो अनादर करवामां आवे नहि, केम के ज्यारे ते कथन समृद्धि तथा जे मोजशोख अने कीर्त्ति वधारे छे ते साधनोविषे कहेवामां आवे छे त्यारे आपणे ते कथनने योग्य रीत्ये अने खूबी भरेली रीत्ये कहेला तरीके आदर आपिये छिये. तो आगळ चालो अने पूछो के—'जेनी पासे ते (समृद्धि तथा मोजशोख अने कीर्त्ति वधारनारां साधन) होय छे तेने ते बधां पुष्फळ होवाथी ज तेमां तेने पोताने सुख लेवानुं कोइ स्थान

---

* ए कथन आ छेः—'जेने समृद्धि तथा मोज शोख अने कीर्त्ति वधारनारां साधन प्राप्त होय छे तेने ते बधुं पुष्कळ होवाथी ज तेमां तेने पोताने सुख लेवानुं कोइ स्थान होतुं नथी.' **प्र. क.**

† आ प्रमाणे घणा माणसो पण फरक समजे छे.† आ वाक्यमां Difference फरकनो अर्थ विनोदमां ग्रहण करवाना भाव अने वस्तुस्थितिवचनो फरकः परिहास अने परमार्थ वचनो फरकः अथवा तो आ वाक्यनो अर्थ एवो पण होय के घणा माणसोना समजवामां पण फरक होय छे. **प्र. क.**

होतुं नथी'–एवा पेला हास्यरसप्रधान लेखकना शब्दो जे वस्तुओने मनमां तेओना प्रथम विचार पछी बरोबर लागु पाडी शकाय ते वस्तुओने आपणे किमती गणवी जोइये अने ते वस्तुओ सारी होय एम विचारवुं जोइये के ?

१३. हुं रूपात्मक अने द्रव्यात्मक वस्तुओनो बनेलो छुं; अने ते बेमांथी एक पण नाश पामीने अभावमां शमी जशे नहि, केम के तेमनो सद्भाव ते कांइ अभावमांथी थयो नथी. त्यारे मारो दरेक भाग विकार पामीने आ विश्वना कोइ पण भागमां परिणाम पामशे, अने ते(भाग) वळी विश्वना बीजा भागमां विकार पामशे, अने एम ने एम आगळ सदा चाल्या ज करशे. अने आवा फेरफारने लीधे ज हुं पण हयातीमां छुं, अने जेओए मने उत्पन्न कर्यो तेओ पण हयातीमां हता, अने बीजी दिशामां पण हमेशने माटे एम ने एम आगळ चाल्या ज करशे. केम के, जो विश्वनुं नियमन (कालचक्रनी गतिना) नियत समय प्रमाणे चालतुं होय तो पण, एम कहेवामां आपणने कांइ प्रतिबंध करतुं नथी.

१४. बुद्धि अने तर्क करवानी कळा (तत्त्वज्ञान) ए एवी शक्तिओ छे के जे तेओने पोताने माटे अने तेओना पोतानां कामोने माटे पूरती छे. तेथी तेओ तेओना पोताना ज प्रथम सिद्धान्तथी उपक्रम करीने तेओनी आगळ जे अन्तिम लक्ष्य मूकवामां आव्युं होय छे ते प्रत्ये तेओ पोतानो रस्तो करे छे; अने आवां कृत्योने 'सत्कृत्यो अथवा खरां कृत्यो' एवुं नाम आपवामां आवे छे तेनुं आ कारण छे, 'सत्कृत्यो अथवा खरां कृत्यो' एवो अर्थ सूचवे छे के ते कृत्यो खरे रस्ते आगळ चाले छे.

१५. जे मनुष्य तरीके मनुष्यनी मालिकीनी नथी एवी आ वस्तुओमांनी कोइ पण वस्तु माणसनी कहेवावी न जोइये. माणसनी पासेथी तेओनी अपेक्षा राखवामां आवती नथी, तेम ज मानव-

प्रकृति ते आपवानुं वचन पण आपती नथी, तेम ज तेओ मानव-प्रकृतिने तेनुं अन्तिम लक्ष्य सिद्ध करावनार साधनरूप पण नथी. तो वळी मनुष्यनुं अन्तिम लक्ष्य आ वस्तुओमां रहेतुं नथी, तेम ज ते अन्तिम लक्ष्यनी सिद्धिमां जे सहायभूत थाय छे ते, अने ते अंतिम लक्ष्य प्रत्ये जवामां जे मदद करे छे ते, जे शुभ छे ते ते नथी. वळी, जो आ वस्तुओमांनी कोइ वस्तु माणसनी मालिकीनी होय तो कोइ पण माणसने माटे ए वस्तुओनो धिक्कार करवो अने पोते ते वस्तुओनी सामे पडवुं व्याजबी नथी; तेम ज, जो खरेखर आ वस्तुओ शुभ होय तो, ते वस्तु पोताने जोइती नथी एम जे माणस बतावे ते माणस प्रशंसाने पात्र नहि थाय, तेम ज जे माणस ए वस्तुओमां पोताने ऊणो राखे छे ते माणस सारो नहि होय. पण हवे आ वस्तुओनो अथवा तेमना जेवी बीजी वस्तुओनो जेम जेम कोइ माणस वधारेने वधारे पोते त्याग करे छे, अथवा तो ज्यारे ते वस्तुओमांनी कोइ तेनी पासेथी पडावी लेवामां आवे छे त्यारे पण ते माणस ते नुकशान वधारे ने वधारे धैर्यपूर्वक सहन करे छे, तेटले ज दरज्जे ते माणस वधारे सारो छे.

१६. तने जेवा विचारो करवानी टेव पडी हशे, तेवो तारा मननो स्वभाव पण थशे; केम के विचारथी जीवात्मा रंगाइ जाय छे. तो जीवात्माने आवा विचारोनी संतत परंपराथी रंग:—दाखला तरीके,—ज्यां माणस रही शके त्यां ते सारी रीत्ये पण रही शके. पण तेने महेलमां रहेवुं पडे तेम छे;—ठीक त्यारे, महेलमां पण ते सारी रीत्ये रही शके तेम छे. अने वळी, विचारो के प्रत्येक वस्तु कोइ पण काम माटे बनावायली होय छे, आ कामने माटे ते बनावायली छे तो ते काम प्रत्ये ते खेंचाइ जाय छे; अने जे प्रत्ये ते खेंचाइ जाय छे तेमां तेनो अंत रहेलो छे: अने ज्यां अंत होय छे, त्यां प्रत्येक वस्तुनो लाभ अने शुभ रहेलुं होय छे. हवे बुद्धि-युक्त प्राणीमाटे जनसमाज ए शुभ छे; केम के आपणे जनसमाज

माटे बनावायला छिये ए उपरे बताववामां आव्युं छे. उतरंता प्रकारनी वस्तुओ चढता प्रकारनी वस्तुओने माटे हयाती धरावे छे ए शुं खुलुं नथी ? पण जे वस्तुओने जीवन होय छे ते वस्तुओ निर्जीव वस्तुओ करतां चढियाती छे; अने जेओ सजीव छे तेओमां जेओने बुद्धि छे तेओ चढियाती छे.

१७. जे अशक्य छे ते मेळववा मथवुं ए गांडपण छेः अने नठारा माणसो एवुं कांइ आवा प्रकारनुं* न करे ए अशक्य छे.

१८. माणस कुदरतथी जे सहन करवाने बनेलो नथी, तेवुं कांइ पण कोइ माणस उपर आवी पडतुं ज नथी. ते ज वस्तुओ बीजाना उपर आवी पडे छे, अने ते आवी पडी छे एम ते माणस जोतो नथी तेथी अथवा तो ते वधारे दम भीडे तेथी ते दृढ रहे छे अने तेने कांइ इजा थती नथी. त्यारे अज्ञान अने दंभ जो डहापण करतां वधारे मजबूत होय तो ए एक शरमनी वात छे.

१९. पोते वस्तुओ आत्माने स्पर्श करती नथी, एक लेशमात्र पण स्पर्श करती नथी; तेम ज तेओनो आत्मा आगळ प्रवेश पण नथी, तेओ आत्माने फेरवी शकती नथी अने असर पण करती नथीः पण एकलो आत्मा पोते ज पोतामां फेरफार करे छे अने पोताने असर करे छे, अने जे जे ठरावो करवा आत्माने योग्य लागे तेवा तेवा ठरावो ते आत्मा पोताने माटे अने जे वस्तुओ पोते तेनी आगळ रजु थाय छे ते वस्तुओविषे करे छे.

२०. जेटले दरज्जे मनुष्योनुं हुं भलुं करुं अने तेओने हुं वेठी लेउं एटले दरज्जे, एक रीत्ये मनुष्यजाति ए मने निकटमां निकट वस्तु छे. पण मारां योग्य कृत्योमां माणसो पोते अडचणरूप थइ पडे छे तेटले अंशे, माणस ए मने सूर्य, पवन अने जंगली पशु

---

२. ३. १. * नठारुं.

जेटलो ज उपेक्षापात्र वस्तुओमांनो एक थइ पडे छे. हवे ए वात खरी छे के आ माणसो मारा कृत्यने अडचण करी शके, पण जेमनामां स्थिति प्रमाणे वर्त्तवानी अने बदलावानी शक्ति छे एवी मारी रीतभातने अने स्वभावने तेओ कोइ अडचणोरूप नथीः केम के मन तेनी प्रवृत्तिने प्रतिबंधरूप एवी दरेक वस्तुने एक मदद-ना आकारमां फेरवी नाखे छे अने बदली नाखे छे; अने तेथी जे एक प्रतिबंधरूप होय छे तेने ते कार्यनुं साधक बनाववामां आवे छे; अने तेथी रस्ता उपर जे आपणने अडचणरूप होय छे ते ज आपणने रस्तामां मदद करे छे.

२१. विश्वमां जे उत्तम वस्तु होय ते प्रत्ये पूज्यभाव राख; अने आ एवी बाबत छे के जे सघळी वस्तुओने उपयोगमां ले छे अने सघळी वस्तुओनुं नियमन करे छे. अने तेवी ज रीत्ये तारा पोता-नामां जे उत्तम वस्तु होय तेनी प्रत्ये पण पूज्यभाव राख; अने आ पण पेलानी जेवी ज जातनुं छे. केम के तारा पोतामां पण जे दरेक बीजी वस्तुने उपयोगमां ले छे ते आ छे, अने तारा जीवननुं नियमन पण आनाथी ज कराय छे.

२२. जे राज्यने कांइ हानि करतुं नथी, ते ते राज्यना नगर-वासीने पण कांइ हानि करतुं नथी. हानिना दरेक देखावनी बाबतमां आ नियम लागु पाडः जो आथी राज्यने काइ इजा नथी थती तो मने पण थती नथी. पण जो राज्यने इजा करवामां आवे तो जे माणस राज्यने इजा करे छे तेना उपर तारे गुस्से थवुं जोइये नहि. ते माणसनी भूल क्यां छे ते तेने बताव.

२३. जे वस्तुओ छे अने जे वस्तुओ उत्पन्न करवामां आवे छे ते बंने अस्तुओ जे त्वराथी चाली जाय छे अने अदृश्य थइ जाय छे तेनो वारंवार विचार कर. केम के द्रव्य (=पदार्थ) संतत वहेती नदी समान छे, अने वस्तुओनी प्रवृत्तिओ निरंतर बदलाया करे छे, अने कारणो असंख्य प्रकारे कार्य करे छे; अने जे स्थिर

रहे एवुं कांइ भाग्ये ज छे. अने जेमां सर्व वस्तुओ अदृश्य थइ जाय छे एवो भूत अने भविष्यनो–जेनी कांइ हद नथी एवो–खाडो, जे आ तारी निकट छे तेनो विचार कर. त्यारे जे माणस आवी वस्तुओथी फुलाइ जाय छे, अथवा तेविषे मरकी लागी होय एम मरवा पडे छे अने पोताने कंगाल बनावे छे ते माणस केम मूर्ख नहि? केम के ते वस्तुओ तेने एक समय अने ते पण थोडो समय हेरान करे छे.

२४. आ विश्वनुं द्रव्य (पदार्थ) के जेनो घणो थोडो भाग तारी पासे छे तेनो विचार कर; अने आ विश्वनो समय के जेनो एक टूंको अने अविभाज्य भाग तने आपवामां आव्यो छे तेनो विचार कर; अने नियतिए जे नक्की करेलुं छे, अने तेनो केटलो थोडो भाग तुं छे तेनो विचार कर.

२५. बीजो माणस मने खोटुं करे छे? मने ते जोवा दो. तेने तेनो पोतानो स्वभाव अने क्रियाशक्ति छे. हवे विश्वनी प्रकृति जे मारी पासे होवुं इच्छे छे ते मारी पासे छे; अने मारी प्रकृति मारी पासे जे कराववुं इच्छे छे ते हुं करुं छुं.

२६. सुखनी अथवा दुःखनी जे गतिओ (शरीरना) मांसमां थाय तेथी जे दोरे छे अने काबु राखे छे एवा तारा आत्माना भागने तुं अविकळ रहेवा दे; अने तेने तुं ते सुखदुःख साथे तदात्म थवा दे नहि, पण ते भागने पोतानी मेळे चारे तरफथी निराळो पाडी देवा दे अने सुखदुःखनी असरोने तेमना ज भागोनी हदमां राख. पण ज्यारे पेलुं बीजुं संवेदन के जे कुदरती रीत्ये एक आखा शरीरमां अस्तित्व धरावे छे तेने प्रतापे सुखदुःखनी असरो मनलगी पहोचे त्यारे तारे ते लागणीना सामा थवा यत्न करवो जोइये नहि, केम के ते लागणी स्वाभाविक छेः पण ते लागणी सारी छे के खोटी छे तेवो अभिप्राय तारा नियामक भागने ते लागणीमां तुं उमेरवा देइश नहि.

२७. देवोनी साथे रहो.—अने ते ज मनुष्य देवोनी साथे रहे छे के जे तेओने निरंतर एम बतावी आपे छे के तेने पोताने माटे जे निर्माण थयुं छे तेथी तेनो पोतानो आत्मा संतुष्ट छे, तथा देवाधिदेवे प्रत्येक मनुष्यने जे पोतानो अंश तेनो रक्षक अने नेता थवाने आपेलो छे ते अंतर्यामिनी इच्छा प्रमाणे सघळुं करे छे.— अने आ (अंतर्यामी) ते प्रत्येक मनुष्यनी समजण तथा बुद्धि छे.

२८. जे माणसनी बगलो गंधाय छे तेथी तुं गुस्से छे? जेनुं मोढुं दुर्गन्ध मारे छे ते माणसथी तुं गुस्से छे? तेने एवुं मोढुं छे, तेने एवी बगलो छेः आवी वस्तुओमांथी जरूर एवी बदबो आववी ज जोइये,—पण ते माणसमां बुद्धि छे; एम कहेवामां आवशे, अने जो ते तस्दी ले तो ते जाणी शके तेम छे के ते शी बाबतमां बीजानो दोष करे छे.—हुं तारा आ शोधने माटे तारुं कुशळ इच्छुं छुं. ठीक त्यारे, अने तारे बुद्धि छेः तारी बुद्धिशक्तिथी तेनी बुद्धिशक्तिने जाग्रत कर; तेने तेनी भूल बताव, तेने शीखामण आप. केम के जो ते ते सांभळशे, तो तुं तेनो दोष मटाडीश, अने गुस्से थवानी कांइ जरूर नथी. († एक करुणरस-प्रधान नट पण नहि अने एक कुलटा पण नहि. †)[3]

---

३. आ अपूर्ण छे अथवा अशुद्ध छे, अथवा अपूर्ण अने अशुद्ध बंने छे. कलम २९ मीना आरंभमां पण कांइक खोटुं अथवा अशुद्ध छे, ज्यां आगळ ते (एन्टोनिनस्) कहे छे के os exelthon zen dianoe जेनो तरजुमो गेटेकर् आ प्रमाणे करे छे—"जाणे तुं जीवन त्यजवानी तैयारीमां होय;" पण आपणे exelthon नो अर्थ ए रीते करी शकिये तेम नथी. बीजां भाषान्तरो कांइ आथी घणां वधारे संतोषकारक नथी. में तेनुं अक्षरशः भाषान्तर कर्युं छे अने ते अधुरुं रहेवा दीधुं छे.

(इंग्रेजी अनुवादकर्त्तानी टीपणी उपर प्रमाणे छे. पण तेमना भाषान्तर उपरथी मने एन्टोनिनसनो कहेवानो भावार्थ एवो जणाय छे के जो कोइनुं मोढुं गंधातुं होय अथवा बगल गंधाती होय तो तेने शीखामण अथवा चेतवणी आपवी बस छे, के जेथी ते सुधरे; पण एक शोकरस नाटकना नटनी

२९. ज्यारे तुं बहार§ गयो होय त्यारे जेवी रीत्ये रहेवानो इरादो राखे छे,** तेम रहेवानुं अहीं पण तारी सत्तामां छे. पण जो मनुष्यो तने एम रहेवा देतां न होय, तो तुं जीवन बहार निकळी जा, अने ते पण एवी रीत्ये (निकळी जा) के जाणे तुं कांइ इजा भोगवतो न होय ते रीत्ये (निकळी जा). घर धुमाडावाळुं छे अने हुं ते छोडी देउं छुं.[४] आ एक अडचण छे एम तुं शामाटे धारे छे ? पण ज्यांलगी मने एवी जातनुं कांइ (जीवन) बहार हांकी काढतुं नथी, त्यांलगी रहुं छुं, स्वतंत्र छुं, अने हुं जे

पेठे ते गंध बाबत दिलगीरीनुं प्रदर्शन करवानी जरूर नथी, तेम ज एक कुलटानी पेठे तेविषे चाळा करवानी पण जरूर नथी. प्र० क०

§ बहार एटले जीवती स्थितिबहार निकळी गयो होय; अर्थात् तुं मरी गयो होय. आ कलममांथी तेमज ५. २९; ८. ४७ (पेटा भाग एफ्); १०. ८ (१. २७). ए कलमोमांथी माणसने खास कारणो होय तो ते आपघात करे एवो भास थाय छे. प्र० क०

४. एपिक्टेटस्, १. २५. १८.

उपर आपेली मारी§ चिन्हवाळी टिप्पणीमां दर्शाव्या प्रमाणे आपघात करवानां कांइ खास कारणो होय तो माणस आपघात करे एवो भास थाय छे, पण एन्टोनिनसनो कहेवानो एवो हेतु होय एम खुल्लुं समजी शकातुं नथी. अने एन्टोनिनसनो सिद्धान्त सर्व स्थितिमां विश्वव्यवस्थाने सर्वांगसंपूर्ण समजी संतोषमां रहेवाना उपदेशरूप छे, तेथी आपघात करवानी कोइ पण अनुमतिना वलणवाळो भाव तेमनां वाक्यो उपरथी काढी शकाय नहि. छतां तेमनां वाक्योमां 'आपघात करवानी अनिवार्यता जेवी स्थिति होय तो पण ते स्थितिनां कारणोने दुःखरूप के प्रतिकूळ मान्या विना संतोषथी आपघात करवो' एवो ध्वनि तेमना वाक्यो उपरथी निकळतो भासे छे. आनो अर्थ हुं तो एटलो समजु छुं के—**'मनुष्य जाति'प्रत्ये** एन्टोनिनसने जे **प्रेम** छे, तेवो प्रेम कदी पण डगवा देवो नहि, पछी भलेने आपघात करवा जेवी अति विकट दशानी पराकाष्ठा आवी होय. तात्पर्य के प्राणान्ते पण सद्गुण तजवो नहि तेम ज सद्गुण अर्थे कोइ आपणा प्राण ले तो पण भले; तेनी साथे मनुष्यजातिप्रत्येनो प्रेम चळावीने दुःख के प्रतिकूळता मानवी नहि एवो अर्थवाद मात्र एमां छे. प्र० क०

चाहुं ते करवाने मने कोइ माणस अटकावशे नहि; अने जे बुद्धियुक्त तथा सामाजिक प्राणिना स्वभाव प्रमाणे छे ते करवानुं हुं पसंद करुं छुं.

३०. विश्वनी बुद्धि सामाजिक छे. ते प्रमाणे विश्वे उतरता प्रकारनी वस्तुओने चढता प्रकारनी वस्तुओने अर्थे बनावी छे, अने चढता प्रकारनी वस्तुओने एक बीजानी साथे जोडी दीधी छे. तुं जुवे छे के विश्वे दरेक वस्तुने बीजीनी नीचे केवी मूकी छे, दरेक वस्तुने केवी समकक्षामां मूकी छे अने तेने योग्य स्थान आपेलुं छे, तथा जे वस्तुओ उत्तम छे तेमने एकबीजा साथे एकरागमां आणी छे.

३१. तुं देवोप्रत्ये, तारा मातापिताप्रत्ये, भाइओप्रत्ये, बाळकोप्रत्ये, शिक्षकोप्रत्ये, जेमणे तारा बाळपणामां तारी संभाळ राखी तेओप्रत्ये, तारा मित्रोप्रत्ये, सगांप्रत्ये अने तारा दासोप्रत्ये अद्यापिलगी केवी रीत्ये वर्त्यो छे?

करणी के के'णीथी, अशुभ कोइ जननुं न कदी कीधुं.

ए लींटी ताराविषे कही 'शकाय एवी रीत्ये सघलाप्रत्ये तुं हजुलगी वर्त्यो छे के नहि तेनो तुं विचार कर. अने केटली बधी वस्तुओमां थइने तुं पसार करी गयो छे, तथा केटली बधी वस्तुओने सहन करवाने तुं शक्तिमान् थयो छे ते बंने बाबतो; तथा तारा जीवननो इतिहास हवे पूरो थयो छे अने तारी नोकरीनो छेडो आव्यो छे ते; तथा केटली बधी सुंदर वस्तुओ तें जोइ छे ते; तथा केटली बधी मोजमजा अने दुःखोने तें धिक्कारी काढ्यां छे ते; अने मानवंत कहेवाती केटली बधी वस्तुओने तें तुच्छ गणी छे ते; अने दुष्ट अंतःकरणवाळा केटला बधा मनुष्योने तें मायाळु स्वभाव दर्शाव्यो छे ते;—तुं तारी स्मृतिमां आण.

३२. कुशळतारहित अने अज्ञान जीवो कुशळता अने ज्ञान धरावनार जीवने शामाटे विक्षेप करे छे? त्यारे किया जीवने कुशळता अने ज्ञान छे? ते ज जीवने कुशळता अने ज्ञान होय छे के जे जीव आदिने अने अंतने जाणे छे, तथा जे बुद्धितत्त्व सघळा पदार्थमां व्यापी रहेलुं छे अने नियत युगचक्रोथी विश्वनुं नियमन करे छे ते बुद्धितत्त्वने जे जाणे छे.

३३. सत्वर, घणो ज सत्वर, तुं भस्म अथवा हाडपिंजर थइ जइश, अने तारुं नाममात्र रहेशे अथवा नाममात्र पण नहि रहे; पण नाम तो अवाज अने पडघो छे. अने जे वस्तुओनी जीवनमां घणी किमत आंकवामां आवे छे ते वस्तुओ तो खाली तथा खवाइ गयेली अने तुच्छ होय छे, अने ते वस्तुओ नानां कुतरांओनी पेठे एक बीजाने बचकां भरे छे, अने नानां छोकरांनी पेठे कजिया करे छे, हसे छे, अने पछी उभी वाटे रोती रोती चाली जाय छे. पण विश्वास अने विनय अने न्याय अने सत्य तो–'आ विशाल पथरायली जमीन उपरथी ओलिंपस् (देवोने रहेवाना) पर्वत उपर ज नाशी गयां छे.'

हेसियोड्, ग्रंथो वगेरे. ५. १९७

जो इन्द्रियना विषयो सहेलाइथी विकार पामे छे अने कदी स्थिर रहेता नथी अने ज्ञानेन्द्रियो मंद छे अने सहेलाइथी खोटुं भान मेळवे छे; अने बिचारो आत्मा पोते रुधिरमांथी निकळेलो एक उद्गारमात्र छे, त्यारे जे तने अहीं रोकी राखे छे एवुं शुं छे? पण आवी दुनियामां सारी प्रतिष्ठा प्राप्त करवी ए एक खाली बाबत छे. तो चाहे तो जे नाश होय के अवस्थान्तर होय तेवा तारा अंतमाटे तुं शान्तिथी राह केम जोतो नथी? अने ते समय आवे त्यांलगी शुं पूरतुं छे? देवोनी प्रत्ये पूज्यभाव राखवो अने तेमने धन्यवाद आपवो, अने मनुष्योनुं भलुं करवुं, अने

तितिक्षा अने आत्मदमन सेववा करतां बीजुं शुं विशेष जोइये ?[५] पण जे आ बिचारा मांस अने प्राणनी सत्तामर्यादानी पेली पार छे एवी दरेक वस्तुविषे तो याद राखवुं के आ तारुं नथी तेम ज तारी सत्तामां पण नथी एटलुं याद राखवा करतां बीजुं शुं विशेष जोइये ?

३४. जो तुं खरे रस्ते चाली शके नहि, तथा खरे रस्ते विचारी अने वर्त्ती शके नहि, तो तुं तारी जिंदगीने सुखना समतायोग्य प्रवाहमां गाळी शके नहि. आ बे बाबतो देव तेम ज मनुष्य ए बंनेना आत्माने, अने दरेक बुद्धियुक्त प्राणिना आत्माने सामान्य होय छे,—एक तो बीजा कशाथी खाळी नहि शकावुं ते; अने बीजुं, न्यायप्रत्येना वळणमां अने तेनो अमल करवामां एकधारा टकी रहेवुं ते, अने आमां तारी इच्छाने पर्यवसान पामवा देवी ते.

३५. जो आ मारुं भुंडापणुं नथी, अने मारा भुंडापणानी असर नथी, तथा (तेथी जो विश्वना) सर्वसामान्य कल्याणने हानि पहोचती नथी, तो तेविषे हुं शामाटे व्याकुल थाउ छुं ? अने सर्वसामान्य कल्याणने हानि ते शुं छे ?

३६. विचार कर्याविना वस्तुओना देखावमात्रथी खेंचाइ जइश नहि, पण तारी शक्ति अने तेओनी योग्यता प्रमाणे सर्वने तुं मदद करजे; अने जो तेओए उपेक्षापात्र बाबतोमां नुकशान सहन कर्युं होय, तो एने तुं नुकशान धारीश नहि. केम के एम धारवुं ते खोटी टेव छे. पण ज्यारे पेलो घरडो माणस जतो रह्यो त्यारे तेणे पोताना पालित बाळकनो भमरडो, ते भमरडो हतो एम याद करीने, पाछो माग्यो तेम आ बाबतमां पण तुं करजे.

---

५. आ विरक्ततत्त्वज्ञानिओनो उपदेश Anechou kai apechou छे. तेनो पहेलो भाग आपणने जेवां माणसो अने वस्तुओ छे तेवांथी ज संतोष पामवानुं शीखवे छे. तेनो बीजो भाग आत्मदमन अथवा आपणा मनोविकारोने कबजामां राखवानो सद्गुण आपणने शीखवे छे.

ज्यारे तुं रोस्ट्रा उपर पोकार पाडे छे, त्यारे हे माणस ! आ वस्तुओ शी छे ते तुं भुली गयो छे के ? हा; पण आ लोकोने ते वस्तुओ घणी काळजीपात्र छे—त्यारे तुं पण आ वस्तुओमाटे मूर्ख बनीश ?–हुं पण एक वार भाग्यशाळी माणस हतो, पण में ते गुमाव्युं, शी रीत्ये गुमाव्युं ते हुं जाणतो नथी–पण भाग्यशाळी एटले जे एक माणसने सद्भाग्य आपवामां आव्युं छे तेः अने सद्भाग्य ते आत्मानो सारो स्वभाव, सारी लागणीओ, अने सारां कृत्यो.[६]

---

६. आ कलम समजाय तेवी नथी. घणा शब्दो अशुद्ध हशे, अने आ कलमनो सामान्य भाव शोधी काढी शकाय तेम नथी. कदाच एक करतां वधारे बाबतो एक कलममां अयोग्य रीत्ये शेळभेळ करवामां आवी छे. में तेनुं लगभग अक्षरशः भाषान्तर कर्युं छे. जुदा जुदा भाषान्तर करनाराओ आ कलमने जुदो जुदो वळोक आपे छे, अने टीकाकारोए जे पोते समजी शके तेम नथी ते सुधारवानो प्रयत्न कीधो छे.   इ. भा. क.

आ ३६ मी कलमनो अर्थ न समजाय तेवो तो छे ज ए इंग्रेजी भाषान्तरकर्त्ताए कह्युं छे, तथा तेणे ए पण खुल्ली रीत्ये कहेलुं छे के टीकाकारो जे पोते समजी शके तेम नथी ते सुधारवानो तेओए प्रयत्न कर्यो छे· कांइ नहि तो एथी एटलुं तो सिद्ध थाय छे के--आ कलमनो अर्थ काढवानो प्रयत्न करवाने घणा माणसो ललचाया छे. तो तेवो एक प्रयत्न हुं पण करुं तो विद्वानो तेने क्षन्तव्य गणशेः—

आ ३६ मी कलमना पहेला पेरेग्राफनो अर्थ–'केम के एम धारवुं ते खोटी टेव छे.' त्यांलगी जोइये तेटलो स्पष्ट छे. पण त्यांथी ते ए प्रथम पेरेग्राफना अंतलगी अर्थ समजी शकाय तेवो नथी. मारा नम्र अभिप्राय प्रमाणे–मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसना जे विचारो अद्यापिलगी आ पुस्तकमां आपणे वांची गया छिये, ते उपरथी ए क्लिष्ट विभागनो अर्थ हुं नीचे प्रमाणे रजु करुं छुंः–'उपेक्षा करवा योग्य क्षुद्र वस्तुओ उपर माणसे नकामी मगजमारी करवी नहि. पण ज्यारे कोइ पण नानी बाबत माटे पण बीजानी खातर आपणी ते याद करवानी फरज होय तो ते याद करवी, पण ज्यां आपणने पोताने के बीजाने तेवी क्षुद्र वस्तुनुं नुकशान थयुं होय के थवानुं होय तो ते माटे नकामी मगज-

मारी करवी नहि. तेना दाखला तरीके आ पेरेग्राफमां पेला घरडा माणसे नोकरी छोडीने जतां पोते उछेरेला छोकरानो भमरडो सरखो पण बीजा माणसनी पासे पाछो माग्यो ए दाखलो आपेलो छेः—कोइ श्रीमाने पोताना छोकराने उछेरवा एक वृद्ध माणस नोकर राखेलो हतो, ते छोकरानो एक भमरडो एक बीजा माणसना छोकराने रमवा आपेलो हतो. पेलो वृद्ध माणस पोतानी नोकरी छोडी जतो हतो, त्यारे पोताना उछेरेला पेला श्रीमंतना छोकरानो भमरडो ए एक तुच्छ वस्तु छे, तोपण ते वृद्धे पेला माणस पासेथी याद करीने ते भमरडो पण पाछो माग्यो. ते प्रमाणे करवुं ज जोइये. केम के नोकरी छोडीने जतां माणसे पोतानी संभाळ नीचे आवेली सघळी वस्तुओनो हवालो सोंपवो ज जोइये. तेथी कोइ आ भमरडा जेवी नजीवी वस्तु खोवाय तो तेनो बदलो आपवा जेवुं आ नुकशान गणवुं जोइये नहि, पण पोतानी फरज तरीके ते याद करीने कोइ पासेथी पाछी लेवानी काळजी तो राखवी ज जोइये. एवो आ पेरेग्राफनो अर्थ सहज विचार करतां, अने बादशाह एन्टोनिनसना फरज संबंधी दृढताविषेना तेम ज क्षुद्र बाबतोमाटे अति श्रम के काळजी न करवाविषेना सिद्धान्तो प्रमाणे प्रासादिक रीत्ये स्पष्ट थाय छे.

हवे बीजा पेरेग्राफनो पण अर्थ जो के न समजाय तेवो छे, तो पण एन्टोनिनसना विचारोनुं स्वरूप लक्षमां राखी विचार करतां सहज अर्थ समजी शकाय तेम छेः—

रोस्ट्रा जो कोइ नदी अथवा बीजुं कोइ स्थान होय के ज्यां मनुष्योनां शव वगेरे एक वार के अनेक वार दहन थतां अने ते मरनाराओनी पाछळ तेमनां सगां मनुष्योने रोतां अने पोकार पाडतां जोइने उद्भवेली तत्त्वभावना आ पेरेग्राफमां एन्टोनिनस् दर्शावे छे. एटली वात मनमां राखीने आ पेरेग्राफ आपणे वांचीशुं तो तेनो अर्थ आपणी आगळ एकदम खुल्लो थइ जशे. आखो अर्थ आ प्रमाणे जणाशेः—

रोस्ट्रा उपर ज्यारे तुं मरनार मनुष्योने दहन करती वखते तेमनां नाम देइ पोकार पाडीने रुवे छे, त्यारे हे माणस! आ मनुष्यना देह ए केवी नाशवान् अने विकारी वस्तुओ छे ते तुं भूली गयो छे के?—हा मनुष्योना देह नाशवान् होवा छतां पण लोको पोतानां सगां संबंधीना देहमाटे घणी काळजी राखे छे, अर्थात् ते देहोने घणी काळजीपात्र वस्तुओ तरीके लोको गणे छे. (आना जवाबमां एन्टोनिनस् ठपकारूपे कहे छेः—) त्यारे तुं पण आवा नश्वर अने विकारी माणसनां शरीरोने माटे मूर्ख बनीने शोक करीश? हुं पण एकवार भाग्यशाळी हतो, अर्थात् मारां पण निकटनां अने प्रिय सगां जीवतां हतां,

पण में ते सद्भाग्य गुमाव्युं अर्थात् मारां ते प्रिय जन गुजरी गयां, शी रीते गुजरी गयां ते हुं जाणतो नथी, तात्पर्य के कर्मनी गहन गति छे. माटे माणसोनां शरीर जे जे कर्म संजोगोने लीधे विविध निमित्ते पडी जाय छे तेना कारणो हुं जाणतो नथी. केम के कोइ पण माणस ते जाणी शकतो नथी.–पण खरुं जोतां भाग्यशाळीनो अर्थ जेने सद्भाग्य आपवामां आव्युं होय ते माणस. जेनी आगळपाछळनी स्थिति एवी होय छे के तेनो स्वभाव सारो रहे, लागणीओ सारी रहे, अने जेनाथी सारां कृत्यो बनी शके तेनुं सद्भाग्य छे–एवुं मनाय छे. तेथी परिस्थिति गमे तेवी होय ते छतां पण आपणो स्वभाव लागणीओ अने कृत्यो सारां रहे तो पण तेने आपणे सद्भाग्य ज गणवुं.–एवो अर्थ एन्टोनिनिसना जे सिद्धान्तो मरण, सुखदुःख अने सद्गुणविषे छे ते उपरथी आ पेरेग्राफमांथी एक सहज विचार करवानो परिश्रम लेतां खुल्ले खुल्लो प्रतीत थाय छे एवुं मारुं नम्र मत छे. प्र० क०



६.

आ विश्वना उपादानकारणरूप पदार्थ ते आज्ञानुकारी अने इच्छा वश छे, अने बुद्धि के जे तेना उपर सत्ता चलावे छे ते-नामां पोतानामां कांइ अशुभ करवाने कारण नथी, केम के तेने कांइ द्वेष नथी, अने ते कोइ वस्तुने अशुभ करती नथी, तेम ज तेनाथी कोइ वस्तु इजा पामती नथी. पण सघळी वस्तुओ आ बुद्धि प्रमाणे बनेली अने पूर्णताए पहोचेली छे.

२. जो तुं तारी फरज बजावतो होय तो तुं ठंडो होय के गरम होय, अने तुं झोकां खातो होय के पेट भरीने उंघी उठ्यो होय, अने तारी निंदा थइ होय के स्तुति थइ होय, अने तुं मरतो होय के बीजुं कांइ करतो होय–तेमां तारे कांइ फरक समजवो नहि. आ जे कामथी आपणे मरिये छिये, ते पण आ जीवननां कर्त्तव्योमांनुं एक छेः तो आ काममां पण जे कर्त्तव्य आपणा हाथमां होय ते सारी रीत्ये करवुं एटले बस छे (६. २२–२८.)

३. तारा अंतरमां जो. कोइ पण वस्तुनो खास गुण तेम ज तेनी किमत तारा ख्यालमांथी जती रहेवा देइश नहि.

४. सघळी हयात वस्तुओ तरत ज विकार पामे छे, अने खरेखर जो कदी सर्वनुं उपादान कारण एक ज छे तो तेओनी वराळ थइ जशे नहि अथवा तेओ विखेराइ जशे नहि.

५. बुद्धि के जे राज्य चलावे छे ते जाणे छे के तेनो पोतानो स्वभाव शो छे, ते शुं करे छे, अने क्या द्रव्य उपर ते काम करे छे.

६. तारुं वेर वाळवानो सउथी सारामां सारो रस्तो ए छे के समा (खोटुं करनारना) जेवा थवुं नहि.

७. संसारना एक काममांथी बीजा काममां जतां परमेश्वरविषे चिन्तन करतो तुं एक वस्तुमां आनंद पाम अने तेमां आराम ले.

८. नियामक तत्त्व ते ए छे के जे पाताने जाग्रत करे छे अने आम तेम वाळे छे, अने ज्यारे ते बीजाने पोते जेवुं छे तेवुं बनावे छे अने पोते जेवुं बनवा इच्छे छे तेवुं पाताने बनावे छे, त्यारे वळी ते जे वस्तु तेने पोताने नजरे पडे छे ते दरेक वस्तुने ते पोतानी इच्छा प्रमाणे जेवी बनाववा इच्छे छे तेवी बनावे छे.

९. विश्वनी प्रकृति प्रमाणे हर एक वस्तु संपूर्ण बनेली होय छे, केम के दरेक वस्तु संपूर्ण बनेली होय छे ते कोइ बीजी प्रकृति प्रमाणे संपूर्ण बनेली होती नथी; अर्थात् जे बहारथी आ प्रकृतिनुं ग्रहण करे छे ते प्रकृति प्रमाणे, अथवा आ प्रकृतिनी अंदर जे प्रकृति समायली छे ते प्रकृति प्रमाणे, अथवा आनाथी बाह्य अने स्वतंत्र एवी कोइ बीजी प्रकृति प्रमाणे संपूर्ण बनेली होती नथी. (११. १, ६. ४०, ८. ५०.)

१०. विश्व ए एक कां तो गोटाळो, अने वस्तुओनो परस्पर गुंचवाडो, अने वेरंखेरं स्थिति छे; अथवा तो ते एक ऐक्य, व्यवस्था, अने विश्वनिर्वाहक संस्था छे. त्यारे जो ते पहेलो कह्यो तेवो गोटाळो होय, तो वस्तुना आवा आकस्मिक संयोगमां अने अव्यवस्थामां शामाटे हुं भटकुं छुं? अने आखरे हुं माटीमां केवी रीत्ये मळी जइश ते बाबत सिवाय बीजी कोइ बाबत माटे हुं शुं करवा काळजी राखुं छुं? अने हुं गमे तेम करुं तो पण मारां पंच तत्त्वो विखराइ जशे तेमाटे शीदने संताप करुं छुं? पण जो बीजुं अनुमान खरुं होय, तो जे विश्वने नियममां राखे छे तेने हुं मान आपुं छुं, अने हुं दृढ छुं, अने ते विश्वनियामक उपर विश्वास राखुं छुं. (४. २७.)

११. ज्यारे तने परिस्थितिवडे कोइ प्रकारे क्षोभ पामवानी जरूर पडाइ होय त्यारे सत्वर तुं तारा आत्मामां पाछो आव अने जरूर पडे ते करतां वधारे लांबो समय तुं बेरागो रहीश नहि;

केम के निरंतर वारंवार आत्मामां निवृत्त थवाथी एकरागता उपर तने वधारे ने वधारे सत्ता प्राप्त थशे.

१२. जो एके काळे तारे सगी मा अने ओरमन मा होय, तो तारे तारी ओरमन माप्रत्ये कर्तव्यपरायण रहेवुं जोइये, पण तोये तारे तारी सगी मा पासे तो वारंवार आववुं जोइये. कचेरी अने तत्त्वचिन्तनने हवे तारी ओरमन मा अने सगी मा जाण: जेनी द्वारा, जे कांइ तने कचेरीमां मळे छे ते तने सहन थइ शके तेवुं जणाय छे अने कचेरीमां तुं सहन थइ शके एवो जणाय छे, ते तत्त्वचिन्तनमां तुं वारंवार पाछो आव अने तेमां आराम ले.

१३. ज्यारे आपणी आगळ मांस अने एवी बीजी खावानी वस्तुओ होय छे त्यारे आपणा मनमां एवी छाप पडे छे के आ एक माछलानुं मरेलुं शरीर छे, अने आ एक पक्षीनुं अथवा डुक्करनुं मरेलुं शरीर छे; अने आ फेलर्नियन् ते थोडोक द्राक्षनो रस छे, अने आ जामली रंगनो जभ्भो ते शेल् जातनी माछलीना रक्तथी रंगेलुं कोइ घेटानुं ऊन छे: आपणा मनपर पडे छे ते छापो आवी होय छे, अने ते छापो छेक ते वस्तुओऊगी पहोचे छे अने ते वस्तुओने भेदे छे, अने तेथी आपणे जाणिये छिये के ए वस्तुओ केवा प्रकारनी छे. ते ज प्रमाणे आपणे आपणा जीवनमां वर्तवुं जोइये, अने आपणी प्रशंसाने अत्यंत पात्र जणाय एवी वस्तुओ होय त्यां आपणे तेओने खुलेखुली करवी जोइये अने तेओनी निस्सारताप्रत्ये जोवुं जोइये अने जे शब्दोवडे तेओने वखाणीने आशमानमां चढाववामां आवी होय छे ते सघळा शब्दो तेओना उपरथी उतरडी लेवा जोइये. केम के बहारनो देखाव ए बुद्धिने अद्भुत रीत्ये विपरीत बनाववनार छे, अने तारा परिश्रमने योग्य वस्तुओविषे ज तुं काममां रोकायलो छे एवी तने ज्यारे सउथी वधारे खातरी होय छे त्यारे ज ते तने सउथी अधिक ठगे छे. त्यारे खुद झेनोक्रेटीसविषे क्रेटीस् शुं कहे छे तेनो विचार कर-

१४. जेने सामान्य जनसमाज वखाणे छे एवी बाबतोमांनी घणीखरी सउथी सामान्य प्रकारनी वस्तुओने एटले जेओ परमाणुओ वच्चेना आकर्षणथी अथवा कुदरती बंधारणथी बंधाइ रहेली–जेवी के पथ्थर, लाकडुं, अंजीरनां झाड, द्राक्षो, सेवफळो वगेरे–वस्तुओने उद्देशीने होय छे. पण जेओ जरीक वधारे बुद्धिमान् होय छे एवां माणसोवडे जे बाबतो वखणाय छे ते जीवनतत्त्ववडे बंधाइ रहेली वस्तुओ–जेवी के घेटांबकरांनां अने ढोरोनां टोळां–ने उद्देशीने होय छे. तेथी पण वधारे शिक्षित मनुष्योवडे जे बाबतो वखणाय छे, ते बुद्धियुक्त आत्मावडे बंधाइ रहेली वस्तुओ होय छे; तो पण ते विश्वना आत्मावडे बंधाइ रहेली होती नथी, पण कोइ हुनरमां कुशळ अथवा तो बीजी कोइ रीत्ये कुशळ अथवा तो तेने गुलामोनी अमुक संख्या होय छे तेटला पूरतीज फक्त बुद्धियुक्त आत्मावडे बंधाइ रहेली वस्तुओ होय छे. पण जे एक बुद्धियुक्त आत्मानी,–एटले विश्वना अने राजनैतिक जीवनमाटे योग्य आत्मानी किमत समजे छे ते आना सिवाय बीजा कशानी दरकार करतो नथी;–अने सघळी वस्तुओ करतां पोताना आत्माने तर्कशक्ति अने सामाजिक जीवननी साथे बंधबेसी शके तेवी स्थितिमां अने प्रवृत्तिमां राखे छे, अने जेओ तेना पोताना जेवा होय छे तेओनी साथे रहीने आ हेतु सिद्ध करवाने काम करे छे.

१५. केटलीक वस्तुओ हयातीमां आवती जाय छे, अने बीजी वस्तुओ हयातीमांथी बहार जती जाय छे; अने जे वस्तु हयातीमां आवे छे, तेनो केटलोक भाग तो क्यारनोए नाश पामी गयो छे. जेम काळनो अविरत प्रवाह युगोना अनंत समयने हमेश चालु ज राखे छे तेम ज संचारो अने विकारो दुनियाने निरंतर नवी चालु ज राख्या करे छे. तो आ वहेता प्रवाहमां, के जेना उपर कांइ पण स्थिरता नथी, तेमां त्वराथी आपणी पासे थइने वही जती वस्तुओमां एवुं शुं छे के जेनी माणस उच्ची किमत आंके? जाणे कोइ

माणस पासे थइने उडी जती चकलीओमांनी एक उपर प्रेमम पडे, पण ते तो क्यारनीए दृष्टि बहार निकळी गयी छे,—तेना ज जेवुं ए थशे. रुधिरना उद्गार जेवुं अने हवाना उच्छ्वास जेवुं दरेक माणसमुं जीवन ज कांइक आवा प्रकारनुं छे. केम के आपणे एक वार श्वास लेइये अने पाछो मूकिये—के जे आपणे प्रत्येक क्षणे करिये छिये—ते जेवुं छे, तेवुं ज तें गये काल अने परम दिने तारा जन्म-वखते जे समग्र श्वसनशक्ति प्राप्त करी ते तें प्रथम जे तत्त्वमांथी लीधी ते ज तत्त्वमां ते पाछी मूकी देवी—तेना संबंधमां पण छे.

१६. छोडवाओमां होय छे तेवो वराळरूप उच्छ्वास मूकवो ते, अने पाळेलां अने जंगली पशुओमां होय छे तेवो श्वास मूकवो ते, अने वस्तुओनां देखाव उपरथी विचारोनी छापनुं ग्रहण करवुं ते, अने दोरीओथी जेम पूतळां हालेचाले छे तेम इच्छाओथी हलनचलन करवुं ते, अने टोळांओमां एकठुं थवुं ते, अने खोरा-कथी पोषण मेळववुं—ते कांइ किमती गणवा जेवी बाबत नथी; केम के ते तो आपणा खोराकना निरुपयोगी भागने छुटो पाडीने काढी नाखवानी क्रियाना जेवुं ज छे. त्यारे शेनी किमत गणवा जेवी छे? शुं ताळीओ पाडीने लोको आवकार आपे तेनी किमत गणवा जेवी छे? ना. तेम ज वळी जीभोना पटपटारानी पण आपणे कांइ किमत गणवी जोइये नहि, केम के घणा माणसो तरफथी ज़े प्रशंसा आवे छे ते जीभोनो एक पटपटारो ज छे. त्यारे तुं एम धार के जे ख्याति कहेवाय छे ते आ निर्माल्य बा-बतने तें तजी दीधी छे, तो किमती गणवा योग्य शुं रहे छे? मारा अभिप्राय प्रमाणे ते आ छे,—तारा पोताना बंधारणप्रमाणे तारे पोते हलनचलन करवुं अने आत्मसंयम करवो के जे अन्तिम लक्ष्यप्रत्ये सघळा व्यापार अने हुनरो गति करे छे. केम के दरेक कळा ए प्रत्ये लक्ष राखे छे के जे वस्तु जे कामने माटे बनाववामां आवी होय छे ते कामने ते वस्तु बंधबेसती आववी

जोइये; अने द्राक्षना वेलाओनी पाछळ जे देखरेख राखे छे ते द्राक्ष वावनार, अने घोडाने केळवनार, तथा कुतराने तालीम आपनार ए बंने ए अंतिम लक्ष्यउपर चोट राखे छे. पण एक युवाननी केळवणी अने शिक्षण ज्यारे कोइक वस्तुउपर लक्ष राखे छे त्यारे एमां ज ते केळवणीनी अने शिक्षणनी किमत रहेली छे. अने ए जो सारुं होय तो तुं बीजुं कशुं शोधीश नहि. बीजी घणी वस्तुओनी वळी तुं किमत गणतां नहि अटके शुं? त्यारे तुं छुटो थइश नहि, अने तारा पोताना सुखने माटे पण तने पूरतो अवकाश नहि मळे, अने तुं आवेशविना रही शकीश नहि. केम के जेओ ते वस्तुओ लेइ शके तेओ प्रत्ये तारे अरिष्यावाळा, मत्सरवाळा अने शंकाशील थवानी, अने जे वस्तु तने किमती जणाइ छे ते वस्तु जेओनी पासे छे तेओनी सामे कावतरुं रचवानी तने जरूर पडशे. जे माणसने आ वस्तुओमांनी कोइ वस्तु जोइये छिये ते माणस केवळ व्याकुळतानी स्थितिमां होवो ज जोइये ए अनिवार्य छे; अने ते उपरांत वळी घणी वार तारे देवोना दोष पण काढवा पडे छे. पण तारा पोताना मनने पूज्य गणवाथी अने मान आपवाथी तुं आत्मसंतुष्ट बनीश, अने जनसमाजसाथे पण तुं एकरागमां रहीश, अने देवोनी साथे पण एखलासमां रहीश-अर्थात् देवो जे तने आपे छे अने जे व्यवस्था देवोए करी छे ते सघळाने वखाणीने तुं तेओनी साथे एखलासमां रहीश.

१७. उपर, नीचे अने आसपास सर्वतः भौतिक तत्त्वोनी हिलचाल छे. पण आमांना एकेमां सद्गुणनी हिलचाल नथीः सद्गुणनी गति ए कांइक वधारे दिव्य छे, अने भाग्ये ज नजरे पडे एवा रस्ते आगळ वधती तेने मार्गे सुखपूर्वक ते आगळ चाली जाय छे.

१८. केवी विचित्र रीत्ये मनुष्यो वर्त्ते छे!! तेमना ज वखतमां अने तेमनी ज साथे जेओ जीवता होय छे तेमने मनुष्यो वखाणता नथी; पण पाछलो जमानो के जे तेओए कदी जोयो नथी

अथवा जोवाना नथी तेनाथी पोते वखणावुं—आने तेओ वधारे किमती गणे छे. पण आ तो—जेओ तारी पहेलां जीवतां हता तेओए तने वखाण्यो नहि तेथी तने शोक थवो जोइये तेना ज जेवुं घणे मोटे भागे छे.

१९. जो कोइ बाबत ताराथी सिद्ध थवी कठण होय, तो तुं एम धारीश नहि के ते (बीजा) माणस माटे अशक्य छेः पण जो कोइ वस्तु (बीजा) मनुष्य माटे शक्य होय अने तेनी प्रकृति अनुसार होय तो तारा पोताथी पण ए प्राप्त करी शकाय एम तुं धारजे.

२०. अखाडानी कसरतोमां तुं एम धार के कोइ माणसे तने पोताना नखोथी उझरडी नांख्यो छे, अने तारा माथासामे प्रहार मारवाथी तने एक झखम कर्यो छे. ठीक, (तेथी तो) आपणे चीढायानां कांइ चिन्हो दर्शावता नथी, अने आपणे अपमान पण गणता नथी, अने पाछळथी आपणे तेने एक किनेदार मनुष्य पण गणता नथी; अने तो पण आपणे तेनी सामे चेतता तो रहिये छिये, पण ते एक शत्रुतरीके तेने गणीने नहि, अने तेम ज वळी वहेमथी पण नहि, पण तेना रस्तामांथी आपणे चुपचाप चाल्या जइये छिये; जीवनना बीजा सघळा भागोमां पण तारी वर्त्तणुक कांइ आवी ज थवा दे; जेओ अखाडामांना प्रतिस्पर्धीजेवा छे एवा मनुष्योमां घणी बाबतोनी आपणने दरगुजर करवा दो. केम के में कह्युं छे ते प्रमाणे, तेमना रस्तामांथी चाल्या जवानुं तथा तेनी साथे तेओ उपर कांइ वहेम अने धिक्कार नहि राखवानुं आपणी सत्तामां छे.

२१. मने जो कोइ माणस एम खातरी करी आपवाने अने बतावी आपवाने शक्तिमान् होय के हुं खरी रीत्ये विचार करतो नथी अथवा खरी रीत्ये वर्त्ततो नथी, तो हुं खुशीनी साथे मारा

विचार अने वर्त्तनमां फेरफार करीश; केम के जेनाथी कोइ पण माणसने कदी पण कांइ हानि नथी-एवा सत्यने हुं शोधुं छुं. पण जे माणस पोतानी भूलमां अने अज्ञानमां कायम रहे छे तेने हानि थाय छे.

२२. हुं मारी फरज बजावुं छुं: बीजी बाबतो मने विकळ करती नथी; केम के ते बाबतो कां तो जीवनविनानी, के कां तो बुद्धिविनानी, के कां तो भूली पडेली अने पोतानो रस्तो जाणती नथी एवी छे.

२३. जनावरो के जेओने बुद्धि नथी अने सामान्य रीत्ये बीजी वस्तुओ अने पदार्थो विषे तो ए ज के—तारे बुद्धि छे अने तेओने नथी, तेथी तुं तेओनो उदार अने मोकला भावथी उपयोग कर. पण मनुष्यप्राणीओ प्रत्ये तो सामाजिक भावनाथी वर्त्त, केम के तेओने बुद्धि छे. अने सघळे प्रसंगे तुं देवोनुं आवाहन कर, अने केटलो दीर्घ काळ तुं ए करीश तेविषे तुं गुंचवाइश नहि; केम के ए प्रमाणे तुं त्रण कलाक पण गाळीश तो ते पूरता छे.

२४. मेसिडोनियानो एलेक्झांडर् अने तेनो घोडावाळो बंने मृत्युवडे एक ज दशाने पमाडाया हता; केम के कां तो तेओने विश्वनां बीजरूप ते ज तत्त्वोमां लेवामां आव्या हता, के कां तो तेओने अणुओमां विखेरी नाखवामां आव्या हता.

२५. आपणामांना प्रत्येकमां एक ज अविभाज्य समयमां केटली बधी बाबतो बने छे ते, अर्थात् जे वस्तुओ शरीरने अने आत्माने लगती छे ते, तुं विचारः एटले जे एक तेम ज सर्व छे, जेने आपणे विश्वरूप कहिये छिये, तेमां एकेकाळे रहेनारी बीजी अधिक घणी वस्तुओ अथवा सघळी वस्तुओ अस्तित्वमां आवे तो तेविषे तने आश्चर्य नहि लागे.

२६. जो कोइ माणस तारी आगळ ए प्रश्न मूके के एन्टो-

निनस् ए नाम केवी रीत्ये लखवामां आवे छे, तो शुं तुं अवाज ताणीने दरेक अक्षर बोलीश ? शुं त्यारे, जो तेओ गुस्से थशे तो तुं पण गुस्से थइश ? तुं शुं शान्तिथी आगळ चालीश नहि अने दरेक अक्षर गणी बतावीश नहि ? त्यारे ते ज प्रमाणे आ जिंद-गीमां पण याद राख के दरेक फरज अमुक कार्यविभागोनी बनेली छे. आ विभागो उपर ध्यान आपवानी अने क्षोभ पाम्या विना अथवा जेओ तारी साथे गुस्से होय तेओ प्रत्ये क्रोध दर्शाव्या विना तारे रस्ते आगळ चाल्या जवानी अने जे तारी आगळ मूकवामां आव्युं होय ते पूरुं करवानी तारी फरज छे.

२७. जे तेओने तेमना स्वभावने योग्य अने लाभकारक जणाय ते वस्तुओनी पाछळ मनुष्योने प्रयत्न करवा देवो नहि ए केवुं निर्दय छे ! अने ते छतां पण ज्यारे तेओ खोटुं करे छे तेटला माटे तुं चीडायलो होय छे त्यारे तुं एक रीत्ये तेओने आ करवा देतो नथी. केम के तेओ ते वस्तुओ तेओना स्वभावने योग्य अने लाभकारक धारे छे तेटलामाटे बेशक तेओ ते वस्तुओ तरफ प्रेराय छे—पण ए तेमना स्वभावने योग्य तथा लाभ-कारक होती नथी त्यारे तेओने बोध आप अने गुस्से थया विना तेओने ते दर्शाव.

२८. मृत्यु ए इन्द्रियो द्वारा थतां भाननुं, विषयेच्छाओने जे प्रेरे छे ते दोरीओना चालननुं, अने विचारोनी चंचल गतिओनुं, अने आ मांसमय देहनी सेवानुं बंध पडवुं छे. (२. १२)

२९. ज्यारे तारुं शरीर पाछुं हठतुं नथी त्यारे आ जीवनमां तारा आत्माने माटे पाछुं हठवुं ते शरमनी वात छे.

३०. तुं सीझर (राजा) बनी जाय नहि तेनी तुं संभाळ राखजे, के ए रंगथी तुं रंगाइ जाय नहि; केम के आवी बाबतो बने छे खरी. त्यारे तुं तने पोताने सादो, सारो, शुद्ध, विचार-

शील, आडंबरथी मुक्त, न्यायनो मित्र, देवोनो पूजनार, दयाळु, अने सघळां योग्य कार्योमां दृढ राख. तत्त्वचिन्तने तने जेवो बनाववाने इच्छ्यो होय तेवो चालु रहेवाने तुं यत्न कर. देवो प्रत्ये पूज्यभाव राख, अने मनुष्योने मदद कर. जीवन टुंकुं छे. आ पार्थिव जिंदगीनुं फक्त एक ज फळ छे,—पवित्र स्वभाव अने सामाजिक कृत्यो. एन्टोनिनस्ना शिष्यतरीके तुं दरेक वस्तु कर. जे बुद्धिनी साथे बंधबेसतुं आवे तेवा दरेक कार्यमां तेनुं अचलपणुं, अने बधी वस्तुओमां तेनो समभाव, अने तेनी पवित्रता, अने तेनी मुखमुद्रानी शान्ति, अने तेनुं माधुर्य, अने ठाली कीर्तिविषेनी तेनी उपेक्षा, अने वस्तुओने समजवाना तेना प्रयासोने तुं याद राख; अने कोइ पण वस्तुने अत्यंत ध्यानपूर्वक तपास्याविना अने तेने स्पष्ट रीत्ये समज्याविना ते कदी पण केवो जवा देतो नहि ते; अने जेओ अन्यायपूर्वक तेने ठपको देता तेओने तेना बदलामां ठपको दीधाविना ते केवो वेठी लेतो ते; ते कोइ पण बाबत उतावळमां केवो करतो न होतो ते; अने ते परनिंदाओने केवो नहोतो सांभळतो ते तथा रीतभात अने कृत्योनो ते केवो चोकस परीक्षक हतो ते; अने ते लोकोने दोष देवानी टेववाळो तथा व्हीकण तथा वहेमी तथा मिथ्याज्ञानी केवो नहोतो ते; अने रहेवानुं स्थान, बिछानुं, पोशाक, आहार, नोकरो-जेवी बाबतमां ते केवो थोडाथी संतोष पामतो ते; ते केवो महेनतु अने धीरजवाळो हतो ते; अने पोताना अल्प आहारने लीधे ते सांजलगी (कामकाजमां) टकी रहवाने केवो समर्थ हतो तथा नियमित समय सिवाय बीजा वखते तेने मळमूत्रनो त्याग करवानी पण जरूर केवी पडती नहोती ते; अने मैत्रीमां तेनी दृढता तथा एकरूपता (केवी हती ते); अने जेओ तेना अभिप्रायोनी सामे पडता तेओमां वाणीना स्वातंत्र्यने ते केवो सहन करतो ते; अने कोइ पण माणस तेने

कोइ वधारे सारी बाबत बतावतो त्यारे तेने जे आनंद थतो ते; अने वहेमविना ते केवो धर्मनिष्ठ हतो ते;—तुं याद राख. आ बधानुं तुं अनुकरण कर के ज्यारे तारी छेली घडी आवे त्यारे, तेने जेवुं शुभ अंतःकरण हतुं तेवुं शुभ अंतःकरण तने पण होय. (१. १६)

३१. तुं तारी अप्रमत्त इन्द्रियोमां पाछो आव, अने तुं तने पोताने पाछो बोलाव; अने ज्यारे तें तने पोताने उंघमांथी जगाड्यो छे त्यारे तथा जेथी तुं विकळ थतो हतो ते तो मात्र स्वप्नां ज हतां एम तुं समज्यो त्यारे, हवे तारा जाग्रतीना समयमां पण जेम तुं पेली (स्वप्नानी) वस्तुओ प्रत्ये जोतो हतो तेम आ (तारी आसपासनी वस्तुओ) प्रत्ये जो.

३२. हुं एक नाना शरीरनो अने एक जीवात्मानो बनेलो छुं. हवे आ नाना शरीरने तो बधीए वस्तुओ एक सरखी छे, केम के ते शरीर तो विविध भेदो समजवाने समर्थ नथी. पण बुद्धिने तो मात्र ते ज वस्तुओ एक सरखी छे के जे वस्तुओ ते बुद्धिनी पोतानी प्रवृत्तिनां कार्यरूप नथी. पण जे जे वस्तुओ ते बुद्धिनी पोतानी प्रवृत्तिनां कार्य छे ते आ सघळी वस्तुओ ते बुद्धिनी सत्तामां छे. अने आमांनी पण जे वर्त्तमान समयने उद्देशीने करवामां आवी छे एटली ज वस्तुओ (ते बुद्धिनी सत्तामां छे); केम के मननी भविष्य अने भूत प्रवृत्तिओ संबंधे तो—आ पण वर्त्तमान समयमाटे तो एक सरखी ज छे.

३३. ज्यांलगी पग पगनुं अने हाथ हाथनुं काम करे छे त्यांलगी तो हाथ जे करे छे ते अने पग जे करे छे ते परिश्रम कुदरतविरुद्ध नथी. त्यारे तेम, ज्यांलगी मनुष्यनो प्रयास मनुष्यनी वस्तुओ करे छे त्यांलगी मनुष्य

तरीके मनुष्यनो प्रयास कुदरतविरुद्ध नथी. पण जो ते प्रयास तेनी कुदरतविरुद्ध नथी तो ते तेने अशुभ पण नथी.

३४. लुटाराओ, पितृघातको अने जुलमी राजाओवडे केटली बधी मोजमजाओ भोगवाइ छे.

३५. जेओ तेओनी कारीगरीमां कुशळ नथी एवा माणसोनी इच्छाने हाथनी कारीगरी करनाराओ पोते अमुक हद्लगी केवा अनुकूळ थाय छे,—ते छतां तेओ पोताना हुनरनी बुद्धिने (मूळतत्वोने) वळगी रहे छे अने तेथी दूर जवानुं सहन करी शकता नथी—ते तुं नथी जोतो ? जे तेने पोताने अने देवोने सामान्य छे ते बुद्धिप्रत्ये माणसने जे मान होवुं जोइये तेना करतां कारीगर अने वैद्यने तेओना हुनरोनी बुद्धि (मूलतत्त्वो)प्रत्ये वधारे मान होय तो ते शुं आश्चर्य नथी ?

३६. एशिया, युरोप—ए विश्वना खूणाओ छे: आखो सागर ते विश्वमां एक टीपुं छे: अने वर्त्तमान समय ते अनंत काळमां एक बिंदुमात्र छे. सघळी वस्तुओ अल्प, विकारी, विनाशी छे. सघळी वस्तुओ त्यांथी—ते विश्वनियामक शक्तिमांथी कां तो सीधेसीधी निकळीने अथवा तो परंपराक्रमथी आवेछे. अने तेथी करीने सिंहना विकसतां जडबां, अने जे झेरी होय छे ते, अने दरेक इजा करनारी वस्तु, जेवो के कांटो, जेवो के कादव,—ए तो भव्य अने सुंदर (तत्त्व) नी पाछळ थयेली पेदाश छे. तो जे (तत्त्व) ने तुं पूज्य गणे छे तेनाथी सदहुं वस्तुओ बीजी जातनी छे एम तुं कल्पना करीश नहि, पण सर्वना कारणनुं खरुं स्वरूप मनमां बांध. (७. ७९)

३७. जेणे वर्त्तमान वस्तुओ जोइ छे, तेणे सघळी वस्तुओ जोइ छे,—जे व्यतीत आनादि काळथी बनती आवी छे ते दरेक वस्तु अने जे अनंत भावी काळमां बनशे ते दरेक

वस्तु–ए बंने तेणे जोइ छे; केम के सघळी वस्तुओ एक जात अने एक भातनी होय छे.

३८. वस्तुओनो विश्वमां संबंध अने तेओनो परस्परनो संबंध तुं वारंवार विचार. केम के एक रीत्ये सघळी वस्तुओ एकबीजासाथे गुंथायली होय छे, अने आ रीत्ये तेओ सघळी एक बीजासाथे मित्रभाववाळी होय छे; केम के क्रममां एक वस्तु बीजी वस्तुनी पाछळ आवे छे, अने आम बने छे ते पदार्थना परस्पर संकेत अने क्रियारूप व्यापारने लीधे बने छे. (९. १)

३९. जे वस्तुओ साथे तारुं नसीब घडायेलुं छे ते वस्तुओने तुं तारी मेळे अनुकूळ थाः अने जे माणसोमां रहेवानुं तारा भाग्यमां लखेलुं छे तेओने तुं चहा, पण चहाय ते साची रीत्ये (खरा अंतःकरणपूर्वक) चहा.

४०. दरेक ओजार, हथियार, वासण–जो जे कार्यने माटे ते बनववामां आव्युं छे ते कार्य करे छे–तो ते सारुं छे; अने वळी जेणे ते बनाव्युं ते तो त्यां हाजर होतो पण नथी. पण जे वस्तुओ कुदरतवडे एकठी पकडी राखवामां आवे छे तेमां तो जे सत्ताए ते वस्तुओने बनावी ते सत्ता छे अने ते सत्ता तेमां रहे छे; तेटलामाटे आ सत्ताने मान आपवुं ते, अने जो तुं ए सत्तानी इच्छाप्रमाणे रहे अने वर्त्ते तो तारामां दरेक वस्तु बुद्धिने बंधबेसती छे एम समजवुं ते–वधारे योग्य छे.

४१. जे कोइ वस्तुओ तारी सत्तामां न होय तेमने तुं तारे माटे सारी अथवा खोटी धारे तो अवश्ये एम ज बनवानुं के जो एवी खराब वस्तु तारा उपर आवी पडे अथवा तो एवी सारी वस्तुनी तने हानि थाय, तो तुं देवोने दोष देइश अने

जे तारा दुर्दैव अथवा तारी हानिना कारणरूप छे अथवा जेओ विषे तेवा कारणरूप होवाना संभवनो वहेम रहे छे तेवा माणसोने पण तुं धिक्कारीश; अने खरेखर आपणे घणो अन्याय करिये छिये, केम के आ वस्तुओमां आपणे भेद मानिये छिये [केम के आ वस्तुओने आपणे एक सरखी गणता नथी.†][1] पण जे वस्तुओ आपणी सत्तामां होय तेवी ज वस्तुओने जो आपणे शुभ अथवा अशुभ गणिये तो देवनो दोष काढवानुं के माणसप्रत्ये शत्रुतानी स्थितिमां उभा रहेवानुं कांइ पण कारण रहेशे नहि.[2]

४२. आपणे सघळा एक अंतप्रत्ये एकठा मळीने काम करिये छिये, केटलाक समजण अने योजनापूर्वक काम करे छे, अने बीजाओ पोते शुं करे छे ते जाण्या विना काम करे छे; केम के माणसो उंघता होय छे त्यारे तेओविषे पण—तेओ दुनियामां जे वस्तुओ बने छे तेमां मजूरो अने सहकारी काम करनाराओ छे—एम जे कहे छे, ते हुं धारुं छुं के हिरा-क्लिटस् छे. पण माणसो जुदी जुदी पद्धतिओथी सहकारी काम करे छेः अने जे कांइ बने छे तेमां जेओ दोष काढे छे अने तेनी विरुद्ध पडवाने अने तेने अटकाववाने प्रयत्न करे छे, तेओ पण पुष्कल सहकारी काम करे छे; एवा माणसोनी पण विश्वने जरूर हती. त्यारे तुं तने पोताने केवा प्रकारना काम करनारना वर्गमां मूके छे ते समजवानुं तारे माटे बाकी रहे छे; केम के सघळी वस्तुओ उपर जे राज्य चलावे छे ते नक्की तारो खरो उपयोग

---

१. ५. १, अने १०. २७, अने ९. २८, के ज्यां तेनो उद्देश ११. १०. संबंधे जणाय छे, तेमां diapheresthai ए पदनो उपयोग सरखावतां गेटेकर् आनुं भाषान्तर, " केम के आ वस्तुओ मेळववानो आपणे यत्न करिये छिये, " एवुं करे छे. तेना भाषान्तरमां ते खरो हशे, पण मने ते संबंधे शंका रहे छे.

२.. सिसेरोकृत, देवना स्वभावविषे (डि नेच्युरा डियोरम्) ३. ३२.

करेशे, अने ते तने सहकारी कांम करनाराओना अने जेओनी महेनत एक अंतिम परिणाम सिद्ध करे छे तेओना कोइ भागमां तने लेशे. पण जेना विषे क्राइसिप्पस्[1] कहे छे, तेवी नाट्यमां अधम अने हास्यपात्र कविताना जेवो भाग तुं थइश नहि.

४३. सूर्य वर्षादनुं कार्य माथे ले छे, अथवा एस्क्युलेपियस्* फलदात्री (पृथ्वी) नुं कार्य माथे ले छे ? अने ताराओमांना प्रत्येकना संबंधमां केम छे, तेओ जुदा जुदा नथी ? अने तेम छतां तेओ शुं एक ज परिणामप्रत्ये साथे रहीने काम नथी करता के ?

४४. जो मारा विषे अने मारा उपर जे बनावो बनवाना तेविषे देवोए निर्माण कर्युं छे, तो तेओए ते ठीक ज निर्माण करेलुं छे, केम के कोइ देवने अगमचेतीविनानो कल्पवो ते पण सहेलुं नथी; अने मने हानि करवाविषे तो तेओने कांइ इच्छा ज शामाटे होय ? केम के एम करवाथी तेओने अथवा तो जे तेओनी काळजीनो खास विषय छे ते समग्र विश्वने शो लाभ थाय ? पण जो तेओए व्यक्तितरीके मारा विषे कांइ निर्माण कर्युं नहि होय, तो पण तेओए कांइ नहि तो आखा विश्वने माटे तो अवश्ये निर्माण करेलुं होवुं ज जोइये; अने आ सर्वसाधारण व्यवस्थाना क्रमने अनुसरती रीत्ये जे बाबतो बने ते मारे खुशीनी साथे स्वीकारवी जोइये अने तेथी मारे संतोष मानवो जोइये. पण जो देवो कोइ पण वस्तुविषे निर्माण न करता होय—अथवा तो जो के एम मानवुं ए दुष्टता छे, ते छतां पण आपणे एम मानिये (के देवो कशुं पण निर्माण करता नथी) तो आपणे यज्ञ प्रार्थना अने

---

१. प्लुटार्च्,-(एड्वर्सस् स्टोइकोस्,) विरक्ततत्त्वज्ञानीओ विरुद्ध. प्र.१४.

* देवोना वैद्य. रोमन् लोकोमां पण आपणा अश्विनीकुमारनी पेठे ते सूर्यना पुत्र छे.

शपथ के कांइ पण करवुं जोइये नहि के जे आपणे देवो हाजर होय अने आपणी साथे रहेता होय एम (मानीने) करिये छिये– पण जो के आपणने लगती कोइ पण वस्तुविषे देवो निर्माण न करे, तो पण मारे पोताने माटे निर्माण करवाने तो हुं शक्तिमान् छुं ज, अने शुं उपयोगी छे ते हुं तपासी शकुं छुं; अने दरेक मनुष्यने ते उपयोगी छे के जे तेना पोताना बंधारणनी अने स्वभावनी साथे बंधबेसे तेवुं होय. पण मारो स्वभाव तर्कानुसारी अने मळतावडो छे; अने मारुं शहेर अने मारो देश, ज्यांलगी हुं एन्टोनिनस् छुं त्यांलगी, रोम् छे; पण ज्यांलगी हुं एक मनुष्य छुं त्यांलगी, आखी दुनियां ते ज मारुं शहेर अने देश छे. त्यारे जे वस्तुओ आ शहेरोने उपयोगी छे ते ज मात्र मने उपयोगी छे.

४५. जे कांइ दरेक माणसना संबंधमां बने छे ते आ समग्र विश्वना हितने माटे छेः आटलुं ज बस थाय तेम छे. पण जो तुं ध्यानमां लेतो होय तो वळी एक सामान्य सत्यतरीके विशेष ए पण ध्यानमां लेजे के जे एक माणसने लाभकारक होय छे ते बीजा माणसोने पण लाभकारक होय छे. पण 'लाभकारक' ए शब्दने अहीं मध्यम प्रकारनी [सारी पण नहि अने खोटी पण नहि एवी] वस्तुओना विषे बोलवामां आवे छे तेवा सामान्य अर्थमां लेवा द्यो.

४६. खेलतमाशानां मकानो अने एवी जगाओमां जेम तने बने छे के ते ज वस्तुओनो संतत देखाव अने एक ज प्रकारनो देखाव तमाशाने कंटाळाभरेलो बनावे छे, तेम आ आखी जिंदगीमां पण छे; केम के उपर, नीचे, सघळी वस्तुओ एनी ए ज अने एकमांथी ज बनेली छे. अने वळी केटलुं लांबुं ?

४७. तुं निरंतर विचार के सर्व जातनां मनुष्यो अने सर्व जातनी प्रवृत्तिओ अने सर्व जातनी सघळी प्रजाओ गुजरी गयेली छे, एटले तारा विचारो ठेठ फिलिस्टिओन् अने फ्रीबस् अने

ओरिगेनियनलगी आवशे. हवे तारा विचारो बीजी प्रकारना [मनुष्यो]तरफ वाळ. त्यारे आपणे ते जगोए जवुं जोइये के–ज्यां आटला बधा महान् वक्ताओ, अने आटला बधा उच्च तत्त्वचिन्तको हिराक्लिटस् पिथागोरास्, सोक्रेटीस् छे; ज्यां आटला बधा असलना समयना वीर पुरुषो, अने तेमनी पछी आटला बधा सेनापतिओ, अने जालीम राजाओ छे; वळी ज्यां आ उपरांत युडोक्सस्, हिप्पार्चेस्, आर्चिमिडीस्, अने तीक्ष्ण स्वाभाविक बुद्धिवाळा, मोटां मनवाळा, परिश्रमने चहानार, व्यवहारकुशळ, छातीवाळा अने मेनिप्पस् तथा तेना समान बीजा जेवा नश्वर अने मगतरा जेवा मनुष्यजीवनने पण हसी काढनार बीजा माणसो छे. आ बधाविषे विचार के ए सघळा घणो लांबो समय थयां माटीमां मळी गया छे. त्यारे आथी तेमने शी इजा छे; जेमनां नाम केवळ अज्ञात छे तेमने पण शुं छे? एक ज वस्तु अहीं घणी ज महत्वनी छे, असत्य बोलनार अने अन्यायी मनुष्यो प्रत्ये पण शुभेच्छावाळा स्वभावथी सत्य अने न्यायमां तारुं जीवन गाळवुं ते.

४८. ज्यारे तुं तने आनंद आपवाने इच्छे त्यारे जेओ तारी साथे रहे छे तेओना सद्गुणोविषे तुं विचार कर; दाखला तरीके,–एकनी कर्मपरायणता, बीजानो विनय, त्रीजानुं औदार्य, अने चोथानो बीजो कोइ सारो गुण. केम के ज्यारे सद्गुणो जेओ आपणी साथे रहे छे तेओनी नीतिमां प्रदर्शित थाय छे अने बने तेटला पुष्कळ आपणी आगळ दृश्यमान थाय छे, त्यारे ते सद्गुणोना दाखला जेटलो आनंद आपे छे तेटलो आनंद बीजुं कांइ आपतुं नथी. तेटला ज माटे आपणे ते आपणी नजरआगळ राखवा जोइये.

४९. हुं धारुं छुं के तुं फक्त आटला लिटर* वजननो छुं अने

* लिटर एक जातनुं वजन छे. ते ज उपरथी फ्रेन्च वजनना मापमां लिटर संज्ञावाळुं माप थयुं छे.

त्रणसो लिटर वजननो नथी तेथी तुं कांइ असंतुष्ट नथी. त्यारे तारे फक्त आटलां ज वर्ष जीववुं जोइये अने वधारे नहि जीववुं जोइये तेथी पण तुं असंतुष्ट था नहि; केम के पदार्थ(शरीर)नुं जे वजन तने आपवामां आव्युं छे तेथी जेम तुं संतोष पामेलो छे, तेम जे समय तने आपवामां आव्यो छे तेथी पण तुं संतोष पाम.

५०. तेओने (मनुष्योने) समजाववानो प्रयत्न आपणे करिये. पण ज्यारे न्यायनां तत्वो आपणने ए रस्ते दोरे त्यारे आपणे तेओनी इच्छाविरुद्ध पण वर्तवुं. तो पण जो कोइ माणस जोर वापरीने तारा रस्तामां उभो रहे, तो तुं संतोष अने शान्तिनो आश्रय ले, अने ते ज काळे ते अडचणनो उपयोग कोइ बीजा सद्गुणनो अमल करवामां कर; अने तुं याद राख के तारो प्रयत्न कांइक शरत राखीने करवानो हतो, अने तें अशक्य वस्तुओ करवाने इच्छयुं न होतुं. त्यारे तें शुं इच्छयुं हतुं ?—कांइक आवो प्रयास—पण जो जे वस्तुओ सिद्ध करवाने तुं प्रेरायलो हतो ते सिद्ध [न] थई तो (पण) तारो हेतु तो तुं सिद्ध करे ज छे.

५१. जे माणस कीर्त्तिने चहाय छे ते माणस बीजा माणसनी प्रवृत्तिने पोतानुं शुभ गणे छे; अने जे मोजने चहाय छे, ते माणस बीजा माणसनी प्रवृत्तिने पोतानां विषयास्वादन गणे छे; पण जेने बुद्धि छे ते माणस पोतानां ज कृत्योने पोतानुं शुभ गणेछे.

५२. कोइ वस्तुविषे ख्याल नहि करवो अने आपणा जीवात्मामां क्षोभ नहि पामवो ते आपणी सत्तामां छे. केम के वस्तुओने पोताने आपणा विचारो बांधवानी कांइ पण स्वाभाविक शक्ति नथी.

५३. बीजावडे जे कहेवाय ते प्रत्ये, अने बनी शके तेटलुं, बोलनारना मनमां जे होय ते प्रत्ये काळजीपूर्वक ध्यान आपवानी तुं तने पोताने टेव पाड.

५४. जे मधमाखीओना टोळाने माटे सारुं नथी ते एक मधमाखीने माटे पण सारुं नथी.

५५. जो खलासीओ सुकानीने गाळो दे अथवा तो मांदा माणसो वैद्यने गाळो दे तो सुकानी अने वैद्य कोइना कहेवा उपर कांइ ध्यान आपशे? किंवा जो ध्यान आपे तो सुकानी वहाणमां बेठेलाओनी सलामती अथवा वैद्य जेओनी सारवार करे छे तेओनुं आरोग्य शी रीत्ये साधी शके?

५६. जेओनी साथे हुं दुनियामां आव्यो तेमांनां केटलां बधां क्यारनांए दुनियामांथी चाल्यां गयां छे?

५७. जेओने कमळो थयो होय छे तेओने मध कडवुं लागे छे, अने जेओने हडकायां कूतरां करड्यां होय छे, तेओने जळ भय उपजावे छे; अने नानां बच्चांओने दडो एक सुंदर वस्तु लागे छे. त्यारे हुं शामाटे गुस्से थाउं छुं? तुं शुं एम धारे छे के-कमळाना रोगीमां पित्त करतां अने हडकायुं कूतरुं करडेलामां कूतराना विष करतां खोटा अभिप्रायमां ओछुं विष छे?

५८. तारी पोतानी प्रकृतिप्रमाणे रहेतां तने कोइ पण माणस अटकावशे. नहिः विश्वनी प्रकृतिनी बुद्धिथी उलटुं तने कांइ पण थशे नहि.

५९. जेमने माणसो प्रसन्न करवा इच्छे छे ते माणसो केवा प्रकारना छे, अने तेओने शा अर्थे तेओ प्रसन्न करवा इच्छे छे, अने केवा प्रकारनां कृत्योथी तेओने प्रसन्न करवाने इच्छे छे? काळ केवो सत्वर सर्व वस्तुओने ढांकी देशे, अने केटली बधी वस्तुओने तेणे क्यारनीए ढांकी दीधी छे?



७.

नठारापणुं ए शुं छे? ते ए छे के जे तें घणी वार जोयुं छे. अने दरेक वस्तु बने ते प्रसंगे तुं आ याद राखजे के जे तें वारंवार जोयुं ते ए छे. उपर अने नीचे ज्यां त्यां तने ए ज वस्तुओ जणाशे के जेओथी प्राचीन काळना मध्यकाळना अने आपणा पोताना समयना इतिहासो भरायला छे; अने जेओथी हाल नगरो अने घरो भरेलां छे. कांइ पण नवुं नथी, बधी वस्तुओ परिचित अने अल्पायुषी छे.

२. जे संस्कारो (विचारो) आपणा सिद्धान्तोने मळता आवे छे, ते संस्कारो नाश न पाम्या होय तो आपणा सिद्धान्तो केवी रीत्ये मृतक थइ जाय? पण आ विचारोने निरंतर पवन नाखीने ज्वलित करवानुं तारी सत्तामां छे. कोइ पण वस्तुविषे मारो जेवो अभिप्राय होवो जोइये तेवो अभिप्राय हुं धरावी शकुं छुं. जो हुं तेम करी शकुं छुं, तो हुं शामाटे क्षोभ पामुं छुं? जे वस्तुओ मारा मनथी बाह्य छे तेमने मारा मन साथे कांइ पण संबंध नथी.—तारा मनोभावनी आ स्थिति थवा दे एटले तुं टटार खडो रहेवानो. तारा जीवनने पुनः प्राप्त करवुं ए तारी सत्तामां छे. तुं (पहेलां) जेवी रीत्ये वस्तुओ प्रत्ये जोतो तेवी ज रीत्ये फरीने तुं तेओ प्रत्ये जो; केम के आमां तारा जीवननी पुनः प्राप्ति रहेली छे.

३. तमाशानो नकामो धंधो, रंगभूमिउपर खेलो, घेटांनां टोळां, ढोरनां टोळां, भालाथी कराती कसरतो, नानां कूतरांनी आगल नांखेलुं हाडकुं, माछलावाळां तळावोमां रोटलीनो कडको, कीडियो महेनत करे छे ते अने (कण वगेरेनो) बोजो उठावी जाय छे ते, भय पामेला नाना उंदरोनां आम तेम दोडवां, दोरीओ खेंचवाथी हालतां चालतां पूतळां—[ए बधुं एक सरखुं छे]. त्यारे आवी वस्तुओमां सारो स्वभाव दर्शाववो अने गर्वनो जोश दर्शाववो नहि ते तारी फरज छे; तो पण एटलुं तो समजवुं

के—दरेक माणस पोते जे वस्तुओमां रोकाय छे ते वस्तुओनी जेटली योग्यता होय छे तेटली ज योग्यता ते माणसनी पण होय छे.

४. भाषणमां जे कांइ कहेवातुं होय तेना उपर तारे ध्यान आपवुं जोइये, अने दरेक हिलचालमां शुं करवामां आवे छे ते तारे अवलोकवुं जोइये, अने भाषणमां तारे तरत ज जोइ लेवुं जोइये के ते शाने उद्देशीने छे, अने हिलचालमां तारे काळजीपूर्वक नजर राखवी के तेथी कयी वस्तु उपलक्षायली छे.

५. आने वास्ते मारी बुद्धि पूरती छे के नहि? जो ते पूरती छे तो हुं तेने विश्वनी प्रकृतिवडे अपायला हथियार तरीके कार्यने अर्थे वापरुं छुं. पण जो ते पूरती न होय तो—मारे शामाटे एम न करवुं जोइये तेनुं काइ कारण न होय तो,—हुं ते काममांथी कां तो निवृत्त थाउं छुं अने जे माणस ते काम मारा करतां वधारे सारुं करवाने समर्थ होय तेने मार्ग आपुं छुं; अथवा तो जे माणस मारा नियामक तत्त्वनी मददथी जे हाल सर्वेना सामान्य शुभने माटे योग्य अने उपयोगी छे ते करी शके तेवा माणसने मारी मददमां लेइने माराथी बनी शके तेटली सारी रीत्ये ते काम हुं करुं छुं. केम के जे कांइ हुं पोते अथवा बीजानी साथे रहीने करी शकुं ते फक्त आने लक्षीने होवुं जोइये,—अर्थात्—जनसमाजने जे उपयोगी अने सारी पेठे बंधबेसतुं होय तेने लक्षीने होवुं जोइये.

६. केटला बधा माणसो कीर्त्तिथी गवाया पछी शून्यमां नंखाइ गया छे; अने जेओए बीजाओनी कीर्त्ति गजावी छे तेवां केटलां बधां माणसो लांबा वखतथी मरी गयां छे.

७. बीजानी मदद मळे तेथी तमे शरमाशो नहि; केम के एक शहेरउपर हुमल्लामां जेवी रीत्ये एक सिपाई पोतानी फरज बजावे छे तेवी रीत्ये तारे तारी फरज बजाववी ए तारुं काम छे. जो तुं लूलो होवाथी किल्लाना कोटउपर एकलो चढी शके

तेम न होय, पण बीजानी मददथी कोटउपर चढवुं शक्य होय तो पछी केवी रीत्ये करवुं ?

८. भविष्यनी बाबतोथी तुं पोताने व्यग्र थवा देइश नहि, केम के जो ते जरूरनुं हशे तो, जे बुद्धि तुं वर्त्तमान वस्तुओने माटे वापरे छे ते ज बुद्धि तारी साथे रहेशे अने तुं ते भविष्यनी बाबतो आगळ पण आवीश.

९. बधी वस्तुओ एक बीजानी साथे गुंथायली छे, अने तेओनुं परस्पर बंधन पवित्र छे; बीजी कोइ वस्तुसाथे जेने कांइ पण संबंध न होय एवी कोइ पण वस्तु भाग्ये ज छे. केम के वस्तुओ छे, अने तेओ जोडाइने एक ज विश्व(व्यवस्था)ने बनावे छे. केम के एक विश्व बधी वस्तुओनुं बनेलुं छे, अने सर्व वस्तुओमां जे व्यापी रहे छे ते देव एक ज छे, अने एक ज पदार्थ,[1] अने एक ज नियम, सर्व बुद्धियुक्त प्राणिओमां एक ज सामान्य बुद्धि-तत्त्व, अने एक ज सत्य छे; अने वळी जेओ एक ज वर्गमां आवे छे अने जेओ एक ज प्रकारनी बुद्धिशक्तिनां भागी छे तेवां सघळां प्राणिओने माटे पूर्णता पण एक ज प्रकारनी छे.

१०. प्रत्येक भौतिक वस्तु समग्र विश्वना पदार्थमां अदृश्य थइ जाय छे; अने दरेक कारक वस्तु घणी जलदीथी पाछी विश्वना हेतुमां खेंची लेवामां आवे छे; अने प्रत्येक वस्तुनी स्मृति घणी सत्वर काळमां पराभव पामे छे.

११. बुद्धियुक्त प्राणिने ते ज कार्य कुदरतप्रमाणे अने बुद्धि प्रमाणे होय छे.

१२. तुं जाते टटार था, अथवा बीजावडे टटार बन. (३. ५)

१३. जे शरीरो एकत्र जोडायलां होय छे तेना अवयवो संबंधे जेम छे ते ज प्रमाणे जे बुद्धियुक्त प्राणिओ पृथक् अस्तित्व

---

१. "एक पदार्थ," पृष्ठ ३६, टिप्पणी ६.

धरावे छे, तेओना संबंधमां पण छे, केम के तेओ एक सहकारी कार्यने माटे संस्थापित थयेलां छे. अने जो तुं वारंवार तने पोताने एम कह्या करे के बुद्धियुक्त प्राणिओना एक व्यूहनो हुं एक अवयव (melos) छुं, तो तने आनो भाव वधारे स्पष्ट थशे. पण जो तुं (r अक्षरनो उपयोग करीने) एम कहे के तुं एक भाग (meros) छे, तो तुं माणसोने हजु तारा अंतरथी चहातो नथी; परोपकारनी खातर ज परोपकार हजु तने आनंद आपतो नथी;[२] तुं हजुलगी परोपकार करे छे ते फक्त विवेकनी बाबत तरीके ज करे छे, अने तने पोताने ज भलुं करतो होय तेतरीके हजुलगी तुं परोपकार करतो नथी.

१४. पोताना उपर आ जे कांइ आवी पडे तेनी असर जेओने थइ शके छे एवा भागो उपर बहारथी जे आवी पडवानुं होय तेने बहारथी आवी पडवा दे. जे भागोने तेथी दुःख थयुं छे ते भागो चहाय तो राव करे. पण जे बन्युं छे ते अशुभ छे एम हुं धारुं तेसिवाय मने कांइ इजा थती नथी. अने एप्रमाणे न धारवुं ते मारी सत्तामां छे.

१५. कोइ माणस गमे ते करे अथवा करे तो पण, जेम सुवर्ण अथवा नीलम अथवा माणेक हमेश आ कहेतां होय—के—कोइ गमे तेम करे अथवा कहे तो पण मारे तो नीलम ज रहेवुं जोइये अने मारो रंग राखी रहेवो जोइये—तेम ज मारे पण सारा ज रहेवुं जोइये.

१६. नियामक बुद्धि स्वतः विक्षेप पामती नथी; मारी कहेवानी मतलब ए छे के स्वतः भय पामती नथी अथवा स्वतः व्यथा पामती नथी.† पण जो बीजुं कोइ तेने भय अथवा व्यथा पमाडे तो

२. में साधारण पाठ Kataleptikos ने बदले गेटेकरे अटकळेलो पाठ Katalektikos वापर्यो छे. सरखावो ४. २०; १९. ४२.

તેને પમાડવા દો. કેમ કે બુદ્ધિ પોતાના જ અભિપ્રાયથી પોતાને આવા રસ્તાઓમાં વાળશે નહિ. જો શરીરથી બની શકે તો શરીરને શરીરની પોતાની સંભાળ લેવા દો કે તેને કાંઇ સહન કરવું પડે નહિ, અને જો તેને કાંઇ સહન કરવું પડે તો તેને બોલવા દો. પણ જીવાત્મા પોતે કે જે ભયના અને વ્યથાના અધિકારમાં છે, અને જેને આ વસ્તુઓ વિષે અભિપ્રાય બાંધવાને સંપૂર્ણ રીત્યે સત્તા છે, તેને તો કાંઇ પણ સહન કરવું પડશે નહિ, કેમ કે તે અવળે રસ્તે ચઢી† એવા વિચારઉપર આવશે નહિ. પોતાને પોતે કોઇ તંગી ઉત્પન્ન કરે તે સિવાય નાયક તત્ત્વને પોતામાં કોઇ પ્રકારની તંગી છે જ નહિ; અને તેથી જો તે પોતાને પોતે જ વિક્ષેપ અને પ્રતિબંધ ન કરે તો તે વિક્ષેપ અને પ્રતિબંધ બંનેથી મુક્ત છે.

૧૭. યુડિમોનિયા [સુખનો અધિદેવ] તે એક સારો દેવ, અથવા સારી વસ્તુ છે. હે કલ્પના! ત્યારે તું અહીં શું કરે છે? હું તને આજીજીપૂર્વક કહું છું કે તું જેવી આવી તેવી ચાલી જા, કેમ કે મારે તારી જરૂર નથી. પણ તું તારી જુની રીત પ્રમાણે આવી છે. હું તારી સાથે ગુસ્સે નથીઃ ફક્ત તું તારે ચાલી જા.

૧૮. કોઇ માણસ ફેરફારથી ભય પામે છે? તેથી શામાટે ભય પામવું, ફેરફાર વિના શું બની શકે છે? તો ફેરફાર કરતાં વધારે આનંદજનક અથવા વિશ્વની પ્રકૃતિને વધારે યોગ્ય શું છે? અને જો લાકડાનો ફેરફાર (રૂપાન્તર) ન થાય તો તું શું સ્નાન પણ કરી શકે? અને જો આહાર વિકાર ન પામે તો શું તારું પોષણ પણ થઇ શકે? ત્યારે તું શું સમજતો નથી કે ફેરફાર થવો તે તારે માટે પણ તેવો જ છે, અને વિશ્વની પ્રકૃતિમાટે તેટલો જ જરૂરનો છે?

૧૯. જેમ આપણાં શરીરના ભાગો એક બીજાની સાથે સંબંધવાળા અને સહકારી કાર્ય કરનારા છે તેમ સઘળાં શરીરો, તેઓના સ્વભાવે કરીને વિશ્વ સમગ્રની સાથે જોડાયલાં અને સાથે કામ

करनारां होवाथी एक उग्र प्रवाहमां तणाइ जतां होय तेम, विश्वना पदार्थना प्रवाहमां वह्यां करे छे. केटला बधा क्राइसिप्पस्, केटला बधा सोक्रेटीस्, केटला बधा एपिक्टेटस् काळ क्यारनोए गळी गयो छे? अने दरेक मनुष्य तथा वस्तुना संबंधमां तने ते ज विचार आववा दे. (५. २३; ६. १५.)

२०. एक ज बाबत मने विकल बनावे छे, ते ए के—रखे ने हुं कोइ एवी चीज करी बेसुं के जे मनुष्यबंधारण करवानी रजा आपतुं नथी, अथवा तो जे रीत्ये करवानी ते रजा आपतुं नथी ते रीत्ये हुं करी बेसुं, अथवा तो जे करवानी हाल ते रजा नथी आपतुं तेवी कोइ चीज हुं करी बेसुं.

२१. सर्व वस्तुओने तुं विसरी जइश ते स्थिति निकट छे, अने सर्ववडे तुं विसराइश ते पण निकट ज छे.

२२. जेओ खोटुं करे तेओने पण चहावा ए एक मनुष्यजातिनी ज विलक्षणता छे. अने ज्यारे तेओ खोटुं करता होय छे त्यारे जो तारा मनमां एम आवे के तेओ (आपणां) सगां छे, अने तेओ अज्ञानने लीधे अने इरादाविना खोटुं करे छे, अने तमे बंने थोडा समयमां मरी जवाना छो, तो ए चहावानुं बने छे; अने बधाउपरांत जो तारा मनमां एम आवे के ते खोटुं करनारे तने कांइ पण इजा करी नथी, केम के तेणे तारी नियामक बुद्धि प्रथम हती तेना करतां वधारे खराब बनावी नथी, तो ए चहावानुं बने छे.

२३. विश्वनी प्रकृति, विश्वनो पदार्थ जाणे मीण होय तेम, तेमांथी हमणां एक घोडानो आकार बनावे छे, अने ज्यारे तेणे एने भागी नाख्यो छे त्यारे ते ते पदार्थने झाडने माटे वापरे छे, पछी माणसने माटे वापरे छे, पछी बीजा कशा माटे वापरे छे; अने आ वस्तुओमांनी प्रत्येक घणा थोडा समयने माटे अस्तित्व

धरावे छे. पण जेम एक वहाणना बंधावामां कांइ दुःख नहोतुं तेम तेने माटे भागी जवुं ते पण कांइ दुःख नथी. (८. ५०)

२४. घुरकती मुखमुद्रा ए केवळ अस्वाभाविक छे; ज्यारे ते वारंवार धारण[३] करवामां आवे छे, त्यारे तेनो परिणाम ए थाय छे के सघळी कोमळता नाश पामी जाय छे, अने छेवटे ते एवी तो संपूर्ण रीत्ये नाश पामी जाय छे के ते फरीने बिलकुल प्रकटावी शकाती ज नथी. आ बाबत उपरथी एवो निर्णय करवानो प्रयत्न करो के ए बुद्धितत्त्वथी विरुद्ध छे. केम के हुं अशुभ करुं छुं एवुं भान पण जतुं रहेशे तो हवे कांइ विशेष जीववानुं कारण शुं छे?

२५. जे कुदरत आ समग्रउपर सत्ता चलावे छे ते तुं जुवे छे ते सर्व वस्तुओनुं रूपान्तर करी नाखशे, अने तेओना पदार्थमांथी बीजी वस्तुओ बनावशे, अने तेमना पदार्थमांथी वळी अन्य वस्तुओ बनावशे, के जेथी दुनिया हमेश नवी ने नवी रहे. (१२. २३.)

२६. ज्यारे कोइ माणसे तारुं खोटुं कर्युं होय, त्यारे तुं तरत ज विचार के शुभ अथवा अशुभ विषेना केवा विचारथी तेणे ते खोटुं कर्युं छे. केम के ज्यारे तुं आ समज्यो होइश, त्यारे तुं तेनी दया खाईश, अने तुं आश्चर्य पण नहि पामे अने गुस्से पण नहि थाय. केम के कां तो जे वस्तु पेलो करे छे ते ज वस्तुने तुं पोते सारी समजीश अथवा तो (पेलो करे छे तेनाथी) बीजी वस्तुने (एटले शुभने) पण तुं ते ज जातनी (एटले जे खोटुं थयेलुं मानवामां आवे छे ते ज जातनी) समजीश. तो पछी पेलाने माफ करवुं ए तारी फरज छे. पण जो तुं आवी वस्तुओने सारी

---

३. आ अशुद्ध छे. (आनो अर्थ स्पष्ट छे एवो मारो नम्र अभिप्राय छे. प्र. क.)

के खोटी धारतो न होय तो जे माणस भूलमां छे तेने तुं माफ करवाना वळणमां वधारे तत्पर थइश.

२७. जे तारी पासे छे तेनो जेटलो तुं विचार करे तेटलो जे तारी पासे नथी तेनो तुं विचार करीश नहि: पण जे वस्तुओ तने प्राप्त छे तेमांनी उत्तम वस्तुओने तुं पसंद कर, अने पछी विचार कर के जो तेओ तने प्राप्त न होत तो ते केवी आतुरतापूर्वक शोधवामां आवत, तो पण ते ज समये तुं संभाळ राखजे के जेथी तुं ते वस्तुओथी एटलो बधो न राची जाउं के जेथी तने पोताने ते वस्तुओनी हदथी जादे किमत आंकवानी टेव पडी जाय नहि के जेथी तेओ कदी तारी पासे न होय तो तुं विकल थाय.

२८. तुं तारा अंतरात्मामां निवृत्त था. जे बुद्धितत्त्व अमल चलावे छे तेनो आ स्वभाव छे के–ज्यारे ते जे व्याजबी होय छे ते करे छे त्यारे ते पोताथी ज संतुष्ट रहे छे, अने एथी शान्तिने प्राप्त करे छे.

२९. कल्पनाने भूशी नांख. दोरीओ खेंचवी पडती मूक. जे वर्त्तमान छे तेमां ज तुं संरुद्ध था. तने अथवा बीजाने जे कांइ बने ते सारी पेठे समज. दरेक दृश्य पदार्थना (आकारविषयक) कार्यरूप अने (उपादान) पदार्थरूप एवा भाग पाड अने वहेंची दे. तारी अंतनी घडीविषे विचार कर. कोइ माणसे जे कांइ खोटुं कर्युं होय तो ते ज्यां करायुं होय त्यां ज ते रहेवा दे. (८. २९.)

३०. जे कहेवामां आवतुं होय ते प्रति तारुं ध्यान नाख. जे वस्तुओ कांइ क्रिया करती होय ते वस्तुओमां तथा ते वस्तुओने जे वस्तुओ करती होय ते वस्तुओमां तारी बुद्धिने प्रवेश करवा दे. (७. ४.)

३१. सादाइ अने विनयथी तथा जे वस्तुओ सद्गुण अने दुर्गुणना वचगाळे रहे छे तेवी वस्तुओप्रत्येनी उपेक्षाथी तुं पोताने

शणगार. मनुष्यजातिने चहा. ईश्वरने अनुसर. ते कवि कहे छे के कायदो सर्व उपर सत्ता चलावे छे.†—अने कायदो सर्व उपर सत्ता चलावे छे ए याद राखवुं एटले बस छे.[४]†

३२. मोतविषे: चाहे तो ते विखराइ जवुं होय, अथवा तो अणुओमां छुटा पडी जवुं होय, अथवा तो विनाश होय, तो कां तो ते विनाश छे अथवा तो विकार छे.

३३. दुःखविषे: जे व्यथा असह्य होय छे ते आपणो जीव लेइ जाय छे; पण जे लांबो समय टके छे ते व्यथा सहन करी शकाय तेवी होय छे; अने मन पोतामां ज निवृत्त थवाथी तेनी पोतानी शान्तिने निभावी राखे छे,† अने नियामकशक्ति वधारे खराब बनती नथी. पण जे भागोने व्यथाथी इजा थइ होय, ते भागो जो ते विषे पोतानो अभिप्राय आपे तो तेमने आपवा दे.

३४. कीर्त्तिविषे: [जेओ कीर्त्तिने शोधे छे तेओनां] मनप्रत्ये जुओ, तेओ केवा छे, अने केवा प्रकारनी वस्तुओथी तेओ वेगळा रहे छे, अने केवा प्रकारनी वस्तुओनी पाछळ तेओ दोडे छे, तेनुं अवलोकन करो. अने विचार करो के एकबीजा उपर खडकेली रेतीना ढगला जेम पहेलांनी रेतीने ढांकी नाखे छे, तेम जीवनमां जे बिनाओ आगळ जाय छे ते पाछळ आवती बिनाओथी थोडा ज वखतमां ढंकाइ जाय छे.

३५. प्लेटोमांथी:[५] जे माणसने उन्नत मन होय छे अने जे माणस सर्व समय अने सर्व पदार्थनुं अवलोकन करे छे ते माणसने माटे एम विचारवुं तुं शुं शक्य धारे छे के—मनुष्य-

---

४. आ कलमनो अंतनो भाग समजी शकाय नहि तेवो छे. (हिंदु विचारोना संस्कारवाळाने आ भागनो पूर्वापर अर्थ सहज विचारतां समजाय तेम छे. **प्र. क.**)

५. प्लेटो. पोल. ६. ४८६.

जीवन कोइ मोटी वस्तु छे? ते शक्य नथी, तेणे कह्युं.—त्यारे आवो माणस मोतने पण कांइ अशुभ गणशे नहि—नक्की ते नहि ज गणे.

३६. एन्टिस्थेनीसमांथीः सारुं करवुं अने गाळो खावी ए राजाने माटे निर्मित छे.

३७, जेम मन फरमावे तेम पोते आज्ञांकित बनवुं तथा नियममां रहेवुं अने शान्त थवुं ते मुखमुद्राने माटे नीचुं छे, अने पोतानी मेळे नियममां न रहेवुं अने शान्त न रहेवुं ए मनने माटे नीचुं छे.

३८. वस्तुओ प्रत्ये आपणे चीडावुं ए खरुं नथी, केम के तेओ तेविषे कांइ पण दरकार करती नथी.[६]

३९. अमर देवोने अने आपणने पोताने आनंद आपो.

४०. अनाजना पाका कणसलानी पेठे जीवनने लणवुं जोइये एक माणस जन्मे छे; बीजो मरे छे.[७]

४१. जो देवो मारे माटे अने मारां छोकरां माटे काळजी न राखे, तो तेने माटे कांइ कारण छे.

४२. केम के सारा अने न्यायी माणसो मारी साथे छे.[८]

४३. बीजाओनी साथे तेओना विलापमां जोडावुं नहि, कोइ प्रबळ मनोविकार (थवा देवो) नहि.

४४. प्लेटोमांथी;[९] पण हुं आ माणसने पूरतो उत्तर आपीश,

---

६. युरिपाइडीसना बेल्लरोफोनमांथी.

७ युरिपाइडीसना हिप्सिपाइलमांथी. सिसेरोए (टस्कल. ३. २५ मां) युरिपाइडीसमांथी छ लीटीओनुं भाषान्तर करेलुं छे, अने तेमांनी आ बे लीटीओ छे,—

पृथ्वीतत्व पुनः पृथ्वीतत्वमां भळशे, जीवन एक पाका फळनी पेठे लणवानुं छे, एवी आवश्यकतानी इच्छा छे.

८. जुओ—एरिस्टोफेनीस्, एचारनेन्सीस्, ५. ६६१.

९. एपोलोजियामांथी, प्र. १६.

जे आ छेः जो तुं एम धारतो होय के जे माणस कोइ वस्तुमाटे कांइ पण सारो होय तेणे जीवन अने मरणनुं जोखम ज गणवुं जोइए, अने जे सघळुं ते करे छे तेमां तेणे एटली ज बाबत न जोवी जोइये के—ते जे करे छे ते व्याजबी छे के गेरव्याजबी छे, अने ते काम सारा माणसनां छे के खोटा माणसनां,—एम तुं धारतो होय तो तुं ठीक कहेतो नथी.

४५. हे एथेन्सना माणसो ! सत्य जोतां तो ते आप्रमाणे छेः पोताने माटे उत्तम जगो धारीने माणसे पोताने गमे त्यां स्थाप्यो होय अथवा तो ते पोताना सेनापतिवडे गमे ते स्थळे मूकायलो होय, तो तेणे त्यां मारा अभिप्राय प्रमाणे स्थित थइ रहेवुं जोइये अने मरण के बीजी कोइ वस्तुने कांइ पण गणतीमां गण्या विना जोखम उठाववुं जोइये, (पण) [पोतानी जगो छोडीनासी जवानी] नीचता (करवी नहि.)

४६. पण मारा भला मित्र ! विचार के जे उमदा अने सारुं छे ते बचाववुं अने बचवुं एथी कांइक जूदुं नथी शुं ? केम के[†] एक मनुष्यना संबंधे अने ते पण वळी कांइ नहि तो जे खरी रीत्ये माणस छे तेना संबंधे आवुं जीववुं अथवा आटलो समय जीववुं ए बाबत विचारमांथी काढी नाखवा जेवी नथी के ?—तेनो विचार करः[†] अने जीवननी आसक्ति होवी जोइये नहिः पण आ बाबतो संबंधे तो माणसे ते परमेश्वरने ज भरोसे राखवी जोइये, अने जे स्त्रीओ कहे छे ते मानवुं जोइये के कोइ पण माणस पोताना भाग्य आगळथी छटकी जइ शकतो नथी, त्यारपछी बीजो तपास ए करवानो छे के जेटलो समय ते जीववानो होय छे तेटलो समय तेणे सउथी सारी रीत्ये केवे प्रकारे जीववुं.[10]

---

१०. प्लेटो, जोर्जिआस्, प्र. ५८ (५१२). आ वाक्यमां एन्टोनिनस्ना मूळ पाटमां Eateon छे, ते कदाच खरुं छे; पण Me gar touto men, to zen oposonde chronon longe os alethos andra

४७. तुं जेम तेओनी साथे जतो होय तेम तारी आशपाश ताराओनी गतिओने तुं जो; अने तत्वोना एकबीजामां थता (परिणामरूप) विकारोने तुं निरंतर विचार; केम के एवा विचारो आ पार्थिव जीवननो कचरो काढी नांखे छे.

४८. आ एक प्लेटोनुं सुभाषित छे:[११] के—जे कोइ मनुष्यो-विषे भाषण करतो होय तेणे, जाणे ते कोइ उच्चे स्थळेथी तेओ तरफ जोतो होय तेम, आ पृथ्वीनी वस्तुओ प्रत्ये पण नजर करवी; तेणे तेओ प्रत्ये तेओनी मंडळीओमां, लश्करोमां, खेती-वाडीनी मजूरीमां, लग्नोमां, तहनामांओमां, जन्मोमां, मरणोमां, न्यायनी अदालतोना घोंघाटमां, उजड जगाओमां, जंगली लोकोनी विविध प्रजाओमां, उत्सवोमां, शोकोमां, बजारोमां,—बधी वस्तु-ओना अने परस्पर विरोधी बाबतोना एक नियमित संयोगना मिश्रणमां—नजर करवी.

४९. भूतकालविषे विचार कर; राजकीय आधिपत्यना आवा मोटा फेरफारो (विषे विचार कर.) भविष्यमां जे वस्तुओ बन-वानी छे ते पण तुं जोइ शकीश. केम के खातरीपूर्वक ते वस्तुओ एकसरखा आकारनी होवानी, अने वस्तुओनो जे क्रम हाल वर्ते छे ते क्रमथी तेओ जूदी पडे ए अशक्य छे; तेथी करीने मानव जीवननो चालीस वर्षलगी विचार करी लीधो तो तेनो दश हजार वर्षलगी विचार कर्या सरखुं छे. केम के एथी तुं शुं वधारे जोवानो छे?

---

eateon esti, kai ou &c (जेणे अमुक समय जीववानी काळजी न करवी जोइये, पण एक माणस तरीके खरी रीते जीववानी—इत्यादि) ए शब्दोमां कठिनता छे. Eateon बदले Eukteon पाठनी कल्पनाथी ए विषय सुधरतो नथी.

११. एम कहेवाय छे के आ प्लेटोना हाल मळी आवता लेखोमां नथी.

५०. (हरिगीत.)

जे भूमिमांथी ऊगियुं ते भळे आखर भूमिमां,
(युरिपइडिसे ए क्राइसिपसमां सत्यनी भाखी सिमा;)
वळि, पण उग्युं जे दिव्य बीथी ते पुनः आ लोकथी,
स्वर्गीय राज्योमां जवानुं,–(सत्य वार्त्ता ए कथी.)[१२]

आ कां तो अणुओना परस्पर संघट्टननुं पृथक्करण छे, अथवा तो अचेतन तत्त्वोनुं तेवुं ज छूटुं पडवुं छे.

५१. (हरिगीत.)

कंइ खान पान अने कुशळ उपासनानी कळावडे,
व्हेळातणो पथ वाळता के–मृत्यु अमने ना अडे.[१३]
प्रेरी पवननी ल्हेर प्रभुए ते सहन करवी सदा,
करवो परिश्रम (प्रेमथी) (सज्जन !) बबडवुं ना कदा.

५२. बीजो माणस पोताना प्रतिपक्षीने हठावी देवामां वधारे कुशळ होय; पण ते वधारे मळतावडो नथी, वधारे विनयी नथी, जे बने ते सघळुं उठावी लेवाने वधारे कसायलो नथी, तेम ज पोताना पाडोशीओनी खामीओना संबंधे वधारे खामोशवाळो नथी.

५३. देवोने अने मनुष्योने जे सामान्य छे एवी बुद्धिनी साथे बंधबेसती रीत्ये काम करी शकाय तेवुं होय, त्यां आपणे कांइ ब्हीवानुं नथीः केम के जे सफळ होय अने जे आपणा बंधारण प्रमाणे उद्भवती होय तेवी प्रवृत्तिवडे आपणे कोइ लाभ मेळववा शक्तिमान् होइये तो तेमां कांइ पण हानिनी शंका राखवानी नथी.

५४. दरेक स्थळे अने सघळा समये–तारी हालनी स्थितिमां पवित्रपणे अनुमोदन आपवुं, अने जेओ तारी आशपाश होय तेओनी प्रत्ये न्यायपूर्वक वर्त्तवुं, अने सारी पेठे तपासाया विना ते विचारोमां कांइ छानुंमानुं पेशी जाय नहि तेटलामाटे तारा

---

१२. युरिपाइडीसना क्राइसिप्पसमांथी.

१३. पहेली बे लीटीओ युरिपाइडीसना सप्लाइसीसमांथी छे, ५. १११०.

हालना विचारो उपर तारी कुशळता योजवी—ए तारी सत्तामां छे.

५५. बीजां माणसोना नियामक सिद्धान्तो शा छे ते शोधी काढवाने तुं आगळपाछळ जो मा, पण, सीधेसीधुं तुं आ तरफ जो—के प्रकृति—जे वस्तुओ तारा संबंधमां बने छे ते द्वारा विश्वनी प्रकृति अने तारावडे जे कृत्यो करावां जोइये ते द्वारा तारी पोतानी प्रकृति—ए बंने तने शातरफ दोरी जाय छे. पण दरेक प्राणिए जे तेना बंधारणने अनुसार होय ते करवुं जोइये; अने जेम तर्करहित वस्तुओमां उतरता प्रकारनी वस्तुओ चढता प्रकारनी वस्तुओमाटे रचायली छे, तेम ज बीजी सघळी वस्तुओ तर्कयुक्त प्राणिओने माटे रचायली छे, पण तर्कयुक्त प्राणिओ तो एक बीजाने माटे रचायला छे.

त्यारे मनुष्यना बंधारणमां प्रथम तत्त्व सामाजिक छे. अने शरीरनी पटामणीओने तावे नहि थवुं ए बीजुं तत्त्व छे, केम के तर्कयुक्त अने बुद्धियुक्त गतिनुं ए खास कर्त्तव्य छे के पोतानी आगळपाछळ मर्यादारेखा दोरवी, अने—इन्द्रियो अथवा रुचिओ ए बेमांथी एकेनी गतिओथी कदी पण अभिभूत न थइ जवुं, केम के ए बंने पशुने योग्य छे; पण बुद्धियुक्त गति उपरिपणानो दावो करे छे अने बीजाओथी पोताने अभिभूत थवा देती नथी अने तेम ते करे छे ते सारा कारणसर करे छे. केम के कुदरतथी ते ते सघळानो उपयोग करवाने बनावायली छे. भूल अने ठगावाथी रहितपणुं ए तर्कानुसार बंधारणमां त्रीजी बाबत छे त्यारे आ बाब-तोने मजबूत रीत्ये वळगी रहीने नियामक तत्त्वने सीधुं आगळ वधवा दे, एटले जे तेनुं पोतानुं छे ते तेने प्राप्त ज छे.

५६. तुं तने पोताने मरी गयेलो, अने अत्यारना समयलगी तारो आवरदा पूरो करेलो धार; अने बाकीनुं आयुष्य तने भोगववा देवामां आवे ते तुं कुदरतने अनुसार भोगव.

५७. जे तारा उपर आवी पडे अने जे तारा प्रारब्धना तंतु-

साथे कतायलुं छे तेने ज तुं चहा केम के एनाथी वधारे योग्य बीजुं शुं छे ?

५८. जे बने ते दरेक बाबतमां, जेओना उपर ते ज बाबतो गुजरी होय तेओने, अने तेओ केवी रीत्ये चीडाया हता, तथा ते बाबतोने तेओ विचित्र बाबतो तरीके गणता हता, तथा ते बाबतोनो तेओ दोष काढता हता, ते तारी आंख्योआगळ राखः अने हवे तेओ क्यां छे ? कोइ स्थळे पण नथी. तो पछी तुं पण ते ज रीत्ये वर्त्तवानुं केम पसंद करे छे ? अने आ क्षोभो के जे कुदरतनी बहारना छे ते क्षोभने जेओ उपजावे छे अने ते क्षोभथी जेओने असर थाय छे तेमने माटे ज ते क्षोभ तुं केम रहेवा देतो नथी ? अने जे बाबतो तारा उपर गुजरे तेनो उपयोग करवाना खरा रस्तामां तुं केवळ तत्पर केम नथी ? केम के त्यारे तुं तेओने सारी रीत्ये वापरीश, अने तेओ तारे [काम करवानेमाटे] मूळपदार्थतरीके उपयोगी थशे. फक्त तुं तारा पोताना उपर ध्यान आप, अने तुं करे छे ते दरेक कृत्यमां तुं एक सारो माणस थवाने निश्चय करः अने याद राख के * * * * *[१४].

५९. अंतरमां जो. अंतरमां शुभनो झरो छे, अने जो तुं कदी खोदीश तो ते हमेश उपर निकळी आवशे.

६०. शरीर शिथिलतारहित होवुं जोइये, अने तेणे गतिमां के स्थितिमां कांइ अनियमितपणुं न दर्शाववुं जोइये केम के मन मुखमुद्राउपर बुद्धि अने योग्यतानी छाप कायम राखीने मुखमुद्रामां दर्शावे छे ते ज आखा शरीरमां पण होवुं जोइये. पण आ बधी बाबतो आडंबरविना आचरवी जोइये.

---

१४. आ कलम अस्पष्ट अर्थवाळी छे, अने तेनो आखरनो भाग एवो तो अशुद्ध छे के तेनो कोइ संभवित अर्थ आपवो ए अशक्य छे. केटलाक टीकाकरो अने भाषान्तर कर्त्ताओए कर्युं छे तेम तेने थीगडाथीगडी करवा करतां जेवी ते कलम छे तेवीने तेवी ज तेने रहेवा देवी ए वधारे सारुं छे.

६१. जीवन भोगववानी कळा नाचनारनी कळा करतां मल्लनी कळाने आ बाबतमां वधारे मळती छे—के तेणे जे अकस्मात् अने अणधार्या होय छे एवा हुमलाओनी सामे भीडवाने माटे तैयार अने दृढ खडा रहेवुं जोइये.

६२. जेमनी प्रशंसा प्राप्त करवाने तुं इच्छे छे तेओने, अने तेमने जे प्राप्त होय छे ते नियामक तत्त्वोने तुं संतत अवलोक. केम के त्यारे, जेओ अनिच्छाए तारो अपराध करे छे तेओने तुं ठपकोए नहि आपे, अने जो तुं तेओना अभिप्रायो अने रुचिओनां मूळप्रत्ये जोइश तो तने तेओनी पासेथी प्रशंसानी पण अपेक्षा रहशे नहि.

६३. तत्त्वचिन्तक पुरुष कहे छे के—दरेक जीवात्मा पोतानी इच्छाविना सत्यज्ञानथी रहित करायलो छे; तेना परिणामे ते ज रीत्ये ते सत्य अने मिताहार अने शुभेच्छा अने एवी जातनी दरेक वस्तुथी रहित करायलो छे. आ संतत मनमां राखवुं ए अत्यंत जरूरनुं छे, केम के आप्रमाणे तुं सघळाप्रत्ये वधारे मृदु थइश.

६४. दरेक व्यथामां तुं मनमां आ विचार हाजर राखजे, के ते व्यथामां कांइ गेरआबरू नथी तेम ज ते नियामक बुद्धितत्त्वने वधारे खराब बनावती नथी, केम के ज्यांलगी बुद्धि तर्कानुसारे[१५] छे अथवा तो ज्यांलगी ते सामाजिक होय छे त्यांलगी ते व्यथा बुद्धिशक्तिने नुकशान पहोचाडती नथी. खरेखर घणी खरी व्यथाओनी बाबतमां एपिक्युरियसनी आ टीका तने

१५. मूळ पाठमां Ulike, तेने बदलीने Logike करवानी दरखास्त करवामां आवे छे, अने आ फेरफार जरूरनो छे, त्यारे जेम कलम ६८ मां अने ७२ मां आपणने Logike अने Politike ए बे शब्दो एकठा थयेला मळे छे, तेम आ कलममां आपणने Logike अने Koinonike ए बे शब्दो एकठा थयेला मळशे.

मदद करशे—के व्यथाने पण हद होय छे ए तुं तारा मनमां राखीश अने तेमां तुं कांइ कल्पनामां उमेरीश नहि तो व्यथा ए असह्य नथी अने अनन्ते नथीः अने आ पण याद राखजे के—घणी वस्तुओ जे आपणने प्रतिकूल होय छे ते व्यथाना जेवी ज होय छे ते आपणे समजी शकता नथी, जेवां के अत्यंत घेन, तापे बळवुं ते, बिलकुल खावानी रुचि न थवी ते. तो ज्यारे आमांनी कोइ बाबत विषे तुं असंतुष्ट होय, त्यारे तुं तने पोताने एम कहे के तुं व्यथाने ताबे थाय छे.

६५. जेवी रीत्ये तेओने मनुष्योप्रत्ये लागणी थाय छे तेवी रीत्ये निर्दय मनुष्योप्रत्ये तने लागणी न थाय तेवी संभाळ तुं राखजे.[१६]

६६. चारित्र्यमां सोक्रेटीस् करतां टेलोजीस् चढियातो हतो के नहि ते आपणे शी रीत्ये जाणिये छिये? केम के सोक्रेटीस् एक वधारे उमदा मरणने पाम्यो, अने सुफी लोकोनी साथे तेणे वधारे कुशळताथी दलील करी, अने वधारे तितिक्षाथी तेणे रात्री ठंडीमां पसार करी, अने सेलेमीसना लियोनने[१७] केद करवानो तेने हुकम करवामां आव्यो त्यारे तेणे तेम करवाने ना कहेवुं वधारे उमदा गण्युं, अने फळियांओमां फोकियत मारतो चाल्यो—[१८] [जो के आ (छेल्ली) वात साची होय तेविषे तो कोइ माणसने मोटा सन्देह रहे तेम छे]—ए ज बस नथी. पण आपणे तपास करवो जोइये के—सोक्रेटीसने केवा प्रकारनो आत्मा हतो, अने मनुष्योप्रति

---

१६. हस्तलिखित प्रतना Oi anthropoi ए पाठने बदले हुं गेटेकरनी अटकळ Oi apanthrpoi ने अनुसर्यो छुं.

१७. सेलेमिसनो लियोन्. जुओ प्लेटो, पत्र ७; एपोलोजी० प्र. २०: एपिक्टेटस्, ४. १, १६०; ४. ७, ३०.

१८. एरिस्टोफेनीस्, न्युब. ३६२. के ते फोकियतभरेली रीत्ये शेरीओमां चाले छे अने पोतानी आंख्यो फेरवे छे.

न्यायी अने देवोप्रत्ये पवित्र रहेवाथी ते संतुष्ट रहेवाने शक्तिमान् हतो के नहि, वळी मनुष्योनी खळताथी ते नकामो चीडातोए न हतो, अने तेम छतां ते पोताने कोइ माणसना अज्ञाननो दास पण बनावतो न हतो, अने विश्वने लगती बाबतोमांथी तेने भागे आवी पडेली होय तेवी कोइ वस्तुने ते विचित्रतरीके ग्रहण करतो न हतो, तेम ज तेने असह्य तरीके सहन करतो नहि, अने ते पोतानी बुद्धिने कंगाल मांस(शरीर)नी लागणीओ साथे सह-भागी थवा देतो नहि ?

६७. कुदरते [बुद्धिने] शरीरनी बनावटसाथे एवी जोडी दीधी नथी के—तने पोताने निराळो पाडवाने तारी आशपाश कुंडाळु दोरवानी अने जे तारुं पोतानुं छे ते सघळाने तारा पोताना ताबानीचे आणवानी शक्ति तने रहे नहि; केम के दैवी मनुष्य थवुं अने दैवीतरीके कोइनी पण जाणमां न आववुं ए घणुं शक्य छे. हमेशां मनमां आ राखजे; अने एक बीजी बाबत पण मनमां राखजे के सुखी जिंदगी भोगववाने खरेखर घणा थोडानी ज जरूर छे. अने तुं तर्कशास्त्र शीखवामां निराश थयो छे अने कुदरतना ज्ञानमां कुशळ थयो छे, एटले आ ज कारणथी स्वतंत्र अने सभ्य तथा सामाजिक अने ईश्वरने आज्ञांकित बंने थवानी आशाने छोडी देइश नहि.

६८. जो कदी आखी दुनिया तारा सामे तेओनी मरजीमां आवे तेटली पोकारी उठे, अने जो कदी जंगली पशुओ तारी आशपाश जे जामेलो छे ते आ संग्रथित भौतिक पदार्थ (देह)ना अवयवोने फाडीने तेना कडकेकडका करी नाखे, तो पण सर्व बलात्कारथी मुक्त थइने मननी मोटामां मोटी शान्तिमां रहेवानुं तारी सत्तामां छे. केम के—निर्णयशक्ति तेना अवलोकननीचे जे वस्तु पडे ते वस्तुने एम कहे केः—जो के मनुष्योना अभिप्रायमां तुं जूदा प्रकारनी जणाती होइश तो पण वस्तुतः तुं आ छे; अने

उपयोग करनारी शक्ति तेना हाथनीचे जे आवे तेने एम कहेशे के:—जे हुं शोधती हती ते ज वस्तु तुं छे; केम के जे वस्तु पोते मारी आगळ रजु थाय छे ते मारे तो हमेश—तर्कानुकूल अने राजकीय एवा बंने (प्रकारना) सद्गुणने माटे, तेम ज एक शब्दमां कहुं तो जे मनुष्य अथवा परमेश्वरनी कळा छे ते अमलमां मूकवा माटे—एक मूळपदार्थ छे—एटलामाटे आ बधानी वच्चे पोताने शान्तिमां, अने आ आशपाशनी सघळी वस्तुओविषेना व्याजबी अभिप्रायमां अने जे वस्तुओ तेनी आगळ रजु थाय तेना तत्काळ उपयोगमां, निभावी राखतां, मनने शुं प्रतिबंध करे छे? केम के जे दरेक बाबत आवी पडे छे तेनो कां तो परमेश्वरनी साथे के कां तो माणसनी साथे संबंध होय छे, अने ते हाथपर लेवाने नवीए नथी तेम मुश्केल पण नथी, पण तेना उपर काम करवाने माटे हमेशनो अने योग्य मूळपदार्थ छे.

६९. नैतिक चारित्र्यनी पूर्णता आमां—अर्थात्—दरेक दिवस जाणे छेल्लो दिवस होय एम प्रसार करवामां, अने जुस्साभरेली रीत्ये उश्केराइ नहि जवामां तेम ज उंघणशीजेवा नहि थवामां तेम ज दंभीनो वेश नहि भजववामां—रहेली छे.

७०. देवो जेओ अमर छे तेओ चीडाता नथी, केम के एटलो बधो लांबो समय जेओ आवां छे ते मनुष्योने—अने तेओमां आटला वधां तो खराब मनुष्यो छे—तेमने देवोए वेठी लेवां पडे छे; अने आ उपरांत देवो वळी माणसोनी सघळी रीत्ये संभाळ राखे छे. पण तुं, के जेनो आटली जलदीथी अंत आववानो छे ते, नठारां मनुष्योने वेठवाथी कंटाळी जाय छे? अने ते पण ज्यारे तुं मनुष्योमांनो एक छे ते छतां पण (कंटाळी जाय छे)?

७१. पोताना भुंडापणमांथी नाशी छुटवुं के जे शक्य छे ते न करवुं, पण बीजां माणसना भुंडापणामांथी नाशी छुटवुं के जे खरेखर अशक्य छे ते करवुं—ए एक हास्यजनक बाबत छे.

७२. तर्कानुसार अने राजकीय [सामाजिक] बुद्धिने जे कांइ तर्कानुसार अने सामाजिक जणातुं नथी तेने ते व्याजबी रीत्ये पोताना करतां उतरता प्रकारनुं ठरावे छे.

७३. ज्यारे तें कांइ सारुं काम कर्युं छे अने बीजाए तेनो लाभ लीधो छे, त्यारे ए बाबतो उपरांत जेम मूर्खाओ करे छे तेम हजु कोइ त्रीजी बाबतने माटे अर्थात् सारुं काम कर्यानुं मान खाटवाने अथवा तो तेनो कांइ बदलो मेळववाने शा सारुं तुं फांफां मारे छे?

७४. जे उपयोगी होय छे ते मेळवतां कोइ माणस थाकतो नथी पण कुदरतप्रमाणे वर्त्तवुं ए उपयोगी छे. तो बीजाओ प्रत्ये करवाथी जे उपयोगी छे ते स्वीकारतां तुं थाकीश नहि.

७५. विश्वरूपनी प्रकृतिए विश्व बनाववाने प्रवृत्ति करी. पण हवे जे दरेक वस्तु बने छे ते कां तो अनुक्रम अथवा [परंपरा]नी रीत्ये आवे छे; अथवा कां तो विश्वनी नियामक शक्ति जे मुख्य वस्तुओ तरफ तेनी पोतानी गति करे छे ते वस्तुओ पण कोइ बुद्धि युक्त तत्त्ववडे नियममां रखाती नथी. जो आ याद राखवामां आवे तो ते तने घणी बाबतोमां वधारे शान्त बनावशे. (६. ४४; ९. २८)[१९]

---

१९. आ कलम समजवी ए सहेलुं नथी. एम इसारो करवामां आव्यो छे के E alogista, इ० मां कांइक भुल छे. केटलाक भाषान्तर कर्त्ताओए ते वाक्यनुं कांइ पण कर्युं नथी, अने तेओए कांइक शब्दोने बगाड्या छे. प्रथम सिद्धान्त तो ए छे के कोइ पूरती शक्तिवडे विश्व बनाववामां आव्युं हतुं. विश्वनो आदि मानी लेवामां आव्यो छे, अने जेणे कोइ एक क्रम बनाव्यो एवी कोइ शक्ति पण मानी लेवामां आवी छे. बीजो प्रश्न ए छे के—हाल वस्तुओ केवी रीत्ये उत्पन्न करवामां आवे छे; अथवा जो बीजा शब्दोमां कहिये तो, की शक्तिथी आकारो एक चालु अनुक्रममां देखाव आपे छे? एन्टोनिनसना मतप्रमाणे आ उत्तर होइ शके: वस्तुओना मूळ बंधारणना प्रभावथी सघळा फेरफारो अने अनुक्रम थया छे अने थाय छे. अने जो के पोताना शरीरमां अने विचारोमां फेरफार अने अनुक्रम तो छे ज, एम पण

माणस माने छे अने एम मान्याविना तेनो छुटको नथी, तो पण जेटला पुरतो माणस पोताने एनो ए ज माने छे तेटलापूरतुं हमेश विश्व तेनुं ते ज अर्थात् ते ते ज रूपनो चालु प्रवाह छे-एम आपणे अंगीकार करिये, तो एक अर्थमां आ समजी शकाय तेवुं छे. त्यारे विश्वमां चालु प्रवाहनो वास्तवे जोतां भंग नथी; अने जो आपणे एम कहिये-के आरंभमां एक क्रम बांधवामां आव्यो हतो अने जे वस्तुओ हाल पेदा थाय छे ते पहेलांनी व्यवस्थाना परिणामरूप छे-तो आपणे तेओने जेम जोवी पडे छे तेम अर्थात् तेओनी परंपरा अथवा अनुक्रम बनतो होय तेम ते वस्तुओविषे आपणे बोलिये छिये; जेम आपणे आपणां पोतानां शरीरोमांना फेरफारोविषे अने आपणा पोताना विचारोना पाछला संबंधविषे बोलिये छिये ते ज रीत्ये ते वस्तुओ-विषे बोलिये छिये. पण जेम हरकोइ वस्तुनी धारवामां आवेली बे स्थितिओ वच्चे कांइ समयान्तर नथी, अत्यंत नाना समयान्तर पण नथी, तेम जेने आपणे एक वस्तु कहिये छिये तेनी अने जेने आपणे ते वस्तुनी तरत ज पूर्वे अथवा पाछळ आवती वस्तुतरीके कोइ बीजी वस्तु कहिये छिये तेनी वच्चे कांइ समयना गाळा नथी, अत्यंत नाना गाळा पण नथी. जेने आपणे समय कहिये छिये ते वस्तुओना अथवा विनाओना अनुक्रमना विचारमांथी उपजावी काढेलो ख्याल छे, के जे ख्याल आपणा बंधारणनो एक भाग छे, पण ते ख्याल एवो नथी के जेने आपणे अनंत बुद्धि अने शक्तिने होय तेवो ख्याल धारी शकिये. तो पछी छेवटनो ठराव नक्की ए थाय छे के वर्त्तमान अने भूत, वर्त्तमान वस्तुओनो उद्भव अने जेमांथी वर्त्तमान वस्तुओ हाल उपस्थित थयेली छे एम आपणे कहिये छिये ते कल्पेलो मूळक्रम, ए एक ज छे; अने वर्त्तमान उत्पादक शक्ति अने कहेवामां आवता भूतकालनी व्यवस्था ते फक्त एक वस्तुनां जुदां जुदां नाम छे. त्यारे हुं धारुं छुं के लोक कोइ वार हाल वातो करे छे तेम एन्टोनिनसे अहीं लख्युं छे अने तेमनो अर्थ तेमना शब्दोवडे यथास्थित रीत्ये दर्शावायो नथी. बेशक बीजां केटलांक वाक्यो छे के जेमांथी हुं धारुं छुं के में जे दर्शाव्युं छे-कांइक-तेना जेवा विचारो एन्टो-निनस्ने हता एम आपणे समजी शकिये.

हवे आपणे विकल्प आगळ आविये:—"अथवा कां तो विश्वनी नियामक शक्ति जे मुख्य वस्तुओतरफ... तत्त्ववडे नियममां रखाती नथी." Ta kuriotata, "मुख्य," अथवा, "सर्वथी उत्कृष्ट," अथवा ते जे कांइ छे ते-शब्दोथी एन्टोनिनस् शो अर्थ सूचववा मागे छे ते हुं चोकस रीत्ये जाणतो नथी. पण एन्टोनिनस् बीजे स्थळे उतरता प्रकारनी अने चढता प्रकारनी वस्तुओ विषे, अने उतरता प्रकारनी वस्तुओ ते चढता प्रकारनी वस्तुओना उपयोगमाटे

होवाविषे, अने बुद्धियुक्त प्राणिओ सर्वथी चढियाता होवाविषे बोले छे, तेथी ते अहीं बुद्धियुक्त प्राणिओ कहेवा धारता होय. ते वळी आ विकल्पमां विश्वनी एक नियामक शक्ति माने छे, अने ते विश्वनियामक शक्ति पोतानी शक्तिने आ मुख्य वस्तुओप्रत्ये चलावीने, अथवा तो तेओप्रत्ये पोतानी सविशेष, खास, गति करीने कार्य करे छे—(एम पण ते माने छे). अहीं एन्टोनिनस् (Orme) "गति," एवुं नाम वापरे छे, के जेमां विश्वना सर्जनविषे बोलतां ते फकरानी शरुआतमां जे क्रियापद (Ormese) "गयुं," तेमणे वापर्युं छे, तेना जेवो ज भाव रहेलो छे. जो आपणे प्रथम पक्षने न स्वीकारिये तो, ते कहे छे, आपणे बीजा पक्षनो सिद्धान्त स्वीकारवो जोइये के–"जे मुख्य वस्तुओतरफ विश्वनी नियामक शक्ति तेनी पोतानी गति करे छे ते वस्तुओ कोइ बुद्धियुक्त तत्त्ववडे नियममां रखाती नथी." त्यारे, जो तेमां कांइ अर्थ होय तो ए अर्थ छे के–जे पोताना यत्नो सफळ करवाने मथे छे, एवी कोइ नियामक शक्ति छे, तो पण जे शक्तिए विश्वने प्रथम बनाव्युं ते शक्ति जो कोइ पण रीत्ये हजु पण विश्वने नियममां राखती न होय तो आपणे एवो निर्णय बांधवो जोइये के कोइ पण वस्तुनुं बुद्धिपूर्वक नियमन नथी. वळी, जो आपणे एम मानी लेइये के–सर्वोपरि बुद्धिनी क्रिया सिवाय कोइ पण वस्तु हाल उत्पन्न थाय छे अथवा हयाती धरावे छे, अने तेम छतां आ बुद्धि क्रिया करवानो प्रयत्न करे छे, तो आपणे एक एवो निर्णय प्राप्त करिये छिये के जेनी सर्वोपरि शक्तिना स्वभावनी साथे एकवाक्यता करी शकाय नहि, के जे सर्वोपरि शक्तिनुं अस्तित्व एन्टोनिनस् हमेश माने छे. आ विचारोमांथी जे शान्ति माणस मेळवे ते द्वितीय पक्षना त्यागमांथी अने प्रथम पक्षना स्वीकारमांथी परिणामरूपे आववी जोइये; पछी प्रथम पक्षने बादशाह एन्टोनिनस् जे चोकस अर्थमां समज्या हशे ते अर्थ गमे ते होय. अथवा, जेम ते बीजे स्थळे कहे छे तेम, जो दुनियां उपर सत्ता चलावनार कोइ विश्वंभर सत्ता नथी, तो कांइ नहि तो पोतानी प्रकृतिना बंधारणप्रमाणे पोताउपर काबु राखवानी सत्ता तो माणसने छे ज; अने तेथी जो तेनाथी बने तेटलु उत्तम काम ते करे तो ते शान्त थइ शके.

जो प्रस्तुत वाक्यमां भूल न होय तो तेना लखनारनो यथार्थ अर्थ शोधी काढवाने श्रम करवो ते योग्य छे; जो ए अर्थ शो हतो ते बाबतमां लोको एकमत न थाय, तो पण हुं धारुं छुं के–तेमनो कहेवानो कांइ अर्थ तो हतो ज. (सरखावो ९. २८.) जो आ वाक्यमां अने बीजां वाक्यमां में बादशाहनो अर्थ खरी रीत्ये समजाव्यो होय, तो ते (बादशाहे) एक महान् प्रश्नना समाधानने स्पर्श कर्यो छे.

८.

आ विचार वळी ठाली कीर्त्तिनी इच्छाने दूर करवाने प्रवृत्त थाय छे, के तारुं आखुं जीवन अथवा ओछामां ओछु तारी युवानीथी उपरनुं जीवन एक तत्त्वज्ञानीनी पेठे गाळवुं हवे कांइ तारी सत्तामां नथी; पण बीजा घणाओने अने तने पोताने बंनेने ए खुलुं छे के तुं तत्त्वज्ञानथी दूर छे. त्यारे तुं अव्यवस्थामां पडेलो छे, तेथी तत्त्वज्ञानीनी प्रतिष्ठा प्राप्त करवी ते हवे तो तारे माटे सहेलुं नथी; अने तारा जीवननी योजना पण तेनी विरुद्ध ज छे. त्यारे ते बाबत क्यां आवीने पडेली छे ते जो तें खरी रीत्ये जोयुं छे, तो तुं (बीजाओने) केवो देखाइश—ते विचार तुं फेंकी दे, अने तारी बाकीनी जिंदगीमां जेम तारी प्रकृति इच्छे छे तेवी रीत्ये जो तुं (रहीश तो तेटलाथी तुं) संतोष पाम. त्यारे तारी प्रकृति शुं इच्छे छे तेनुं तुं अवलोकन कर, अने बीजा कशाथी तने आडो खेंचाइ जवा दे नहि. केम के कोइ पण स्थळे—अर्थात् नहि न्यायमां, के नहि धनमां, के नहि प्रतिष्ठामां, के नहि भोगमां, के नहि कोइ स्थळे—सुख देख्या सिवाय घणा भ्रमणोनो तने अनुभव छे. त्यारे सुख शेमां छे? मनुष्यनी प्रकृतिने जे जोइये छिये ते करवामां. त्यारे माणस आ शी रीत्ये करशे? जेमांथी तेना राग अने तेनी क्रियाओ उद्भवे छे ते धोरणो तेने होय छे तो (ते करशे). कयां धोरणो? जे सारा अने खोटाने लगतां छे ते धोरणो: जे मनुष्यने न्यायी, मिताहारी, बहादूर, स्वतंत्र नथी बनावतुं तेवुं कांइ पण माणसने माटे सारुं नथी एवुं मत; तथा जे कहेवामां आव्युं छे तेथी उलटुं जे नथी करतुं तेवुं कांइ पण खोटुं नथी एवुं मत.

२. दरेक कामने प्रसंगे तुं तने पोताने पूछ के—आ मारा संबंधमां केम छे? मारे तेनो पश्चात्ताप करवो पडशे? थोडो समय जशे अने हुं मरी जइश, एटले बधुंय गयुं छे. जो हुं जे

हाल करुं छुं ते एक बुद्धियुक्त जीवता प्राणिनुं, अने एक सामाजिक प्राणिनुं, अने ईश्वरनी साथे जे ए ज कायदा नीचे छे तेवा एक प्राणिनुं काम छे, तो एथी वधारे हुं शुं शोधुं छुं?

३. एलेक्सांडर् अने काइयस्[1] अने पोम्पियस्, तेओ डायोजिनीस् अने हिराक्लिटस् अने सोक्रेटीसना मुकाबलामां शुं छे? केम के वस्तुओ, अने तेओनां कारणो [आकारो], अने तेओना उपादानरूप पदार्थथी तेओ जाणीता हता, तथा आ माणसोना नियामक सिद्धान्तो एकधारा [अथवा तेओना कामोनी साथे बंध बेसता] हता. पण बीजाओना संबंधमां तो, तेओने केटली बधी बाबतोनी चिन्ता करवानी हती, तथा तेओ केटली बधी वस्तुओना गुलाम हता?

४. [विचार] के जो तुं (क्रोधे करीने) फाटी जाय तो पण माणसो तो (जे बाबतो करता हशे) तेनी ते ज बाबतो करवाना.

५. आ मुख्य बाबत छेः विकल थइश नहि, केम के सघळी वस्तुओ विश्वना स्वभावप्रमाणे छे; अने थोडा वखतमां हार्डेनियस अने ऑगस्टसनी पेठे तुं कांइए नहि होय अने क्यांइए नहि होय. बीजुं ए छे के—तारा कामउपर दृढताथी नेत्र मांडीने तुं ते प्रति जो, अने ते ज वखते याद राख के एक सारो मनुष्य थवुं ए तारी फरज छे, अने मनुष्यनी प्रकृति जे मागे छे ते पाछो फर्याविना तुं कर, अने जेम तने सौथी व्याजबी लागे तेम तुं बोल, पण तेम सारा स्वभावथी अने सभ्यताथी अने दंभविना थवा दे.

६. विश्वनी कुदरतने आ काम करवानुं छे,—जे वस्तुओ आ जगोमां छे तेमने पेली जगोए खसेडवी छे, तेओमां फेरफार करवो छे, तेओने अहींथी उठाववी छे, अने तेमने पणे लेइ जवी छे. सर्व वस्तुओ ए फेरफार ज छे, तो पण आपणे कोइ वस्तु नवी

---

१. काइयस् ए हाकेम (डिकटेटर्) सी. जुलियस् सीझर् छे; अने पोम्पियस् ते मेग्नस् (महान्) एवुं नाम पामेलो पोम्पियस् छे.

बनवानो भय राखवानी तो जरूर नथी. सघळी वस्तुओ [आपणने] जाणीती छे; पण तेमनी वहेंचणी तो हजु पण तेनी ते ज रहे छे.

७. दरेक प्रकृति तेना रस्ताउपर सारी रीत्ये चाल्या करे छे त्यारे ते पोताथी संतुष्ट रहे छे; अने ज्यारे बुद्धियुक्त प्रकृति तेना विचारोमां कोइ पण असत्य के अचोक्स बाबतने अनुमति आपती नथी, अने ज्यारे ते फक्त सामाजिक कृत्योतरफ ज पोतानी गतिओने प्रेरे छे, अने ज्यारे ते पोताना रागोने अने द्वेषोने जे वस्तुओ तेनी सत्तामां होय छे ते वस्तुओनी उपर ज निरुद्ध करे छे, अने ज्यारे सामान्य प्रकृतिए तेने जे आपी होय छे तेवी दरेक वस्तुथी ते संतुष्ट थाय छे, त्यारे ज ते पोताने मार्गे रुडी रीत्ये चाल्या करे छे. केम के, जेम पांदडानी प्रकृति ते छोडनी प्रकृतिनो एक भाग छे, तेम दरेक विशेष प्रकृति ते आ सामान्य प्रकृतिनो एक भाग छे; तेमां एटलो अपवाद छे के—छोडवामां पांदडानी प्रकृति ए एवी प्रकृतिनो भाग छे के जेने ज्ञान अथवा बुद्धि नथी, अने ते प्रतिबद्ध थवाने पात्र छे; पण मनुष्यनी प्रकृति तो एक एवी प्रकृतिनो भाग छे के जे प्रतिबंधोनो विषय नथी, अने जे बुद्धियुक्त तथा न्यायी छे, केम के ते दरेक वस्तुने सरखे हिस्से अने तेनी योग्यताप्रमाणे समयो, पदार्थ, कारण [आकार], क्रिया-शक्ति, अने प्रसंग आपे छे. तपास कर, पण ते एम शोधी काढवाने नहि के कोइ एक वस्तु बीजी कोइ एक वस्तुनी साथे सरखावतां बधी बाबतोमां सरखी छे, पण कोइ एक वस्तुना सघळा भागो लेइने अने तेओने बीजी वस्तुना सघळा भागो समस्तनी साथे सरखावीने एम शोधी काढवाने तपास कर.

८. तने वांचवाने अवकाश [के शक्ति] नथी. पण तने मगरूरीने दाबमां राखवाने तो अवकाश [के शक्ति] छेः तने सुख अने पीडाथी उपर रहेवाने अवकाश छेः कीर्त्तिनी आसक्तिथी

उपर रहेवाने, मूर्ख अने कृतघ्न लोकोप्रत्ये नहि चीडावाने, अरे-तेमने माटे दरकार पण नहि करवाने तो तने अवकाश छे.

९. राजदरबारनी जिंदगीविषे अने तारी पोतानी जिंदगीविषे दोष काढतो तने हवेथी कोइ वार कोइ माणसने सांभळवा देइश नहि. (५. १६.)

१०. पश्चात्ताप ए कोइ उपयोगी बाबत भूली जवामाटे एक जातनो आत्मोपालंभ छे; पण जे सारुं छे ते कांइक उपयोगी होवुं जोइये, अने संपूर्ण रीत्ये सारा माणसे तेनी पाछळ शोधमां रहेवुं जोइये. पण आवो कोइ पण माणस कोइ विषयसुखनो अनादर कर्यामाटे कदी पण पश्चात्ताप करशे नहि. त्यारे मोजमजा ए काइ सारी नथी तेम ज उपयोगी पण नथी.

११. आ वस्तु ते तेना पोतमां, तेना बंधारणमां शी छे? तेनुं उपादान कारण अने मूळ पदार्थ शो छे? अने तेनी आगंतुक प्रकृति [अथवा आकार] शो छे? अने ते दुनियामां शुं काम करे छे? अने ते क्यांलगी अस्तित्वमां रहे छे?

१२. ज्यारे तुं आनाकानीसाथे उंघमांथी उठे, त्यारे तुं स्मरण कर के सामाजिक कृत्यो करवां ते तारां बंधारणप्रमाणे अने मनुष्यप्रकृतिप्रमाणे छे, पण उंघवुं ते तो बुद्धिरहित प्राणिओने पण सामान्य छे. पण जे दरेक व्यक्तिनी प्रकृतिप्रमाणे छे ते वळी विशेषे करीने तेनुं पोतानुं छे, अने तेना स्वभावने वधारे योग्य छे, अने खरेखर वधारे अनुकूळ पण छे. (५. १.)

१३. निरंतर अने, जो बनी शके तेम होय तो, जीवात्मा उपर पडता दरेक संस्कारने प्रसंगे, सिद्धपदार्थविज्ञान, आचार-नीतिविज्ञान, अने तर्कशास्त्रना सिद्धान्तो तेने लागु पाड.

१४. गमे तेवा माणसने तुं मळे त्यारे तुं तने पोताने तरत ज एम कहे केः—आ माणसने सारा अने खोटा विषे शा अभिप्रायो छे? केम के जो सुख अने दुःख तथा ते दरेकनां कारणोविषे,

तथा कीर्त्ति अने अपकीर्त्तिविषे, मृत्यु अने जीवनविषे तेना आवा अभिप्रायो छे तो, जो ते आवी आवी वस्तुओ करे तो, ते कांइ मने आश्चर्यभरेलुं अथवा विचित्र लागशे नहि; अने हुं ए मारा मनमां समजी राखीश के तेने एम करवानी जरूर पडेली छे.[२]

१५. याद राख के—अंजीरनुं झाड अंजीर उत्पन्न करे तेथी आश्चर्य पामवुं ए जेम शरमभरेलुं छे, तेम ज आ दुनिया जे वस्तुओनी उत्पादक छे तेथी आवी आवी वस्तुओने उत्पन्न करे छे तेथी आश्चर्य पामवुं ते पण शरमनी वात छे; अने वैद्य अने सुकानी, माणसने तावबाळो जोइने, अथवा पवनने प्रतिकूळ जोइने जो आश्चर्य पामे तो ते तेमने माटे एक शरमनी वात छे.

१६. याद राख के—तारो अभिप्राय बदलवो अने जे माणस तारी भूल सुधारे छे तेने अनुसरवुं ए, तारी भूलमां ज तुं मक्कम रहे, तेना जेटलुं ज स्वतंत्रतानी साथे बंधबेसतुं छे. केम के तारी पोतानी ज गति अने मति प्रमाणे, अने खरेखर वळी तारी पोतानी समजप्रमाणे जे क्रियाशक्तिनो उपयोग करवामां आव्यो छे, ते तारी पोतानी ज छे.

१७. जे वस्तु तारी सत्तामां होय छे, ते तुं शा माटे करे छे? पण जो ते बीजा कोइनी सत्तामां होय छे, तो तुं कोने दोष दे छे? अणुओने [भाविने] के देवोने? ए बंने वातो मूर्खाइभरेली छे. तारे कोइने पण दोष देवो जोइये नहि. केम के जो ताराथी बनी शके तो [जे कारण होय तेने] सुधार; पण जो तुं आ करी न शके तो कांइ नहि तो ते वस्तुने पोताने ज सुधार; पण जो तुं आ पण न करी शके, तो कोइनो दोष काढवो ए तने शा उपयोगनुं छे? केम के कामविना कांइ पण करावुं जोइये नहि.

---

२. एन्टोनिनस् ५. १६. थ्युसिडाइडीस्, ३. १०; केम के मनोनी (अथवा मतोनी) भिन्नतामां क्रियाओनी भिन्नतानो पायो रहेलो छे.

१८. जे कांइ मरी जाय छे ते कांइ आ विश्वनी बहार जइने पडतुं नथी. जो ते अहीं रहे छे, तो ते अहीं विकारने पण पामे छे, अने तेना यथायोग्य भागोमां मळी जाय छे, के जे भागो विश्वनां अने तारां पोतानां मूळतत्त्वो छे. अने आ मूळतत्त्वोमां पण फेरफार थाय छे, अने तेओ बडबडतां नथी.

१९. दरेक वस्तु कोइ अंतिम हेतुने माटे हयाती धरावे छे, जेम के एक घोडो, एक द्राक्षनो छोड. तुं शामाटे आश्चर्य पामे छे? सूर्य पण कहेशे के हुं कांइ कामने माटे छुं, अने बाकीना देवो पण ए ज कहेशे. तुं शा कामने माटे छे? शुं मोजमजा भोगववाने? जो साधारण बुद्धि आ नभवा दे तो तुं जो.

२०. जे माणस दडो उपर फेंके छे तेनी पेठे ज, कुदरत दरेक वस्तुमां जेटली आरंभने माटे दरकार राखे छे ते करतां अंतने माटे कांइ ओछी दरकार राखती नथी. त्यारे दडाने माटे उंचे फेंकावुं ते शुं छे, अथवा नीचे आववुं तेमां तेने माटे शी इजा छे, अथवा तो पडी जवुं ते पण शी इजा छे? अने ज्यारे परपोटो बन्यो रहे छे ते दरम्यान तेने शुं सारुं छे, अथवा ज्यारे ते फुटी गयो होय छे त्यारे तेने शी इजा छे? तेजविषे पण ए ज कही शकाय.

२१. [शरीरने] फेरवीने अंदरनी बाजु बहार काढो, अने जुवो के ते केवा प्रकारनी वस्तु छे; अने ज्यारे ते घरडुं थइ गयुं होय छे, अने ज्यारे ते रोगग्रस्त थइ गयुं होय छे, त्यारे ते केवा प्रकारनी वस्तु थाय छे.

वखाणनार अने वखणायलो, अने स्मरण करनार अने स्मरण करायलो ए बंने टूंका आयुष्यवाळा छेः अने आ बधुं ते दुनियाना आ भागना एक खूणामां छे; अने अहीं पण बधा एकमत थता नथी, नहि, पोताना पिंडसाथे पण कोइ एकमत थतो नथीः अने आखी पृथ्वी ते पण एक बिंदु छे.

२२. तारी आगळ छे ते बाबत, चहाय तो ते अभिप्राय होय के कृत्य होय के शब्द होय, तेना उपर तुं ध्यान आप.

आ तुं जे दुःख सहन करे छे ते व्याजबी रीत्ये सहन करे छेः केम के तुं आजे ज भलो थवा करतां आवती काले भलो थवानुं पसंद करे छे.

२३. हुं कांइ पण वस्तु करुं छुं? हुं ते मनुष्यजातिना शुभने उद्देशीने करुं छुं. मारा संबंधमां कांइ बाबत बने छे? हुं ते स्वीकारुं छुं अने देवोने तथा सर्व वस्तुओनी उत्पत्तिनुं स्थान के जेमांथी जे बने छे, ते सघळुं निकळी आवे छे तेने निवेदन करुं छुं.

२४. जेवुं स्नानकरेलुं जळ तने—तेल, परसेवो, मेल, मलिन-जळ ए बधी चीजो सुग उपजावे एवी—जणाय छे, तेवो जिंदगीनो दरेक भाग अने दरेक वस्तु छे.

२५. ल्युसिल्लाए वीरसने मरता जोया, अने पछी ल्युसिल्ला मरी गयी. सेकन्डाए मेक्सिमसने मरता जोया, अने पछी सेकन्डा मरी गयी. एपिटिन्चेनसे डायोमिटसने मरता जोया, अने पछी एपिटिन्चेनस् मरी गया. एन्टोनिनसे फोस्टिनाने मरती जोइ, अने पछी एन्टोनिनस् मरी गया. आवी बधी वस्तु छे. सेलरे हेड्रिएनसने मरता जोया अने पछी सेलर् मरी गया. अने पेला तीक्ष्ण बुद्धिवाळा माणसो, कां भविष्यद्दष्टाओ के कां गर्वथी फुलेला माणसो, तेओ कयां छे? दाखलातरीके तीक्ष्ण बुद्धिवाळा माणसो, चेरेक्स् अने प्लेटोनो अनुयायी डिमेट्रियस् अने यूडिमोन्, अने तेमना जेवो बीजो हरकोइ. ए बधाए अल्पजीवी हता, अने लांबा समयउपर मरी गया. खरेखर केटलाकनुं तो थोडा समय-लगी पण स्मरण रह्युं नथी, अने केटलाएक दंतकथाओना नायक बन्या छे, अने पाछा केटलाक तो दंतकथाओमांथी अदृश्य पण थइ गया छे. त्यारे आ याद राख के—आ नानोसरखो मिश्रित

पदार्थ तुं पोते कां तो ओगळी जइश, अथवा तो तारो रंक प्राण ओलवाइ जशे, अथवा तो अहींथी खसेडीने बीजे कोइ स्थाने मूकाशे.

२६. मनुष्यनां योग्य कार्य करवा ए माणसने एक संतोष छे. हवे पोतानी जातिप्रत्ये शुभेच्छावाळा थवुं, इन्द्रियोना वेगोने धिक्कारवा, उपरउपरथी जणाता देखावोविषे व्याजबी अभिप्राय बांधवो, अने विश्वनी कुदरतनुं तथा विश्वमां जे वस्तुओ बने छे तेनुं समीक्षण करवुं–ए माणसनुं योग्य काम छे.

२७. [तारा अने बीजी वस्तुओनी वच्चे] त्रण संबंध छे; एक तो तारी आशपाश जे वींटलाइ रहे छे ते तारा शरीर[3]साथे संबंध छे; बधाने जेमांथी सघळी वस्तुओ प्राप्त थाय छे ते दिव्य कारणसाथे बीजो संबंध छे; अने त्रीजो संबंध जेओ तारी साथे रहे छे तेओनी साथे छे.

२८. व्यथा ए कां तो शरीर ने के कां तो आत्माने अशुभ छे, शरीरने ते अशुभ होय तो भले तेविषे शरीर जे धारे ते कहे; पण पोतानी गंभीरता अने शान्ति जाळवी राखवी अने व्यथा ए अशुभ छे एम न धारवुं ते आत्मानी सत्तामां तो छे. केम के दरेक अभिप्राय अने गति अने राग अने द्वेष ते अंतरमां छे, अने कोइ पण अशुभ एटले उंचे चढी शकतुं नथी.

२९. तुं तने पोताने वारंवार आम कहेवावडे तारी कल्पनाओने भूशी नांखः–कोइ पण नठारापणाने, अने इच्छाने अने कोइ पण क्षोभने बिलकुल आ आत्मामां पेसवा न देवां ते हाल मारी सत्तामां छे; पण बधी वस्तुओतरफ जोइने हुं तेमनी

---

३. मूळमां aition छे जेनो अर्थ एन्टोनिनसना लखाणोमां " आकार, " " आकार संबंधी " थाय छे. तेथी वाल्केनीरे सुधारेलुं aggeion, "शरीर" के कां तो कोरेइसे सुधारेल somation नी भलामण शब्दज्ञ करे छे. १२. १३, १०. ३८ सरखावो.

प्रकृति शी छे ते जोउं छुं, अने दरेक वस्तुने हुं तेनी किमतप्रमाणे वापरुं छुं.–कुदरतपासेथी तने जे आ शक्ति प्राप्त छे तेने याद कर.

३०. राजसभामां अने दरेक माणसने, पछी ते गमे ते होय, ते बंनेप्रति कांइ पण आडंबरविना यथायोग्य रीत्ये बोलः सादुं भाषण वापर.

३१. ऑगस्टसनुं रावणुं, स्त्री, पुत्री, वंशजो, पूर्वजो, बहेन, एग्रिप्पा, सगाओ, सहवासीओ, मित्रो, एरियस्[४], मीसीनस्, वैद्यो, होताओ–आखो दरबार मरी गयो छे. पछी एक माणसना मरणने नहि विचारतां, [पण आखी जातिना] (मरणविषे विचारतां), दाखलातरीके पोम्पीना (मरणविषे विचारतां), बाकीनातरफ फर; अने कबरोउपर जे लखवामां आवे छे के–तेनी जातिनो छेल्लो–तेतरफ फर. ते पछी तेओनी पूर्वे थयेलाओने तेओ पोतानी पाछळ वारसाउपर आवनार मूकी जाय तेटलामाटे केटली माथाकुट पडी हशे ते विचार; अने त्यारपछी, अवश्ये कोइ तो छेल्लो होवो ज जोइये, ते विचार. वळी अहीं आखी जातिना मरणविषे विचार कर.

३२. दरएक कार्यमां तारे तारा जीवननी सारी रीत्ये व्यवस्था करवी ए तारी फरज छे; अने जो दरेक कार्य बने त्यांलगी तेनी फरज बजावे तो तेथी तुं संतोष पाम; अने दरेक कृत्य तेनी फरज न बजावे तेवी रीत्ये तने प्रतिबंध करवाने कोइ समर्थ नथी–पण कोइ बहारनी वस्तु तारा रस्तामां (आडे) आवशे–व्याजबी रीत्ये अप्रमत्तपणे अने विचारपूर्वक वर्त्ततां तारा रस्तामां

---

४. एरियस् एक तत्त्वज्ञानी हतो, ते ओगस्टसनो सहवासी हतो; स्युटोन्, ओगस्टस्, प्र. ८९; प्लुटार्च, एन्टोनिनस्, ८०; डायोन् केस्सियस्, ५१, प्र. १६.

कांइ पण आडे आवशे नहि—पण तारी कार्य करवानी कोइक शक्तिने प्रतिबंध थशे—ठीक, पण ए प्रतिबंधने स्वीकारवाथी अने जे करवा देवामां आवे तेवा कार्यतरफ तारा प्रयत्नो फेरवीने लेइ जवामां संतोष मानवाथी जे कार्यनो प्रतिबंध करवामां आव्यो हतो, तेने स्थळे काम करवानी बीजी तक तरत ज तारी आगळ मूकवामां आवे छे, अने ते तक एवी होय छे के जेना विषे अपणे बोलिये छिये ते आ व्यवस्थाने ते पोतानी मेळे बंधबेसशे.

३३. गर्वसिवाय [धन के समृद्धिनो] अंगीकार कर; अने तेने जवा देवाने माटे पण तैयार रहे.

३४. कोइ हाथ, अथवा पग, अथवा माथुं, कपायलुं—बाकीना धडथी छुटुं पडेलुं तें कोइ वार कोइ स्थळे जोयुं होय तो, तेना जेवो ज एक माणस पोताने बनावे छे के जे माणस जे कांइ आवी पडे छे तेथी संतुष्ट नथी अने बीजाओथी जे पोताने छुटो पाडी नाखे छे अथवा कोइ असामाजिक बाबत करे छे. (धार के तें कुदरती एकतामांथी तने पोताने छुटो पाडी नाख्यो छे.)—केम के कुदरते तने एक भागरूपे बनाव्यो हतो, पण हवे तें तने पोताने कापीने छुटो पाडेलो छे—पण अहीं हजु एक सुंदर व्यवस्था छे के—फरीने तने पोताने तेनी साथे जोडी देवानुं तारी तो सत्तामां छे. परमेश्वरे बीजा कोइ भागने एवुं आप्युं नथी के—तेने जुदो पाडवामां आव्यो होय अने कापीने निराळो करवामां आव्यो होय तो पछी ते पाछो फरीने जोडाइ शके. पण परमेश्वरे जे कृपाळुताथी माणसने अंकित कर्यो छे तेनो विचार कर, केम के समष्टिथी बिलकुल जुदा नहि पडवानुं ईश्वरे माणसनी सत्तामां मूकेलुं छे; अने ज्यारे ते जुदो पडेलो होय त्यारे पण फरीने पाछा आववा अने जोडावा अने एक भागतरीके तेने पोतानुं स्थान पुनः प्राप्त करवा देवामां आवे छे.

३५. जेम समष्टिनी प्रकृतिए दरेक बुद्धियुक्त प्राणीने जे बिजी

सघळी शक्तिओ तेने छे ते आपी छे, तेम आ शक्ति पण आपणे ते (कुदरत)नी पासेथी मेळवी छे. केम के समष्टिनी प्रकृति जे दरेक वस्तु तेना मार्गमां तेनी सामे थाय छे तेने फेरवीने पोताने अनुकूल करी ले छे अने तेनी प्रथमथी नक्की करेली जगोए स्थापे छे, अने एवी वस्तुओने ते (प्रकृति) पोताना एक भागतरीके बनावे छे, ते ज प्रमाणे बुद्धियुक्त प्राणी पण, दरेक प्रतिबंधने पोताना कामनो पदार्थ बनाववाने अने तेणे जेनी योजना करी राखी होय तेवां काममां वापरवाने, शक्तिमान् छे.[5]

३६. तो आखी जिंदगीनो विचार करीने तुं तने पोताने विकळ करीश नहि. जे तारा उपर आवी पडवानी तुं धारतो होय ते सघळी विविध उपाधिओने तारा विचारो एकदम भेटवा देइश नहिः पण दरेक प्रसंगे तुं तने पूछ के—आमां एवुं शुं छे के जे असह्य अने सहन कराय तेवी हदबहार गयेलुं छे ? केम के तुं ए कबुल करवाने शरमाइश. बीजी बाबत ए याद राखवानी छे के तने भविष्ये नहि के भूते नहि पण फक्त वर्त्तमान पीडे छे. पण जो तुं वर्त्तमाननी हद बांधवा एक होळाइओ ज मात्र दोरी दे, अने जो तारुं मन आना सामे पण टकी रहेवाने अशक्त होय तो तेने तुं ठपको दे तो आ वर्त्तमान घणुं ओछुं थइ जाय छे.

३७. पेन्थिआ के पर्गेमस् हवे वीरसनी[6] कबरपासे बेसे छे के ? चोरिआस् के डायोटिमस् हेड्रिएनसनी कबरपासे बेसे छे के ? ते हास्यजनक थशे. ठीक, धार के तेओ त्यां बेठां, तो तेनी गुजरेलाने खबर पडशे के ? अने कदी मुवेलांने तेवी खबर पडे,

---

५. फकरानी शरुआतमां मूळपाठ अशुद्ध छे, पण जो बीजो Logikon बदलीने olon करवामां आवे तो अर्थ जणाइ आवशेः जो के एकलो आ फेरफार मूळपाठनी व्याकरणसंबंधी पूर्णता सिद्ध करशे नहि.

६. "वीरस्" ए सोमेइसनो अटकळेलो पाठ छे, अने कदाच ते खरो पाठ पण होय.

तो तेथी तेओ खुशी थशे के? अने कदी तेओ खुशी थयां, तो तेथी तेओ शुं अमर थशे के? नियतिना क्रममां ए शुं नहोतुं के—आ माणसो पण प्रथम घरडी डोशीओ अने डोसा थवा जोइये, अने पछी मरवा जोइये? त्यारे आ मरी गया पछी तेओ शुं करशे? आ बधुं एक कोथळामां भरेलां दुर्गन्ध अने लोही छे.

३८. जो तुं चंचलताथी जोइ शके, तो जो अने डहापणपूर्वक विचार कर, † एम एक तत्त्वज्ञ कहे छे.

३९. बुद्धियुक्त प्राणिना बंधारणमां हुं कोइ एवो सद्गुण जोतो नथी के जे न्यायनी विरुद्ध होय; पण हुं एवो एक सद्गुण जोउं छुं के जे मोजमजानी आसक्तिनी विरुद्ध छे, अने ते (सद्गुण ते) मिताहार छे.

४०. जे तने दुःख देतुं जणाय छे तेविषेनो तारो अभिप्राय जो तुं उठावी ले, तो तुं पोते संपूर्ण निर्भयतामां खडो रहे छे—तो आ पोते ए कोण छे?—ए बुद्धि छे—पण हुं तो बुद्धि नथी—भवतु. तो बुद्धि पोते तेने पोताने ज दुःख दे तेम न थवा दे. पण जो तारो बीजो कोइ भाग सहन करतो होय तो तेविषे तेनो पोतानो मत तेने बांधवा दे. (७.१६.)

४१. इन्द्रियनां ज्ञानने प्रतिबंध ते प्राणिनी प्रकृतिने अशुभ छे. [इच्छाओना] वेगोने प्रतिबंध ते पण तेटले ज अंशे प्राणिनी प्रकृतिने अशुभ छे. अने बीजुं कांइ ते पण छोडवाओना बंधारणने तेटले ज अंशे प्रतिबंध अने अशुभ छे. तो पछी बुद्धिने जे प्रतिबंध छे ते बुद्धियुक्त प्रकृतिने अशुभ छे. त्यारे आ बधी बाबतो तने पोताने लागु पाड. पीडा अथवा विषयसुख तने असर करे छे? ते तो इन्द्रियो जोशे.—कोइ पण प्राप्तव्यप्रत्येना तारा प्रयत्नोमां कोइ प्रतिबंध तने सामो नड्यो छे? खरेखर जो तुं आ प्रयत्न निरपेक्ष रीत्ये [कांइ पण शरतविना, अथवा कांइ पण बाकी राख्या विना] करतो हतो, तो एक बुद्धियुक्त प्राणितरीके

गणायला तने खरेखर आ प्रतिबंध ते अशुभ छे. पण जो तुं वस्तुओनो हमेशनो क्रम विचारमां ले, तो हजु पण तने कांइ इजा के हरकत पण थइ नथी. तो पण जे वस्तुओ बुद्धिने योग्य छे ते वस्तुओने तो कोइ पण बीजा माणसथी प्रतिबंध करातो नथी, केम के अग्नि, के लोढुं, के जुलमगार राजा, के गाळो तेने कोइ पण रीत्ये असर करती नथी: ज्यारे ते एक गोळारूपे बनावायली छे, त्यारे ते गोळारूपे ज चालु रहे छे. (११. १२)

४२. हुं मने पोताने दुःख देउं ते घटित नथी, केम के में कदी पण बीजा कोइने पण इरादापूर्वक दुःख दीधुं नथी.

४३. जुदी जुदी वस्तुओ जुदा जुदा माणसोने आनंद आपे छे. पण कोइ मनुष्यथी अथवा जे वस्तुओ मनुष्यो उपर आवी पडे छे ते वस्तुओमांनी कोइ पण वस्तुथी विमुख थयाविना, परन्तु आवकारभरेलां नेत्रवडे सर्वेने जोतां अने स्वागत करतां तथा दरेक वस्तुने तेनी किमतप्रमाणे उपयोगमां लेतां नियामक बुद्धिने दृढ राखवी ते मारो आनंद छे.

४४. आ वर्तमान काळने तुं तारे हाथ करे छे एटलुं तुं जो: केम के जेओ कांइक मरणपछीनी कीर्त्तिनी पाछळ दोडे छे तेओ विचारता नथी के वखत वीततां माणसो तदन आ माणसो जेवा थइ जशे के जेमने तेओ हाल सांभळी शकता नथी; अने (तेओ) बंने मर्त्य छे. अने मरणपछीना समयनां आ माणसो आ अवाज बोले के ते अवाज बोले, अथवा तारा विषे आ मत धरावे के ते मत धरावे ते तने कोइ रीत्ये शुं छे?

४५. तुं मने लेइने तारी मरजीमां आवे त्यां नाख; केम के जो मारो दिव्य भाग तेना बंधारणने अनुरूप लागणी धरावी शके अने काम करी शके, तो हुं त्यां पण मारा ते भागने शान्त एटले संतुष्ट राखीश. आ [स्थानान्तर] शुं पूरतुं कारण छे के जेथी मारो आत्मा पहेलां हतो तेना करतां वधारे दुःखी अने खराब,

अर्थात् गमगीन, लातरी गयेलो, संकोचातो, अने भयभीत थवो जोइये? अने आने माटे जे पूरतुं गणाय एवुं तने कयुं कारण जडशे?[७]

४६. जे मानुषी अकस्मात् नथी तेवुं कांइ पण मनुष्यने आवी पडतुं नथी, अने जे बलदनी प्रकृतिप्रमाणे नथी ते बळदने आवी पडतुं नथी, अने जे द्राक्षना वेलानी प्रकृतिप्रमाणे नथी ते द्राक्षना वेलाने आवी पडतुं नथी, अने जे पथ्थरने योग्य नथी ते पथ्थरने आवी पडतुं नथी. जो त्यारे दरेक वस्तुने जे हमेशनुं अने कुदरती बंने होय छे ते ज आवी पडेछे, तो तारे शामाटे फरियाद करवी जोइये? केम के सामान्य प्रकृति एवुं कांइ पण आणती नथी के जे तारावडे सहन थाय नहि.

४७. जो तने कांइ बहारनी वस्तुवडे पीडा थइ होय, तो तने जे इजा करे छे ते आ वस्तु नथी, पण तने जे इजा करे छे ते तारो ते विषेनो विचार ज छे. अने हाल ते विचारने भूशी नाखवो ते तारी सत्तामां छे. पण जो तारा पोताना स्वभावमांनी कोइ वस्तु तने दुःख दे छे, तो तारो अभिप्राय सुधारतां तने कोण अटकावे छे? अने जो, कोइ अमुक वस्तु जे तने खरी जणाय छे ते तुं करतो नथी तेटलामाटे, तने दुःख थतुं होय तो फरियाद करवा करतां कांइक ते काम तुं केम करतो नथी? पण ओळंघी शकाय नहि एवी कोइ अडचण मार्गमां छे?—तो शोक करीश नहि, केम के ते काम नथी करातुं ते तारा उपर आधार राखतुं नथी—पण जो आ न करी शकाय तो जीववुं ज योग्य नथी— त्यारे जेम कोइ पूर्ण प्रवृत्तिमां, अने जे वस्तुओ प्रतिबंधरूप होय

---

७. आ वाक्यमां Oregomene नो भाववाच्य अर्थ होय एम जणाय छे. ए पदने माटे अने बीजा केटलाक शब्दने माटे योग्य शब्द शोधी काढवो ए मुश्केल छे. ११. १२, नी साथे तेनी सरखामणी तेनो अर्थ समजाववाने मदद करशे.

छे तेथी पण सारी पेठे प्रसन्न थयेलो मरी जाय छे, ते ज प्रमाणे संतोषपूर्वक जिंदगीमांथी तुं उपडी जा.

४८. नियामक शक्ति, जो ते पोते जे करवानुं पसंद करती नथी तेवुं कांइ करती नथी—जो केवळ हठने लीधे अडी बेसे छे—तो पण, ज्यारे स्वयं स्वस्थ होवाथी ते पोताथी संतुष्ट होय छे, त्यारे तुं याद राखजे के ते अजय्य होय छे. तो पछी ज्यारे ते शक्ति तर्कनी सहायता पामीने विचारपूर्वक निर्णय बांधे त्यारे तो ते केवी थाय ? तेटलामाटे विकारथी मुक्त अंतःकरण ए एक किल्लोछे, केम के एना करतां माणस ज्यां आश्रयने माटे दोडी जइ शके अने भविष्यने माटे अलंध्य थाय एवुं—वधारे निर्भय (स्थान) कोइ पण नथी. तो जे माणसे आ जोयुं नथी ते एक अज्ञान माणस छे; पण जेणे आ जोयुं छे अने आ आश्रय(स्थान)प्रत्ये दोडी जतो नथी ते दुःखी छे.

४९. प्रथम देखावो जे तने जाहेर करे तेना करतां कांइ पण वधारे तुं तने पोताने कहीश नहि. तुं एम धार के तने एवुं जाहेर करवामां आव्युं छे के अमुक माणस तारुं भुंडुं बोले छे. आ तने जाहेर करवामां आव्युं छे; पण तेथी तने हानि थइ छे एवुं तने जाहेर करवामां आव्युं नथी. हुं जोउं छुं के मारुं बाळक मांदुं छे. हुं ते जोउं छुं ज; पण हुं ए जोतो नथी के ते भयमां छे. तो आप्रमाणे हमेश प्रथम देखावप्रमाणे मान, पण तारी पोतानी मेळे अंतरमांथी कांइ उमेर नहि, अने तो पछी तने कांइ थतुं नथी. अथवा तो जो कदी कांइ उमेरे, तो आ दुनियामां जे बने छे ते दरेक वस्तुने जे माणस जाणे छे एवा माणसनी पेठे कांइक उमेर.

५०. एक काकडी कडवी छे—(तो) तेने नाखी दे.—मार्गमां झांखरां छे—ते झांखरांथी बाजुए फंटाइ जा.—आटलुं बस छे. अने आवी वस्तुओ दुनियामां शामाटे बनावी हती?—एवुं तुं उमेर

नहि. सुतारोनां अने मोचीओनां कारखानामां जे वस्तुओ तेओ बनावे छे तेमांथी पडेली छोल अने कापलीओ तुं जुए तेथी तुं दोष काढे तो जेम तुं ते सुतार अने मोचीवडे हसी कढाइश, तेम जे माणस कुदरतथी जाणीतो छे तेनावडे तुं हसी कढाइश. अने तेमां पण सुतारोने अने मोचीओने तो एवी जगाओ पण होय छे के ज्यां तेओ आ छोल अने कापलीओ नांखे, अने विश्वनी प्रकृतिने तो कोइ बहारनी जगो ज नथी; पण ते विश्व-प्रकृतिनी कळानो चमत्कारिक भाग तो ए छे के–तेणे पोते तो पोतानी आगळपाछळ मंडळ दोरीने पोतानी हद बांधी लीधी छे, तो पण जे तेनी पोतानी अंदर खवाइ जती अने जीर्ण थती अने नकामी थती जणाय छे ते दरेक वस्तुने ते पोताना ज रूपमां फेरवी ले छे, अने आ ज वस्तुओमांथी फरीने बीजी नवी वस्तुओ बनावे छे एटले तेने बहारनो कोइ उपादान पदार्थ जोइतो नथी तेम ज जे खवाइ जाय छे ते वस्तु जेमां ते नाखे तेवी जगानी पण तेने जरूर पडती नथी. विश्वप्रकृति तेनी पोतानी जगोथी, तेना पदार्थथी अने तेना पोताना हुनरथी संतुष्ट छे.

५१. तारां कृत्योमां तुं अतिमंद न था अने तारी वातचित्तमां व्यवस्थाविनानो न था, अने तारा विचारोमां भटकतो न था, अने तारा आत्मामां अंतरनो झगडो थवा न दे अने बहारनो उभरो थवा न दे, अने तारा जीवनमां एटलो बधो जंजाळी न था के जेथी तने कांइ पण अवकाश मळे नहि.

धार के माणसो तने मारी नाखे छे, तारा कडके कडका करी नाखे छे, तने शाप दे छे. त्यारे आ वस्तुओ तारा मनने पवित्र, डाह्युं, अप्रमत्त, न्यायी रहेतां अटकाववाने शुं करी शके? दाखला तरीके, जो कोइ माणस एक स्वच्छ निर्मल झरापासे उभो रहे, अने तेने शाप आपे, (पण तेथी) ते झरो पीवालायक पाणी वहेवरावतो कदी पण बंध थतो नथी, अने ते जो एमां माटी अथवा

गंदकी नाखशे तो ए जलदीथी ते विखेरी नाखशे अने धोइ नाखशे, अने (झरो पोते) बिलकुल कलुषित थशे नहि. तो तुं तने पोताने हरघडी संतोष सादाइ अने विनयथी संयुक्त स्वतंत्रताने अनुरूप बनावीने तुं [फक्त एक कुवो नहि] पण निरंतर वहेतो झरो केम न प्राप्त करे ?

५२. जे माणस जाणतो नथी के दुनिया शुं छे, ते जाणतो नथी के ते पोते क्यां छे. अने दुनियां शामाटे हयाति धरावे छे ते जाणतो नथी ते जाणतो नथी के ते पोते कोण छे, अने दुनियां शुं छे ते पण जाणतो नथी. पण आ बाबतोमांनी एकादमां पण निष्फळ थयो छे ते ए पण नहि कही शके के ते पोते पण शामाटे अस्तित्वमां छे. त्यारे जे माणस प्रशंसकोना वखाणथी वेगळो रहे छे अथवा तेमनां वखाण शोधे छे ते माणसविषे तुं शुं धारे छे, जे माणसो जाणता नथी के तेओ क्यां छे अने कोण छे तेओविषे तुं शुं धारे छे ?

५३. जे माणस दर कलाके त्रण वार पोताना पंडने ज शाप दे छे एवा माणसथी वखणावुं शुं तुं इच्छे छे ? जे माणस पोताना पंडने ज खुशी करतो नथी तेने तुं शुं प्रसन्न करवा इच्छीश ? जे माणस पोते करे छे ते लगभग दरेक वस्तुने माटे पश्चात्ताप करे छे ते माणस शुं पोताने प्रसन्न करे छे ?

५४. हवे एकला तारा श्वासोच्छ्वासने ज तारी आसपास जे रहेली छे, ते हवानी साथे एकरागमां वर्त्तवा दे एटलुं ज नहि, पण वळी तारी बुद्धिने पण हवे जे बुद्धि सर्व वस्तुओने भेटे छे ते बुद्धिनी साथे एकसुरमां रहेवा दे. जे श्वास लेवाने शक्तिमान् छे तेने माटे हवानी शक्ति करतां, जे बुद्धिशक्तिने अंतरमां खेंचवाने खुशी छे तेने माटे बुद्धिशक्ति कांइ सर्व भागमां ओछी प्रसरेली नथी अने सर्व वस्तुओमां कांइ ओछी व्यापी रहेली नथी.

५५. सामान्य रीत्ये, दुष्टता विश्वने कांइ इजा करती नथी

अने खास करीने, [एक माणसनी] दुष्टता बीजा माणसने तो कांइ इजा करती ज नथी. चहाय के तरत ज दुष्टतामांथी मुक्त थवुं ए जेनी सत्तामां छे ते माणसने ज फक्त ते (दुष्टता) हानिकारक छे.

५६. मारा पाडोशीनी स्वतंत्र इच्छा ते मारी स्वतंत्र इच्छाप्रत्ये तेना बिचारा प्राण अने मांस जेटली ज उपेक्षावाळी छे. केम के जो के आपणे खास करीने एक बीजाने माटे बनेला छिये, तो पण आपणी प्रत्येकनी नियामक शक्तिने तेनुं पोतानुं काम करवानुं छे, केम के नहि तो मारा पाडोशीनी दुष्टता ते मने इजा थइ पडे, के जे संकल्प परमेश्वरे—मारा दुःखनो आधार बीजानी उपर न रहे तेटलामाटे—कर्यो नथी.

५७. सूर्य (नो प्रकाश) नीचे रेडातो जणाय छे, अने खरेखर ते सघळी दिशाओमां प्रसरेलो होय छे, तो पण ते उभरायेलो नथी. केम के आ प्रसरवुं ते लंबावुं छेः तेथी सूर्यनां किरणो ते आयति* (Extentions=Actines) कहेवाय छे, केम के तेओ लंबायलां छे.[८] पण माणस जो एक सांकडा काणामांथी एक अंधारी ओरडीमां जता सूर्यना प्रकाशतरफ जुए, तो सूर्यनुं किरण ए केवा प्रकारनी वस्तु छे तेविषे ते विचार करी शके, केम के ते सीधी लीटीमां प्रसरेलुं होय छे, अने ज्यारे ते मार्गमां वचमां आवेलो कोइ नक्कर पदार्थ के जे तेनी आगळनी हवाने अटकाव करे छे तेनी साथे मळे छे त्यारे ते किरण जाणे विभक्त जेवुं थइ जाय छे; पण ते प्रकाश त्यां ज स्थिर रहे छे अने रगडी जतो नथी अथवा ढोळाइ जतो नथी. त्यारे बुद्धिनो बहिःप्रवाह अने प्रसार ते आवो होवो जोइये, अने ते कोइ पण रीत्ये उभरो होवो जोइये नहि, पण ते एक लंबावुं होवुं जोइये, अने तेणे वचमां आवता प्रतिबंधो साथे जुस्साभरेलो अथवा आवेशी आघात करवो जोइये नहि; अने तो पण तेणे नीचे पडी जवुं जोइये नहि, पण स्थिर

---

* लंबावुं. ८. आ एक खराब व्युत्पत्तिनो नमुनो छे.

रहेवुं जोइये तथा जे वस्तु तेने प्राप्त करे छे, तेने तेणे प्रकाशित करवी जोइये. केम के जो कोइ पदार्थ तेने अवकाश नहि आपे तो ते पदार्थ पोते ज रोशनीविनानो रहेशे.

५८. जे माणस मृत्युथी बीहे छे ते माणस कां तो चेतनाना नाशथी अथवा तो बीजा प्रकारनी चेतनाथी बीहे छे. पण जो तारे कोइ चेतना ज नहि होय, तो तने कांइ इजा पण लागशे नहि; अने जो तुं कोइ बीजा प्रकारनी चेतना मेळवीश तो तुं कोइ बीजी जातनुं जीवतुं प्राणि थइश अने तुं जीवतो अटकीश नहि.

५९. माणस एक बीजाने माटे हयाति धरावे छे. तो तेओने तेमने वेठी लेवाने शीखव.

६०, तीर एक रीत्ये जाय छे, अने मन बीजी रीत्ये जाय छे. खरेखर मन ज्यारे सावधता वापरे छे अने ज्यारे ते तपास करवामां रोकायलुं होय छे त्यारे मन सीधुं अने तेना लक्ष्यतरफ कांइ ओछुं जतुं नथी.

६१. दरेक माणसनी नियामक शक्तिमां प्रवेश कर; अने वळी तारी नियामक शक्तिमां दरेक माणसने प्रवेश पण करवा दे.[१]



१. एपिक्टेटस्, ३.९, १२. सरखावो.

९.

जे माणस अन्यायी रीत्ये वर्त्ते छे ते अपवित्र रीत्ये वर्त्ते छे. केम के ज्यारथी विश्वनी प्रकृतिए बुद्धियुक्त प्राणिओने पोतपोतानी योग्यता प्रमाणे एक बीजाने साहाय्य करवाने, परंतु एक बीजाने कोइ पण रीत्ये इजा नहि करवाने बनाव्या छे, त्यारथी जे कोइ ए प्रकृतिनी इच्छा ओळंघे छे ते सर्वोपरि दिव्य सत्ताप्रत्ये अपवित्रतानेमाटे खुली रीत्ये गुनेहगार छे. अने जे कोइ जुटुं बोले छे ते पण ते ज दिव्य सत्ताप्रत्ये अपवित्रतानेमाटे गुनेहगार छे; केम के विश्वनी प्रकृति ते जे वस्तुओ अस्तित्वमां छे ते वस्तुओनी प्रकृति छे; अने जे वस्तुओ अस्तित्वमां छे तेओने जे वस्तुओ अस्तित्वमां आवे छे ते सघळी वस्तुओ साथे संबंध छे.[१] अने वळी आ विश्वनी प्रकृतिने 'सत्य' एवुं नाम आपवामां आवे छे, अने जे सत्य छे एवी सघळी वस्तुओनुं ते आदि कारण छे. त्यारे जे माणस इरादा-पूर्वक जुटुं बोले छे ते जेटले अंशे ठगवाथी अन्यायी रीत्ये वर्ते

---

१. "कोइ पण कृत्य अथवा स्वाभाविक बिना, के जेनी साथे आपणे परिचित छिये, ते एवी एकली के संबंधविनानी नथी के बीजा कोइ कृत्यो अथवा बिनाओ साथे तेने कांइ लेवादेवा न होय, तेम, शक्य रीत्ये तेओमांना प्रत्येकने, ज्यारे कांइ प्रत्यक्ष संबंध नथी होतो, त्यारे पण तेने बीजां कृत्यो अने बिनाओ साथे एवो परोक्ष स्वाभाविक संबंध होय छे, के जे आ वर्त्तमान जगतनी ज्ञानमर्यादानी पेली तरफ घणे दूर छे." वळीः "आपणे धारी शकिये तेटली देखीती रीत्ये अत्यंत क्षुद्र बाबतो मोटामां मोटी आवश्यकतावाळी बीजी वस्तुओनी जरूरनी शरतो तरीके निरंतर पाळवामां आवे छे; तेटलामाटे, आपणे तेथी उलटुं कांइ पण जाणता होइये ते छतां, कोइ पण एक वस्तु बीजी कोइ वस्तुनी अगत्यनी शरत होय." बटलरकृत उपमिति (Analogy) प्र. ७. आखुं प्रकरण जुओ. केटलाक टीकाकारो एन्टोनिनस्ना आ वाक्य-मांना Ta uparchontaने Ta onta तरीके ज ग्रहण करे छेः पण जो एम होत, तो तेणे Pros ta uparchonta ने बदले Pros aggega कर्युं होत. कदाच Pros ta uparchonta नो अर्थ "सघळी पूर्वनी वस्तु-ओने" एवो होय. जो एम होय तो पण भाषान्तर खरुं छे. जुओ. ६. ३८.

छे तेटले अंशे ते अपवित्रताने माटे गुनेहगार छे, अने जे इरादा विना जुटुं बोले छे, ते पण—जेटले अंशे ते विश्वनी प्रकृतिथी विरुद्ध छे तेटले अंशे, अने जेटले अंशे ते दुनियानी कुदरतनी सामे लडवाथी व्यवस्थामां विक्षेप करे छे तेटले अंशे—गुनेहगार छे; केम के जे सत्यथी उलटुं छे तेतरफ जे पोतानी मेळे जाय छे ते कुदरतनी सामे लढे छे, कारण के कुदरतनी पासेथी तेने एवी शक्तिओ मळी हती के जेनी उपेक्षा करवाथी ते हवे सत्यथी जुदुं असत्यने ओळखी काढवाने शक्तिमान् नथी. अने खरेखर जे माणस मोजमजाने शुभ गणीने तेनी पाछळ दोडे छे, अने कष्टने अशुभ गणीने टाळो दे छे ते अपवित्रताने माटे गुनेहगार छे. केम के, विश्वनी प्रकृति नठारां अने सारां माणसने तेओनी योग्यता करतां उलटी वस्तुओ आपे छे—एम कहीने जरूर आवा माणसने वारंवार विश्वनी प्रकृतिनो दोष काढवो पडे छे, कारण के वारंवार नठारा माणसो रंगभोगमां होय छे अने जे मोज-मजा मेळवी आपे एवी वस्तुओ तेमने प्राप्त होय छे, पण सारा माणसोने तो तेमने भागे दुःख अने दुःखकारक वस्तुओ होय छे. अने वळी, जे माणस कष्टथी बीहे छे ते वळी कोइ वार दुनि-यामां बनशे तेवी केटलीक वस्तुओथी पण बीहीशे, अने आ पण अपवित्रता छे. अने जे माणस मोजशोखनी पाछळ दोडे छे ते अन्यायथी अटकशे नहि, अने आ तो खुल्ली रीत्ये अपवित्रता छे. हवे जे वस्तुओ प्रत्ये विश्वनी प्रकृति एकसरखो भाव धरावे छे ते वस्तुओना संबंधमांः—केम के जो विश्वनी प्रकृति ते बंनेतरफ एकसरखो भाव धरावती होत, तो तेणे ते बंनेने बनावी होत नहि—जेओ विश्वनी प्रकृतिने अनुसरवाने इच्छता होय तेओए ते प्रकृतिनी साथे एकचित्त थवुं जोइये, अने एकसरखा भाव-वाळा थवुं जोइये. त्यारे, कष्ट अने मोज, के मरण अने जीवन, के आबरु अने गेरआबरु—के जेने विश्वनी प्रकृति एकसरखी रीत्ये

काममां ले छे—तेना संबंधमां जे कोइ एकसरखा भावयुक्त नथी ते खुल्ली रीत्ये अपवित्र रीत्ये वर्त्ते छे. अने जेओ चालु परंपरामां उत्पन्न करायला छे तेओने, अने—विश्वनियंतानी अमूक आद्य प्रेरणा के जे प्रमाणे भविष्यत् वस्तुओनां अमुक तत्त्वो धारण करीने, तथा प्राणिओने अने फेरफारोने तथा एवी परंपराने उत्पन्न करवानी निश्चित शक्तिओ प्राप्त करीने विश्वनी प्रकृति अमुक प्रारंभथी वस्तुओना आ क्रमपर्यन्त चाली आवी, ते प्रेरणाने प्रभावे करीने जेओ तेमनी पाछळ आवे छे—तेओने पूर्वोक्त सुखदुःखादि एकसरखी रीत्ये आवी पडे छे—एम कहेवाने बदले ते सुखदुःखादिकने विश्वनी प्रकृति एकसरखी रीत्ये काममां ले छे एम हुं कहुं छुं (६. ७५).

२. असत्य भाषण अने दंभ अने मोजशोख अने गर्वनो कांइ पण स्वाद चाख्याविना मनुष्य जातिमांथी उपडी जवुं ते माणसनुं सुखीमां सुखी भाग्य होय. तो पण, पेली कहेवत छे ते प्रमाणे—ज्यारे कोइ माणसने आ वस्तुओ—पूर्वोक्त असत्य अने दंभ वगेरे—पूरती प्राप्त थइ होय त्यारे पोताना प्राण छोडवा ते पण बीजी सर्वोत्तम सफर छे. तें दुर्गुणने ज ताबे रहेवानुं नक्की कर्युं छे? अने आ चेपी रोगमांथी नाशी छुटवाने हजु पण अनुभवे तने ललचाव्यो नथी? केम के जे आपणी आसपास रहे छे ते वातावरणना कोइ आवा बिगाड अने विकार करतां बुद्धिनो नाश ए खरेखर घणो वधारे चेपी रोग छे, केम के आ बिगाड ते जेटले अंशे पशु पशु छे तेटले अंशे पशुओनो चेपी रोग छे, अने पेलो बीजो बिगाड ते जेटले अंशे मनुष्यो मनुष्य छे तेटले अंशे मनुष्योनो चेपी रोग छे.

३. मृत्युने धिक्कारीश नहि, पण तेनाथी सारी पेठे संतुष्ट रहेजे, केम के जे कुदरत इच्छे छे एवी वस्तुओमांनुं एक मृत्यु पण छे. केम के जेवुं जुवान थवुं अने वृद्ध थवुं छे, अने जेवुं वृद्धिने पामवुं

અને પુખ્તાઇએ પહોચવું છે, જેવા દાંત ઉગવા અને દાઢી તથા પળિયાં આવવાં છે, અને જેવી પ્રજોત્પત્તિ કરવી છે, અને જેવું સગર્ભા થવું અને પ્રસવવું છે, અને તારી જિંદગીની મોસમો જે આણે છે તે સઘળી બીજી કુદરતી ક્રિયાઓ જેવી છે, તેવો જ વિલય (મૃત્યુ) પણ છે. ત્યારે આ એક વિચારશાળી માણસના લક્ષણને અનુરૂપ છે કે—મૃત્યુના સંબંધમાં બેફિકરા પણ ન થવું, અને અધીરા પણ ન થવું, અને તિરસ્કાર કરનાર પણ ન થવું, પરંતુ કુદરતની ક્રિયાઓમાંની એકતરીકે તેને માટે રાહ જોવી. તારી પત્નીના ગર્ભમાંથી બાળક ક્યારે બહાર આવશે તે સમયને માટે હાલ જેમ તું રાહ જુવે છે, તેમ આ શરીરકોષમાંથી તારો આત્મા ક્યારે બહાર પડશે તેને માટે તું તૈયાર થજે.[૨] પણ જે તારા અંતઃકરણને અસર કરે એવો હલકા પ્રકારનો દિલાસો પણ તારે જોઇતો હોય તો, જે વસ્તુઓમાંથી તને ખસેડવામાં આવવાનો છે તે વસ્તુઓનું, અને જેઓની સાથે તારો આત્મા હવે વધારે વાર ભળશે નહિ તેઓની નીતિઓનું, અવલોકન કરવાથી તારો મૃત્યુની સાથે સઉથી સારી રીત્યે મેળ થશે. કેમ કે માણસોથી રીસાવું એ કોઇ પણ રીત્યે ખરું નથી, પણ તેઓને માટે કાળજી રાખવી અને તેઓને નરમાશથી વેઠી લેવાં તે તારી ફરજ છે; તે છતાં યાદ રાખવું કે જેઓ તારા પોતાના જ જેવા સિદ્ધાન્તો ધરાવે છે તે માણસોથી તો તારું જુદા પડવું નહિ થાય. કેમ કે, જો કાંઇ પણ હોય, તો એકલી આ જ વસ્તુ એવી છે, કે જે આપણને ઉલટે રસ્તે ખેંચી જઇ શકે, અને જેઓ આપણા પોતાના જ જેવા સિદ્ધાન્ત ધરાવે છે તેઓની સાથે રહેવા દેવાને આપણને જીવનની પ્રત્યે આસક્ત બનાવી શકે. પણ હવે તું જુવે છે કે જેઓ ભેળા રહે છે તેઓના અણરાગથી ઉપજતી માથાકુટ કેટલી મોટી છે, તેથી તું એમ

૨. તત્ત્વજ્ઞાનની ૨૧ મી ટિપ્પણી, પૃષ્ટ. ૬૪.

कहीश— के—हे मृत्यु ! जलदी आव, केम के रखेने हुं पण कदी मारुं पोतानुं भान भूली जाउं.

४. जे माणस खोटुं करे छे ते तेना पोताना ज विरुद्ध खोटुं करे छे. जे माणस अन्यायथी वर्त्ते छे ते माणस तेनी पोतानी ज प्रत्ये अन्यायथी वर्त्ते छे, कारण के ते पोताने ज खराब बनावे छे.

५. जे माणस अमुक वस्तु करे छे ते ज फक्त घणी वार अन्यायी रीत्ये वर्त्ते छे एम नथी; पण जे माणस अमुक वस्तु करतो नथी ते पण घणी वार अन्यायी रीत्ये वर्त्ते छे.

६. बुद्धिउपर बंधायलो तारो वर्त्तमान अभिप्राय, सामाजिक भलाप्रत्ये लक्षायेली तारी वर्त्तमान वर्त्तणुक, अने जे बने छे ते दरेक वस्तुसाथे तारो वर्त्तमान संतोषनो स्वभाव—ते बस छे.

७. कल्पनाने भूशी नाखः तृष्णापर अंकुश राखः विषयेच्छाने ओलवी नाखः नियामक शक्तिने तेना पोताना अधिकारपर राख.

८. जे पार्थिव प्रकृतिनी वस्तुओ छे ते सघळी वस्तुओनुं पृथ्वीत्त्व जेम एक छे, अने आपणामांना जेओने दृष्टिशक्ति छे तथा जेओने जीवन छे ते सघळा आपणे जेम एक तेजथी जोइये छिये तथा एक ज हवा जेम श्वासोच्छ्वासमां लेइये छिये; तेम ज जेओमां बुद्धि नथी ते प्राणिओमां एक जीवन वहेंचायेलुं छे; पण बुद्धि-वाळां प्राणिओमां तो एक बुद्धियुक्त आत्मा वहेंचायलो छे.

९. सघळी वस्तुओ के जेओ तेमने सघळीने जे कांइ सामान्य होय छे तेनो अंश ग्रहण करे छे, तेओ जे तेओमां एक ज प्रकारनुं होय छे तेप्रत्ये गति करे छे. दरेक वस्तु जे पृथ्वी तत्त्वनी छे ते पृथ्वीतरफ वळे छे, दरेक वस्तु जे प्रवाही छे ते साथे वहे छे, अने दरेक वस्तु जे वायुमय छे ते ते ज करे छे, एटले के तेओने जुदी राखवाने बीजी कांइ वस्तुनी अने जोर वापरवानी जरूर पडे छे. खरेखर अग्नि तो आग्नेय तत्त्वने लीधे ऊर्ध्व गति करे छे, पण जे सघळो अहीं छे ते सघळा अग्निनी साथे सळगवाने ते एटलो तत्पर

होय छे के जे पदार्थ कांइक शुष्क होय छे तेवो दरेक पदार्थ पण सहेलाइथी सळगी जाय छे, केम के जे ज्वलनने प्रतिबंधरूप छे तेनो भाग तेमां वधारे थोडो भळेलो छे. ते प्रमाणे त्यारे जे सामान्य बुद्धियुक्त प्रकृतिमां भाग धरावे छे तेवी दरेक वस्तु पण जे कांइ तेनी साथे एक जातनुं होय छे तेप्रत्ये तेवी रीत्ये अथवा तेथी पण वधारे गति करे छे. केम के बीजी बधी वस्तुओनी साथे सरखामणीमां ते जेटली चढियाती छे, तेटली ते तेनी जातनुं जे कांइ होय तेनी साथे मळी जवाने अने एकमेक थइ जवाने वधारे तत्पर पण होय छे. ते प्रमाणे बुद्धिरहित प्राणिओमां मधमांखीओना समुदाय, ढोरनां टोळां, अने पक्षिनां बच्चांओनी उछेर, अने एक रीत्ये, प्रीतिओ (ना संबंधमां) आपणने मालम पडे छे; केम के प्राणिओमां पण आत्मा होय छे, अने जे शक्ति तेआने एकत्र आणे छे ते शक्ति चढियाते अंशे प्रवर्त्तती जणाय छे, अने एवी रीत्ये प्रवर्त्तती जणाय छे के जेवी रीत्ये छोडवा-ओमां अने पथराओमां अने झाडमां कदी पण प्रवर्त्तती जोवामां आवी नथी. पण बुद्धियुक्त प्राणिओमां राजकीय कोमो अने दोस्तीओ, अने कुटुंबो अने लोकोनी सभाओ होय छे; अने लडा-इमां सुलेहो अने अमुक समय लडाइ बंध राखवाना करारो होय छे. पण जे वस्तुओ एथी पण चढियाती छे तेओमां तो, जो के तेओ एकबीजाथी जुदी पडेली होय छे, तो पण एक रीत्ये एकता अस्तित्व धरावे छे,—दाखलातरीके ताराओमां. आ प्रमाणे वधारे उच्च पदे थयेलुं आरोहण ते जे वस्तुओ जुदी पडेली होय छे तेओमां पण एक प्रकारनी सहानुभूति उत्पन्न करवाने शक्तिमान् थाय छे. त्यारे, जुवो, हवे शुं थाय छे. त्यारे फक्त बुद्धियुक्त प्राणिओ ज आ परस्परनी इच्छाने अने वळणने हाल भूली गयां छे, अने फक्त तेओमां ज एकत्र थइ जवानो गुण जोवामां आवतो नथी. पण जो के माणसो आ एकताथी दूर रहेवाने मथे छे तो पण ते एकतावडे पकडाइ

जाय छे अने पकडी रखाय छे; अने जो तुं फक्त अवलोकन ज करीश तो हुं जे कहुं छुं ते तुं समजीश. तो, जेम कोइने बीजा माणसोथी तदन छुटुं पडी गयेलुं माणस जल्दी मळी नहि आवे तेम ज कोइ पण पार्थिव वस्तुनी साथे जे संबंधमां न होय तेवी कोइ पार्थिव वस्तु पण मळी आवशे नहि.

१०. माणस अने ईश्वर बंने तथा विश्व फळ उपजावे छे; योग्य मोसममां दरेक फल उपजावे छे. पण रूढिए आ (फळ उपजाववुं ए) शब्दो द्राक्षना वेलाने अने तेना जेवी बीजी वस्तुओने खास करीने चोंढी राख्या होय, तो आनो कांइ अर्थ नथी. बुद्धि सर्वने माटे अने तेने पोताने माटे—एम बंनेने माटे फल उपजावे छे, अने तेमांथी बुद्धि पोते जे जातनी छे ते ज जातनी बीजी वस्तुओ उत्पन्न थाय छे.

११. जो तुं शक्तिमान् होय तो जेओ खोटुं करे छे तेओने तुं सुधार; पण जो तुं सुधारी न शके तो आ कामने माटे तने दरगुजर आपवामां आवी छे ते तुं याद कर. अने देवो पण आवां मनुष्यो प्रत्ये दरगुजर करनारा छे; अने केटलांक कामने माटे ते देवो पण तेमने आरोग्य, धन, मान मेळववाने मदद करे छे; देवो एवा कृपालु छे. अने (तेम करवुं) ते तारी पण सत्तामां छे; अथवा तो तने (तेम करतां) कोण अटकावे छे?—ते कहे.

१२. कोइ कंगालतरीके तुं महेनत कर नहि, तेम ज वळी जेनी कोइ दया खाय अथवा जेने कोइ वखाणे तेवातरीके पण कर नहिः पण सामाजिक बुद्धिने जोइये तेम तुं तारी इच्छाने एक ज वस्तुप्रति, तने गतिमां मूकवाप्रति अने तने पोताने दाबमां राखवाप्रति योज.

१३. आजे हुं सघळी उपाधिमांथी छुटो थयो छुं, अथवा कांइक में सघली उपाधि फेंकी दीधी छे, केम के ते उपाधि कांइ बहार न हती, पण अंदर हती अने ते मारा विचारोमां हती.

૧૪. બધી વસ્તુઓ એવી જ છે, (અર્થાત્) અનુભવમાં પરિચિત, અને સમયમાં ક્ષણભંગુર, અને મૂળપદાર્થમાં નમાલી છે. જેઓને આપણે દાટ્યા છે તેઓના સમયમાં દરેક વસ્તુ જેવી હતી તેવી જ હાલ છે.

૧૫. વસ્તુઓ આપણી બહાર, પોતપોતાની મેળે રહે છે, તેઓ પોતાને વિષે કાંઇ પણ જાણતી નથી, તેમ જ કાંઇ અભિપ્રાય પણ દર્શાવતી નથી. ત્યારે, તેઓના વિષે જે અભિપ્રાય દર્શાવે છે તે શું છે? તે નિયામક બુદ્ધિશક્તિ છે.

૧૬. સામાજિક પ્રાણિના સદ્ગુણ અને દુર્ગુણ જેમ અક્રિયતામાં નહિ પણ સક્રિયતામાં રહેલા છે, તેમ જ તેનું અશુભ અને શુભ પણ અક્રિયતામાં નહિ પણ સક્રિયતામાં રહેલ છે.[3]

૧૭. જે પથ્થર ઉંચે ઉછાળવામાં આવ્યો છે તેને માટે નીચે આવવું તે કાંઇ અશુભ નથી તેમ જ ખરેખર ઉંચે જવામાં કાંઇ શુભ નથી. (૮. ૨૦)

૧૮. માણસોના નાયક સિદ્ધાન્તોમાં તું અંદરના ભાગમાં પ્રવેશ કર, એટલે તને દેખાશે કે કેવા ન્યાયાધીશોનો તું ભય ધરાવે છે અને તેઓના પોતાના જ તેઓ કેવા ન્યાયાધીશો છે.

૧૯. સર્વ વસ્તુઓ વિકારશીલ છેઃ અને તું પોતે જ એક સતત વિક્રિયામાં અને એક રીત્યે સંતત વિનાશમાં છે, અને આખું વિશ્વપણ એમ જ છે.

૨૦. બીજા માણસનું અપકૃત્ય તે જ્યાં હોય ત્યાંનું ત્યાં જ રહેવા દેવું એ તારી ફરજ છે. (૭. ૨૯, ૯. ૮.)

૨૧. સક્રિયતાનો અંત, ગમન અને વિચારણાનું બંધ પડવું, અને એક અર્થમાં તેઓનું મૃત્યુ,—તે કાંઇ અશુભ નથી. હવે તું તારા વિચારોને તારી જિંદગીપ્રત્યે વાળ,—તારું બાલ્યજીવન, યુવા-

---

૩. "સદ્ગુણની પ્રશંસા તેની ક્રિયામાં રહેલી છે."—સિસેરો, ડિ ઓફ્ફ. ૧. ૬.

वस्था, तारी पुरुत अवस्था, तारी वृद्धावस्था,–आ बधामां पण प्रत्येक फेरफार ते मृत्यु ज हतो. आ वस्तु कांइ व्हीवा जेवी छे? तारा विचारोने हवे तारा दादाना हाथनीचेना तारा जीवनप्रति वाळ, पछी तारी माना हाथनीचेना तारा जीवनप्रति वाळ, पछी तारा पिताना हाथनीचेना तारा जीवनप्रति वाळ; अने जेम तने घणा बीजा तफावतो अने फेरफार अने अवसान मालम पडता जाय तेम तुं तने पोताने पूछ के–आ वस्तु कांइ व्हीवा जेवी छे? ते ज रीत्ये, त्यारे, तारी आखी जिंदगीनां अवसान अने बंध थवुं अने फेरफार पण काइ व्हीवा जेवी वस्तु नथी.

२२. तारी पोतानी अने विश्वनी अने तारा पाडोशीनी नियामक बुद्धिने [तपासवाने] तुं (आगळ) धसः तारी पोतानी नियामक बुद्धिने तुं एटलामाटे तपास के तुं तेने न्यायशील बनावे: विश्वनी नियामक बुद्धिने तुं एटलामाटे तपास के तुं शानो एक विभाग छे ते तने याद रहे; अने तारा पाडोशीनी नियामक बुद्धि तुं एटलामाटे तपास के–ते अजाणतां वर्त्यो छे के जाणीबुजीने वर्त्यो छे, ते तुं जाणे तथा तुं ए पण विचारे के तेनी नियामक बुद्धि तारी जेवी ज छे.

२३. जेम तुं पोते एक सामाजिक बंधारणनी घटनानो भाग छे, तेम तारा दरेक कृत्यने पण सामाजिक जीवननी घटनानो एक भाग थवा दे. त्यारे तारुं कोइ पण कृत्य, जे कां तो प्रत्यक्ष के परोक्षरीत्ये कोइ सामाजिक लक्ष्यसाथे संबंध धरावतुं नथी, ते आ तारी जिंदगीने फाडीने जुदी पाडी नाखे छे, अने तेने एक थवा देतुं नथी, अने जेम कोइ लोकसंमत सभामां एक माणस पोतानी मेळे वर्तीने सामान्य संमतिमांथी जुदो खडो रहे छे, तेम ज ते एक बंडना स्वभावनुं छे.

२४. नानां छोकरांओना कजिया अने तेमनी रमतो, अने मडदां उचकीने लेइ जता रंक जीवो.–[आवी दरेक वस्तु छे];

अने ते प्रमाणे मरणे पामेलांनां घरना देखावनी भजवणी आपणां नेत्रउपर वधारे स्पष्ट रीत्ये पडे छे.

२५. कोइ एक वस्तुना आकारनो गुण तपासो, अने तेना तत्त्वरूप भागथी तेने तदन छुटो पाडी नाखो, अने पछी तेनो विचार करो; अने पछी खास आ आकारनी वस्तु स्वभाविक रीत्ये लांबामां लांबो केटलो काळ टकवाने माटे बनेली छे, ते काळ नक्की करो.

२६. ज्यारे तारी नियामक बुद्धि, जे वस्तुओ करवा माटे ते वस्तुओ करे छे, त्यारे तेनाथी संतुष्ट नहि रहेवाथी तें अनंत उपाधिओ सहन करी छे. पण हवे [आ] बस[†] छे.

२७. ज्यारे बीजो कोइ माणस तने ठपको दे अथवा धिक्कारे, अथवा माणसो ज्यारे तारा विषे कांइ हानिकारक बोले, त्यारे तुं तेओना बिचारा आत्माओनी पासे जा, तेमनी अंदर प्रवेश, अने तेओ केवा प्रकारना माणसो छे ते जो. तने मालम पडशे के आ माणसो तारा विषे आ के ते अभिप्राय धरावे तेमाटे तारे कांइ पण तस्दी लेवानुं कारण नथी. तो पण तारे तेओ प्रत्ये सारो स्वभाव राखवो जोइये, केम के कुदरतथी तेओ तारा मित्र छे. अने जे वस्तुओने तेओ किमती गणे छे ते वस्तुओनी तेमने प्राप्ति कराववा, स्वप्नांओथी, चिन्होथी, एम सघळी रीत्ये देवो पण तेमने मदद करे छे.[†]

२८. एक युगथी बीजा युगलगी उपर अने नीचे विश्वनी सामयिक गतिओ ए ज छे. अने कां तो विश्वनी बुद्धि प्रत्येक पृथक् कार्यने माटे पोताने गतिमां मूके छे, अने आ जो एम होय तो तेनी क्रियानो जे परिणाम आवे छे तेथी तुं संतुष्ट था;

४. गेटेकर् अटकळ करे छे तेम To tes Nekuias ते मरण पामेलांनी स्थितिनी नाटकीय भजवणी हशे. शल्ट्स धारे छे के ते ओडेसी काव्यना Nekuia ने उद्देशीने पण होय (लिब. ११)

अथवा कां तो ते एक वार पोताने गतिमां मूके छे, अने दरेक वस्तु एक प्रकारना अनुक्रमनी रीत्ये आवे छे; अथवा तो अविभाज्य तत्त्वो सघळी वस्तुओनुं मूळ छे.—एक शब्दमां कहिये तो, जो कोइ देव होय तो बधुं ठीक छे; अने जो कदी दैवगतिनी सत्ता चालती होय, तो तुं पण तेनी सत्ताने तावे था नहि. (६. ४४, ७. ७५.)

थोडा समयमां पृथ्वी आपणने सघळाने ढांकी देशेः पछी पृथ्वी पण विकारने पामशे, अने ते विकारमांथी जे वस्तुओ परिणामरूपे थशे ते पण हमेश विकारने पाम्या करशे, अने आ पण वळी हमेश विकारने पामशे. केम के जो माणस विकारो अने रूपान्तरो के जेओ एकबीजानी पाछळ मोजांओनी पेठे चाल्या करे छे तेविषे अने तेओनी झडपविषे विचार करे, तो जे नश्वर छे एवी दरेक वस्तुने ते धिक्कारशे. (१२. २१.)

२९. विश्वनुं कारण एक शियाळाना धोधना जेवुं छेः ते पोतानी आगळ दरेक वस्तुने घसडी जाय छे. आ बिचारा सघळा लोको जेओ राजकीय बाबतोमां रोकायला छे, अने तेओ धारे छे तेम तत्त्वज्ञानीनो वेश भजवे छे, तेओ केवा नमाला छे! ते वधाए मूढ छे. ठीक त्यारे, हे मनुष्य! प्रकृतिने हाल जे जोइये छे ते तुं कर. जो तारी सत्तामां होय, तो तुं तने पोताने गतिमां मूक, अने ते कोइ देखशे के नहि ते जोवाने तुं आगळपाछळ जो मा; अने तेमां पण प्लेटोना रचेला "प्रजासत्ताक राज्य"ना जेवी पण अपेक्षा राख मा[६]ः पण जो नानामां नानी वस्तु पण ठीक

---

५. जे शब्दो kat epakolouthesin नी पाछळ तरत ज आवे छे ते अशुद्ध छे. पण तेनो अर्थ भाग्ये ज शंकाभरेलो छे. (सरखावो ७. ७५.)

६. Plato's Republic "प्लेटोनुं रचेलुं प्रजासत्ताक राज्य" शुं छे? ते जाणवानी जेओने इच्छा होय, तेओ हवे डेवीस् अने व्होगने करेलां चोकस भाषान्तरमां तेनो अभ्यास करी शके तेम छे.

चाले तो तेथी संतोष पाम, अने आवी बाबतने कांइ नानीसुनी बिना गणीश नहि. केम के माणसोना अभिप्रायोने कोण बदली शके छे? अने अभिप्रायोने बदल्याविना तो, जे माणसो आज्ञा मानवानो डोळ करतां गांगडे छे तेमां माणसोनी गुलामगिरीसिवाय बीजुं शुं छे? त्यारे हवे आव अने मने एलेक्झांडर् अने फिलिप्पस् अने फेलेरमना डिमेट्रियस् विषे कहे. तेओ पोते ज इन्साफ करशे के–सामान्य प्रकृतिने शुं जोइये छे ते तेओए शोधी काढ्युं हतुं के नहि अने तेप्रमाणे तेओए तेमने पोताने तालिम आपी हती के नहि. पण जो तेओए एक शोकरसप्रधान नाटकना नायकोनी पेठे वेश भजव्यो होय तो तेमनुं अनुकरण करवामाटे मने कोइए अपराधी ठराव्यो नथी. तत्त्वज्ञाननुं काम सादुं अने सभ्य छे. मने एक कोराणे खेंचीने उद्धतता अने गर्व पासे लेइ जा मा.

३०. माणसोनां असंख्य टोळां उपर तथा तेओनी असंख्य गंभीर विधिओ उपर, तोफानोमां अने पवन बंध होय ते वखतोमां (करातो) अनंत विविध सफरो उपर, अने जेओ जन्म्या छे, अने भेगा रहे छे, अने मरी जाय छे तेओ वच्चेना भेदो उपर–उपरथी नीचे नजर नाख. अने वळी, प्राचीन समयमां बीजाओए भोगवेली जिंदगीनो, अने जेओ तारी पाछळ भोगवशे तेमनी जिंदगीनो, अने केटला बधा तो तारुं नाम पण नथी जाणता तेनो, अने केटला बधा थोडा ज वखतमां तारुं नाम भूली जशे तेनो, अने जेओ कदाच हाल तने वखाणे छे तेओ घणा थोडा ज समयमां तने ठपको देशे तेनो, अने मरण पछीनी नामना, अने प्रतिष्ठा, अने इतर कांइ पण वस्तु कांइ किमतनी नथी–तेनो पण विचार कर.

३१. बाह्य कारणमांथी जे वस्तुओ आवे छे तेविषेना संक्षोभथी मुक्तता थवा दे; अने आंतर कारणना प्रभावथी करातो वस्तुओमां न्याय थवा दे, अर्थात्, आमां–सामाजिक कार्यमां

पर्यवसान पामती गति अने कृति थवा दे, केम के आ तारी प्रकृतिप्रमाणे छे.

३२. तने जेओ क्षोभ उपजावे छे एमांनी घणी वस्तुओने तुं तारा मार्गमांथी दूर करी शके तेम छे, केम के ते वस्तुओ तदन तारा अभिप्रायमां ज रहेली छे; अने पछी आखा विश्वने तारा मनमां समजवाथी, अने काळना अनंतपणानो विचार करीने, अने प्रत्येक जुदी वस्तुना सत्वर थता विकारनुं, जन्मथी मरण लगीनो समय केटलो टूंको छे तेनुं, अने जन्मनी पूर्वेनो काळ अनंत छे तेम ज मरण पछीनो काळ पण तेना सरखो ज मर्यादाविनानो छे तेनुं—अवलोकन करवाथी तुं तारे पोताने माटे पुष्कळ मोकळाश मेळवीश.

३३. जे सघळुं तुं जुवे छे ते जलदीथी नाश पामी जशे, अने जेओ तेना नाशना जोनारा छे तेओ पण घणी जलदीथी नाश पामी जशे. अने जे अत्यंत आखरनी वृद्धावस्थाए मरण पाम्यो हतो ते पण अकाले मुवेलाना जेवी ज स्थितिमां अणाशे.

३४. आ माणसोना नायकसिद्धान्तो शा छे, अने केवा प्रकारनी वस्तुओमां तेओ रोकायला छे, अने केवा प्रकारनां कारणो माटे तेओ (कोइने) चहाय छे तथा मान आपे छे? तुं धार के तुं तेओना रंक आत्माओने खुल्लखुल्ला मूकायला जुवे छे. ज्यारे तेओ एम धारे छे के तेओ तेमना ठपकावडे हानि करे छे अने तेओना वखाणवडे (कोइनुं) सारुं करे छे, त्यारे (ए) केवो विचार!

३५. नाश ए फेरफारथी बीजुं कांइ नथी. पण विश्वनी प्रकृति फेरफारमां आनंद पामे छे, अने तेनी आज्ञानुसार सघळी वस्तुओ सारी रीत्ये करवामां आवे छे, अने तेवा ज आकारमां अनंतकाळथी कराती आवी छे, अने अनंतकाळ लगी एवी थशे. त्यारे, तुं शुं कहे छे? (तुं एम कहे छे के)—बधी वस्तुओ हमेश

खराब थशे, अने आटला बधा देवोमां आ वस्तुओने सुधारवानी शक्ति कदी पण जणाती नथी, परंतु दुनिया कहीं पण अटके नहि एवा अशुभमां बंधाइ रहेवाने दोषित ठरेली छे? (४.४५,७.१८.)

३६. जे पदार्थ दरेक वस्तुनो पायो छे तेनुं सडेलपणुं केवुं छे! पाणी, माटी, हाडकां, अने गंदगी: अथवा वळी, आरसपहाणनां खडक,–पृथ्वीनी कर्कशताओ; अने सोनुं तथा रूपुं,–पृथ्वीना मळ; अने वस्त्रो,–फक्त वाळना कडका; अने जामळी रंग,–रुधिर; अने बीजी दरेक वस्तु एवी ज जातनी छे. अने जे श्वासनी प्रकृतिनुं छे, ते पण ए ज जातनी आ रूपमांथी पेला रूपमां बदलाती एवा ज प्रकारनी एक बीजी वस्तु छे.

३७. आ कंगाल जीवन अने बडबडवां तथा वानरचेष्टाओ बस थइ. तुं शामाटे विकळ थाय छे? आमां नवुं शुं छे? तने शुं डगावी दे छे? शुं ते वस्तुनो आकार तने डगावे छे? तेप्रति दृष्टि कर. अथवा तो ते पदार्थ तने डगावे छे? तेप्रति दृष्टि कर. पण आसिवाय कांइ छे नहि. त्यारे हवे आखरे देवोप्रति तुं वधारे सादो अने वधारे सारो था. आ वस्तुओने आपणे सो वर्षलगी तपासिये अथवा त्रण वर्षलगी तपासिये ते एक सरखुं ज छे.

३८. जो कोइ माणसे खोटुं कर्युं छे, तो तेथी तेने पोताने ज हानि छे. पण कदाच तेणे खोटुं कर्युं नथी.

३९. कां तो सघळी वस्तुओ एक बुद्धियुक्त मूळमांथी निकळी आवे छे अने जाणे एक शरीरमां आवती होय तेम संघाते आवे छे, अने समग्र शरीरना लाभने माटे जे करवामां आवे तेनो दोष ते शरीरना एक भागे काढवो जोइये नहि; अथवा तो बधा फक्त परमाणु ज छे, अने संयोजन तथा विखराइ जवा सिवाय बीजुं कांइ नथी. त्यारे तुं शा माटे क्षोभ पामे छे? तुं नियामक शक्तिने कहे के–तुं शुं मरी गइ छे, तुं शुं भ्रष्ट थइ छे, तुं शुं दंभीनो

वेष भजवे छे, तुं शुं हेवान बनी गइ छे, तुं शुं बाकीना बीजाना टोळामां भळे छे अने बीजाओनी साथे चरे छे ?[७]

४०. देवोने कां तो कांइ पण शक्ति नथी अथवा कां तो तेओने शक्ति छे. त्यारे, जो तेओने कांइ शक्ति नथी, तो तुं तेओनी प्रार्थना शामाटे करे छे? पण जो तेओने शक्ति छे, तो आ वस्तुओ बने नहि अथवा बने एवी प्रार्थना करवा करतां जे वस्तुओथी तुं बीहे छे ते वस्तुओमांनी कोइ पण वस्तुथी नहि बिहीवानी शक्ति तने आपवामाटे, अथवा तो जे वस्तुओनी तुं कामना करे छे तेमांनी कोइ पण वस्तुनी कामना नहि करवानी शक्ति तने आपवाने माटे, अथवा तो कशाथी पण व्यथित नहि थवानी शक्ति आपवाने माटे, तुं तेओनी प्रार्थना केम नथी करतो ? केम के खरेखर जो तेओ माणसोनी साथे रहीने काम करी शके तेम होय तो तेओ आ कामो माटे ज माणसोनी साथे रही काम करी शके. पण कदाच तुं एम कहीश के देवोए ए शक्तिओ तारा हाथमां मूकेली छे. ठीक, त्यारे, जे तारा हाथमां नथी तेनी एक गुलामीभरेली अने नीच रीत्ये इच्छा करवा करतां जे तारी सत्तामां छे तेनो एक स्वतंत्र माणसनी पेठे उपयोग करवो ए शुं सारुं नथी के? अने जे वस्तुओ आपणी सत्तामां छे ते वस्तुओमां देवो मदद करता नथी एवुं तने कोणे कह्युं छे ? त्यारे आवी वस्तुओ माटे प्रार्थना करवी शरु कर, अने तुं जोइश. एक माणस आप्रमाणे प्रार्थना करे छे: ते स्त्रीसाथे हुं केम असत्य बोली शकीश ? तुं आम प्रार्थना कर:

७. आ कलमना अंतमां कांइ अशुद्धि छे: पण हुं धारुं छुं के बादशाहनो विवक्षित अर्थ आ भाषान्तर दर्शावे छे. चाहे तो बधी वस्तुओ उपर बुद्धि-शक्ति अथवा दैव सत्ता चलावतुं होय तो पण माणसे उंचानीचा न थवुं जोइये. तेणे पोतानी पासे जे शक्ति होय ते वापरवी जोइये अने शान्त थवुं जोइये.

ते स्त्रीसाथे असत्य बोलवानी इच्छा पण मने केवी रीत्ये ना थाय? एक बीजो माणस आप्रमाणे प्रार्थना करे छेः आमांथी हुं शी रीत्ये मुक्त थइश? बीजो माणस प्रार्थना करे छेः हुं आमांथी मुक्त थवाने केवी रीत्ये नहि इच्छीश? बीजो कोइ माणस आम प्रार्थना करे छेः हुं मारा नाना छोकराने केवी रीत्ये खोउं नहि? तुं आम प्रार्थना करः हुं तेने खोवाने केवी रीत्ये बीहुं नहि? सार ए के, तारी प्रार्थनाओने तुं आ रीत्ये वाळ, अने जो के शुं थाय छे.

४१. एपिक्युरस् कहे छे, मारा मंदवाडमां मारी वातचित्त मारी शारीरिक वेदनाओ विषे नहोती, अने ते कहे छे, जेओ मने जोवा आवतां तेमनी साथे हुं आ विषयोना उपर वात करतो नहि; पण, ज्यारे आ बिचारा मांस(ना बनेला देह)मां जेवी हिलचालो थाय छे तेवी हिलचालोमां भाग लेतां छतां पण मन केवी रीत्ये विक्षेपथी मुक्त रहे अने तेनुं पोतानुं सत्त्व टकावी राखे—ए मुख्य मुद्दाउपर कायम रहीने पहेलांनी पेठे वस्तुओना स्वभाव विषे हुं संभाषण चलाव्या करतो. वळी ते कहे छे, जाणे वैद्यो कांइ महत् कार्य करता होय तेम तेओने गंभीर मुखमुद्राओ धारण करवानी तक हुं आपतो नहि, पण मारुं जीवन सारी रीत्ये अने सुखी रीत्ये चाल्यां करतुं. त्यारे, जो तुं मांदो होय, तो ते (एपिक्युरस्) जेम करतो तेम तुं पण कर, अने वळी बीजी कोइ परिस्थितिमां पण तुं तेम ज कर; केम के कोइ पण बनावो आपणा उपर बने तेमां तत्त्वविचारने कदी पण तजवो नहि, अने अज्ञानी अथवा तो कुदरतने नहि ओळखनार माणसनी साथे तुच्छ वार्त्ता करवी नहि; पण हाल तुं जे करे छे तथा जे साधनथी ते तुं करे छे तेनी ज उपर एक तान थवुं—ए तत्त्वज्ञाननी सर्वे शाळाओनो एक सिद्धान्त छे.

४२. ज्यारे कोइ निर्लज्ज माणसनी वर्त्तणुकथी तने खोटुं लाग्युं होय, त्यारे तरत ज तुं तने पोताने एम पूछ के—त्यारे दुनियामां

निर्लज्ज माणसो न ज होय ए शुं संभवित छे? ए संभवित नथी. त्यारे, जे असंभवित छे एवुं कांइ तुं माग नहि. केम के दुनियामां जेओ अवश्ये करीने होवा ज जोइये एवा निर्लज्ज माणसो पैकीनो आ माणस पण एक छे. लुच्चा, अधर्मी, अने कोइ पण रीत्ये जे खोटुं करे छे एवा दरेक माणसनी बाबतमां तारा मनमां ए ज विचारोने हाजर रहेवा दे. केम के आवी जातना माणसो अस्तित्वमां न ज होय ए असंभवित छे, ए तुं तने पोताने याद देवरावे छे ते ज वखते दरेक व्यक्तिप्रत्ये तुं मायाळु वळणवाळो थइश. वळी दरेक अपकृत्यनी सामे थवाने माणसने कुदरते कयो सद्गुण आपेलो छे, ते प्रसंग आवे के तरत ज जाणी जवुं ए पण उपयोगी छे. केम के कुदरते माणसने, मूर्ख माणसनी सामे नरमाश, अने बीजा कोइ प्रकारना माणसनी सामे बीजी कोइ शक्ति एक प्रत्युपायतरीके आपेली छे. अने जे आडे रस्ते गयेलो होय एवा माणसने उपदेशथी सुधारवानुं सघळी बाबतोमां तारे माटे शक्य छे; केम के जे भूल करे छे ते दरेक माणस पोतानुं निशान चूकेलो होय छे अने आडो गयेलो होय छे. वळी तने शेमां इजा थइ छे? केम के तने मालम पडशे के तुं जेओना सामो चीडायो छे तेमांना कोइए पण जेथी तारुं मन वधारे खराब बनावी शकाय एवुं कर्युं नथी; पण जे तने अशुभ अने हानिकारक छे तेनो पायो केवळ तारा मनमां ज छे. अने जे शिक्षण पाम्यो नथी एवो माणस एक अशिक्षित माणसनां कृत्य करे तो तेमां शी इजा थइ छे अथवा तेमां शी नवाइ छे? कांइक तारे तने पोताने ठपको देवो जोइये के नहि तेनो तुं विचार कर, केम के आवो माणस आवी रीत्ये भूल करे एवो ख्याल तें राख्यो नहि. केम के तारी तर्कशक्तिए तने एवुं धारवाने साधनो आप्यां हतां के ते माणस भूल करे तेवो संभव छे, अने ते छतां पण तुं भूली गयो छे अने तेणे भूल करी छे तेथी तुं अचंबो

पाम्यो छे. पण सउथी वधारे तो, ज्यारे तुं कोइ माणसने अधर्मी अथवा कृतघ्नतरीके ठपको आपे छे, त्यारे तुं तारा पोतातरफ फरीने जो. केम के जे माणसनो एवो स्वभाव हतो ते पोतानुं वचन पाळशे एवो कां तो तें विश्वास राख्यो, के कां तो ज्यारे तें कोइना उपर महेरबानी करी त्यारे ते निरपेक्ष रीत्ये करी नहि, तेम ज ते तें एवी रीत्ये पण न करी के जेथी तारा ए ज कृत्यनो सघळो लाभ तुं हांसल करी ले, तो ते खुल्ली रीत्ये तारो पोतानो ज दोष छे. केम के ज्यारे तें कोइ माणसनी सेवा बजावी होय त्यारे तारे एथी विशेष बीजुं शुं जोइये छे? तारी प्रकृतिने अनुरूप तें कांइक कर्युं छे तेथी ज तुं शुं संतुष्ट नथी, अने तेने माटे तुं शुं कांइ महेनताणुं शोधे छे? जाणे नेत्रे जोवाने माटे, अथवा पगे चालवाने माटे बदलो माग्यो होय तेम ज (शुं तुं कांइ बदलो इच्छे छे?) केम के जेम आ अवयवो अमुक कामने माटे बनावायला छे, अने तेओनां जुदां जुदां बंधारणो प्रमाणे काम करवाथी तेओ पोतानी कृतकृत्यता प्राप्त करे छे;[८] तेम माणस पण कुदरतवडे परोपकारनां कामो करवाने बनावायेलो छे, अने ज्यारे तेणे कांइ परोपकारनी वस्तु करी होय छे, अथवा तो बीजी कोइ रीत्ये सामान्य जनहितसाधक वस्तु करी होय छे, त्यारे ते पोताना बंधारणने अनुरूप वर्त्यो होय छे, अने जे तेनुं पोतानुं छे ते तेने प्राप्त थाय छे.



---

८. Apechei to idion. Apechein नो आ अर्थ ११. १, ४. ४९ मां अने वळी सेइन्ट् मेथ्यु, ६. २, apechousi tot misthon, अने एपिक्टेटसमां आवे छे.

१०.

हे मारा आत्मा ! त्यारे, तुं शुं कदी सारो अने सादो अने एक अने आवरणरहित, जे तारी आशपाश वींटायलुं छे ते शरीर करतां वधारे स्पष्ट नहि थाय ? तुं शुं कदी मायाळु अने संतुष्ट स्वभाव नहि भोगवे ? शुं तुं कदी पूर्ण अने कोइ पण प्रकारनी तंगीविनानो, अने कांइ अधिकनी तृष्णा नहि करनार, तेम ज सुखना उपयोगमाटे कांइ सजीव के निर्जीव वस्तुनी लालसा विनानो नहि थाय ? अने वळी जेमां वधारे लांबो समय सुखोपभोग मळे तेवा समयनी, के स्थळनी, के खुशनुमा आबोहवानी, के जेओनी साथे तुं एक रागमां रहे एवा माणसोनी संगतिनी इच्छा नहि करनारो नहि थाय ? पण तुं तारी हालनी स्थितिथी संतुष्ट, अने जे कांइ तारी आशपाश छे ते सघळाथी प्रसन्न थइश ? अने तारी पासे दरेक वस्तु छे अने ते देवो तरफथी आवे छे, अने दरेक वस्तु तारे माटे सारी छे, अने देवोने जे कांइ गमशे ते सारुं ज हशे, अने देवो—पूर्ण एवा जीवता प्राणिना संरक्षण माटे, (अर्थात्) भला तथा न्यायी तथा सुंदर प्राणिना संरक्षणने माटे जे कांइ आपशे, के जे सघळी वस्तुओने उत्पन्न करे छे अने एकठी राखे छे, अने बीजी एवी ज वस्तुओनी उत्पत्तिने माटे जेओ विशीर्ण थइ जाय छे एवी सघळी वस्तुओ जेमां रहेली छे अने एवी सघळी वस्तुओने जे भेटी रहेल छे एवी—जे कांइ वस्तु आपशे ते तारे माटे सारी ज होशे—एवी तुं तने पोताने खातरी करी आपीश के ?

२. जेटले अंशे तुं कुदरतनी सत्तामां छे तेटले अंशे तारी प्रकृतिने शुं जोइये छे ते तुं निहाळः पछी जेटले अंशे तुं जीवतुं

---

१. अर्थात्, झेनोए बांधेली व्याख्याप्रमाणे, ईश्वर (४.४०). पण देवो अने ईश्वर ए (बे शब्दो) वच्चे एक विचित्र गुंचवाडो छे.

प्राणि छे तेटले अंशे जो तेथी तारी प्रकृति वधारे खराब न थाय तेम होय तो ते तुं कर अने स्वीकार." अने बीजुं—जेटले अंशे तुं एक जीवतुं प्राणि छे तेटले अंशे तारी प्रकृतिने शुं जोइये छे ते तारे अवलोकवुं जोइये. अने जेटले अंशे तुं एक तर्कयुक्त प्राणि छे तेटले अंशे जो तारी प्रकृति तेथी वधारे खराब न थाय तेम होय तो तारे आ बधुं तारे माटे चालवा देवुं जोइये. पण जे प्राणि तर्कयुक्त होय छे तेथी वळी ते राजनैतिक [सामाजिक] पण होय छे. त्यारे तुं फक्त आ नियमोनो ज उपयोग कर अने तने पोताने बीजा कशाविषे तुं तस्दी आपीश नहि.

३. जे दरेक वस्तु बने छे ते कां तो एवी रीत्ये बने छे के कुदरतवडे तुं ते सहन करवाने बनावायलो छे, अथवा कां तो ते एवी रीत्ये बने छे के तुं कुदरतवडे सहन करवाने बनावायलो नथी. जो, त्यारे, ते तारा संबंधमां एवी रीत्ये बने छे के तुं कुदरतवडे ते सहन करवाने बनावायलो छे, तो तुं तेविषे फरियाद करीश नहि; कुदरतवडे तुं ते सहन करवाने बनावायलो छे तेवी रीत्ये तुं ते सहन कर. पण जो ते एवी रीत्ये बने के कुदरतवडे ते सहन करवाने तुं बनावायलो नथी, तोए तुं फरियादी कर मा, केम के तने खाइ गया पछी ते पण नाश पामी जशे. तो पण तुं याद राखजे के—आ सहन करवी ते कां तो तने हित छे के कां तो तारी फरज छे एवो विचार करीने जे सह्य अथवा क्षम्य करवी तारा पोताना अभिप्रायउपर आधार राखे छे एवी दरेक बाबत सहन करवाने तुं कुदरतवडे बनावायलो छे.

४. जो कोइ माणसे भूल करी होय, तो तेने मायाळु रीत्ये शीखव अने तेने तेनी भूल बताव. पण जो तुं तेम करवाने अशक्त होय, तो तुं तने पोताने ठपको दे, अथवा तो तने पोताने पण ठपको न दे.

५. जे कांइ तारे माटे बने, ते समग्र अनंत काळथी तारे माटे तैयार थयेलुं हतुं; अने कारणोनुं संग्रथन अनंत काळथी तारा अस्तित्वना अने जे तारा अस्तित्वने भावि छे तेना तंतुने वण्या करतुं हतुं. (३. ११; ४. २६.)

६. कां तो विश्व अणुओनो [समुदाय] छे, के कां तो [व्यूह छे], आ प्रथम सिद्ध थवा दे के कुदरतवडे जे नियममां रखाय छे एवा समग्रनो हुं एक भाग छुं; बीजुं, जेओ मारा पोताना ज प्रकारना छे एवा भागोनी साथे एक रीत्ये हुं निकट रीत्ये जोडायलो छुं. आ याद राखवाथी, जेटले अंशे हुं एक भाग छुं, तेटले अंशे समग्रमांथी जे मने आपवामां आवेली छे, एवी वस्तुओमांनी कोइ पण वस्तुथी हुं असंतुष्ट नहि थाउं; केम के कोइ पण वस्तु, जो ते समग्रना लाभने माटे होय, तो ते ते भागने कदी हानिकारक नथी. केम के जे तेना लाभने माटे नथी एवुं कांइ पण समग्रमां होतुं नथी, अने खरेखर सघळी प्रकृतियोने आ सामान्य तत्त्व होय छे, पण विश्वनी प्रकृतिने ए उपरांत एक आ तत्त्व छे,—के कोइ बाह्य कारणथी पण तेने पोताने हानिकारक होय एवुं कांइ पण उत्पन्न करवाने फरज पाडी शकाती नथी. त्यारे, हुं आवा समग्रनो एक भाग छुं, ए याद राखवाथी, जे बने छे एवी दरेक वस्तुथी हुं संतुष्ट रहीश. अने जेटले अंशे, मारा पोताना ज प्रकारना जे भागो छे तेओनी साथे हुं निकट रीत्ये जोडायलो छुं, तेटले अंशे हुं कांइ पण असामाजिक बाबत करीश नहि, पण हुं कांइक मने पोताने मारा पोताना ज प्रकारनी वस्तुओप्रत्ये प्रेरीश, अने मारा सघळा प्रयत्नो सर्वना सामान्य हितप्रत्ये वाळीश, तथा तेथी उलटी बाबतोथी दूर काढीश. हवे, जो बाबतो ए प्रमाणे करवामां आवे तो जीवन सुखी रीत्ये आगळ चाल्या करशे ज, केम के तुं एम ज अवलोकीश के—जे नागरिक पोताना नागरिक बंधुओने लाभकारक छे एवा कृत्यनो प्रवाह चालु राखे

छे, अने राज्य तेने माटे जे कांइ निर्माण करे छे तेथी संतुष्ट छे, ते नागरिकनुं जीवन सुखी छे.

७. समग्रना भागो, एटले, स्वाभाविक रीत्ये जेनो विश्वमां समावेश थाय छे, ते अवश्ये करीने नाश पामशे ज; पण आ अर्थमां समजो के—तेओनो फेरफार थवो ज जोइये. पण जो भागोने माटे आ अशुभ अने आवश्यक बंने होय, तो भागो विकृतिने तावे हो-वाथी अने विविध प्रकारे नाश पामे एवा बनावेला होवाथी, समग्र सारी स्थितिमां अस्तित्व धरावशे नहि. केम के,—जे तेना पोताना भाग छे ते वस्तुओने कुदरते पोते ज खोटुं करवानी, अने तेओने अशुभने तावे बनाववानी तथा अवश्ये करीने अशुभमां पडवानी योजना करी, के कां तो आवा परिणामो कुदरतना जाण्या विना ज थया? आ बंने धारवां, खरेखर, मानी शकाय तेवां नथी. पण जो कोइ माणस [कारक शक्तितरीके] कुदरत ए शब्दने पण छोडी दे, अने स्वाभाविकतरीके आ वस्तुओविषे बोले, तो पण, जे वस्तुओनी दरेक वस्तु बनेली छे तेओमां वस्तुओ विशीर्ण थइ भळी जाय छे. तेटलामाटे खास करीने समग्रना भागो तेओना स्वभावमां विकारने तावे छे एम कहेवुं, अने ते वखते जाणे कांइ कुदरत विरुद्ध बनतुं होय तेम आश्चर्य पामवुं अथवा चीडावुं ते हास्य-पात्र थशे. केम के कां तो जे तत्त्वोनी दरेक वस्तु बनेली छे तेमनुं छुटा पडवुं थाय छे, अथवा कां तो नक्कर वस्तुओनो पार्थिव परि-णाम अने हवाई वस्तुओनो वायुरूप परिणाम थाय छे, एटला-माटे आ भागो विश्वना कारणमां पाछा लेवामां आवे छे, पछी चाहे तो अमुक समयोपर अग्निवडे स्वाहा थइ जाय छे अथवा तो निरंतरना फेरफारोवडे पुनः नवा रूपमां आवे छे. अने ते नक्कर अने हवाई भाग उत्पत्तिना समयथी ज तारो हतो एम तुं धारीश नहि. केम के, जे आहार अने हवा (शरीर) अंदर लेवामां आवे छे तेमांथी आ बधुं जाम्युं छे एम कोइ कही शके तेम आ गये काल

अथवा गये परम दिवसे ज आ बधानी जमावट थइ छे. त्यारे, आ के जे आवीने जाम्युं छे, तेना फेरफारो थया करे छे, अने जे तारी माताए प्रसव्युं छे तेना कांइ फेरफार थता नथी. पण तुं एम धार के [जे तारी माताए प्रसव्युं छे ते] आ जेनो [विकार] खास गुण छे एवा आ बीजा भागसाथे, तने घणो बांधी राखे छे, तो पण ते आ जे कहेवामां आव्युं छे तेप्रत्ये वास्तवे कांइ बांधारूपे नथी.[२]

८. ज्यारे तें आ—सारो, विनयी, साचो, बुद्धियुक्त, समचित्त अने महाशय एवां नामो धारण कर्यां छे, त्यारे आ नामो तुं बदले नहि तेवी तुं संभाळ राख; अने जो तुं ते खुवे तो जलदीथी पाछो ते नामो पर आवजे. अने याद राखजे के बुद्धियुक्त ए शब्द प्रत्येक पृथक् वस्तुप्रति विवेकयुक्त ध्यान अने प्रमादरहित-पणानो अर्थ सूचववाने माटे विवक्षित हतो; जे तारे माटे सामान्य कुदरते ठरावीने आपेली छे तेवी वस्तुओनो राजीखुशीथी स्वीकार ते समचित्तता छे; अने मांस(शरीर)नी मजा आपी शके तेवी अथवा वेदनाभरेली लागणीओ करतां उच्चतर, तथा जे कीर्ति कहेवाय छे ते तुच्छ वस्तु, मृत्यु, अने एवी बीजी वस्तुओ करतां उच्चतर बुद्धिमय भागनी उन्नति ते महाशयपणुं छे. त्यारे, बीजा माणसो तने आ नामोथी बोलावे एवी इच्छा राख्या विना, जो तुं आ नामोना कबजामां तने पोताने टकावी राखीश, तो तुं कोइ बीजो ज माणस थइश अने कोइ बीजा ज

---

२. आ कलमनो छेवटनो भाग कदाच अशुद्ध छे. तेनो अर्थ घणो अस्पष्ट छे. आखी दलीलनी साथे जे बंध बेसतो जणाय छे ते अर्थ में आप्यो छे. बादशाह आ स्थळे एम पकडी राखे छे के मनुष्यनो तत्त्वरूप भाग अविकार्य छे, अने बीजा भागो, विकार अथवा नाश पामे छे तो पण जे (तत्त्व) नो वस्तुतः माणस बनेलो छे, तेने कांइ असर करता नथी. जुओ—एन्टोनिनसनो तत्त्वविचार, पृष्ठ ६२ टिप्पणी १३. "तारी माता" एनो अर्थ शल्ट्झे 'कुदरत' e phusis धार्यो हतो. पण मने तेविषे शक रहे छे.

जीवनमां प्रवेश करीश. केम के अद्यापिलगी जेवो तुं बनेलो छे तेवा ज रह्या करवुं, अने आवा ज जीवनमां कपाइने कडके कडका बनी जवुं अने आवा जीवनमां नष्टभ्रष्ट थइ जवुं, ते एक घणा मूर्ख अने जीवननी अति आसक्तिवाळा माणसनुं लक्षण छे, अने ते पेला जंगली पशुओथी अडधा करडी खवायला पशुओनी साथे लडनारा माणसो के जेओ—झखम अने लोहीथी ढंकायला होय छे, अने जो के तेओ ते ज स्थितिमां अने ते ज पंजा अने डाचां खमवा खुल्ला मूकवामां आववाना तो पण—वळी बीजे दिवसे तेओने (लडावाने) राखवामां आवे तेवी आजीजीसाथे मागणी करे छे, तेना जेवुं छे.[3] तेटलामाटे आ थोडांक नामोना कबजामां तुं तने पोताने दृढ स्थापजेः अने जो तुं तेओमां टकी रहेवाने शक्तिमान् थाय तो जाणे तने सुखी[4] लोकोना कोइ अमुक बेटोमां लेइ

---

३. ते समयना लोकोने जे गमत आपता हता ते आवा तमाशाविषे सेनेका, एप्प. ७०, जुओ. आ लडनारा ते बेस्टिआरी लोको हता, तेमांना केटलाक तो सजा पामेला गुनेहगारो हशे. अने जो तेम होय तो पण ते तमाशो जोवा आवनाराओनी नीतिभ्रष्ट आदतोनुं एकसरखी रीत्ये लक्षण हतुं.

४. ग्रीक् अने रोमन् लेखको सुखी अथवा भाग्यशाळी द्वीप (बेटो) विषे बोले छे. हार्मोडियसना स्कोलिअनमां अने एरिस्टोजिटनमां आपणे जोइये छिये तेम, एचिलीस् अने डायोमिडीस् जेवा वीरपुरूषोनुं निवासस्थान ए बेटो हता. त्यां जइ आवेला केटलाक खलासीओ पासेथी ते बेटो विषे केडीझ् आगळ सर्टोरिअसे सांभळ्युं, अने ते बेटोमां जवानी अने तेमां रहेवानी अने पोतानी उपाधिओमांथी छुटी विश्रान्ति लेवानी तेनी इच्छा हती. (प्लुटार्च्, सर्टोरिअस्, प्र. ८.) ओडिस्सि काव्यमां, प्रोटेसे मेनेलोसने कह्युं छे के तेणे आर्गोसमां देह छोडवो नहि पण पृथ्वीनी सीमाआगळ एक जगोए ज्यां र्‌हेडेमेन्थस् रहेतो हतो त्यां जइने रहेवुं (ओडिस्सि, ४. ५६५).

(दुहा) कारण के त्यां शान्तिमां, जनजीवन सुखधामः
नहि तोफान बरफतणां, ने वर्षानां नाम.
पण ज्यां सागर प्रेरतो, जनरंजन मृदु ल्हेर;
मंद पवननी सर्वदा, धीमेथी (चोफेर).

जवामां आव्यो होय तेम तुं टकी रहेजे. पण जो तने एम जणाय के तुं ते नामोमांथी चलित थाय छे, तो तुं हिमतभरेली रीत्ये कोइ एवा खुणामां जा के ज्यां तुं ते नामोने निभावी शके, अथवा ज्यां, आवेशमां नहि, पण सादाइ अने स्वतंत्रता अने विनयथी, तारा जीवनमां कांइ नहि तो आ एक [प्रशस्य] बाबत कर्या पछी, जीवनमांथी बहार निकळी जवाने एकदम जीवनमांथी उपडी जा. तो पण आ नामोनी स्मृति राखवाने माटे जो तुं देवोने याद करे, तथा देवो खुशामत कराववा इच्छता नथी पण सघळां बुद्धियुक्त प्राणिओने तेओना पोताना जेवां बनेलां इच्छे छे ए तुं याद करे, तो ते तने घणी मदद करशे; अने जे अंजिरना झाडनुं काम करे ते अंजिरनुं झाड छे, अने जे कुतरानुं काम करे ते कुतरो छे, अने जे मधमाखीनुं काम करे ते मधमाखी छे, अने जे मनुष्यनुं काम करे ते मनुष्य छे—ए याद राखे तो ते (पण तने घणी मदद करशे.)

९. लास्यमय नाटको, लडाई, आश्चर्य, तंद्रा, गुलामी, तारा पेला पवित्र सिद्धान्तोने नित्य धोइ नाखशे.[५] कुदरतनो अभ्यास कर्या विना तुं केटली बधी बाबतोनी कल्पना करे छे, अने केटली बधी वस्तुओनी तुं उपेक्षा करे छे.[६] पण दरेक वस्तुपर

ए तो नक्की छे के ओडिस्सिनो लेखक तेणे आपेला वर्णननी साथे मळता कोइ पण स्थळनी कांइ पण माहितीविना कोइ जुनी कहाणीने फक्त अनुसरे छे. जे बे बेट विषे सर्टोरिअसे सांभळ्युं हतुं, ते मेडीरा अने तेनी पासेनो बेट हशे. सरखावो पिन्डार्, ओल्. २. १२९.

५. कोरिअसे (Mimi) मिमी (लास्यमय खेल)ने बदले (Misos) एटले'धिक्कार'नी अटकळ करी; मिमी ए रोमन् नाट्य अथवा खेलो छे के जेमां मात्र हावभाव अने चेष्टा होय छे अथवा लगभग घणे भागे हावभाव अने चेष्टा होय छे.

६. आ अशुद्ध छे. ग्राल्ट्झनी आवृत्ति जुओ.

एवी रीत्ये नजर नाखवानी अने दरेक वस्तु एवी रीत्ये करवानी तारी फरज छे, के जेथी एके काळे आशपाशनी बाबतो संबंधे वर्त्तवानी शक्ति पूर्ण रीत्ये विकसे छे, अने विचार करवानी शक्ति कसाय छे, अने दरेक निराळी वस्तुना ज्ञानथी जे विश्रब्धता आवे छे तेनो देखाडो कर्या विना ते टकी रहे छे, तो पण ते विश्रब्धता कांइ ढांकी रहेती नथी. केम के तुं सादाइ क्यारे भोगवीश, गंभीरता क्यारे भोगवीश, अने प्रत्येक पृथक् वस्तुनुं ज्ञान—अर्थात् ते वस्तु कया पदार्थनी बनेली छे, तथा विश्वमां तेनुं स्थान कयुं छे—ए बंने बाबतनुं ज्ञान, तथा केटलो लांबो समय ते हयात रहेवाने बनेली छे अने की वस्तुओ मळीने बनी छे, तथा ते कोनी मालिकीनी छे, तथा ते आपवा तथा लेवा बंनेने माटे कोण समर्थ छे—एवुं ज्ञान भोगववाने माटे तुं क्यारे शक्तिमान् थइश ?

१०. एक करोळिए ए ज्यारे एक माख पकडी होय छे त्यारे ते मगरूर होय छे, अने बीजो माणस ज्यारे तेणे एक गरीब ससलुं पकडयुं होय छे त्यारे मगरूर होय छे, अने बीजो ज्यारे तेणे जाळमां एक नानुं माछलुं पकडयुं होय छे त्यारे मगरूर होय छे, अने बीजो ज्यारे तेणे जंगली डुक्करो पकड्यां होय छे, त्यारे मगरूर होय छे, अने बीजो ज्यारे तेणे रींछ पकड्यां होय छे त्यारे मगरूर होय छे, अने बीजो ज्यारे तेणे सर्मेटिअन् लोकोने पकड्या होय छे त्यारे मगरूर होय छे. जो तुं तेओना अभिप्रायोने तपासे तो आ माणसो लूटारा नथी शुं ?[७]

---

७. मार्कसनो कहेवानो हेतु ए छे के लडाइथी देश जीतनाराओ लूटारा छे. तेणे पोते सर्मेटिअन् लोको सामे लडाइ करी हती, अने ते पोते पण कहे छे के बीजाओनी पेठे ते पोते पण लूटारो हतो. पण वल्केटिअसकृत एवीडिअस् केस्सिअसनुं जीवनचरित्र, प्र. ६. सरखावो.

११. सघळी वस्तुओ एक बीजामां केवी रीत्ये रूपान्तर पामे छे ते जोवानो विचारमार्ग प्राप्त कर, अने ते उपर निरंतर ध्यान आप, अने [तत्त्वज्ञानना] आ भागविषे तुं तने पोताने कसरत आप. केम के मननुं विशाळपणुं उत्पन्न करवाने आना जेटलुं बीजुं कांइ पण योग्यतावाळुं नथी. आवा माणसे शरीर(परनी ममता) उतारी मूकेल होय छे, अने ते केटली जलदीथी मनुष्यो-मांथी चाल्यो जवानो ज अने दरेक वस्तु अहीं ज मूकीने चाल्यो जवानो ते कोइ जाणतुं नथी—एम ते समजे छे, तेथी ते पोतानां सघळां कृत्योमां न्यायी आचरणमां ज पोताने अर्पण करी दे छे, अने बीजी जे कांइ बाबत बने छे तेमां ते पोताने विश्वनी प्रकृतिने शरणे अर्पे छे. पण ते हाल जे कांइ करे छे तेमां ते न्यायपूर्वक वर्त्तवाथी, तथा तेने भाग्ये जे निर्माण थयेलुं होय छे तेथी तृप्त रहेवाथी, एम आ बंने बाबतोथी ते पोते संतुष्ट होवाथी, कोइ माणस तेना विषे शुं कहेशे अथवा धारशे अथवा तेना विरुद्ध शुं करशे तेविषे ते कदी विचार पण करतो नथी; अने ते सघळी व्यग्रता उपजावनारी अने धांधळिया प्रवृतियोने एक कोराणे मूके छे, अने कायदामां थइने अने ईश्वरने अनुसरवाने सीधो रस्तो साधीने सीधो मार्ग पकडवा करतां बीजुं काइ ते इच्छतो नथी.

१२. शंकावाळी भीतिनी शी जरूर छे ? केम के शुं करवुं जोइये तेनो तपास करवो ते तारी सत्तामां छे. अने जो तने स्पष्ट देखाय, तो आ रस्ते तुं पुठ फेरव्या विना संतुष्ट थइ चाल्यो जा: पण जो तने स्पष्ट न देखाय, तो तुं अटक अने

८. ते 'कायदो' ए शब्दथी (अहीं) ईश्वरी कायदो, ईश्वरनी इच्छाने अधीन रहेवुं ते-एवो अर्थ बतावबा मागे छे.

सारामां सारा सलाहकारो मेळव. पण जो कोइ बीजी बाबतो तारी सामे थाय, तो जे व्याजबी जणाय तेमत्ये कायम रहीने योग्य विचारथी तारी शक्तिप्रमाणे तुं आगळ चाल्या कर. केम के आ लक्ष्ये पहोचवुं ते उत्तम छे, अने जो तुं निष्फल थाय तो पण तारी निष्फलता आ प्रयत्न करवामां ज थवा दे. जे कोइ बधी बाबतोमां बुद्धिने अनुसरे छे ते एकेकाळे शान्त अने क्रिया-परायण बंने होय छे, अने वळी आनंदी अने समाहित होय छे.

१३. तुं उंघमांथी जागे के तरत ज तुं तने पोताने पूछ के—बीजो कोइ माणस जे व्याजबी अने खरुं होय ते करे तो तेथी तने कांइ फरक पडशे के? तेथी कांइ फरक पडशे नहि. (६. ३२; ८. ५५.)

हुं धारुं छुं के तुं (ए वात) भूली गयो नथी के जेओ बीजाओ विषे पोते वखाण अथवा ठपको दर्शाववामां गर्ववाळो देखाव धारण करे छे तेओ जेवा बिछानाउपर तथा खाणाउपर होय छे तेवा ज होय छे, अने तुं (ए वात) भूली गयो नथी के—तेओ शुं करे छे, अने तेओ शेनाथी वेगळा रहे छे अने शेनी पाछळ दोडे छे, तथा तेओ हाथ अने पगथी नहि, पण ज्यारे माणस (एम करवाने) चाहे छे त्यारे जेनावडे निमकहलाली, सभ्यता, सत्य, कायदो, शुभ दैव [सुख] उत्पन्न करवामां आवे छे तेवा तेओना सर्वथी किमती भागवडे तेओ केवी रीत्ये चोरी अने लूट करे छे? (७. १७.)

१४. जे बधुं आपे छे अने पाछुं पण लेइ ले छे तेने, अर्थात् ते कुदरतने, जे शिक्षण पामेलो अने विनयवाळो छे एवो माणस तो एम कहे छे के—तारी मरजी आवे ते तुं आप; अने तारी मरजीमां आवे ते पाछुं लेइ ले. अने ते आ कहे छे, ते गर्वभरेली रीत्ये नहि, पण आज्ञांकित रीत्ये अने ते(कुदरत)थी सुप्रसन्न थइने कहे छे.

१५. जिंदगीनो जे थोडो भाग तारे बाकी छे ते टूंको छे. जेम पहाडउपर कोइ रहे तेम तुं रहे. केम के जो माणस दुनियामां गमे ते स्थळे एक राज्यसंस्था[राजकीय जनसमुदाय]मां रहे छे तेम रहे, तो ते माणस त्यां रहे के अहीं रहे तेथी कांइ फरक पडतो नथी. कुदरतप्रमाणे जे रहे छे एवा एक खरेखरा माणसने मनुष्योने जोवा दे, तेओने जाणवा दे. जो तेओ तेने वेठी न शके तो तेओ तेने भले मारी नाखे. केम के आप्रमाणे [बीजा माणसोनी पेठे] जीववा करतां ए सारुं छे.

१६. सारो माणस केवा प्रकारनो होवो जोइये तेविषे बिलकुल हवे वधारे वार वातो कर नहि, पण तुं तेवो माणस था.

१७. समग्र समय अने समग्र पदार्थनुं निरंतर चिन्तन कर, अने विचार के पदार्थसंबंधे तो सघळी व्यक्तिरूप वस्तुओ अंजीरनुं एक बीज ज छे; अने समयसंबंधे तो शारडीना फरवासमान ज छे.

१८. जे हयात छे ते दरेक वस्तुप्रति जो, अने अवलोक के ते क्यारनीए विशीर्ण अने विकृत थवा लागी छे, अने जाणे ते सडो अथवा विखराइ जवुं छे, अथवा दरेक वस्तु कुदरतवडे एवी रीत्ये बनावायली छे के तेनो नाश ज थवानो.

१९. ज्यारे माणसो खाता, उंघता, संतान उपजावता, पोताने निरांत आपता अने एवां बीजां काम करता होय छे, त्यारे तेओ केवां होय छे तेनो विचार कर. पछी माणसो ज्यारे गर्विष्ठ अने गुमानी होय छे, अथवा तो तेओना उच्चपदेथी गुस्से थयेला अने (बीजाने) ठपको देता होय छे त्यारे, तेओ केवा प्रकारना माणसो होय छे–(तेनो विचार कर). पण एक थोडा ज वखतपहेलां तेओ केटला बधा माणसोनी अने केवी वस्तुओने माटे गुलामी करता हता; अने थोडा समयपछी तेओ शी स्थितिमां आवशे–तेनो विचार कर.

२० दरेक वस्तुने जे कांइ विश्वनी प्रकृति आणी आपे छे ते

ते प्रत्येक वस्तुने माटे शुभ छे. अने जे समये प्रकृति ते आणी आपे छे ते समये ते तेना भलाने माटे होय छे.

२१. "पृथ्वी वर्षादने चहाय छे;" अने "गंभीर आकाश चहाय छे:" अने जे कांइ थवानुं होय छे तेने विश्व चहाय छे. त्यारे हुं विश्वने कहुं छुं के–तुं चहाय छे तेम हुं चहाउं छुं. अने वळी आ प्रमाणे शुं कहेवातुं नथी के–"आ अथवा ते उपजावावाने चहाय छे (अर्थात् आने अथवा तेने उपजावावानी टेव छे) ?"[१]

२२. कां तो तुं अहीं रहे छे अने तने पोताने क्यारनीए तेनी टेव पडी गइ होय छे, अथवा तो तुं जतो रहेतो होय छे, अने आ तारी पोतानी इच्छा हती; अथवा तुं मरतो होय छे अने तुं तारी फरज बजावी चूक्यो छे. पण आ बाबतोसिवाय बीजुं कांइ नथी. त्यारे तुं सारी पेठे आनंदयुक्त था.

२३. तुं तने हमेश आ बाबत स्पष्ट थवा दे के जमीननो आ कडको ते बीजा हर कोइ कडकाजेवो छे; अने जे सघळी वस्तु अहीं छे ते पर्वतना शिखरउपर, अथवा समुद्रना तीरउपर, अथवा तुं ज्यां होवाने चहाय त्यांनी सघळी वस्तुओना जेवी ज छे.

---

१. आ शब्दो युरिपाइडीसमांथी छे. एरिस्टोटले तेमनो उतारो करेलो छे, एथिक्. निकोम. ८.१. एथेनियस् (१३. २९६.) अने स्टोबिअस् era men omborougaia ए शब्दोथी शरू थती पूरेपूरी साते लींटीओनो उतारो आपे छे. वळी एथेनियसे उतारेल एस्चिलस्, डेनाइडीसनो एक एना जेवो ज फकरो छे.

शब्दोना अर्थउपर काम करवुं एवी विरक्त तत्त्वज्ञानीओनी पद्धति हती. तेम एन्टोनिनस् Philei क्रियापद "चहाय छे" एवा अर्थनुं वापरे छे, के जेनो "परिचित छे" "वापरे छे" अने एवो भाव पण छे. एन्टोनिनसने मनुष्यजातिनी साधारण भाषामां तत्त्वज्ञाननुं सत्य मालम पडे छे, अने जीवननी सामान्य भाषामां घणांखरां मोटां सत्यो दर्शावायलां होय छे; केटलाक ते सत्योने समजे छे, पण घणाखरा लोको तो तेमां केटलो बधो अर्थ रहेलो होय छे ते समज्याविना ते सत्यो बोल्या करे छे.

केम के जे प्लेटो, एक शहेरना कोटनी अंदर रहेवुं ते एक पहाड उपर भरवाडना वाडामां रहेवाजेवुं छे एम कहे छे, ते तने व्याजबी जणाशे. [भाषान्तरमां ' एक पहाड उपर ' ए त्रण शब्दो छोडी देवामां आव्या छे.][10]

२४. हाल मारी नियामक शक्ति मने शा उपयोगनी छे? अने हुं तेने केवा प्रकारनी हाल बनावुं छुं? अने हाल हुं तेने शा कामने माटे वापरुं छुं? शुं ए शक्ति बुद्धिशून्य छे? ते शक्तिने छोडीतोडीने समाजिक जीवनथी जूदी पाडवामां आवेली छे? शुं तेने गाळीने आ तुच्छ मांस(शरीर)नी साथे मिश्र करी नाखवामां आवी छे के ते तेनी साथे ज फर्या करे?

२५. जे पोताना धणीनी पासेथी नाशी छुटे छे ते माणस एक पलायन करनार छे; पण कायदो ए धणी छे अने जे कायदाने तोडे छे, ते माणस नाशी छुटनार छे. अने जे गुस्से थयेलो अथवा भयभीत थयेलो होय छे, ते असंतुष्ट होय छे, केम के जे सर्व वस्तुओनुं नियमन करे छे तेनावडे जे वस्तुओ नियोजाइ छे ते वस्तुओविषे कांइ थयुं छे, अथवा छे, अथवा थशे; ते नियामक ते कायदो छे, अने ते जे घटित होय छे ते दरेक माणसने माटे अंकित करे छे. तो जे कोइ डरे छे, अथवा शोकग्रस्त होय छे अथवा गुस्से थयेलो होय छे ते पण एक नाशी छुटनार माणस छे.[11]

२६. एक माणस गर्भाशयमां बीजाधान करीने चाल्यो जाय छे, अने पछी बीजुं कारण ते बीजने धारण करे छे, अने तेना उपर काम करे छे अने एक बाळक बनावे छे. आवा पदार्थमांथी एक केवी वस्तु बने छे! फरी, ते छोकरुं पोताना गळाथी नीचे

---

१०. प्लेटो थिएट. १७४ डी. इ. पण एन्टोनिनसे तेनो जे उपयोग कर्यो छे तेनी साथे असलने सरखावो.

११. एन्टोनिनस् अहीं nomos ना धातुउपर खेले छे; nemei एटले कायदो, निर्मित, अथवा दरेक माणसने जे तेनो भाग आंकी आपे छे ते.

आहार (पेटमां) उतारे छे, अने पछी बीजुं कारण तेने ग्रहण करे छे, तथा ज्ञान अने क्रिया तथा आखरे जीवन बळ अने बीजी वस्तुओने उपजावे छे; केटली बधी अने केवी विलक्षण वस्तुओ ! त्यारे आवी गुप्त रीत्ये जे वस्तुओ उत्पन्न करवामां आवे छे तेनुं अवलोकन कर, अने जे शक्ति वस्तुओने नीचे अने उपर लेइ जाय छे ते शक्तिने जेम आपणे आंख्योथी जोता नथी पण तेथी कांइ तेने ओछी स्पष्ट रीत्ये आपणे जोता नथी तेम ए शक्तिने पण जो. (७. ७५.)

२७. सघळी वस्तुओ जेवी हाल छे तेवी भूत काळमां पण हती तेनो निरंतर विचार कर; अने विचार के पाछी तेओ भविष्य काळमां पण तेवी ज थशे. अनुभवउपरथी अथवा वधारे जुना समयना इतिहासउपरथी जे जे तुं शीख्यो होय ते आखां नाट्यो अने तेवा ज आकारना क्रमो तारा नेत्र आगळ मूक; दाखलातरी-के हेड्रिएनसनो आखो दरबार, एन्टोनिनस्नो आखो दरबार, फिलिप्पस्, एलेक्झान्डर्, क्रीससनो आखो दरबार; केम के आ बधा जेवां आपणे हाल नाट्यो जोइये छिये तेवां ज, पण जुदां पात्रोवाळां नाट्यो हतां.

२८. जे माणस कोइ बाबतथी शोक पामेलो होय छे अथवा असंतुष्ट थयेलो होय छे तेवा दरेक माणसने लातो मारतां अने चीसो पाडतां जेनुं बळिदान आपवामां आवे छे तेवा भुंडजेवो तुं धार.

जे पोतानी पथारीउपर सुनमुन थइ पड्यो पड्यो आपणे जे बंधनमां पकडायला छिये तेनो शोक कर्या करे छे ते पण आवा डुक्करजेवो छे. अने विचार के जे बने छे तेने इच्छापूर्वक अनुसरवानुं फक्त बुद्धियुक्त प्राणिने ज आपवामां आव्युं छे; पण फक्त (एप्रमाणे) अनुसरवानी फरज तो सर्वने माथे नाखवामां आवेली छे.

२९. तुं दरेक वस्तु करे ते पृथक् पृथक् प्रसंगे तुं अटक अने तने पोताने पूछ के—आ (वस्तु) मोत तारी पासेथी पडावी ले छे माटे मोत ए एक भयंकर वस्तु छे ?

३०. ज्यारे कोइ माणसना वांकथी तने खोटुं लाग्युं होय, त्यारे एकदम तुं तारा पोताना तरफ फर अने तुं पोते ते ज प्रमाणे केवी भुल करे छे तेनो विचार कर; दाखला तरीके, धन अथवा मजा अथवा थोडुंक मान अने एवी बाबतो एक सारी वस्तु छे एम धारवामां (तुं पण बीजाओनी पेठे केवी भुल करे छे तेनो विचार कर). केम के, आ विचारमां वळी एटलुं उमेरवामां आवे के ते माणसने एम करवानी जरूर पडी छे, तो आ बाबत उपर ध्यान आपवाथी तुं तरत ज तारा क्रोधने भूली जइशः केम के ए बीजुं शुं करत ? नहि तो जो तुं शक्तिमान् होय तो तेने पडेली जरूर तुं तेनी पासेथी लेइ ले.

३१. ज्यारे तें सोक्रेटिक् सेटिरोनने[१२] जोयो छे त्यारे तुं युटाइचीस् अथवा हाइमेन् विषे विचार, ज्यारे तें युफ्रेटीसने जोयो छे त्यारे तुं युटिचिओन् अथवा सिल्वेनस् विषे विचार, अने ज्यारे तें एलिसफ्रोनने जायो छे त्यारे तुं ट्रोपिओफोरस्विषे विचार, अने ज्यारे तें झेनोफोनने जोयो छे त्यारे क्रीटो[१३]

---

१२. सेटिरोन् अथवा सेटिरिओन् विषे कांइ पण जाणवामां आव्युं नथी; अने, हुं धारुं छुं के युटाइचीस् अथवा हाइमेन् विषे पण कांइ जाणवामां आव्युं नथी. एपिक्टेटसे युफ्रेटीसविषे घणा मानपूर्वक लख्युं छे (३. १५, ८; ४. ८, १७). प्लिनी (एप्प. १. १० मां) तेना विषे घणी उच्च रीते बोले छे. ते वृद्ध अने खराब तन्दुरस्तीमां हतो तेथी झेर पीने आपघात करवाने माटे तेणे हेड्रियन् बादशाहनी रजा मेळवी हती (डायोन् केस्सिअस्, ६९, प्र. ८).

१३. क्रीटो ए सोक्रेटीसनो मित्र छे; अने एम जणाय छे के ते झेनोफोननो पण मित्र हतो. ज्यारे बादशाह (मार्कस् एन्टोनिनस्) (idon=जोयुं) ए शब्द वापरे छे त्यारे 'आंख्योथी जोयुं' एवुं कहेवानो तेमनो भाव नथी.

अथवा सेवेरस् विषे विचार, अने ज्यारे तें तारा पोतानी उपर जोयुं छे त्यारे तुं बीजा कोइ सीझरविषे विचार, अने प्रत्येकनी बाबतमां ए ज प्रमाणे कर. पछी तारा मनमां आ विचार थवा दे के—त्यारे ते माणसो क्यां छे ? कोइ ठेकाणे नहि, अथवा क्यां छे ते कोइ जाणतुं नथी. केम के आप्रमाणे तुं निरंतर मानुषी वस्तुओ प्रत्ये धूमाडातरीके अने केवळ कांइ नहि तरीके जोइश; खास करीने जो तुं ते ज वखते एवो विचार करीश के जे एक वार विकार पाम्युं छे ते काळना अनंत अरसामां कदी पण फरीने हयातीमां आवशे नहि. पण तुं,—तारी तो केटला टुंका समयमां हयाती छे ? अने आटला टुंका समयमां व्यवस्थित रीत्ये चाली जवाने तुं केम संतुष्ट नथी ? कया पदार्थने अने कया प्रसंगने (तारी प्रवृत्तिमाटे) तुं टाळवा मागे छे ? केम के ज्यारे तर्कशक्तिए (आ) जीवनमां जे बने छे ते वस्तुओने तेमना स्वभावमां काळजीपूर्वक तपासथी जोइ होय छे, त्यारे आ सघळी वस्तुओ तर्कशक्तिने माटे कसरतोसिवाय बीजुं शुं छे ? त्यारे जेम प्रबळ थयेलुं जठर सघळी वस्तुओने पोतानी बनावी दे छे, जेम भडभडतो अग्नि तेनामां नंखायेली दरेक वस्तुमांथी भडको अने प्रकाश बनावे छे, तेम आ सघळी वस्तुओने तुं तारी पोतानी बनावी दे त्यांलगी मंड्यो रहे.

३२. तुं सादो नथी अथवा तुं सारो नथी एम ताराविषे खरी रीत्ये कहेवानुं तुं कोइ पण माणसनी सत्तामां रहेवा देइश नहि; परंतु आवा प्रकारनुं कांइ पण ताराविषे जे कोइ धारे तेने तुं जुठो बनवा दे; अने आ केवळ तारी सत्तामां छे. केम के तने सारो अने सादो थतां अटकावे एवो ते कोण छे ? तुं आवो थाय नहि, तो हवे वधारे नहि जीववाने तुं निश्चय ज कर. केम के तुं आवो न होय, तो तर्कबुद्धि पण [तने जीववाने] रजा आपती नथी.[१४]

---

१४. एपिक्टेटस्, १. २९,२८. सरखावो.

३३. आ वस्तु[आपणा जीवन]विषे तर्कशक्तिने अत्यंत अनुरूप रीत्ये जे करी शकाय अथवा कही शकाय ते शुं छे. केम के आ गमे ते होय, तो पण ते करवुं अने कहेवुं ते तारी सत्तामां छे, अने तने अटकाव कराय छे एवां बहानां तुं काढ नहि. जेओ मजाह भोगवे छे तेओने मोजशोख जे गरज सारे छे, ते ज गरज तने जे वस्तु तारी भोग्य बनावीने तारी आगळ धरवामां आवी छे, तेमां मनुष्यना बंधारणने अनुरूप बाबतो करवी–ते सारशे, एवी स्थितिमां तारुं मन आवतांलगी तारा शोकनो अंत आवशे नहि; केम के माणसनी पोतानी प्रकृतिप्रमाणे जे वस्तु करवानुं तेनी सत्तामां छे ते दरेक वस्तुने तेणे एक मोजतरीके धारवी जोइये. अने सर्व स्थळे ते तेनी सत्तामां छे. हवे, गोळ पदार्थने तेनी पोतानी गतिथी दरेक स्थळे फरवाहरवानी (सत्ता) आपवामां आवेल नथी, तेम ज पाणीने अने अग्निने, तथा कुदरतवडे अथवा तो तर्करहित आत्मावडे चलावाती बीजी कोइ वस्तुने पण (पोतानी गतिथी दरेक स्थळे फरवाहरवानी सत्ता) आपवामां आवेल नथी, केम के (तेम करतां) तेमने अटकावे अने मार्गमां आडी आवे एवी वस्तुओ घणी छे. पण बुद्धि अने तर्क तेमनी सामे थती दरेक वस्तुनी आरपार निकळी जवाने माटे, अने जे रीत्ये (आरपार निकळी जवाने) कुदरते तेमने बनावेल छे तथा जे रीत्ये (आरपार निकळी जवाने) तेओ इच्छे ते रीत्ये, आरपार निकळी जवाने माटे–समर्थ छे. अग्नि जेम उपर, पथ्थर जेम नीचे, अने एक गोळ पदार्थ जेम ढोळाणवाळी सपाटी उपर नीचे रगडी जाय छे, अने बीजुं कांइ करवा मागता नथी तेम जे सहेलाइथी तर्कशक्ति सघळी वस्तुओनी आरपार चाली जाय छे ते सहेलाइने तारां नेत्रआगळ मूक. केम के बीजा सघळा प्रतिबंधो कां तो शरीर के जे एक मृतक वस्तु छे तेने ज असर करे छे; अथवा, अभिप्राय द्वारा सिवाय अने बुद्धि पोते ज नमी पडे ते

सिवाय, ते (प्रतिबंधो) कांइ चगदी नाखता नथी तेम ज कोइ प्रकारनी हानि करता नथी; केम के जो तेओ कांइ हानि करता होय, तो जेने ते हानि लागी होय ते माणस तरत ज वधारे खराब थइ जाय. हवे, जेमने अमुक बंधारण होय छे तेवी सघळी चीजोनी बाबतमां (तो एम होय छे के) ते पैकीनी कोइ चीजने गमे ते इजा थइ होय तो एप्रमाणे इजा पामेली चीज तेथी करीने वधारे खराब थइ जाय छे; पण तेवी ज बाबतमां माणस तो बंने वधारे सारो, अने जो कोइ एम कही शके तो, आ अकस्मात् बनावोनो खरो उपयोग करवाथी ते वधारे प्रशंसाने पात्र पण थाय छे. अने जे राज्यने हानि नथी करतुं एवुं कांइ पण जे खरी रीत्ये शहेरी छे तेने कशी इजा करतुं नथी. ए छेवटे याद राख; अने जे कायदा(व्यवस्था)ने इजा नथी करतुं ते राज्यने पण इजा नथी करतुं; अने जेओ दुर्दैव कहेवाय छे तेवी आ वस्तुओमांनी एक पण वस्तु कायदाने इजा करती नथी. त्यारे जे कायदाने इजा नथी करतुं ते राज्यने के (तेना) शहेरीने इजा करतुं नथी.

३४. जे माणसमां सत्य सिद्धान्तो प्रवेश्या छे, तेने एक टूंकामां टूंको उपदेश पण, अने हरकोइ सामान्य उपदेश, तेणे शोक भयथी मुक्त रहेवुं जोइये एम याद देवरावावाने पूरतो छे. दाखला तरीके:—

दोहरो.

पवन जेम पृथ्वीउपर, विखेरतो कंइ पान;

तेम ज माणसजाति पण, विखरइ जाय निदान.[१५] १

पांदडां ते वळी तारां छोकरां छे; अने जेओ एवी बुम पाडी उठे छे के तेओ मान्यताने योग्य छे अने पोतानी प्रशंसा बीजाओने

१५. होमरकृत इलियड्, ६. १४६.

बक्षे छे, अथवा तेथी उलटी रीत्ये बीजाओने शाप आपे छे, अथवा खानगी रीत्ये बीजाओने दोष दे छे अने तिरस्कार करे छे तेओ पण पांदडां छे; अने ते ज प्रमाणे जेओ कोइ मनुष्यनी कीर्ति लेइने पाछळना समयोमां पहोचाडे छे तेओ पण पांदडां छे. केम के ते कवि कहे छे तेम "एवी सघळी वस्तुओ वसंतऋतुमां निपजे छे;" पछी पवन तेमने भोंय नाखी दे छे; अने पछी अरण्य तेमनी जगोए बीजां पांदडां उत्पन्न करे छे. पण अल्पजीवन ए सघळी वस्तुओने सामान्य छे, अने तेम छतां तुं बधी वस्तुओने एवी रीत्ये टाळो दे छे अथवा तेमनी पाछळ दोडे छे के जाणे ते वस्तुओ अविनाशी होय. एक थोडी ज वार छे अने तुं तारी आंख्यो बंध करीश; अने जे माणस तारी कबरलगी तारी साथे रह्यो छे तेनो शोक बीजो कोइ करशे.

३५. तन्दुरस्त आंख्ये सघळी दृश्य वस्तुओ जोवी जोइये अने एम नहि कहेवुं जोइये के हुं लीली वस्तुओमाटे इच्छुं छुं; केम के ए तो एक रोगग्रस्त आंखनी स्थिति छे. अने नीरोग श्रवण अने घ्राणे तो जे सघळुं सांभळी शकाय अने सूंघी शकाय ते सघळुं ग्रहण करवा तैयार रहेवुं जोइये. अने आरोग्यवान् जठरे बधा खोराकना संबंधमां, जे सघळी वस्तुओने दळवाने माटे बनावायली एक घंटी जेम ते दळवानी सघळी वस्तुओना संबंधमां वर्त्ते छे, तेम वर्त्तवुं जोइये. अने ते ज प्रमाणे तन्दुरस्त बुद्धिए जे कांइ बने ते दरेक वस्तुने माटे तैयार रहेवुं जोइये; पण जे कांइ एम कहे छे के—मारां प्रिय संतानो जीवतां रहो, अने हुं जे कांइ करुं ते बधां माणसो वखाणो, ते एक एवी आंख जेवुं छे के जे लीली वस्तुओने माटे शोधे छे, अथवा ते एवा दांत जेवुं छे के जे नरम वस्तुओने माटे शोधे छे.

३६. कोइ पण माणस एवो भाग्यवान् नहि होय के ते ज्यारे मरतो होय त्यारे तेनुं मरण थवानुं होवाथी खुशी होय एवा केटलाक

माणसो तेनी पासे न होय. [१६]एम धारो के ते एक सारो अने डाह्यो माणस हतो,-(तो पण) आ महेताजीथी छुटा थवाथी आपणने छेवटे मोकळा महालवा द्यो, एम पोताना मनथी कहेनार आखरे शुं कोइ एक नहि होय के? ए खरुं छे के आपणामांना कोइ प्रत्ये ते कठोर तो न होतो, पण में जोयुं छे के ते बोलतो न हतो पण मनमांथी ते आपणने दोषित गणे छे.—सारा माणसोविषे जे कहेवामां आवे छे ते आ छे. पण आपणी पोतानी बाबतमां तो बीजी एवी केटलीए बधी वस्तुओ छे के जेने माटे आपणने विदाय करवाने इच्छे छे एवा घणाए माणसो छे. तो ज्यारे तुं मरवा पड्यो होय त्यारे तुं आ विचारजे, अने आप्रमाणे विचार करवाथी तुं वधारे संतुष्ट रीत्ये प्रयाण करीशः हुं एवी जिंदगीमांथी चाल्यो जाउं छुं के जेमां मारा सोबतीओ के जेओने माटे में आटलो बधो श्रम कर्यो छे, ईश्वरनी प्रार्थना करी छे, अने काळजी राखी छे, तेओ ज मारा मरवाथी कदाच तेमने कांइक थोडोक लाभ मळे एवी आशाथी मने उपडी जवो इच्छे छे. त्यारे अहीं वधारे लांबो समय स्थिति करवाने माणसे शामाटे आसक्ति राखवी? तो पण आ कारणथी तेओनी प्रत्ये ओछुं मायाळु वळण करीने चाल्यो जइश मा, पण तारुं पोतानुं चारित्र्य जाळवीने, अने मित्र शुभेच्छक तथा मृदु (रहीने) चाल्यो जा, अने बीजी बाजुए जाणे वाढी वछूट्यो होय तेम चाल्यो जा नहि; पण ज्यारे माणस शान्तिवाळुं मरण पामे छे त्यारे तेनो बिचारो आत्मा जेम शरीरमांथी सहेलाइथी छुटो पडे छे, तेम माणसोमांथी पण तारुं प्रयाण थवुं जोइये, केम के कुदरते ज तने तेओनी साथे संबंध कराव्यो अने तेओना सहवासमां तने मूक्यो. पण ते संबंधने हाल शुं कुदरत छोडी

---

१६. ते Kakon कहे छे, पण ते बीजां स्थळोए कहे छे के मृत्यु ए कांइ अशुभ नथी, तेथी जेने बीजा अशुभ कहे ते कहेवानी तेनी इच्छा होवी जोइये, अने "जे बनवानुं छे" ते ज कहेवानो तेनो आशय छे.

नाखे छे? ठीक, हुं जेम सगाओमांथी छुटो पडुं तेम छुटो पडुं छुं, पण तरफडतो घसडातो जतो नथी, पण कांइ पण जबरदस्ती विना जाउं छुं; केम के आ पण कुदरतने अनुसार वस्तुओमांनी एक वस्तु छे.

३७. कोइ पण माणसवडे कोइ वस्तु कराती होय ते प्रसंगे ताराथी बने तेटली तुं तने पोताने एवुं पूछवानी टेव पाड—के आ माणस शा हेतुमाटे आ करे छे? पण तुं तारा पंडथी आरंभ कर, अने प्रथम तने पोताने तपास.

३८. याद राख के आ जे दोरीओ खेंचे छे ते तारामां गुप्त रहेली वस्तु छे: आ समजाववानी शक्ति छे, आ जीवन छे, आ-जो कोइ एम कहे तो—माणस छे. तारा पोताना विषे चिन्तन करवामां जे तारी आशपाश वींटायलुं छे ते वहाणने अने आ ओजारो जे तेमनी आशपाश वळगाडेलां छे तेमने अंदर गणीश नहि. केम के ते एक कुहाडा जेवां छे, फरक फक्त एटलो ज छे के तेओ शरीरउपर उगे छे. केम के खरेखर आ भागोनो, तेमना चालक अने नियामक कारणविना, एक वणकरना कांठला, अने लेखकनी कलम, अने सारथिनी चाबुक करतां कांइ वधारे उपयोग नथी.[१७]



---

१७. "एन्टोनिनस्ना तत्वविचार"नो नं. १३. जुओ.

११.

बुद्धियुक्त आत्माना आ गुणो छेः ते पोते पोताने जुवे छे, पोतानुं पोते पृथक्करण करे छे, अने पोते चहाय तेवो पोते पोताने बनावे छे; तेने जे फळ आवे छे, ते ते पोते भोगवे छे—केम के छोडवाओनां फळो अने प्राणिओमां जे फळने मळतुं छे ते बीजाओ भोगवे छे—जीवननी मर्यादा गमे त्यां ठरावी होय, तो पण ते तेनी मेळे पोतानुं अन्तिम लक्ष्य प्राप्त करी ले छे. नाच अने खेल अने एवी वस्तुओ के जेमां कांइ कापीने जो टूंकाववामां आव्युं होय तो आखी क्रिया अपूर्ण होय छे तेम नहि; पण दरेक भागमां अने गमे त्यां तेने अटकाववामां आवे छे त्यां, तेनी आगळ मूकवामां आव्युं होय ते संपूर्ण अने आखुं एवी रीत्ये करे छे के में मारुं प्राप्त कर्युं छे एम ते कही शके. अने वळी ते आखा विश्वमां, अने आशपाशना अवकाशमां व्यापी रहे छे, अने तेना आकारनुं माप लेइ ले छे, अने ते काळना अनंतपणामां पोते प्रसरे छे, अने सघळी वस्तुओना अमुक समयमां[1] थता नवा फेरफारने ते भेटे छे अने समजे छे, अने ते समजे छे के जओ आपणी पाछळ आवशे तेओ कांइ पण नवुं जोशे नहि, अने जेओ आपणी पहेलां थइ गया छे तेओए कांइ वधारे जोयुं नथी, पण एक रीत्ये जे चाळीश वर्षनी वयनो छे, तेनामां जो कांइ बुद्धि होय तो, तेणे सर्व वस्तुओमां प्रसरी रहे छे ते एकसरखापणाने लीधे जे थयुं छे अने जे थवानुं छे ते सघळुं जोइ लीधुं होय छे. वळी आ पण एक बुद्धियुक्त आत्मानो गुण छे,—पोताना पाडोशी प्रत्येनो, अने सत्य तथा सभ्यता प्रत्येनो प्रेम, तथा तेनो पोतानो आत्मा के जे वळी विश्वना नियम[2]नो पण एक गुण छे तेना

---

१. Ten periodiken paliggenesian जुओ ५. १३, ३२; १०. ७

२. जेथी सघळी वस्तुओ व्यवस्थामां रखाय छे ते क्रम ते नियम.

करतां बीजा कशाने वधारे किमती नहि गणवुं ते. त्यारे आ प्रमाणे खरी बुद्धि ते न्यायबुद्धिथी बिलकुल जुदी पडती नथी.

२. जो तुं अवाजना माधुर्यने तेना पृथक् ध्वनिओमां विभक्त करी नाखीश अने ते दरेकविषे पूछीश के तुं आनाथी वश कराय छे? तो आनंद आपता गान अने नाच अने मल्लकुस्तीनी तुं थोडी ज किमत गणीश; केम के तुं आनाथी वश थाय छे एम कबुल करतां तुं शरमने लीधे अटकीश अने नाचनी बाबतमां जो तुं दरेक गति अने आस्थान प्रत्ये पण एम करीश (तो पण तेम ज थशे); अने मल्लकुस्तीनी बाबतमां पण एवुं ज थशे. त्यारे सद्गुण अने सद्गुणनां कार्यो सिवाय बीजी बधी वस्तुओमां तेओना पृथक् पृथक् भागो उपर ज तुं तारुं ध्यान आपवानुं याद राखजे, अने एप्रमाणे तेओना विभाग करवाथी तुं तेमनी तुच्छ किमत गणवाउपर आवीशः अने तारा आखा जीवनने पण आ आ नियम लागु पाडजे.

३. जो कोइ पण क्षणे तेने शरीरमांथी विखूटा पडवुं पडे, तो पण जे तैयार होय, अने विलय पामी जवाने अथवा तो विशीर्ण थइ जवाने अथवा तो हयातिमां चालु रहेवाने पण तैयार होय एवो आत्मा ते केवो; पण ते एम होवुं जोइये के आ तैयारी मनुष्यना पोताना विचारमांथी आवे, पण ख्रिस्तीओनां[३] संबंधमां होय छे तेम ते तैयारी केवळ हठात्कारमांथी आववी जोइये नहि, पण करुणरस नाट्यनो देखाव कर्याविना ते तैयारी विचारपूर्वक तथा भव्यतासहित अने बीजाने बोध आपे तेवी रीत्ये आववी जोइये.

४. में सर्वना सामान्य हितने माटे कांइ कर्युं छे? ठीक, जो

---

३. एन्टोनिनस्नुं जीवनचरित्र जुओ. जेमां ते बादशाह ख्रिस्तीओविषे बोले छे तेवुं वाक्य एकलुं आ ज छे. एपिक्टेटस् (४. ७, ६) तेमने गेलीलेई एवुं नाम आपे छे.

कर्युं होय, तो मने मारुं इनाम मळी गयुं छे. हमेश आ तारा मनमां हाजर रहेवुं जोइये, अने [आवुं शुभ करतां] तुं कदी अटक मा.

५. तारी कळा शी छे? सारा थवानी छे. अने आ (कळा) सामान्य सिद्धान्तोविना शी रीत्ये सिद्ध थाय छे?—ते (सिद्धान्तो-मांना) केटलाक विश्वनी प्रकृतिविषे, अने बीजा मनुष्यना पोताना बंधारणविषे होय छे.

६. मनुष्योउपर जे बाबत गुजरे छे ते अने एप्रमाणे जे बाबतो बने ते कुदरतने अनुसार छे, अने जो तमे रंगभूमिउपर दर्शावायलाथी खुशी थाव छो तो जे मोटी (दुनियानी) रंगभूमि उपर बने छे तेथी तमारे क्षुब्ध थवुं नहि एवुं तेमने याद देवरावावानां साधनतरीके करुणरस नाटको पहेलां रंगभूमिउपर आणवामां आव्यां हतां. केम के तमे जुओ छो के आ बाबतो आप्रमाणे बनवी ज जोइये, अने जेओ "हे सिथिरोन्* !" एम बराडी[४] उठे छे तेओ पण ते सहन करे छे. अने, खरेखर, केटलीक बाबतो नाट्यलेखकोए सारी रीत्ये कहेली छे, ते प्रकारनी आ नीचेनी (ऊक्ति) खास करीने छे.

दोहरो.

मुने अने मुज बाळने, कदी उवेखे देव;
तो कंइ कारण तेतणुं, हशे खरुं ततखेव.[५] १

अने वळी— सोरठो.

जे कंइ बने बनाव, तेप्रति चडभडवुं नहि;
(घरथी करी दृढाव, भावि भलुं गणी सांखवुं.) १

अने— चोपाइ (अर्धी)

---

४. सोफोक्लीस्, इडिपस् रेकस्.

५. जुओ ७. ४१, ३८, ४०.

* ग्रीसमां सुंदर पर्वतोनी एक ए नामनी हार छे.

घउंना फळद्रुप अंकुरपेर, जीवन लणवुं (लीलाल्हेर) ! अने एवी ज जातनी बीजी बाबतो.

ते करुणरस नाट्यनी पछी पुराणुं हास्यरसमय नाट्य दाखल करवामां आव्युं हतुं, तेने एक इन्साफदारजेवुं वाणीनुं स्वातंत्र्य हतुं, अने तेना भाषणनी सादाइने लीधे ज ते मनुष्योने उद्धतताथी सावध रहेवानुं याद देवरावबामां उपयोगी हतुं; अने आ ज कामने माटे डायोजिनीस् पण आ हास्यरसमय नाट्यनी कृतिओमांथी उतारा करतो हतो.

पण ते पछी जे मध्यकाळनुं हास्यरस नाट्य आव्युं, ते केवुं हतुं, तेनुं अवलोकन कर, अने वळी, जे धीमे धीमे एक नकली कळाना रूपमां डूबी गयुं ते नवुं हास्यरस नाट्य शा उद्देशथी दाखल करवामां आव्युं हतुं, तेनुं अवलोकन कर. आ लेखकोए पण केटलीक सारी बाबतो कहेली छे ए दरेक मनुष्य जाणे छे. पण आवी कवितानी अने नाट्यशास्त्रनी आखी योजना कया अंतिम लक्ष्यप्रत्ये जुवे छे !

७. ते केवुं खुल्लुं देखाय छे के जीवननी जे दशामां हाल तुं आवी पडेलो छे तेना जेवी जीवननी बीजी कोइ दशा तत्त्वान्वेषणने माटे सुयोग्य नथी.

८. जे डाळी पोतानी नजीकनी डाळीथी जुदी कापी कढायली होय छे ते अवश्ये करीने आखा झाडथी पण जुदी कढायली होय छे. ते ज प्रमाणे एक माणस पण ज्यारे ते बीजा माणसथी जुदो पडेलो होय छे त्यारे ते आखा सांसारिक जनमंडळथी जुदो ज पडेलो होय छे. हवे डाळीना संबंधमां (तो एवुं छे के) बीजुं कोइ तेने जुदी कापी काढे छे, पण माणस तो ज्यारे ते पोताना पाडोशीने धिक्कारे छे अने तेनी तरफ पुंठ फेरवीने चाल्यो जाय छे त्यारे तेना पोताना ज कृत्यथी ते पाडोशीथी पोताने जुदो पाडे

छे, अने ते जाणतो नथी के तेणे पोताने आखा सांसारिक मंडलथी ते ज काळे कापीने जुदो कर्यो छे. तो पण जेणे जनसमाज बनाव्यो ते देवेन्द्रपासेथी बेशक आ हक मळेलो छे—के जे आपणी पासे छे तेना उपर फरीथी उगवानुं अने जे आखो (व्यूह) बनाववामां सहायभूत थाय छे एवा भागरूप बनवानुं आपणी सत्तामां छे. तो पण आवा प्रकारनी जुदाइ, जो ते वारंवार थाय तो, जे कोइ पोताने छुटुं पाडे छे तेने माटे एकतामां अणावुं अने तेनी पूर्वनी स्थितिमां पुनः स्थापित थवुं ते कठिन बनावे छे. आखरे ते डाळी, के जे पहेलेथी ते झाडनी साथे उगी अने जेणे तेनी साथे एकजीवन धारण करवानुं चालु राख्युं, ते एक वार कापी कढाया पछी जेनी कलम जोडवामां आवे छे, तेना जेवी नथी, केम के आ तो—ज्यारे माळीओ कहे छे के ते बाकीना झाडनी साथे वधे छे पण तेनुं मन तो तेनी साथे एक नथी, त्यारे तेओनो जे कहेवानो आशय होय छे तेना जेवुं कांइक छे.

९. तुं खरी बुद्धिप्रमाणे चाल्यो जतो होय त्यारे जेम, तारा रस्तामां आडे आववानो प्रयत्न करनाराओ तने तारा योग्य कार्यमांथी विमुख करवाने समर्थ थशे नहि, तेम तेओप्रत्येनी तारी शुभेच्छावाळी लागणीओमांथी पण तेओ तने हांकी काढे एम बनवा देइश नहि, पण बंने बाबतोमां तुं एक सरखो पोते सावध रहेजे, फक्त दृढ विचार अने वर्त्तननी बाबतमां ज नहि, पण जेओ तने प्रतिबंध करवाने अथवा बीजी रीत्ये हेरान करवाने प्रयत्न करे तेओनी प्रत्ये मृदु भावनी बाबतमां पण (प्रमाद करीश नहि). केमके तेओप्रत्ये चीडावुं तेम ज भयने लीधे तारा कर्त्तव्यना मार्गेथी चळवुं अने पाछा हठवुं ए पण निर्बलता ज छे; केम के जे माणस भयने लीधे पोतानुं स्थान छोडे छे, अने कुदरतथी जे सगो अने मित्र छे एवा माणसथी जे विखूटो थाय छे ते माणस—ए बंने एक सरखी रीत्ये पोतानुं स्थान छोडी भागी जनार माणसो छे.

१०. कोइ पण एवी कुदरत नथी के जे कोइ कळाकरतां उतरती होय, केम के कळाओ ते वस्तुओनी कुदरतुनुं अनुकरण करे छे. पण आ जो आम छे, तो जे कुदरत सघळी कुदरतो करतां संपूर्ण अने सर्वग्राही छे, ते कुदरत कळानी कुशळताथी ओछी होइ शके नहि. हवे सघळा हुनरो चढियाती वस्तुओने माटे उतरती वस्तुओने बनावे छे; तेटलामाटे विश्वनी प्रकृति (कुदरत) पण तेम ज करे छे. अने, खरेखर, तेमां ज न्यायनुं मूळ रह्युं छे, अने बीजा सघळा सद्गुणो न्यायमां पोतानो पायो धरावे छे. केम के, जो आपणे मध्यम प्रकारनी (चढती ए नहि अने उतरती ए नहि एवी) वस्तुओमाटे दरकार करीशुं, के कां तो सहेलाइथी ठगायला अने काळजीविनाना अने अस्थिर बनीशुं तो न्याय पाळी शकाशे नहि. (५. १६. ३०; ७. ५५)

११. जे वस्तुओनी पाछळ जवाथी अने जे वस्तुओने टाळो देवाथी तने क्षोभ थाय छे, ते वस्तुओ जो तारीपासे नथी आवती, तो पण एक रीत्ये तुं तेओनी पासे जाय छे. त्यारे तेओविषेना तारा अभिप्रायने तुं शान्त रहेवा दे अने तेओ शान्त रहे छे, अने तुं तेओनी पाछळ जतो के तेओने टाळो देतो देखाइश नहि.

१२. ज्यारे आत्मा कोइ पण वस्तुप्रति लंबायलो नथी होतो, के अंदर संकोचायलो नथी होतो, तेम ज विखेरायलो नथी होतो तेम ज नीचे डूबी जतो नथी होतो, पण जेथी ते सत्यने, सर्व वस्तुओना सत्यने तथा जे सत्य तेनामां पोतामां छे ते सत्यने जुवे छे, ते प्रकाशथी ते प्रदीप्त होय छे त्यारे आत्मानो मंडलाकार तेनी आकृति निभावी राखे छे. (८. ४१. ४५, १२. ३.)

१३. एम धारो के कोइ माणस मने धिक्कारशे ज. तेउपर तेने पोताने ज ध्यान आपवा द्यो. हुं तो आना उपर ज लक्ष आपीश के जे धिक्कारने पात्र होय एवुं काइ करतो के कहेतो हुं

देखाउं नहि. कोइ माणस मने धिक्कारशे ? तेविषे तेने ध्यान आपवा द्यो. पण हुं दरेक माणसप्रति नरम अने शुभेच्छावाळो थइश, अने ठपकाभरेली रीत्ये नहि, तेम ज मारी सहनशीलतानो देखाडो करतो होउं तेम पण नहि, पण खरेखर जो तेणे केवळ मानी ज लीधुं नहि होय तो पेला महान् फोकिअननी पेठे उमदा रीत्ये अने प्रामाणिक रीत्ये तेने पण तेनी भूल बताववाने हुं तैयार थइश. केम के अंदरना भागो आवा होवा जोइये, अने माणस कोइ पण वस्तुथी असंतुष्ट तेम ज फरियाद करतो देवोनी नजरे न पडवो जोइये. केम के, जो तुं हाल तारी पोतानी प्रकृतिने जे अनुकूळ होय ते करतो होय, अने विश्वनी प्रकृतिने जे आ क्षणे योग्य छे तेथी तुं संतुष्ट छे, तो ते तने शुं अशुभ छे ? केम के जे सर्वना सामान्य लाभने माटे छे ते कोइ रीत्ये कराय तेटलामाटे तारे स्थाने मूकायलुं तुं एक मनुष्यप्राणि छे.

१४. मनुष्यो एकबीजाने धिक्कारे छे अने एकबीजानी खुशामत करे छे; माणसो एकबीजाउपर चढियातां थवाने इच्छे छे अने एकबीजाना पगमां भराइ बेसे छे.

१५. जे कोइ एम कहे छे के—में तारी साथे व्याजबी रीत्ये वर्त्तवानो निश्चय कर्यो छे, ते माणस केवो तकलादी अने खोटा दिलनो छे ? आवी जाहेरखबर आपवानो कांइ प्रसंग ज नथी. कृत्योथी ज ते तेनी मेळे तरत ज जणाइ आवशे. अंतरनो अवाज खुल्लेखुल्लो कपाळउपर ज लखेलो होवो जोइये. जेम प्रेमपात्र मनुष्य प्रेमीनां नेत्रमां ज सघळुं वांची ले छे तेम ज माणसनुं जेवुं चारित्र्य होय छे तेवुं ते तरत ज तेनी आंख्योमां दर्शावी आपे छे. जे माणस प्रामाणिक अने भलो होय छे ते बरोबर उग्र गंधवाळा माणसना जेवो ज होवो जोइये, एटले के पासे उभेलो माणस तेनी पासे आवे के तरत ज तेनी इच्छा होय के न होय तो पण तेने गंध आववो ज जोइये. पण सादाइनो डोळ करवो ए एक

वांकी लाकडी जेवो छे.[६] वरूना जेवी मित्रता [खोटी मित्रता] करतां अधिक बदनामीभरेलुं बीजुं कांइ नथी. एथी सउकरतां वेगळा रहो. भला अने सादा अने शुभेच्छावाळा ए बधी बाबतो नेत्रोमांथी ज जणाइ आवे छे, अने तेमां कांइ भुलावो नथी.

१६. जो उत्तम रीत्ये जीवन गाळवुं ते उपेक्षापात्र वस्तुओ प्रत्ये उपेक्षावाळा थवुं ए होय तो, आ शक्ति तो आत्मामां छे. अने जो आ वस्तुओमांनी दरेकउपर जुदी जुदी अने एक साथे दृष्टि करे, अने जो ते याद करे के–तेमांनी एके तेनी मेळे तेना-विषे आपणा (मन)मां अभिप्राय उत्पन्न करती नथी, तेम ज आपणी पासे आवती नथी, तो जीवन उपेक्षावाळुं थशे; पण आ वस्तुओ तो जड रहे छे अने तेओना विषे अभिप्रायो उपजाविये छिये ते तो आपणे छिये, अने आपणे कहिये छिये तेम, आपणा अंतरमां आपणे ते अभिप्रायो लखिये छिये, अने जो कदाच आ अभिप्रायो आपणने खबर न पडे तेम आपणां अंतःकरणमां प्रवेश करवा पाम्या होय छे, तो ते अभिप्रायोने भूशी नाखवानुं आपणी सत्तामां छे; अने जो वळी आपणे याद राखिये के आपणुं आवुं ध्यान ते पण फक्त थोडा वखतने माटे रहेशे, अने पछी जीवननो अंत आवशे (तो पछी कहेवुं शुं?) वळी आ करवामां कांइ पण शी हरकत छे? केम के जो आ बाबतो कुदरतने अनुसार छे, तो तुं तेमां आनंद पाम, अने ते तने सहेली थइ पडशे: पण जो ते कुदरतथी विरुद्ध होय तो जे तारी प्रकृतिने अनुरूप होय ते करवानो यत्न कर, तेथी तने कांइ प्रतिष्ठा न मळे तेम होय तो

---

६. सोमेइस Skalme ने बदले Skambe वांचे छे. एक ग्रीक कहेवत छे के–Skambon xulon oudepot orthon: तमे वांकी लाकडीने सीधी करी शकशो नहि.

'वरुना जेवी मित्रता' ए 'घेटां अने वरुनी कहाणी'ने उद्देशीने छे.

पण (तेवो यत्न कर); केम के दरेक माणसने पोतानुं शुभ शोधी लेवानी रजा छे.

१७. विचार के दरेक वस्तु क्यांथी आवी छे, अने ते शानी बनेली छे, अने तेनुं शामां रूपान्तर थाय छे, अने रूपान्तर थये ते केवा प्रकारनी वस्तु बनशे, अने तेने कांइ पण इजा थशे नहि.

१८. [जो कोइए तारा विरुद्ध कांइ अपराध कर्यो होय, तो पहेलुं ए विचार] के—माणसोनी साथे मारो शो संबंध छे, अने आपणे एकबीजाने अर्थे बनावायला छिये; अने बीजी बाबतमां, घेटाना टोळाउपर मोटा घेटानी पेठे, अने ढोरना टोळाउपर एक सांढनी पेठे स्थपावाने हुं बनावायो हतो. पण आ बाबतने प्रथम तत्त्वोथी,—आथी—तपासः जो सघळी वस्तुओ फक्त अणुरूप ज न होय, तो सघळी वस्तुओने जे नियत करे छे ते कुदरत छेः जो आम छे तो उतरती वस्तुओ चढियाती वस्तुओने अर्थे हयाती धरावे छे, अने आ (चढियाती वस्तुओ) एक बीजाने अर्थे हयाती धरावे छे. (२. १; ९. ३९; ५. १६; ३. ४.)

बीजुं, ए विचार के मनुष्यो खाती वखते, पथारीमां, अने एवा बीजा प्रसंगोमां केवा प्रकारनां होय छेः अने विशेषे करीने, अभिप्रायोनी बाबतमां तेओ केवा प्रकारना दबाणनीचे होय छे; अने तेओनां कृत्यनी बाबतमां विचार के तेओ जे करे छे ते केवा गर्वथी करे छे. (८. १४; ९. ३४)

त्रीजुं, ए विचार के माणसो जे करे छे ते तेओ खरी रीत्ये करे तो आपणे तेथी नाखुश थवुं जोइये नहि; पण जो तेओ खरुं न करे, तो ए खुल्लुं छे के ते तेओ पोतानी इच्छाविना अने अज्ञानमां करे छे. केम के जेम दरेक माणस पोतानी इच्छाविना ज सत्यथी रहित थाय छे, तेम वळी ते दरेक मनुष्यप्रत्ये ते मनुष्यनी योग्यताप्रमाणे वर्त्तवानी शक्तिथी रहित पण तेनी पोतानी इच्छा

विना ज थाय छे. तेथी ज ज्यारे तेओने अन्यायी, कृतघ्न, अने लोभी, अने एक शब्दमां तेओना पाडोशीप्रत्ये अपकृत्य करनार कहेवामां आवे छे त्यारे माणसोने दुःख लागे छे. (७. ६२, ६३; २. १; ७. २६, ८. २९.)

चोथुं, ए विचार के तुं पण घणी वस्तुओ खोटी करे छे, अने तुं पण बीजाओनी पेठे माणस छे; अने जो के तुं केटलाक दोष करतां अटके तो छे, तो पण ते दोषो करवानुं तने वलण तो होय छे, जो के भीरुताथी, अथवा प्रतिष्ठानी दरकारथी अथवा कोइ एवा तुच्छ आशयथी तुं एवा दोष करतां अटके छे खरो. (१. १७.)

पांचमुं, ए विचार के माणसो खोटुं करे छे के नहि ते पण तुं समजतो नथी, केम के घणी वस्तुओ आगळपाछळना संजोगोने अमुक रीत्ये उद्देशीने करवामां आवेली होय छे. अने टूंकामां, बीजा माणसनां कृत्यविषे खरो अभिप्राय दर्शाववा तेने शक्तिमान करवाने माणसे घणुं शीखवानुं होय छे. (९. ३८; ४. ५१.)

छठ्ठुं, ज्यारे तुं घणो चीडायो अथवा शोकातुर थयो होय, त्यारे ए विचार के मनुष्यनुं जीवन एक क्षणमात्र छे, अने थोडा समयपछी आपणे सउ मरेलां पडीशुं. (७. ५८; ४. ५४)

सातमुं, ए विचार के जे आपणने क्षोभ उपजावे छे ते मनुष्योनां कृत्यो नथी; केम के ते कृत्यो पोतानो पायो मनुष्योना नायक सिद्धान्तोमां धरावे छे, पण जे आपणने क्षोभ करे छे ते तो आपणा पोताना ज अभिप्रायो छे. त्यारे आ अभिप्रायोने लेइ ले, अने कोइ कृत्य जाणे गंभीर होय एवो तेविषेनो अभिप्राय काढी नाखवाने तुं निश्चय कर, एटले क्रोध तो गयेलो ज (समजजे). त्यारे आ अभिप्रायो हुं शी रीत्ये उठावी नाखीश? बीजानुं कोइ पण अपकृत्य तारा पर शरम आणशे नहि एवो विचार करवाथी तुं ते उठावी नाखीशः केम के जे शरमभरेलुं होय छे ते ज फक्त खराब होय छे एम जो न होय, तो तारे पण जरूरने

लीधे घणी वस्तुओ खोटी करवी जोइये, अने लूटारो अथवा बीजा हरकोइ थवुं जोइये. (५. २५; ७. १६.)

आठमुं, ए विचार के जे कृत्योप्रत्ये आपणे गुस्से अने चीडायेला होइये छिये, खुद ते कृत्योकरतां तेवां कृत्योवडे उपजावायला क्रोध अने चीडथी आपणाउपर केटलुं बधुं अधिक दुःख आणवामां आवे छे. (४. ३९. ४९; ७. २४.)

नवमुं, ए विचार के सारो स्वभाव, जो ते खरेखरो सारो होय अने एक कृत्रिम मंद हास्य अने वेषनी भजवणी मात्र न होय तो, कोइथी हरावी शकाय तेवो नथी. केम के जो तुं कोइ अत्यंत तोफानी माणसप्रति पण मायाळु स्वभाववाळो रहे, अने जेम तक आवे तेम तुं तेने नरमाशथी शिखामण आपे अने ज्यारे ते तने इजा करवा यत्न करतो होय त्यारे दरेक वखते— मारा बापु ! एम न करः कुदरतवडे आपणे बीजी कोइ बाबतमाटे बनावाया छियेः नक्की (आथी) मने तो कांइ इजा थशे नहि, पण मारा बापु ! तुं तने पोताने हानि करे छे—एम कहीने तुं जो शान्त रीत्ये तेनी भूलो सुधारे तो ते तने शुं करशे ?—अने नरमाशभरेली युक्तिथी सामान्य सिद्धान्तोथी तुं तेने बताव के आ आप्रमाणे छे, अने मधमाखीओ पण ते करे छे तेम करती नथी, अने जेओ कुदरतवडे यूथचारी थवाने बनावायलां छे ते पशुओ पण तेम करतां नथी. अने तारे आ कोइ द्विअर्थी रीत्ये तेम ज टपकानी रीत्ये कहेवुं जोइये नहि पण प्रेमपूर्वक अने तारा आत्मामां कांइ राख्याविना कहेवुं जोइये; अने तुं जाणे तेने उपदेश करतो होय तेम नहि कहेवुं जोइये, तेम ज वळी कोइ पासे उभेलो माणस तने वखाणे तेटलामाटे पण नहि कहेवुं जोइये, पण कां तो ज्यारे ते एकलो होय त्यारे कहेवुं जोइये, अने जो बीजाओ हाजर होय तो * *[७]

७. एम जणाय छे के आ मूळपाठमां कांइक खामी छे.

जाणे तने बुद्धिनी अधिदेवीओपासेथी ए बक्षीस मळी होय तेम आ नव नियमोने तुं याद राख, अने तारी हयातीमां ज आखरे एक माणस थवानुं शरु कर. पण तारे माणसोनी खुशामत करवाथी दूर रहेवुं जोइये तेटले ज अंशे तेओप्रति चीडावाथी पण दूर रहेवुं जोइये, केम के खुशामत करवी अने चीडावुं ए बंने असामाजिक छे अने तेथी हानि थाय छे. क्रोधावेशना समयमां आ सत्य तारा आगळ हाजर रहेवा दे के आवेशमां खेंचाइ जवुं ते मर्दने छाजे तेवुं नथी, पण नरमाश अने सौजन्य मनुष्यप्रकृतिने वधारे अनुकूळ छे, तेम ते वधारे मर्दामीभरेलां पण छे; अने जे माणस आ गुणो धरावे छे ते बळने, दृढताने अने हिमतने धरावे छे, अने जे माणस आवेश अने असंतोषना वेगने ताबे होय छे ते ते धरावतो नथी. केम के जेप्रमाणमां मनुष्यनुं मन सर्व मनोविकारथी मुक्ततानी अधिक निकट होय छे, ते ज प्रमाणमां ते बळनी नजदीक होय छेः अने दुःखनुं भान जेम निर्बळतानुं लक्षण छे, तेम क्रोध पण निर्बळतानुं लक्षण छे. केम के जे व्यथाने शरण थाय छे, अने जे क्रोधने ताबे थाय छे ते बंने घवायला छे अने ए बंने सर थाय छे.

पण जो तारी इच्छा होय तो [बुद्धिनी अधिदेवीओना] नायक [सूर्यदेव]नी पासेथी वळी एक दशमी बक्षीस प्राप्त कर अने ते आ छे—के खोटो माणस खोटुं न करे एवी आशा राखवी ते गांडपण छे, केम के जे आवी आशा राखे छे ते एक अशक्य वस्तुनी इच्छा करे छे. पण माणसोने बीजाओप्रत्ये एवी रीत्ये वर्त्तवा देवां, अने तेओ तने कांइ खोटुं करे नहि एवी आशा राखवी ते बुद्धिथी विरुद्ध अने जुलमभरेलुं छे.

१९. सर्वोपरि बुद्धिशक्तिना चार मुख्य भ्रंश छे, के जेमनी सामे तारे पोते निरंतर सावध रहेवुं जोइये, ज्यारे तें तेओने पकडी पाड्या होय, त्यारे तारे तेमने काढी नाखवा जोइये अने दरेक

प्रसंगे आप्रमाणे कहेवुं जोइये: आ विचार जरूरनो नथी: आ सामाजिक ऐक्यनो नाश करे एवो छे: तुं जे आ कहेवा जाय छे ते खरा विचारोमांथी आवतुं नथी; केम के पोताना खरा विचारो-मांथी न बोलवुं ए माणसने माटे तारे सर्वेथी अशक्य वस्तुओमांनुं एक धारवुं जोइये. पण ज्यारे तुं तने पोताने कोइ बाबतने माटे ठपको दे त्यारे चोथो भ्रंश छे, केम के तारी अंदरनो वधारे दिव्य भाग पराभव पामतो अने तारा ओछा मानपात्र अने नश्वर भागने (अ-र्थात्) शरीरने अने तेनी स्थूळ मोजमजाओने तावे थतो होय छे तेनो आ पुरावो छे. (४. २४; २. १६).

२०. तारा वायुमय भाग अने अग्निमय भागो जे तारामां मिश्रित थया छे, तेओ जो के क़ुदरतथी ऊर्ध्वगामी वेग धरावे छे, तो पण विश्वना स्वभावनी आज्ञा मानीने आ मिश्र राशि[शरीर]मां पराभव पामेला छे. अने वळी तारामांनो सघळो पार्थिव भाग अने जळमय भाग, जो के तेओनो वेग अधोगामी छे, तो पण तेओ उचकी लेवायला छे अने तेओनेमाटे जे कुदरती नथी एवी स्थितिमां तेओ रहे छे. त्यारे आ रीत्ये भौतिक भागो विश्वनी प्रकृतिनी आज्ञा माने छे, केम के ज्यारे तेओने पराणे कोइ जगोए स्थापवामां आव्या छे त्यारे विश्वनी प्रकृति फरीने तेओना पृथक्करणनी निशानी बजावे त्यांलगी तेओ त्यां रहे छे. त्यारे तारो फक्त बुद्धियुक्त भाग ज तेने पोताने स्थळे अनाज्ञांकित अने असंतुष्ट होय ए शुं विचित्र नथी? अने तेमां-ए वळी जे तेनी प्रकृतिने अनुरूप छे फक्त तेवी ज वस्तुओसिवाय बीजुं कोइ पण जोर तेनाउपर दाखववामां आव्युं नथी: तो पण ते तावे थतो नथी, पण उलटी दिशामां खेंचाइ जाय छे. केम के अन्याय अने अमिताहार प्रत्ये तथा क्रोध अने शोक अने भय प्रति गति ते कुदरतथी उन्मार्गे जनारना कृत्यसिवाय बीजुं काइ नथी. वळी नियामक शक्ति ज्यारे जे बने छे तेवी कोइ पण बाबतथी असंतुष्ट होय छे, त्यारे ते पण पोतानुं स्थान छोडी दे छे: केम के

पवित्रतामाटे अने देवो प्रत्ये भक्तिमाटे ते बनावायली छे, तेना करतां न्यायमाटे ते कांइ ओछी बनावायली नथी. केम के 'वस्तुओना बंधारणथी संतोष' एवा जातिवाचक शब्दनीचे आ सद्गुणोनो समावेश थाय छे, अने खरेखर आ सद्गुणो ते न्यायनां कृत्योनी पूर्वनां छे.

२१. जे माणसने एक ज अने हमेश ए ज लक्ष्य जीवनमां होतो नथी, ते माणस तेना आखा जीवनमां एक ज अने ए ज रही शके नहि. पण आ पण—अर्थात् आ लक्ष्य शो होवो जोइये ते—उमेरवामां आवे तेसिवाय, में जे कह्युं छे ते पूरतुं नथी. केम के बहुमते एक अथवा बीजी रीत्ये जे वस्तुओ सारी गणवामां आवे छे ते सघळी वस्तुओ विषे एक ज मत नथी, पण फक्त केटलीक

---

८. Pret Butera, शब्द के जेनुं अहीं "prior"="पूर्वनां"—एवुं भाषांतर करवामां आव्युं छे, तेनो वळी 'चढियातां' एवो अर्थ पण थायः पण एन्टोनिनस् एम कहेता जणाय छे के—पवित्रता अने देवो प्रत्ये पूज्यभाव ए सर्व सद्गुणोनी पहेलां आवे छे, अने बीजा सद्गुणो—न्याय पण—तेमांथी उत्पन्न थाय छे, के जे न्यायने ते बीजा वाक्य (११. १०)मां सघळा सद्गुणोनो पायो बनावे छे. न्यायनो प्राचीन विचार ए छे के दरेक माणसने योग्य होय ते तेने आपवुं. वळी कायदाने तेना पोताना नियमो होय छे, के जे कोइ वार नीतिवाळा अने कोइ वार अनीतिवाळा होय छे; पण ते सामान्य नियमो छे तेटला ज माटे फक्त ते सघळाने अमलमां मूके छे, अने जो कायदो ते नियमोने अमलमां न मूकतो होय अथवा अमलमां न मूकी शकतो होय, तो तेटला पूरतो कायदो कायदो ज होशे नहि. न्याय, अथवा जे न्याय्य होय ते करवुं, तेमां एक सार्वत्रिक नियमनो अने ते नियमप्रति अज्ञांकितपणानो भाव रहेलो छे; अने आपणे बधा एक सार्वत्रिक कायदानीचे रहिये छिये, के जे कायदो आपणा शरीर अने आपणी बुद्धि ए बंनेउपर हुकम चलावे छे, अने जे आपणी प्रकृतिनो अर्थात् मनुष्यना समग्र बंधारणनो कायदो छे, तेथी आपणे आ सर्वोपरि कायदो शो छे ते शोधी काढवाने प्रयत्न करवो जोइये. ए कायदो ते जे सर्वउपर अमल करे छे ते शक्तिनी इच्छा छे. आ इच्छानी आज्ञामां वर्त्तवाथी, आपणे न्याय करिये छिये, अने तेने परिणामे आपणे जे बीजी करवी जोइये ते दरेक बाबत करिये छिये.

अमूक वस्तुओ, एटले जे सर्वना सामान्य हितने लगती होय छे एवी वस्तुओ विषे ज एकमत होय छे; तेम आपणे पण आपणी आगळ एक एवो लक्ष्य विषय मूकवो जोइये के जे सर्वसामान्य प्रकारनो [सामाजिक] अने राजकीय होय. केम के जे पोताना सघळा प्रयत्नोने आ लक्ष्यप्रति उद्देशे छे, ते माणस पोतानां सघळां कृत्योने एक सरखां बनावशे, अने (ते पोते पण) हमेश एक सरखो रहेशे.

२२. गामडीआ उंदर अने शहेरी उंदर विषे तथा शहेरी उंदरने लागती धास्ती अने भय विषे विचार कर.[९]

२३. बहु माणसोना मतने सोक्रेटीस् लामी (एटले) छोकरांने ब्हीवराववानां "हाउ"—एवुं नाम आपतो.

२४. लेसिडिमोनियन्* लोको तेओना जाहेर तमाशाओमां अजाण्या माणसोने माटे छायामां बेठको गोठवता, पण तेओ पोते तो गमे त्यां बेसी जता.

२५. सोक्रेटीसे पर्डिकासनी पासे नहि जवाविषे तेनी माफी मागी हती, अने एम कह्युं हतुं के—हुं सर्वेथी अधममां अधम अवसानथी मरवानुं इच्छतो नथी, एटले के कोइ मारा उपर महेरबानी करे अने पछी एनो बदलो वाळवाने हुं असमर्थ थाउं एवी रीत्ये मरवा इच्छतो नथी, तेथी (हुं माफ मागुं छुं.)

२६. [एफीसिअनोना][११] लेखोमां आ उपदेश हतो,—जेमणे

---

९. ए वार्ता होरेसे तेना चाबखाओ (२. ६)मां कहेली छे, अने त्यार पछी घणाए कही छे, पण वधारे सारी रीत्ये कही नथी.

* स्पार्टन् लोको.

१०. कदाच बादशाहे अहीं भूल करी छे, केम के बीजा लेखको कहे छे के—जेणे सॉक्रेटीसने मेसिडोनिया (आववा) नोतर्यो हतो ते आर्चेलस्, पर्डिकासनो पुत्र, हतो.

११. गेटेकरे Ephesian (एफिसिअन्)ने बदले Epikoureian (एपिकोरिअन्) सूचव्युं छे.

सद्गुणनुं आचरण कर्युं होय एवा प्राचीन समयना मनुष्योमांना कोइ एकविषे निरंतर विचार करवो.

२७. पिथागोरासना अनुयायीओ सवारमां आपणने आकाश तरफ जोवानी आज्ञा करे छे, के जे ज्योतिर्मय गोलको निरंतर ते ज वस्तुओ कर्या करे छे अने ते ज रीत्ये तेओनुं काम कर्या करे छे ते विषे आपणने स्मरण करावबामां आवे, अने वळी आपणने ते गोल-कोनी निर्मलता अने प्रकाश विषे पण स्मरण करावबामां आवे. केम के कोइ पण तारा उपर कांइ पण आवरण नथी.

२८. सोक्रेटीसनो झभ्भो लेइने झेन्थिप्पे बहार गया पछी ज्यारे सोक्रेटीसे एक चामडुं पहेर्युं त्यारे सोक्रेटीस् केवो माणस हतो, अने ज्यारे तेने आवा पोशाकमां जोयो त्यारे जेओ शरमाइ गया अने तेनी आगळथी पाछा खशी गया तेओने तेणे शुं कह्युं—ते विचार.

२९. तुं पोते ज तारी मेळे नियमोने पाळवाने प्रथम शीख्यो होइश ते पहेलां तुं लखवामां के वांचवामां बीजाओने माटे नियमो बांधवाने समर्थ थइश नहि· जीवनमां (पण) प्रायशः आ एम ज छे.

३०. तुं एक गुलाम छेः स्वतंत्र वाणी तारे माटे नथी.

३१.—अने मारुं अंतःकरण अंदरथी हसतुं हतुं. (ओडे० ९. ४१३.)

३२. अने कठोर शब्दो बोलतां तेओ सद्गुणने शाप देशे. (हेसिओड्, कार्यो अने दिनो, १८४.)

३३. शियाळामां अंजिरमाटे शोधवुं ए गांडा माणसनुं काम छेः ज्यारे तेम थवा देवामां आवे तेम ज नथी त्यारे जे पोताना बालकमाटे जुवे छे ते पण एवो ज छे· (एपिक्टेटस्, ३. २४, ८७.)

३४. एपिक्टेटसे कह्युं छे—के ज्यारे कोइ माणस पोताना बाळ-कने चुंबन करे, त्यारे तेणे पोताना मनमां कहेवुं जोइये के, "कदाच काले तुं मरी जइश."—पण आ शब्दो अपशकुनना छे.—एपिक्टे-

टसे कह्युं छे—के—" जे कुदरतनुं कोइ कृत्य दर्शावे छे एवो कोइ शब्द अपशकुननो नथी; अथवा तो जो एम होय तो अनाजना अंकुरो लणाता होवासंबंधी बोलवुं ते पण अपशकुननो शब्द छे." (एपिक्टेटस् , ३. २४, ८८.)

३५. काची द्राख, पाकुं झुमखुं, सूकी द्राख, ए बधा—शून्यमां नहि, पण जे हजु अस्तित्वमां आव्युं नथी तेमां—(थवाना) विकारो छे. (एपिक्टेटस्, ३. २४.)

३६. आपणी स्वतंत्र इच्छाने लूटीने कोइ पण माणस लेइ शके तेम नथी. (एपिक्टेटस्, ३. २२, १०५.)

३७. एपिक्टेटसे वळी कह्युं छे के—पोतानी अनुमति आपवा संबंधे माणसे एक कळा [अथवा नियमो] शोधी काढवा जोइये; अने पोताना हलनचलनना संबंधे तेणे सावध रहेवुं जोइये के ते हलनचलन परिस्थितिने उद्देशीने थवां जोइये, ते सामाजिक हितनी साथे बंध बेसतां होवां जोइये, लक्ष्यनी किमत ध्यानमां राखीने होवां जोइये; अने विषयेच्छा संबंधे तो, तेणे तेथी केवळ दूर ज रहेवुं जोइये; अने अभाव[अणगमा]विषे तो, जे वस्तुओ आपणी सत्तामां न होय तेवी वस्तुओमांनी कोइविषे तेणे ते दर्शाववो जोइये नहि.

३८. तेणे कह्युं छे के—कोइ सामान्य बाबतसंबंधी तकरार नथी, पण गांडा बनवुं के नहि ते विषे ज तकरार छे.

३९. सोक्रेटीस् कहेतो के—तमारे शुं जोइये छिये? तमारे बुद्धि-युक्त माणसना आत्मा जोइये छिये के बुद्धिरहित मनुष्यना जोइये छिये?—बुद्धियुक्त मनुष्यना आत्मा—केवा बुद्धियुक्त मनुष्यना?—संगीन के तकलेदी?—संगीन—त्यारे तमे तेमने माटे केम शोधता नथी?—केम के तेवा आत्मा आपणे छे—त्यारे तमे शा माटे लडो छो अने कजियो करो छो?

१२.

तुं चक्करवाळे रस्ते थइने जे वस्तुओ आगळ आवी पहोचवाने इच्छे छे ते सघळी वस्तुओ तुं तने पोताने आपवाने मना करीश नहि, तो ते वस्तुओ तने हाल मळी शकशे नहि. अने आनो अर्थ ए छे के–जो तुं सघळा भूतकाळउपर कांइ ध्यान नहि आपे, अने भविष्यनो भरोसो विश्वंभरसत्ताउपर नहि राखे, अने वर्तमानने पवित्रता अने न्यायने अनुरूप रीत्ये ज तुं नहि वर्त्तावे तो (ते वस्तुओ तने हाल मळी शकशे नहि.) पवित्रताने अनुरूप ते एवी रीत्ये के–जे तारे माटे अंकित थयेलुं छे ते भाग्यथी तुं संतुष्ट थाय, केम के कुदरते ते तारे माटे अने तने तेमाटे निर्माण कर्यो. न्यायने अनुरूप ते एवी रीत्ये के–तुं हमेश स्वतंत्र रीत्ये अने रूप बदल्याविना सत्य बोले, अने जे कायदाने अनुकूळ होय तथा जे दरेकनी योग्यताप्रमाणे होय तेवी वस्तुओ तुं करे. अने कोइ पण माणसनी दुष्टता तने (तेम करतां) खाळे नहि, तेम ज (कोइ माणसनो) अभिप्राय अने मत पण (तने तेम करतां खाळे नहि), अने जे तारी आशपाश उगेलुं छे ते बिचारा मांसनी लागणीओ पण तने तेम करतां खाळे नहि,–तेम थवा दे; केम के जे सहन करनारो अंश छे, ते आप्रत्ये ध्यान आपशे. त्यारे, ज्यारे तुं तारा प्रयाणनी नजदीक होइश एवो समय गमे ते हशे, तो पण जो तुं बीजुं बधुं भूली जइने एकली तारी नियामक शक्तिने अने तारी अंदरना देवत्वने मान आपीश, अने कोइ समये तुं जीवतां बंध थइश ज तेथी जो तुं भयभीत थइश नहि, पण तुं कदी ए कुदरतप्रमाणे जीवन गाळवाने शरू नहि करे ते (बाबत) थी तुं जो डरीश, तो जे विश्वे तने पेदा कर्यो छे तेने योग्य तुं थइश, अने तारी पोतानी जन्मभूमिमां एक अजाण्यो माणस बनतो, तथा जे नित्य बने छे ते वस्तुओ जाणे कांइ अणधारी वस्तुओ

होय तेम ते वस्तुओ प्रति आश्चर्य पामतो, तथा आ के ते उपर आधार राखनारो थतो, तुं अटकीश.

२. भौतिक आवरण अने छोल अने मळ उतारी खुल्लां करेलां सघळा माणसोना मनोने (नियामक सिद्धान्तोने) ईश्वर जुवे छे. जे बुद्धि ते परमेश्वरमांथी वही छे अने खुद तेनामांथी आ शरीरोमां उतरी आवी छे ते बुद्धिने ज ते परमेश्वर पोताना केवळ बुद्धिमय अंशथी ज स्पर्श करे छे. अने तुं पण जो आम करवाने तारो पोतानो उपयोग करे तो तुं पण तने पोताने घणी कडाकूटमांथी मुक्त करीश. केम के जे माणस तेनी आशपाश वींटायला तुच्छ मांस(शरीर)नी दरकार करतो नथी, ते माणस नक्की वस्त्र घर अने कीर्ति अने एवी बाह्य वस्तुओ अने देखावनी काळजी राखीने तेने पोताने माथाकुट करावशे नहि.

३. जेनो तुं बनेलो छे एवी त्रण वस्तुओ छे,—एक नानुं शरीर, एक थोडोक श्वास [जीवन], बुद्धि. आमांनी पहेली बे वस्तुओ तो एटले ज अंशे तारी छे के जेटले अंशे तेओनी संभाळ लेवानी तारी फरज छे; पण फक्त त्रीजी वस्तु ज बराबर रीत्ये तारी छे. तेटलामाटे जो तुं तारा पोताथी, एटले, तारी बुद्धिथी, जे कांइ बीजाओ करे अथवा कहे ते, अने तें पोते जे कांइ कर्युं छे अने कह्युं छे ते, अने जे कांइ भविष्यनी वस्तुओ तेओ बने तेथी तने विक्षेप करती होय ते, अने जे कांइ तारी आशपाश वींटायला शरीरमां अथवा श्वास[जीवन]मां, तारी इच्छाविना तने चोंटेलुं छे ते, अने जे कांइ बाह्य परिवाही शिरोबिंदु आगळपाछळ भ्रमाव्या करे छे ते—(सर्वेने) तुं तारा पोताथी जूदुं काढे, के जेथी तारी बुद्धिशक्ति दैवायत्त बाबतोथी मुक्त थइने जे व्याजबी होय ते करती तथा जे बने ते स्वीकारती तथा सत्य कहेती पोतानी मेळे स्वच्छ अने स्वतंत्र रही शके, तोः—हुं कहुं छुं के जो तुं आ नियामक बुद्धिशक्तिमांथी इन्द्रियना संस्कारोए तेने जे वस्तुओ लगाडेली छे तेमने

जूदी काढीश, तथा भविष्यकाळ अने भूतकाळनी वस्तुओने जूदी काढीश, अने एम्पिडोक्लीसना गोळनी माफक तुं तने पोताने

"सकळ मंडळाकार, विशद शान्तिमां व्होडतो;"[1]

बनावे तोः—अने जो तुं जे खरेखर तारी पोतानी ज जिंदगी अर्थात् वर्तमान जिंदगी छे ते ज भोगववाने यत्न करीश तोः—तारा मरणसमयपर्यन्त तारी जिंदगीनो जे भाग तारे माटे रहे छे ते भाग तुं विक्षेपोथी रहित, उमदा रीत्ये, अने तारा पोताना अन्तर्यामी[तारा अंतरमां छे ते ईश्वर]नी आज्ञानुसार गाळवाने माटे समर्थ थइश. (२. १३. १७; ३. ५. ६; ११. १२)

४. मने घणी वार अचंबो लाग्यो छे के—दरेक माणस बाकीना बीजा बधा माणसो करतां पोताना पिंडने वधारे चहाय छे, पण तेम छतां बीजाओना अभिप्राय करतां तेना पोताना विषेना तेना पोताना अभिप्रायनी ओछी किमत आंके छे एम केम? तो पछी जो कोइ देव अथवा कोइ डाह्यो उपदेशक माणसनी पासे आवे अने एने एम फरमावे के—जे तेना मनमां आव्युं के तरत ज जे प्रकट कहेवी इच्छे नहि एवी कोइ पण बाबतविषे तेणे विचार पण न करवो अने तेवी बाबतनी धारणा पण न करवी, तो ते एक दिवस पण ए सहन करी शकशे नहि.[2] आपणा पोताविषे आपणे शुं धारीशुं तेना विषे आपणने जे मान होय छे, तेना करतां आपणा पाडोशीओ आपणा पोताना विषे शुं धारशे तेना विषे आपणने आटलुं बधुं वधारे मान होय छे.

५. एम केम होइ शके के—देवोए सघळी वस्तुओनी मनुष्य जातिने माटे सारी रीत्ये अने शुभेच्छा भरेली रीत्ये व्यवस्था कर्या पछी फक्त आ बाबतउपर ज ध्यान आप्युं नहि के केटलाक

---

१. एम्पिडोक्लीसनी कवितानी पंक्ति एन्टोनिनस्मां अशुद्ध छे. स्युरिननी हस्तलिखित प्रतमांथी पेइरोने तेने आ प्रमाणे शुद्धरूपमां मूकी छे.
Sphairos kuktoteres monie perigethei gaion.

माणसो अने ते घणा सारा माणसो, अने ते पण एवा माणसो के जेमना विषे आपणे एम कहि शकिये के जे माणसोने ईश्वरनी साथे अत्यंत संबंध हतो, अने जेओ पवित्र कृत्यो अने धर्माचरणो द्वारा ईश्वरनी साथे अत्यंत परिचित हता, तेओ पण एक वार मरी गया पछी कदी फरीने हयातीमां आवे ज नहि, अने संपूर्ण रीत्ये नाबुद ज थइ जाय ?

पण जो आम छे, तो तेनी खातरी राख के जो ए करतां बीजुं कोइ रीत्ये थवुं जोइतुं होत, तो देवोए तेम कर्युं ज होत. केम के जो ते व्याजबी होत, तो ते शक्य होत; अने जो ते कुदरतने अनुसार होत तो कुदरत ते सिद्ध पण करत. पण ते एम नथी तेथी,—जो वास्तवे ते एम नथी, तो तुं खातरी राखजे के ते एम थयेलुं होवुं ज जोइये नहिः—केम के तुं पोतानी मळे ज समजे छे के आ अन्वेषणामां तुं देवनी साथे ज तकरार करे छे; अने देवो सर्वोत्कृष्ट अने अत्यंत न्यायी न होय तेसिवाय आपणे आप्रमाणे देवो साथे तकरार करवी जोइये नहि;—पण जो आ एम छे, तो विश्वनी व्यवस्था करवामां तेओए कोइ पण बाबतनी उपेक्षा अन्यायी रीत्ये अथवा तर्कथी उलटी रीत्ये थवा दीधी होत नहि.

६. जे सिद्ध करवामां तुं निराश थतो होय तेवी वस्तुओनो पण तुं तने पोताने अभ्यास पाड. केम के डाबो हाथ के जे अभ्यासने अभावे बीजी बधी वस्तुओ माटे असमर्थ होय छे ते पण जमणा हाथ करतां वधारे जोरथी लुगाम पकडे छे; केम के आमां तेने वधारे अभ्यास पडेलो छे.

७. ज्यारे मृत्यु मनुष्यने पकडी पाडे त्यारे ते शरीर अने आत्मा बंनेमां केवी स्थितिमां होवो जोइये ते विचार; अने जीवननुं टूंकापणुं, भूत अने भविष्यकाळनो हदविनानो खाडो, सघळा पदार्थनी निर्बळता विचार.

२—३. ४.

८. उपरनां आवरणसिवाय वस्तुओनां आकारक तत्त्वो(आकारो)नुं, तथा क्रियाओना हेतुओनुं चिन्तन कर; दुःख शुं छे, खुशी शुं छे, अने मृत्यु, तथा कीर्त्ति शुं छे; (माणसने) पोताने तेनी बेचेनीनुं कारण कोण छे; माणसने बीजा कोइथी प्रतिबंध केवी रीत्ये नथी थतो; अने दरेक वस्तु एक अभिप्रायरूप ज छे—तेनो विचार कर.

९. तारा सिद्धान्तो लागु पाडवामां तारे बाहुमल्ल जेवा थवुं जोइये, शस्त्रमल्लना जेवा थवुं जोइये नहि; केम के जे मल्ल तलवार वापरे छे ते तलवारने पडी जवा दे छे तो मार्यो जाय छे; पण पेला बीजाने तो हमेश तेना हाथ (हाजर) होय छे, अने ते वापरवा सिवाय बीजुं कांइ तेने करवानी जरूर नथी.

१०. वस्तुओना तेमना पदार्थमां, आकारमां अने हेतुमां विभाग पाडीने जो के वस्तुओ तेमना पोतमां केवी छे.

११. ईश्वर जेने अनुमोदन आपे तेवी वस्तुसिवाय बीजुं कांइ पण नहि करवाने अने ईश्वर जे तेने आपे ते सघळुं अंगीकार करवाने मनुष्यने केवी शक्ति छे,

१२. जे कांइ कुदरतने बंद बेसती रीत्ये बने छे ते संबंधे आपणे देवने पण ठपको देवो जोइये नहि, केम के तेओ इच्छापूर्वक के अनिच्छाए पण कांइ पण खोटुं करता नथी, तेम ज माणसोने पण ठपको देवो जोइये नहि, केम के तेओ अनिच्छासिवाय कांइ अशुभ करता नथी. तेटला माटे आपणे कोइने पण ठपको देवो नहि. (२. ११, १२, १३; ७. १२; ८. १७;)

१३. आ जीवनमां कांइ पण बने तेथी जे माणस आश्चर्य पामे छे ते केवो हास्यपात्र अने केवो अजाण्यो छे.

१४. कां तो प्राणघातक आवश्यकता अने अजय्य व्यवस्थाक्रम छे, अथवा तो कां तो दयाळु विश्वंभर सत्ता छे, अथवा कां तो कांइ पण आशयरहित अने कोइ पण नियामकरहित एक गोटाळो छे.

(४.२७). जो त्यारे अजय्य आवश्यकता होय, तो तुं शामाटे तेना सामो टक्कर ले छे? अथवा जो तेमां कोइ विश्वंभर सत्ता होय के जे पोतानी मेळे पोताने तृप्त थवा दे छे, तो ते दैवतनी सहायताने योग्य तुं तने पोताने बनाव. पण जो कोइ हाकेमविनानो कोइ गोटाळो ज होय, तो तुं संतुष्ट था के आवा तोफानमां तारा पोतामां अमुक नियामक बुद्धि छे. अने जो ए तोफान तने खेंची जाय तो पण रंक मांस, प्राण, अने बीजुं बधुं तेने खेंची जवा देजे; केम के कांइ नहि तो बुद्धिने तो ते खेंची जशे नहि.

१५. ज्यांलगी होलवाइ जाय छे त्यांलगी दीवानुं अजवाळुं तेनो जळहलाट तज्या विना बळे छे के नहि; अने शुं [तारा मरण पहेलां] ज तारामां जे सत्य छे ते, अने न्याय अने मिताहार गुल थइ जशे?

१६. ज्यारे कोइ माणस तेणे खोटुं कर्यानो भास रजु करे, त्यारे तुं [एम कहे के–] तो आ कार्य अपकृत्य छे के नहि ए हुं शी रीत्ये जाणुं? अने जो तेणे खोटुं कर्युं छे, तो तेणे पोताने पोतानी मेळे अपराधी गण्यो नथी एम हुं शी रीत्ये जाणुं? अने तेटला माटे आ तो तेनो पोतानो चहेरो उझरडी नाख्या जेवुं छे. विचार के जे माणसने एम जोइये छे के नठारो माणस खोटुं न करे, ते माणस एवो छे के जे (एम इच्छे छे) के अंजीरनुं वृक्ष अंजीरमां रस धारण न करे अने छोकरां रूवे नहि अने घोडो खुंखारे नहि, अने बीजुं कोइ अणचाल्ये जे करवुं जोइये ते करे नहि. केम के जे माणसने आवुं चारित्र्य होय छे, तेणे शुं करवुं जोइये? तेथी जो तुं चीडाइ जाय तेवो होय, तो तुं आ माणसनो स्वभाव मटाड.[3]

---

३. भाषान्तर करनाराओ Gorgos शब्दनो तरजुमो "acer, validusque," अने "skilful" (प्रवीण) ए शब्दोथी करे छे. पण एपिक्टेटसमां Gorgos नो अर्थ "आवेशी" "क्रोधी थाय तेवुं," "चीडियुं" एवो थाय छे.

१७. जो ते खरुं न होय तो तुं ते कर नहिः जो ते साचुं न होय तो तुं ते कहे नहि. [केम के तारा प्रयत्नो एवा थवा दे के–][4]

१८. दरेक बाबतमां जे वस्तु तारे माटे कोइ पण आभास उत्पन्न करे ते वस्तुनुं हमेश तुं अवलोकन कर, अने तेना आकारसंबंधी भाग, पदार्थसंबंधी भाग, तेनो हेतु, अने जे समयमां तेनो अंत आवशे ज ते–ए बाबतोना भाग पाडीने तेने छुटी पाडी नाख.

१९. छेवटे तुं ए जो के–जे वस्तुओ विविध असरो करे छे अने तने जाणे दोरीओथी खेंचे छे ते वस्तुओ करतां कांइक वधारे सारुं अने वधारे दिव्य तारामां पोतामां तुं धरावे छे. हाल मारा मनमां शुं छे ? ते शुं भय छे, अथवा शंका छे, अथवा तृष्णा छे, अथवा एवी जातनुं कांइ छे ? (९. ११.)

२०. पहेलुं, कांइ पण अविचारी रीत्ये, अने कांइ पण प्रयोजन विना कांइ पण तुं करीश नहि. बीजुं, सामाजिक लक्ष्यसिवाय बीजा कशाने तारां कृत्यो तुं उद्देशीश नहि.

२१. विचार के लांबा वखतपहेलां तुं कोइ पण नहि होय, अने क्यांइ पण नहि होय, अने जे वस्तुओने तुं हाल जुवे छे तेमांनी कोइ पण हयात रहेशे नहि, अने जेओ हाल जीवे छे तेमांनुं कोइ पण हयात रहेशे नहि. केम के बीजी वस्तुओ एक निरंतर प्रवाहमां हयातीमां आवे तेटलामाटे सघळी वस्तुओने (कुदरत-वडे) एवी बनाववामां आवेली छे के तेओ विकार पामे, परिवर्त्तन पामे, अने नाश पामे. (९. २८.)

२२. विचार के दरेक बाबत ए अभिप्राय छे, अने अभिप्राय बांधवो ते तारी सत्तामां छे. तो ज्यारे तारी इच्छा होय त्यारे तारो अभिप्राय तुं उठावी ले, अने जे चक्कर मारीने खडग वटावी गयो छे तेवा खलासीनी पेठे तने शान्त, दरेक वस्तु स्थिर, अने मोजा विनानो अखात जणाशे.

---

४. अहीं कांइक खोटुं अथवा अपूर्ण छे.

२३. हरकोइ प्रवृत्ति, पछी ते गमे ते होय, ते ज्यारे तेना योग्य समये शमी होय छे त्यारे ते शमी छे तेटला ज माटे कांइ हानि सहन करती नथी; अने जेणे आ काम कर्युं होय छे ते ते काम बंध थयु छे ए कारणथी कांइ अशुभ सहन करतो नथी. ते ज प्रमाणे त्यारे जे आपणी जिंदगी सघळां कामोनी आखी बनेली छे ते आपणी जिंदगी तेना योग्य समये बंध पडे तो ते बंध पडी छे तेटला ज कारणथी कांइ अशुभ सहन करती नथी; अने जेणे आ कार्यावलि योग्य समये पूरी करी छे तेनी प्रत्ये कोइ नठारी रीत्ये वर्त्युं नथी; पण ते योग्य समय अने तेनी हद ठरावे छे ते कोइक वार मनुष्यनी सविशेष प्रकृति ते हद जाणे वृद्धावस्थामां ठरावे छे, पण हमेशां तो ते हद विश्वनी प्रकृति ठरावे छे, के जे विश्वप्रकृतिना विभागोना फेरफारथी आखुं विश्व हमेश नवीन अने संपूर्ण चाल्या करे छे.[५] अने दरेक वस्तु जे विश्वनी प्रकृतिने उपयोगी छे ते हमेश सारी अने योग्य वखतसर होय छे. तेटलामाटे दरेक माणसने माटे तेनी जिंदगीनो अंत थवो ते कांइ अशुभ नथी, केम के ते कांइ शरमभरेलुं नथी, कारण के ते तेनी इच्छाउपर आधार राखतुं नथी अने सर्वेना सामान्य हितनी विरुद्ध नथी, पण ते शुभ छे, वळी कारण के ते योग्य समये अने विश्वनी प्रकृतिने संगत छे. केम के जे माणस ईश्वरनी साथे आप्रमाणे गतिमां मूकायलो छे अने तेना मनमां ते ज वस्तुओप्रत्ये गतिमां मूकायलो छे ते ईश्वरवडे आप्रमाणे पण गतिमां मूकायो छे.

२४. आ त्रण सिद्धान्तो तारे तैयार राखवा जोइये. जे वस्तुओ तुं करे तेमां तुं कांइ पण अविचारी रीत्ये अथवा न्यायशक्ति पोते वर्ते तेथी बीजी रीत्ये करीश नहि; पण बहारथी तारा उपर जे आवी पडे तेना संबंधमां तुं एम विचार के ते कां तो दैवयोगथी

५. ७. २५.

अथवा तो विश्वंभर सत्ताथी आवी पडे छे, अने तारे दैवयोगने ठपको देवो नहि तेम ज विश्वंभर सत्ताने पण दोष देवो नहि. बीजुं, दरेक प्राणी बीजाधानथी ते जीवप्राप्तिना समयपर्यन्त अने जीव-प्राप्तिना समयथी तेना पाछा थवालगी शुं छे, अने शी वस्तुओ मळीने दरेक प्राणी बनेलुं छे अने शी वस्तुओमां तेनुं पृथक्करण थइ जाय छे—तेनो विचार कर. त्रीजुं, जो तने आ पृथ्वीथी उपर आकाशमां चढावी देवामां आवे, अने जो तुं उपरथी मानुषी वस्तुओउपर नीचे नजर करे, अने तेओनी विविधता केटली मोटी छे ते तुं अवलोके, अने ते ज वखते वळी एक ज नजरे तुं जुवे के जेओ हवामां अने आकाशमां आशपाश बधे रहे छे तेवां प्राणिओनी संख्या केटली मोटी छे, तो तुं विचार के जेटली वार तने उंचो चढाववामां आवे तेटली वार तुं ते ज वस्तुओने जोइश, ते ज आकार अने ते ज समयनुं टुंकापणुं तुं जोइश. आ वस्तुओनो शुं गर्व करवानो छे?

२५. तारुं पोतानुं मानवुं तुं नांखी देः (एटले) तुं बची गयो. तो तने तारुं मानवुं नाखी देतां कोण अटकावे छे?

२६. ज्यारे तुं कोइ बाबतविषे क्षोभ पामेलो होय छे त्यारे तुं आ भूली गयेलो होय छे के सघळी वस्तुओ विश्वनी प्रकृति प्रमाणे बने छे; अने आ तुं भूली गयेलो होय छे के कोइ माणसनुं अपकृत्य ते तने कांइ नथी; अने वळी तुं आ भूली गयेलो होय छे के दरेक वस्तु जे बने छे ते हमेश दरेक स्थळे एम ज बनेली होय छे अने एम ज बनशे, अने हाल एम ज बने छे; वळी आ पण तुं भूली गयेलो होय छे के एक मनुष्य अने आखी मनुष्यजाति वच्चे केवी गाढी सगाइ छे, केम के ते एक थोडा रुधिर अने वीर्यनी एकता नथी पण बुद्धिनी एकता छे. अने वळी तुं आ पण भूली गयेलो होय छे के दरेक माणसनी बुद्धि ए देवता छे, अने ते

ईश्वरनो एक परिवाह छे;[६] अने तुं आ भूली गयेलो होय छे के कांइ पण मनुष्यनुं पोतानुं नथी, पण तेनुं छोकरुं अने तेनुं शरीर अने तेनो जीवात्मा पण ईश्वरमांथी आवेलो छे; तुं आ भूली गयो छे के दरेक वस्तु अभिप्रायरूप छे (अर्थात् मननुं मानवुं मात्र छे); अने छेवटे तुं ए पण तुं भूली गयेलो छे के दरेक माणस फक्त वर्त्तमानकाळ ज जीवे छे, अने फक्त आ ज (वर्त्तमानकाळ ज) खुवे छे.

२७. जेओए कोइ पण वस्तुविषे मोटी राव करी होय, जेओ कोइ जातनी मोटामां मोटी कीर्त्तिवडे अथवा आपत्तिओवडे अथवा शत्रुताओवडे अथवा सद्भाग्योवडे अत्यंत आगळ पडता थयेला होय तेओने निरंतर तारा विचारमां आण: पछी विचार के तेओ बधा हाल क्यां छे ? तेओ बधा धुमाडो वानी अने वार्ता मात्र छे, अरे तेओ वार्त्ता मात्र पण नथी. अने तारा मनमां वळी आवी जातनी दरेक बाबत हाजर रहेवा दे के—फेबिअस् केटुलिनस् आ देशमां केवो रहेतो, अने ल्युसिअस् ल्युपस् तेना बागोमां केवो रहेतो, अने बेइआगळ स्टर्टिनिअस्, अने केप्रेईआगळ टाइबेरिअस् अने [वेलिआआगळ] वेलिअस् रूफस् [अथवा रूफस्] केवा रहेता; अने छेवटे गर्वनी साथे जोडाएली कोइ पण वस्तुनी पाछळ आतुर दोडाविषे विचार कर; अने जेनी पाछळ मनुष्यो जोसभेर तणाइ मरे छे तेवी दरेक वस्तु केवी नमाली छे; अने जे तको माणसने मळे तेमां पोताने न्यायी, मिताहारी, देवोप्रति आज्ञांकित, दर्शावी आपवो, अने तमाम सादाइथी आ करवुं ए माणसने माटे केटलुं बधुं अधिक तत्त्वज्ञानवाळुं छे: केम के जे गर्वना अभावने माटे गर्विष्ठ छे एवो गर्व ते सर्व करतां असह्य छे.

---

६. एपिक्टेटस्, २. ८, ९, वगेरे जुओ. ७. आप वडाइथी. आप वडाइ अने गर्व, एपिक्टेटस्. १. ८, ६.

२८. जेओ एम पूछे छे के—तें देवोने क्यां जोया छे अथवा तेओनुं अस्तित्व छे एम तुं शी रीत्ये समजे छे के जेथी तुं तेओने पूजे छे, तेओने हुं जबाब आपुं छुं के—प्रथम तो, तेओ आंख्योथी जोइ शकाय तेम छे;[८] अने बीजुं, में मारा आत्माने पण जोयो नथी अने ते छतां पण हुं तेने मान आपुं छुं. आ ज प्रमाणे त्यारे देवोना संबंधमां पण छे, तेओनी शक्तिनो मने जे सतत अनुभव अपाय छे तेउपरथी—आउपरथी हुं समजुं छुं के तेओनुं अस्तित्व छे अने हुं तेमने मान आपुं छुं.

---

८ " नेत्रोथी पण देखाय. " विश्व ए एक देव अथवा सजीवन भूत छे. (४. ४०), अने दिव्य पदार्थो ते देवो छे (८. १९)—एवा विरक्त तत्त्वज्ञानना सिद्धान्तवडे आ समजावी शकाय एम धारवामां आवे छे. पण ते पाछळ कहे छे तेम बादशाह (एन्टोनिनस्) नो एम कहेवानो आशय होय के आपणे जाणिये छिये के देवोनुं अस्तित्व छे, केम के तेओ जे करे छे ते आपणे जोइये छिये; जेम आपणे जाणिये छिये के माणसने बुद्धिनी शक्तिओ छे, केम के ते जे करे छ ते आपणे जोइये छिये, अने बीजी कोइ रीत्ये आपणे ते जाणता नथी. त्यारे रोमन् लोकोप्रत्येना पत्रमांना वाक्यनी साथे (१. व. २०), तथा जेमां जीसस् क्राइस्टने अदृश्य देवनी मूर्तिनुं नाम आपेलुं छे ते कोलोसिअन्स् प्रत्येना पत्रनी साथे (१. व. १५) तथा सेइन्ट् जहोनना उपदेशमांना वाक्य (१४. व. ९) नी साथे आ वाक्य मळतुं आवशे.

गेटेकर् के जेनी टीकाओ एक अद्भुत विद्वत्तानो संग्रह छे, अने ते सघळी सबळ अने सारी छे, ते केल्विनना एक वाक्यनो उतारो करे छे—जे वाक्य सेइन्ट् पोलनी वाणी(रोम० १. व. २०)उपर स्थपायलुं छेः—" ईश्वरे विश्व [अथवा दुनिया—जगत्] रचवाथी, पोते अदृश्य होइने, तेणे अमुक दृश्य आकारमां प्रत्यक्ष रीत्ये आपणां नेत्र आगळ पोताने दर्शाव्यो छे. " ते वळी सेनेकानो उतारो आपे छे. (डि बेनिफ० ४. प्र. ८): " ज्यां ज्यां तमे नजर फेरवशो त्यां त्यां ते तमने जणाशे, तेना विना कांइ खाली नथी, ते पोतानी हाजरीथी पोतानी रचना(विश्व)ने भरे छे. " वळी सिसेरो, डि सेनेक्च्यूट्(प्र. २२), झेनोफोननी साइरोपीडिआ (८. ७), अने मेम० ४. ३; वळी एपिक्टेटस्, १. ६, डि प्रोविडेन्शिआ सरखावो. हुं धारुं छुं के एन्टोनिनस्नो में करेलो तरजुमो खरो छे.

२९. जीवननी सलामती आ छे—दरेक वस्तुने आरपार बधी तपासवी, के ते पोते शुं छे, तेनुं उपादान शुं छे, अने तेनो आकारक भाग शो छे; तारा समग्र अंतरात्माथी न्याय करवो अने सत्य बोलवुं. बंनेनी वचमां थोडामां थोडो पण अंतर रहे नहि तेप्रमाणे एक सारी वस्तुने बीजी सारी वस्तुसाथे जोडीने जीवन भोगववुं एसिवाय बाकी शुं रहे छे ?

३०. जो के ते भींतो, पहाडो, अने बीजी अनंत वस्तुओवडे प्रतिबद्ध छे तो पण सूर्यनुं अजवाळुं तो एक ज छे. जो के ते पोतपोताना विविध गुणोवाळा अगणित पदार्थोमां वहेंचायलो छे, तो पण एक सर्वसामान्य पदार्थ[१] तो एक ज छे. जो के ते अनंत प्रकृतिओमां अने व्यक्त मर्यादाओ(व्यक्तिओ)मां वहेंचायलो छे, तो पण आत्मा तो एक ज छे. जो के ते विभक्त जणाय छे, तो पण बुद्धियुक्त आत्मा तो एक ज छे. हवे जे वस्तुओ कहेवामां आवी छे तेमां बीजा सघळा भाग, जेवा के हवा अने जड पदार्थ छे, तेओ तो लागणीरहित छे अने तेओने कांइ संगीपणुं नथी: तो पण आ भागोने पण बुद्धितत्त्व एकठा पकडी राखे छे, अने तेप्रत्ये गुरुत्वाकर्षणने पण पकडी राखे छे. पण बुद्धि एक विलक्षण रीत्ये जे एक ज जातिनुं होय छे तेप्रति खेंचाय छे, तथा तेनी साथे जोडाइ जाय छे, अने ते ऐक्य खंडित थतुं नथी.

३१. तुं शुं इच्छे छे ? हयात चालु रहेवाने इच्छे छे ? ठीक, तुं लागणी, गति, वृद्धि, अने पछी पाछा वधतां अटकवानुं, तारी वाणीनो उपयोग करवानुं, विचारवानुं इच्छे छे ? आ बधी वस्तुओमांनी जे तने इच्छवा योग्य जणाय छे ते कयी वस्तु छे ? पण जो आ बधी वस्तुओनी किमत अल्प गणवानुं सहेलुं होय, तो बुद्धिने अने तर्कने अनुसरवानुं जे बाकी रह्युं तेतरफ तुं फर. पण बुद्धिने

---

१. ४.४०.

अने देवने मान आपवानी साथे,—माणस मरणवडे बीजी वस्तुओथी रहित कराशे ते कारणथी विकळ थवुं,—ते बंधबेसतुं नथी.

३२. अनंत अने अगाध काळनो केटलो नानो भाग दरेक माणसने भागे आंकी अपायलो छे? केम के ते घणी जलदीथी अनंत(काळ)मां गटक थइ जाय छे. अने समग्र पदार्थमांथी केटलो नानो भाग (दरेक माणसने भागे आंकी अपायलो छे)? अने विश्वात्मानो केटलो नानो भाग (दरेक माणसने भागे आंकी अपायलो छे)? अने आखी पृथ्वीना केटला नाना सरखा ढेफाउपर तुं पेट घसडतो चाले छे? आ बधाविषे विचार करतां, तारी प्रकृति तने दोरे तेम वर्त्तवा, अने सामान्य प्रकृति जे कांइ उपस्थित करे ते सहन करवासिवाय बीजी कोइ पण वस्तुने तुं मोटी धारीश नहि.

३३. नियामकशक्ति तेनो पोतानो उपयोग केवी रीत्ये करे छे? केम के आमां बधुं रहेलुं छे. पण बीजुं बधुं, तारी इच्छानी सत्तामां होय के नहि तो पण, केवळ निर्जीव वानी अने धूमाडो ज छे.

३४. आ विचार आपणने मृत्युना तिरस्कारप्रत्ये प्रेरवाने अत्यंत युक्त छे, के जेथी जेओ सुखने सारुं अने पीडाने नठारी धारे छे तेओए पण मृत्युने तुच्छ गणेलुं छे.

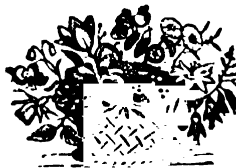
३५. जे माणसने योग्य समये जे प्राप्त थाय छे ते ज सारुं छे, तथा तेणे खरी बुद्धिने बंधबेसे तेप्रमाणे वधारे अथवा थोडां कृत्यो कर्यां होय ते जेने एक सरखुं छे, अने दुनियाविषे वधारे लांबो समय के वधारे टूंको समय विचार करे तेमां जेने कांइ फरक नथी—आवा माणसने माटे मृत्यु पण कांइ बिहामणी वस्तु नथी.

३६. हे मनुष्य! आ मोटा संस्थान[दुनिया]मां तुं एक नागरिक थयेलो छेः[१०] तुं तेवा शहेरीतरीके पांच [के त्रण] वर्ष रहे तेमां तने शो फरक छे? केम के जे कायदाओने बंधबेसतुं होय छे

---

१०. २. १६; ३. ११; ४. २९.

ते सर्वने माटे शुभ छे. कोइ जुलमी राजा तेम ज कोइ अन्यायी न्यायाधीश तने ते संस्थानमांथी देशनिकाल आपतो नथी, पण जे कुदरते तने ते संस्थानमां आण्यो ते ज कुदरत तने तेमांथी बहार मोकली दे छे, तो तेमां दुःख शुं छे? जाणे कोइ अधिकारीए एक नटने कामे लगाड्यो होय, अने ते ज ते नटने रंगभूमिमांथी काढी मूके तेना जेवुं ज (आ छे.)—[11] "पण में पांचे अंक भजव्या नथी, परंतु तेमांना त्रण ज अंक भजव्या छे."—तुं ठीक कहे छे, पण जीवनमां त्रण अंक ए आखुं नाटक छे; केम के जे एक वार ए नाटकनी रचनाना कारणरूप हतो अने हाल जे तेना विसर्जनना कारणरूप छे तेनावडे ज आखुं नाटक केवडुं थशे ते निर्धारायलुं छेः पण तुं ते(नाटक)नी रचनाना के विसर्जनना कारणरूप नथी. तो संतोषपूर्वक चाल्यो जा. केम के जे तने छुटो करे छे ते संतोष पामेल छे.



---

११. ३. ८; ११. १.

परिशिष्ट.



(बादशाह मार्कस् ओरेलियस् एन्टोनिनसना विचारोने मळता भावनां संस्कृत ग्रंथोनां वचनोः)—

स्कंध १ लो.

१–१६. मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । अतिथिदेवो भव ।······यान्यस्माकं सुचरितानि । तानि त्वयोपास्यानि । नो इतराणि ॥ २ ॥ (तैत्तिरियोपनिषद्–शिक्षाध्यायरूप प्रथमवल्ली–११ मो अनुवाक)=भावार्थः—माता पिता आचार्य अने अतिथिओ विषे देवबुद्धि राखी तेमनाथी सुबोध लेनारो था. अमारा जे सदाचार होय ते तारे सेववा, बीजुं कांइ सेववुं नहि.

बादशाह मार्कस्. ओ. एन्टोनिनसे पण माताथी (३), पिताथी (२. १६) दादाथी (१.४.) आचार्य एटले शिक्षको वगेरेथी (५. ६. ७. ८.) अने अतिथि एटले समागममां आवता शिष्ट जनोथी (९. १०. ११. १२. १३. १४. १५.), सदाचारनुं ग्रहण कर्युं हतुं,–ते अर्धचंद्र कौंसमां आपेली कलमो वांचतां समजाशे.

१७.···शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥···एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥ ४२ ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता अध्या० ६)= पुण्यवान् जीव पवित्र अने श्रीमानने घेर जन्मे छे,···आवो जन्म थवो आ लोकमां दुर्लभ छे.—बादशाह पण सत्कुलमां पोताना जन्मने माटे देवोनो आभार माने छे.

स्कंध २ जो.

१. उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः । अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते ॥ २७० ॥ (पंचतंत्र–तंत्र १ लुं–कथा ८ मी)=उपकार करनाराओ विषे साधुताथी वर्ते तेना साधुपणामां शो गुण? अपकार करनाराओ साथे पण जे साधुताथी वर्ते तेने सत्पुरुषो साधु कहे छे.

२. भगवन्नस्थिचर्मस्नायुमांसशुक्रशोणितश्लेष्माश्रुदूषिते विण्मूत्रवातपित्तकफसंघाते दुर्गन्धे निःसारेऽस्मिञ्छरीरे किं कामोपभोगैः ? ॥ २ ॥ (मैत्रायण्युपनिषद्)=हे भगवन्! हाड चाम स्नायु मज्जा मांस वीर्य रुधिर श्लेष्म अने आंसुथी दूषित, मळमूत्र वातपित्त अने कफना समुदायरूप, दुर्गन्धवाळा, तथा निःसार एवा आ शरीरमां विविध विषयोनी इच्छाना उपभोगथी शुं ?

नमो विश्वसृजे पूर्वं विश्वं तदनुबिभ्रते । नमो विश्वस्य संहर्त्रे तुभ्यं त्रेधा स्थितात्मने ॥ (रघुवंश)=प्रथम विश्वने सृजनार, पछी विश्वनुं भरण पोषण करनार, अने पछी विश्वनो संहार करनार–एम त्रण रीते रहेला आपने नमस्कार. (सर्व व्यवस्था ईश्वरकृत होइ हितकर ज छे).

बहुशास्त्रकथाकंथारोमन्थेन वृथैव किम् । अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन मारुते ज्योतिरान्तरम् ॥ १ ॥ घणां शास्त्रोनां पोथानी वातोनी गोदडी वा गाभा वृथा पींखवाथी शुं ? प्राणमां अंदरनुं ज्योतिः शोधवुं जोइये.

४. **न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति । अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान् ॥ ४० ॥ (सुभाषितरत्नभाण्डागारम्–प्र० ३–सामान्यनीतिः)**=काले कोनुं शुं थशे ते कोइ जाणतुं नथी, एटला–माटे बुद्धिमान् मनुष्य काले करवानां काम आजे ज करी ले.

५. **मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान्विषवत्त्यज । क्षमार्जवदयातोषं सत्यं पीयूषवद्भज ॥ १ ॥** हे बापु ! जो तुं मुक्ति इच्छतो होय तो पांचे विषयने तुं विष गणीने त्यजी दे, अने क्षमा, आर्जव, दया, संतोष अने सत्य ए पांचेने अमृत गणीने सेव.

६. **उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ॥ ५ ॥ (श्रीभगवद्गीता–अध्या० ६)**=पोताना आत्मावडे ज आत्मानो उद्धार करवो, आत्मावडे आत्मानो निपात करवो नहि.

अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षो निरामिषः । आत्मनैव सहायेन यश्चरेत्स सुखी भवेत् ॥ (महाभारत–शान्तिपर्व–अध्याय ३३८)=अध्यात्म विषयमां प्रीतिवाळो, ठरीने बेठेलो, कोइनी पण अपेक्षारहित कृश शरीरवाळो पण जे पोताना आत्मानी सहायताथी ज चालनार छे ते सुखी थाय.

७. **दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् । स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥ ८ ॥ (भगवद्गीता–अध्याय १८)**=प्रवृत्ति दुःखरूप छे एम मानीने जे शरीरने श्रम थवाना भयथी कर्मनो त्याग करे छे, ते रजोगुणी त्याग करे छे, तेथी तेने त्यागनुं फळ मळतुं नथी–निवृत्ति सुख मळतुं नथी.

८. **यस्त्वविज्ञानवान्भवत्ययुक्तेन मनसा सदा । तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥ ५ ॥ (कठोपनिषद्–तृतीयावल्ली)**=जे सदा असावधान मनवडे विज्ञानरहित थाय छे, तेनी इन्द्रियो सारथिना वशमां नहि रहेनार दुष्ट घोडाओनी पेठे (तेनी गाडीने लेइ जइने)–खाडमां क्षीके छे.

९. **कोऽहं कथमिदं जातं को वै कर्त्ताऽस्य विद्यते । उपादानं किमस्तीह विचारः सोऽयमीदृशः ॥ १२ ॥ (अपरोक्षानुभूतिः)**=हुं कोण, आ विश्व शी

रीत्ये थयुं, तेनो कर्त्ता कोण छे, तेनुं उपादान कारण शुं शुं छे?–एवो विचार (कर्त्तव्य) छे.

१०. **ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । संगात्संगजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥६२॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ (श्रीभगवद्गीता–अध्याय. २.)**=विषयोनुं चिन्तन करनारने ते विषयो उपर आसक्ति थाय छे, अने आसक्तिथी ते विषयनी कामना थाय छे, अने ते कामनामां अडचण आवे छे एटले क्रोध थाय छे. (आ श्लोक मार्कस्. ओ. एन्टोनिसना वचन करतां पण आगळ वधीने कहे छे के क्रोधने पण उत्पन्न करनार तो मूळ विषयोनुं चिन्तन अने काम ज छे, तेथी क्रोधथी थती हानिओने माटे पण विषय-कामना ज जबाबदार छे.): अने (जो विषयकामनाथी नहि पण बीजा कोइथी उत्पन्न थयो होय तो पण) क्रोधथी मोह अने मोहथी स्मृतिभ्रंश अने स्मृतिभ्रंशथी बुद्धिनाश अने बुद्धिनाशथी विनाश थाय छे. (तात्पर्य ए के क्रोधथी थयेलुं कर्म ते मूढता बेभान अने बुद्धि नाशनी स्थितिमां थयेलुं होवाथी कामनाथी ज करेला कर्म करतां ओछु दोषरूप छे).

११. **गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥** मृत्युए जाणे केश पकड्या होय एम समजीने धर्म(कर्त्तव्य)परायण थवुं.

१२. **मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः ॥ (रघुवंश)**= शरीरधारी जीवोने मरण ए स्वाभाविक (कुदरतरूप) छे, अने जीवित ए तो विकाररूप छे,–एम डाह्या जनो कहे छे.

१३. **शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् ॥ २५ ॥ (श्री० भ० गीता. अ० ५)**=धैर्ययुक्त विवेकबुद्धिथी इतर सर्व बाबतोमांथी उपराम पामीने मनने आत्मामां स्थापी बीजा कशानुं चिंतन करवुं नहि.

१४. **गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत् । वर्त्तमानेन कालेन प्रवर्त्तन्ते विचक्षणाः ॥ (वृद्धचाणाक्य)**=भूतकालनो शोक करवो नहि तम ज भविष्यकाळने माटे चिन्ता करवी नहि. विचक्षण पुरुषो वर्त्तमानकाळपर ज लक्ष राखीने प्रवृत्ति करे छे. **नलिनीदलगतजलमतितरलम् । तद्वज्जीवितमतिशय चपलम् ॥ १ ॥ (श्रीशंकराचार्य)**=कमळपत्रपर रहेल जलना जेवुं जीवन अत्यंत चपल एटले क्षणभंगुर छे. **धाता यथापूर्वमकल्पयत् ॥ (श्रुतिः)** ब्रह्माए समग्र जगत् पूर्वनी सृष्टि प्रमाणे ज कल्प्युं छे.

१५. दृष्टिरेव भवेत्सृष्टिः।...(वेदान्तसिद्धान्तादर्श)=दृष्टि ते ज सृष्टि थाय छे. मन एव मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयोः ॥ (मैत्रायण्युनिषद् प्रपाठक ४. श्लो. ११.)=बंध अने मोक्षनुं कारण ते मन ज छे. सर्वं हि मन एवेदम्...॥४॥ (योगवासिष्ठ–सर्ग ८५ मो)=आ बधुं मन ज छे.

१६.......क्रोधाद्भवति संमोहः...(श्रीभगवद्गीता)=क्रोधथी भान भूलाय छे. तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।......॥ १९ ॥ (श्री० भ० गी० अध्या० १६)=एवा द्वेषी क्रूर अधम नरोने संसारमां आसुरी योनिमां हुं नांखुं छुं. न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियम्।...॥ २० ॥ (,, अध्या० ३)=प्रियवस्तुथी हर्ष पामे नहि, अने अप्रियथी उद्वेग पामे नहि. दंभोदर्पोऽभिमानश्च........पार्थसंपदमासुरीम् ॥ ४ ॥ (,, अ० १५)= दंभ एटले जेमां जुठ अने अनार्जवनो समावेश थाय छे ते दुर्गुण वगेरे हे अर्जुन आसुरि संपत्ति जाण. अनुबन्धं क्षयं हिंसामनपेक्ष्य च पौरुषम्। मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥ (,, अ० १८)=जे कर्म आगळ पाछळनो विचार कर्या विना हानि हिंसा अने बळनो ख्याल राख्या विना मोहथी करवामां आवे छे ते तामस कर्म कहेवाय छे.

१७. इतो न किंचित्परतो न किंचिद्यतोयतो यामि ततो न किंचित्। विचार्य पश्यामि जगन्न किंचित्स्वात्मावबोधादधिकं न किंचित् ॥ (सुभाषितरत्नभाण्डागार—शान्तरस—श्लो० ३१)=आतरफ कांइ नथी, पेली तरफ कांइ नथी ज्यां ज्यां जाउं छुं. त्यां त्यां कांइ सार नथी, विचारीने जाउं छुं तो जगत् पण कांइ नथी, अने आत्मतत्त्वज्ञानथी अधिक बीजुं कांइ ज नथी.

स्कंध ३ जो.

१. यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावज्जरा दूरतो यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः ॥ आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमो कीदृशः ॥ १००७ ॥ (सुभा०रत्न० भाण्ड०सामान्यनीति=ज्यांलगी आ शरीर स्वस्थ अने रोगविनानुं छे, ज्यांलगी वृद्धावस्था दूर छे, ज्यांलगी मन वगेरे इन्द्रियोनी शक्ति हणाइ गइ नथी अने ज्यांलगी आयुष्यनो क्षय थयो नथी, त्यांलगीमां ज विद्वान् मनुष्ये पोताना आत्माना कल्याणनेमाटे महान् यत्न करवो जोइये; घर सळगी उठ्या पछी कुवो खोदवानो उद्यम करवो ए केवो नकामो छे?

२. सदोषमपि निर्दोषं भवत्यग्रे विपश्चितः।......॥ ९ ॥ (सु० र० भा० पंडितप्रशंसा)=ज्ञानी माणसनी आगळ सदोष अथवा खराब होय छे ते पण निर्दोष अथवा सारुं थाय छे.

३. [illegible]ः सगरः ककुत्स्थो दशाननो राघवलक्ष्मणौ च । युधिष्ठिराद्याश्च बभूवुरेते सत्यं क याता बत ते नरेन्द्राः ॥ (श्रीव्यासवाक्य)=भगीरथ वगेरे सगर, ककुत्स्थ, रावण, राम लक्ष्मण, अने युधिष्ठिर वगेरे राजाओ थया हता ए सत्य छे, पण तेओ क्यां गया? ग[illegible]णि बुद्बुदानीव वारिणि । मां जीवित[illegible] विहसिष्यन्ति साधवः (वासिष्ठ)= जेम पाणीमां परपोटा शमी जाय तेम लाखो इन्द्र गळी गया, तो पछी मारा जेवो जीवननी आशा बांधी बेसे तेनुं साधु पुरुष हास्य ज करशे.

४. परेषां चेतांसि प्रतिदिवसमाराध्य बहुधा । प्रसादं किं नेतुं विशसि हृदय क्लेशकलिलम् ॥ प्रसन्ने त्वय्यन्तः स्वयमुदितचिंतामणिगुणे । विमुक्तः संकल्पः किमभिषितं पुष्यति न ते ॥ ३३ ॥ (भर्तृहरि–वैराग्यशतक)=हे मन! नित्य पारकां चित्तनुं आराधन करी प्रसन्न करवाने तुं क्लेशना ढगलामां शुं करवा पेसे छे? जेनामां स्वतः चिन्तामणिना गुणो उदय पामेला छे एवुं तुं प्रसन्न थइश तो मुक्त थयेला संकल्पविकल्प तारुं शुं इष्ट नहि पूरे?

५. सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुर्याद्विद्वांस्तथाऽसक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥ २५ ॥ (श्री० भग० गीता०–अ० ३.)=कर्ममां आसक्तिथी अज्ञानीओ कर्म करे छे, तेम ज्ञानी कर्ममां आसक्ति राख्याविना लोकनुं संरक्षण करवानी इच्छाथी कर्म करे.

६. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु । लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् । अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ ८३ ॥ (भर्तृहरि–नीतिशतक)=नीतिनिपुण पुरुषो निंदे के वखाणे, लक्ष्मी गमे तेम आवे के जाय, मरण आजे ज थाय के बीजा युगमां थाय तो पण धीर पुरुषो न्याय्य मार्गमांथी एक डगलुं पण चळावता नथी.

७. यस्तु साक्षिणमात्मानं सेवते प्रियमुत्तमम् । तस्य प्रेयानसावात्मा न नश्यति कदाचन ॥ ७१ ॥ (पंचदशी–प्र० १२)=जे साक्षिरूप प्रिय उत्तम आत्माने सेवे छे तेनो ते परम प्रेमरूप आत्मा अर्थात् आत्मसुख कदी नाश पामतुं नथी. (तेने इतर कशानी सहायतानी जरूरे पडती नथी).

८. कृतकृत्यतया तृप्तः प्राप्तप्राप्यतया पुनः । तृप्यन्नेवं स्वमनसा मन्यतेऽसौ निरन्तरम् ॥ ९१ ॥ (पंचदशी–प्र० ७)=ज्ञानथी शुद्धबुद्ध पुरुष कृतकृत्यतावडे अने प्राप्यप्राप्ततावडे निरंतर पोताना मनथी एम माने छे के मारुं कोइ पण कर्तव्य कदी पण अधुरुं रहेतुं नथी.

९. मनोब्रह्मेत्युपासीत० (छान्दोग्य उप० खंड १८)=मन ब्रह्म छे एवा भावथी मननी उपासना करवी.

१०. गतेनाऽपि न संबंधोन सुखेन भविष्यता । वर्त्तमानं क्षणातीतं संगतिः कस्य केन वा ॥ १५३ ॥ (सु० र० भाण्ड०–शान्तरस०)= भूतकालना सुखथी तेम ज भविष्यकालना सुखथी कांइ संबंध नथी अने जे वर्त्तमान छे ते क्षणमां चाल्युं जशे तो पछी कोनो कोनी साथे संबंध छे.

११. अप्रमत्तो भव ध्यानादाद्येऽन्यस्मिन्विवेचनम् । कुरु प्रमाणयुक्तिभ्यां ततो रूढतमो भवेत् ॥ ७३ ॥ (पंचदशी–प्र० २)=प्रथम तो ध्यानमां सावध रहेवुं अने बीजी वात ए के जो कोइ बाबतनो विचार आवे तो तेनुं पृथक्करण प्रमाण अने युक्तिथी करवुं–एटले ज्ञान अने तेथी थयेला निश्चयमां अत्यंत आरूढ थवाय छे.

१२. तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर । असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥ १९ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ३)=तेटला माटे आसक्ति राख्या विना हमेश तुं कर्त्तव्य कर्म कर, एप्रमाणे करवाथी पुरुष परमपदने प्राप्त थाय छे.

१३. देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः । परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ३)=यज्ञद्वारा परस्पर देवो ने मनुष्यो एक बीजाने संतोष आपनार होवाथी तेओनो परस्पर संबंध पहेलेथी छे–ए भाव आ श्लोकनो पण छे.

१४. विचारितमलं शास्त्रं चिरमुद्ग्राहितं मिथः । संत्यक्तवासनान्मौनादृते नास्त्युत्तमं पदम् ॥ ६५ ॥ (पंचदशी–प्र० ४)=शास्त्रग्रंथो घणाए विचार्या अने परस्पर शास्त्र चर्चा करीने शास्त्रोना निश्चयो पण कर्या, तथापि वासना त्यजीने मौन पकड्या विना उत्तमपद प्राप्त थाय तेम नथी.

१५. अनपेक्षितगुरुवचना सर्वान्ग्रन्थीन्विभेदयति सम्यक् । प्रकटयति पररहस्यं विमर्शशक्तिर्निजा जयति ॥ १० ॥ (सु० र० भाण्डा० विद्याप्रशंसा)=जेमां गुरुना वचननी अपेक्षा रहेती नथी, अने जे सर्व शंकानी गांठोने बरोबर छोडी नांखे छे, तथा जे परम रहस्यने प्रकट करे छे एवी पोतानी विचारशक्ति (ज्ञानदृष्टि) नो जयजयकार !

१६. अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् । दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शौचम-

द्रोहो नातिमानिता । भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० १६)=हे अर्जुन ! अभय, सत्वनी यथार्थ शुद्धि, ज्ञान अने योगनी व्यवस्था, दान, दम, यज्ञ, स्वाधाय, सरलता, अहिंसा, सत्य, क्रोधरहितपणुं, त्याग, शान्ति, कपटरहितपणुं जीवदया, लोलुपता न करवी ते, कोमळता, लोकलज्जा, स्थिरता, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, द्रोहरहितपणुं अने अतिमान न राखवुं–ए दैवी संपत्तिवाळा पुरुषोमां स्वभावसिद्ध होय छे.

स्कंध ४ थो.

१. **यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ ३७ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ४)**=जेवी रीतये बळतणथी भरपूर अग्नि इन्धनोने बाळीने भस्म करी नाखे छे, तेम ज्ञानरूपी अग्नि सर्व (मोक्षमां प्रतिबंधरूप) कर्मोने बाळीने भस्म करी नाखे छे.

२. **प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्त्तते ॥**=मंदबुद्धिवाळो पुरुष पण प्रयोजनना उद्देशविना कांइ पण प्रवृत्ति करतो नथी.

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते कामकारतः । न स सिद्धिमवाप्नोति न **सुखं न परां गतिम् ॥ २३ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० १६)**=जे शास्त्रविधिना (नियमोने) छोडी देइने मरजीमां आवे तेम वर्त्ते छे, ते सिद्धिने पामतो नथी, तेम ज सुखने पामतो नथी तथा परमगतिने पण पामतो नथी.

३. यदा विनियतं **चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते । निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥ प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् । उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ६)**= वश करायलुं चित्त ज्यारे (अंदर) आत्मामां ज स्थित थाय छे, अने सर्व कामनाओनी स्पृहाथीरहित थाय छे, त्यारे ते पुरुष योगयुक्त (अंतर्मुख) थयेलो कहेवाय छे. १८. एप्रमाणे प्रशान्त चित्तवाळा, रजोगुण(चांचल्य)-नी शान्तिवाळा, अने पापरहित योगिने आत्मानुं उत्तम सुख मळे छे. २७.

४. **स्पष्टशब्दादियुक्तेषु भौतिकत्वमतिस्फुटम् । अक्षादावपि तच्छास्त्रयुक्तिभ्यामवधार्यताम् ॥ १७ ॥ (पंचदशी–प्र० २). मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम् । अस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत् ॥ २३ ॥ (पंचदशी–प्र० ६)**=शब्दादि गुणयुक्त सर्व पदार्थोमां पृथ्वी जल आदिक पंचभूतनुं कार्यत्व स्पष्ट छे, अने तेवुं कार्यत्व इन्द्रियादिकमां श्रुतिशास्त्र अने अनुमानवडे समजाय छे. १७. माया ए प्रकृति छे अने मायापति श्रीमहेश्वर छे, अने ते महेश्वरना ज अवयवस्थानीय (अंशरूप) जीवोवडे आ सर्व जगत् व्याप्त छे. २३.

५. **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥** (श्री० भ० गीता-अ० २)=जेनो जन्म तेनुं मरण अने जेनुं मरण तेनो जन्म ए तो नक्की ज छे, तेटलामाटे ए टाळी न शकाय एवी बाबतनो तारे शोक करवो घटतो नथी.

६. **सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३३ ॥** (श्री० भ० गीता-अ० ३)=ज्ञानवाळो पण पोतानी प्रकृतिप्रमाणे ज वर्त्ते छे. सर्व प्राणिओ पोतपोताना स्वभावने वश वर्त्ते छे, तेमां दाब राखवाथी शुं वळे?

७. **मनएव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः । बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं मनः ॥ १७ ॥** (पंचदशी-प्र० ११)=मन ए ज मनुष्योना बंध अने मोक्षनुं कारण छे, विषयासक्त मन बंधनकर्त्ता छे, अने निर्विषय मन मुक्तिदाता छे. (विशेष जुओ. १. १५).

८. **देशकालवशोत्थानि न ममेति गतभ्रमम् । शरीरे सुखदुःखानि यः पश्यति स पश्यति ॥ २५ ॥** (योगवासिष्ठ-प्र० ४ सर्ग २२)=देश अने कालथी उत्पन्न थयेला सुखदुःखो मने नथी, पण ए तो शरीरमां छे एम जे निर्भ्रान्त रीत्ये जुए छे ते ज देखतो छे. (सुखदुःख आत्माने अडतां ज नथी; तो तेने खोटो तो क्यांथी ज बनावे ?)

९. **स्वतो हि तात वशगाः केवलं नियतेः स्थिताः ॥ ३७ ॥** (यो० वा० प्र० ४-सर्ग १२)=काळ कहे छेः-हे बापु, अमे पोते पण केवळ नियति (एटले विश्वनियमनना संकेत) ना वशमां ज पडेला छिये.

१०. **न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ॥** सर्वव्यापक वासुदेवना भक्तोनुं कोइ पण स्थळे अशुभ होतुं ज नथी. (अर्थात् व्यापक परमात्मना भक्तोनी दृष्टिए जे कांइ बने छे ते सर्व योग्य ज होय छे). केम के **एवं सर्वशरीरेषु भगवान्भूतभावनः । संस्थितः कुरुते विष्णुरुत्पत्तिस्थितिसंयमान् ॥ ४३ ॥** (विष्णुपुराण-१ लो अंश-अ० ७ मो)=एप्रमाणे सर्व जगतने माटे काळजी राखनार भगवान् व्यापक परमेश्वर सर्व शरीरोमां रहीने सृष्टि स्थिति अने संहार करे छे.

११. **सत्यान्न प्रमदितव्यम् ।** (तैत्तिरीय उपनिषद्-शिक्षा-अनुवाक् ११ मो)=सत्यदृष्टिमां (क्रोधमोहादिकथी) गफलत करवी नहि.

१२. **मनःपूतं समाचरेत् ।**=अंतर्यामीने पूछतां जे पवित्र जणाय ते आचरवुं. केम के **आत्मबुद्धिः सुखायैव गुरुबुद्धिर्विशेषतः ।......॥ ९४ ॥** (**सुभाषितरत्नभाण्डागार-पृष्ठ १६१-सामान्यनीति**)=पोतानी बुद्धिने जे

सूजे ते हितने माटे छे, अने गुरुजनआदिकनी बुद्धि ते तो विशेषे करीने हित करनारी छे. तेथी तेमनी सलाहमुजब अभिप्राय फेरववो पडे तो फेरववो.

१३. बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ (श्री० भ० गीता–अ०२)=माटे हे अर्जुन! तुं कशानी पण इच्छा कर्या विना बुद्धिनो ज आश्रय इच्छ, जेओ फळनी इच्छा राखे छे ते तो कृपण मनुष्यो छे.

१४. जन्माद्यस्य यतः ॥ २ ॥ (ब्रह्मसूत्रम्–अ० १ पा० १)=आ विश्वप्रपंचनो जेमांथी जन्म थाय छे, जेमां स्थिति थाय छे, अने जेमां लय थाय छे–ते ब्रह्म छे.

१५. एकसार्थप्रयातानां सर्वेषां तत्रगामिनाम्। यद्येकस्त्वरितं यातस्तत्र का परिदेवना ॥ (व्यासभगवाननुं वाक्य)=सर्व त्यां ज जवाने निकेळेला एक ज संघमांथी एकाद् माणस वहेलो पहोची गयो तेमां शोक शो करवो?

१६. कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः। जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ ५१ ॥ (श्री० भ० गी०–अ० २)=फळनी इच्छा राख्या विना कर्म करनार बुद्धियुक्त डाह्या पुरुषो जन्मना बंधनथी मुक्त थइने अनामय पदने पामे छे.

२१. घटादिषु प्रलीनेषु घटाकाशादयो यथा। आकाशे सम्प्रलीयन्ते तद्वज्जीव इहात्मनि ॥ ८३ ॥ (श्रीमांडूक्योपनिषद्–गौडपादकारिका प्र० ३) =जेम घट आदिकनो लय थतां घटाकाशआदिक आकाशादिकमां लीन थाय छे, तेम आत्माविषे जीव पण लीन थाय छे.

२३. यः सर्वत्राऽनभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥ (श्री० भ० गी०–अ० २)=जे पुरुष सर्व बाबतोमां आसक्तिविनानो रहे छे, अने जे जे शुभ के अशुभ प्राप्त थाय तेनाथी जे खुशी थतो नथी के नाखुश थतो नथी, तेनी बुद्धि प्रतिष्ठित (स्थिर) होय छे.

२४. व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥ (श्री० भ० गी०–अ० २)=बहु व्यवसायवाळी बुद्धिने जंप के निरांत मळती नथी.

२५. न्याय्यां वृत्तिं समाचरेत् (सुभाषितरत्नभाण्डागार–सुभा० रत्नखण्ड)=न्याय्यवृत्ति आचरवी.

२६. जाड्यांशः प्रकृते रूपं विकारि त्रिगुणं च तत्। चितोभोगापवर्गार्थं प्रकृतिः सा प्रवर्त्तते ॥ ९९ ॥ (पंचदशी प्र० ६)=विश्वमां जे जड अंश छे ते

प्रकृतिनुं रूप छे, ते त्रण गुणवाळुं अने विकारी छे. ते प्रकृति विकार (फेरफार) नी परंपरावडे चैतन्यने विविध भोगो अने मोक्ष आपवाने माटे प्रवर्ते छे.

३८. इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ३)=इन्द्रियोने इन्द्रियोना विषयोमां रागद्वेष तो स्वाभाविकरीत्ये रहेला ज छे, तेमने वश थवुं नहि; केम के ते रागद्वेष ज प्राणिमात्रने मोक्ष अने धर्मना मार्गमां आडे आवी नडतर करनार छे.

४०. अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् । नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूपम् ॥ १६ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ११)=हे विश्वेश्वर ! हे विश्वरूप ! अनेक हाथ, पेट, मुख अने आंख्योवाळा तथा सर्वतरफथी अनंत रूपवाळा आपने हुं देखुं छुं; वळी आपना आदिने, मध्यने अने अंतने हुं देखतो नथी.

४६. तमःप्रधानविक्षेपशक्तिमदज्ञानोपहितचैतन्यादाकाशः । आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापोऽद्भ्यः पृथिवी चोत्पद्यते ॥ (वेदान्तसार ३९)= तमोगुणप्रधान विक्षेपशक्तिवाळा अज्ञानवडे आच्छादित थयेला चैतन्यथी आकाश थयुं. आकाशथी वायु, वायुथी अग्नि, अग्निथी जळ, अने जळथी पृथ्वी उत्पन्न थाय छे. हवे एप्रमाणे उत्पन्न थयेल भूतसमुदाय यस्मिन्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति ए श्रुतिवाक्यप्रमाणे ए ज चैतन्यमां यथाक्रमे लय पण पामे छे. लयक्रम "यजुर्वेद आह्निक"मां नीचे प्रमाणे आपेलो छेः—भुवं जले जलं वह्नौ वह्निं वायौ नभस्यमुम् । विलाप्य खमहंकारे महत्तत्त्वेऽप्यहंकृतम् । महान्तं प्रकृतौ मायामात्मनि प्रविलापयेत् ॥ (भूतशुद्धि–भूतोपसंहार विधि)=पृथ्वीनो जळमां, जळनो अग्निमां, अग्निनो वायुमां, वायुनो आकाशमां, आकाशनो अहंकारमां, अहंकारनो महत्तत्वमां, महत्तत्वनो प्रकृतिमां अने प्रकृतिनो आत्मामां लय करवो. (आ ज प्रमाणे सृष्टिनो लय पण थाय छे,) अने सृष्ट पदार्थ मात्रने आ लयनो क्रम लागु पडे छे. मार्कसे आपेला हिराक्लिटसना क्रम करतां आपणो शास्त्रीय क्रम अधिक सुव्यवस्थित छे.

स्कंध ५ मो.

१. यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः । निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ (श्री० भग० गीता–अ० १८)= जे सुख आरंभमां तेम ज परिणामे आत्माने मोह उपजावनारुं छे, ते तामस छे; जेवुं के निद्रा, आलस्य, अने प्रमादथी उपजेलुं सुख. लोकसंग्रहमेवाऽपि संपश्यन्क-

र्तुमर्हसि ॥ २० ॥ (श्री० भग० गीता–अ० ३)=कांइ नहि तो लोकहित विचारीने पण तारे काम करवुं घटे छे.

४. नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् । कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥ (श्री० भग० गीता–अ० ३)=कोइ पण मनुष्य एक क्षण पण कर्म कर्याविना रही ज शकतो नथी. सर्व कोइने तेनी प्रकृतिथी उपजेला गुणो पराणे काम करावे ज छे.

५. शीलं रक्षतु मेधावी प्राप्तुमिच्छुः सुखत्रयम् । प्रशंसा वित्तलाभं च प्रेत्य स्वर्गे च मोदनम् ॥१२॥ (सुभाषित रत्नभाण्डागार–स्वभाव वर्णनम्)= बुद्धिमान् मनुष्ये जो प्रशंसा, धन अने स्वर्गमां आनंद मेळववानी इच्छा होय तो सुस्वभावनुं रक्षण करवुं. (बीजुं चातुर्य न होय तो चाले).

६. भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः । अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥ ११ ॥ (सुभाषित र० भा० परोपकारप्रशंसा)=फळ आवे छे तारे वृक्षो नमे छे, नवां पाणीथी भरपूर थयेला मेघ पृथ्वीतरफ लचे छे, अने सत्पुरुषो समृद्धिथी विनयनम्र होय छे; परोपकारीओनो आवो स्वभाव ज छे.

७. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० २) तारी योग्यता तो कर्ममां ज छे, कर्मनां फळोमां कदी पण नथी, तेथी तुं कर्मना फळनी कामनाथी प्रवृत्त थइश नहि, तेम ज तुं कर्म त्यजी पण देइश नहि. आप्रमाणे कोइ सकाम प्रार्थनानो तो निषेध कर्यो अने जो कदी करवी तो एवी प्रार्थना करवी के–) सर्वेऽपि सुखिनःसन्तु सर्वे सन्तुनिरामयाः=सर्वे सुखी थाय अने सर्वे निरामय थाय.

८. भोक्तारो हि वयं ब्रह्मन् भोजनं युष्मदादयः । स्वयं नियतिरेषा हि नावयोरेनदीरितम् ॥ २८ ॥ (योग वासिष्ठ–प्र. ४ सर्ग १०) साक्षात्काल पण एम कहे छे के–हे ब्राह्मण ! अमे खानारा छिये अने तमो वगेरे अमारो आहार छो, ए साक्षात् नियति एटले विश्वनियमननो संकेत छे, एमां कांइ अमारुं चालतुं नथी. (जे थाय छे ते विश्वयंत्रने योग्य ज थाय छे.)

१०. अघटितघटनापटीयसी माया=वस्तुमात्रनी जननी माया ते असंभवित जेवी वस्तुओनी घटना करवामां कुशळ छे. किं कर्म किमकर्मेति कवयोप्यत्र मोहिताः...॥ १६ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ४) शुं करवुं अने शुं न करवुं तेमां मोटा कवियो पण मूढ थइ जाय छे.

११. प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये। बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ ३० ॥ (श्री० भ० गीता. अ० १८)= प्रवृत्ति तथा निवृत्ति, कार्य अने अकार्य, भय अने अभय, तथा बंध अने मोक्ष यथार्थ रीत्ये जाणे ते सात्विक बुद्धि छे.

१५. यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्त्वाय कल्पते ॥ १५ ॥ (श्री० भग० गीता-अ० २)=जेने सुखदुःख समान छे अने जेने आ आगमापायी विषयो (संयोगवियोगद्वारा) पीडा करता नथी ते पुरुष ज अमृतत्वने (मोक्षने) पामे छे.

१६. जीवो जीवस्य जीवनम्।=नाना जीवो ते मोटा जीवोना निर्वाहने माटे छे. **तिमिर्नाम महामत्स्यस्तं गलति तिमिंगलः ॥ (रघुवंशनी टीकामां मल्लीनाथे करेलुं अवतरण)**=तिमि नामे एक मोटां मांछलांनी जात थाय छे तेने पण गळी जाय छे एवा तेथी पण मोटा तिमिंगल जातिना मच्छ थाय छे.

१७. यदशक्यं न तच्छक्यं यच्छक्यं शक्यमेव तत् । नोदके शकटं याति न च नौ गच्छति स्थले ॥ ४५० ॥ (सुभाषितरत्नभा० सामान्यनीति)= जे अशक्य ज होय छे ते शक्य थतुं नथी, जे शक्य छे, ते ज शक्य छे; कांइ पाणीमां गाडुं चाले नहि अने जमीनउपर नाव चाले नहि.

१९. यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ ३३ ॥ (श्री० भ० गीता-अ० १३)=आकाश सर्व स्थळे व्यापी रहेलुं छतां सूक्ष्म होवाथी कशाथी लेपातुं नथी, तेम आ आत्मा देहमां रहेलो छतां पण कशाथी लेपातो नथी. (तेने कशुं पण स्पर्श करी शकतुं नथी).

२०. क्षमा शस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति ।······॥ १ ॥ (सुभाषितरत्नभाण्डा० क्षमाप्रशंसा)=जेना हाथमां क्षमा (सहनशीलता) रूपी हथियार छे तेने दुर्जन पण शुं करशे ? **प्रत्यूहः सर्वसिद्धीनामुत्तापः प्रथमः किल । अतिशीतलमप्यम्भः किं भिनत्ति न भूभृतः ? ॥ ५६८ ॥ (सुभा० रत्न० भा०-सामान्यनीतिः)**=अडचण ए तो सर्व सिद्धियोमां पहेलो उकळाट करावे ज छे, पण अतिशीतल एवुं जळ पण पहाडोने शुं नथी भेदी नाखतुं ?

२१ एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म ह्येतदेवाक्षरं परम् एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥ १६ ॥ (कठोपनिषद्-द्वितीया वल्ली)=ए ज अक्षर ब्रह्म छे, ए ज अक्षर परम सत्य छे, ए ज अक्षरने जे जाणे छे तेने जे जोइये ते मळे छे. **अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् ॥ महान्तं विभुमात्मानं**

मत्वा धीरो न शोचति ॥ २१ ॥ (कठो० द्वि० वल्ली)=शरीरमां अशरीर अने अनवस्थ वस्तुओमां सुव्यवस्थित जे रहेलो छे एवा महान् व्यापक आत्माने मानीने धीर पुरुष शोक करतो नथी.

२४. पृथिवी दह्यते यत्र मेरुश्चापि विशीर्यते । सुशोषं सागरजलं शरीरे तत्र का कथा ॥ १५४ ॥ (सुभा० रत्न० भा०–शान्तरसनिर्देश)=ज्यां पृथ्वी बळी जाय छे आखो मेरु पर्वत पण चूर्ण थइ जाय छे, अने सागरनुं जळ पण सहेलाइथी सुकाइ जाय छे, त्यां आ अल्प शरीरनी तो गणती ज शी ?

२६. दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० २)=दुःखमां उद्वेगरहित मनवाळो, अने सुखमां स्पृहाविनानो तथा जेना राग भय अने क्रोध टळी गया छे एवो स्थिरबुद्धि पुरुष मुनि कहेवाय छे.

२७. यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वंद्वातीतो विमत्सरः । समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ २२ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ४)=यदृच्छाथी मळता लाभथी संतुष्ट, टाढताप सुखदुःख वगेरे द्वंद्वोथीरहित, अदेखाइविनानो अने कार्यनी सिद्धि तथा असिद्धिमां समबुद्धिवाळो एवो पुरुष कर्म करवा छतां पण बंधातो नथी.

३०. भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः । बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥ ९६ ॥ ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सु कृतबुद्धयः । कृतबुद्धिषु कर्त्तारः कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः ॥ ९७ ॥ (मनुस्मृति–अ० १) =स्थावर अने जंगम पदार्थोमां प्राणवाळा श्रेष्ठ छे, प्राणीओमां बुद्धिवडे जीवन चलावनार चढियाता छे, बुद्धिवाळां प्राणिओमां मानव श्रेष्ठ छे; अने मानवोमां ब्राह्मणो श्रेष्ठ छे, ब्राह्मणोमां विद्वान् चढियाता छे, विद्वानोमां शास्त्रोक्त कर्म जाणनार श्रेष्ठ छे, शास्त्रोक्त कर्म जाणनारमां तेवां कर्मो करनार श्रेष्ठ छे, अने तेवा कर्मनिष्ठमां ब्रह्मतत्त्वने जाणनार चढियाता छे.

३१. उपकर्तुं प्रियं वक्तुं कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम् । सज्जनानां स्वभावोऽयं केनेन्दुः शिशिरीकृतः ॥ ३८ ॥ (सुभाषित रत्न० भा०–सज्जनप्रशंसा)= उपकार करवानो प्रिय बोलवानो अने अकृत्रिम स्नेह करवानो सज्जनोनो स्वभाव ज होय छे, केम के चंद्र स्वभावथी ज शीतळ होय छे.

३२. बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते । तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥ (श्री० भ० गीता–अध्याय २) निष्काम

अने समबुद्धिमान् मनुष्य सुकृत अने दुष्कृत ए बंनेथी आ लोकमां ज मुक्त थाय छे, माटे तुं एवी बुद्धि प्राप्त करवा जोडा. कर्मोमां कुशळता ए पण योगछे.

स्कंध ६ ठो.

१. समोऽहं सर्वभूतेषु नं मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः । ये भजंति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥ २९ ॥ (श्री० भ० गीता०–अ० ९)= हुं सर्व प्राणीमां समानरूपे रहेलो छुं, मने कोइउपर रागे नथी अने द्वेष पण नथी, परंतु जेओ मने भक्तिथी भजे छे तेओ मारामां अने हुं तेओमां रहेलो छुं.

५. सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च...॥ १५ ॥ (श्री० भ० गीता अ० १५)=अने हुं सर्वना हृदयमां रहेलो छुं, स्मरण ज्ञान अने विस्मरण पण माराथी ज थाय छे....

७. चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः । बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ ५७ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० १८)=तेटलामाटे तुं बहारथी कर्मोनो त्याग न करतां चित्तवडे ज सर्व कर्मो मारामां अर्पण करीने तथा मारे परायण थइने अने निष्काम बुद्धियोगनो आश्रय करीने सदाकाळ मारामां चित्त राखनारो था.

९. मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् । हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ (श्री० भ० गीता–अ० ९)=हे कुन्तीपुत्र ! मारा आधारे प्रकृति ज सचराचरने उपजावे छे, अने ए ज कारणथी आ जगतमां नाना प्रकारना फेरफार थाय छे.

१०. शक्तिरस्त्यैश्वरी काचित्सर्ववस्तुनियामिका । आनन्दमयमारभ्य गूढा सर्वेषु वस्तुषु ॥ ३८ ॥ वस्तुधर्मा नियम्येरञ्शक्त्या नैव यदा तदा । अन्योन्यधर्मसांकर्याद्विप्लवेत जगत्खलु ॥ ३९ ॥ (पंचदशी–प्रकरण ३) सर्व वस्तुओने नियममां राखनारी कोइएक (अनिर्वचनीय एवी ईश्वरनी शक्ति छे ते आनंदमय कोषथी मांडीने ते स्थूळ ब्रह्माण्डोनी सर्व वस्तुओमां गूढ रहेली प्रवर्ते छे. ते शक्तिवडे जो वस्तुओना धर्मने नियममां राखवामां न आवे तो ते धर्मोनी परपस्पर संकरता (मिश्रता) थइ जइने अव्यवस्था थवाथी जगतनो विप्लव थइ जाय.

१२. विश्रान्तिं परमां प्राप्तस्त्वौदासीन्ये यथा तथा ॥ सुखदुःखदशायां च तदानन्दैकतत्परः ॥ २६ ॥ (पंचदशी–प्र० ११)=परम शान्तिने पामेलो पुरुष उदासीन दशामां जेम परमानंदनुं आस्वादन करवामां तात्पर्य-

वान् थाय छे, तेम ज सुखदुःखनी प्राप्तिने समये पण ते सुखदुःखनुं अनुसंधान त्यजी देइने निजानंदना आस्वादनमांज तात्पर्यवान् थाय छे.

१४. आनन्दस्त्रिविधो ब्रह्मानन्दो विद्या सुखं तथा । विषयानन्द इत्यादौ ब्रह्मानन्दो विविच्यते ॥ ११ ॥ (पंचदशी–प्र० ११)=आनंद त्रण प्रकारनो छे, एक तो ब्रह्मानंद बीजो विद्यानंद अने त्रीजो विषयानंद. (ते प्रमाणे मनुष्यो पोतानी प्रकृतिप्रमाणे ज्ञानने, विद्याकळाने अने विषयना पदार्थोने वखाणे छे).

१५. मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः । आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥ (श्री० भ० गीता–अ० २)=शीतळ उष्ण सुखद अने दुःखद वगेरे इन्द्रियोना विषयरूप पदार्थो आववाना अने जवाना स्वभाववाळा अनित्य छे, तेमने हे अर्जुन ! तुं सहन कर.

१७. चलालक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चले जीवनयौवने । चलाचलं जगत्सर्वं धर्म एको हि निश्चलः ॥=लक्ष्मी चल छे, प्राण चल छे, जीवन अने यौवन ए बे पण चल छे, आखुं जगत् चलाचल छे, एकलो धर्म ज निश्चल छे.

१९. बहुरत्ना वसुन्धरा=(जे काम एकथी न थाय ते बीजाथी थइ शके) केम के पृथ्वीमां घणां रत्नो छे. **यत्नेन किं न सिध्येत सुतरां सुधियां पुनः । ······॥ (पंचतंत्र)**=यत्नवडे अने तेमां पण सुबुद्धिमान् पुरुषोनुं शुं सिद्ध न थाय? (मनुष्यथी बनी शके तेवुं होय तो ते कामने माणसे पोताने माटे अशक्य न समजवुं).

२१. युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद्बालादपि विचक्षणः ।······॥ २५ ॥ (सुभाषित र० भा० सामान्यनीति)=युक्तिवडे जे युक्त होय ते बालकपासेथी पण विचक्षण पुरुषे ग्रहण करवुं.

२३. धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः (पंचतंत्र)=जे कर्तव्य जाणता नथी अने करता नथी तेओ पशु समान छे. **ऋषयः पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा । आशासते कुटुम्बिभ्यस्तेभ्यः कार्यं विजानता ॥ ८० ॥ (मनु अध्या० ३)**=ऋषिओ, पितरो, देवो, प्राणिओ अने अतिथियो गृहस्थाश्रमीओनी पासेथी आशा राखे छे. माटे गृहस्थोए तेमने उद्देशीने पोतानां कर्तव्यो करवां. (आ व्यवस्था वधारे पूर्णतावाळी अने उच्च छे.)

२४. मृत्योः सर्वत्र तुल्यता (सुभाषितरत्न खंडः=)मृत्यु सर्वत्र एकसरखुं छे. अर्थात् मृत्युने कोइ नानो मोटो नथी.

२९. न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ॥ अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ (श्री०

भग० गीता–अ० २)=आ आत्मा कदी पण जन्मतो नथी के मरतो पण नथी, तेम ज ते पूर्वे न होतो के भविष्यमां नहि होय एम पण नथी. आत्मा तो अजन्मा, नित्य, शाश्वत अने पुरातन छे, अने शरीर हणावाथी. ते हणतो नथी (तो शरीर ज्यां लगी पाछुं हठे नहि त्यां लगी आत्माए पाछुं हठवुं जोइये ज नहि. जो आत्मा पाछो हठे तो ते शरमभरेलुं छे).

३४. पापं कर्तुमृणं कर्तुं मन्यन्ते मानवाः सुखम् । परिणामोऽतिगहनो महतामपि नाशकृत् ॥ २ ॥ (सुभाषितर० भा०–ऋणनिन्दा)=पाप अने देवुं करवाने मनुष्यो सुख माने छे, पण तेनो परिणाम अत्यंत गहन अने मोटाओनो पण नाश करनार थाय छे.

३६. मृत्पिण्डो जलरेखया वलयितः सर्वोऽप्ययं नन्वणूरंगीकृत्य स एव संयुगशतै राज्ञां गणैर्भुज्यते.........(भर्तृहरि–वैराग्यशतक)=आ पृथ्वी जे एक माटीनो पिंडो छे अने पाणिवडे वींटायेलो छे, ते आखो पण नहि पण तेनो थोडोक भाग ज सैकडो लडाइयोवडे अनेक राजाओ भोगवे छे.......६.

३७ दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः...... ॥ १ ॥ पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनं......॥८॥ पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः । पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुंचत्याशामर्षम् ॥ ९ ॥ (श्रीशंकराचार्यकृत–चर्पटपंजरिका)=दिवस रात्री, सांज सवार शिशिर ऋतु अने वसंत ऋतु फरी फरीने आव्या.....१ फरीने जन्म अने फरीने मरण, फरीने जननीन उदरमां सुवानुं......८ फरीने रात अने फरीने दहाडो, फरीने पखवाडियुं अने फरीने महिनो, फरीने उत्तरायण अने दक्षिणायन, अने फरीने पाछुं वर्ष (ए प्रमाणे बधुं फरी फरीने एनुं ए आवे छे. नवुं कशुंय नथी). तो पण कोइ पण जीव जीववानी आशानो जुस्सो छोडतो नथी. ९.

३८. सृष्टिक्रमो यदयमेकतया चकास्ति=केम के सृष्टिनो क्रम (अथवा व्यवस्था) एकमेकने बंधबेसतो अथवा ऐक्यवाळो जणाय छे.

३९. यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनम् । तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाऽधिकम् ॥ तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः कूपे पश्य पयोनिधावथ घटो गृह्णाति तुल्यं जलम् ॥४९॥ (श्रीभर्तृहरिनीतिशतकम्)=विधाताए जे आपणा भाग्यमां थोडुं अथवा घणुं धन लखेलुं होय छे, ते मारवाडना रणमां पण आपणने मळे छे; अने तेथी वधारे तो सोनाना मेरुपहाडमां जइये तो पण मळतुं नथी. तेटलामाटे तुं

धीर पुरुष था अने पैसावाळाओ आगळ तुं मिथ्या दीनपणुं कर मा, केम के जो, चहाय तो कुवामां फांसो के समुद्रमां बोळो पण घडो तो तेटलुं ज जळ गृहण करशे, वधारे जळ ग्रहण करशे नहि. अर्थात् स्वभाग्य संतुष्ट रहेवुं.

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ १३ ॥ संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मे भक्तः स मे प्रियः ॥ १४ ॥ (श्री० भ० गीता-अ० १२)=जे सर्वे भूतोमां द्वेषविनानो, मित्रातावाळो, अने करुणा धरावनार, ममत्व अने अहंकारविनानो, सुखदुःखमां समतावाळो अने क्षमावान् छे; तथा जे संतोषी, निरंतर योग करनार, इन्द्रियोने वश राखनार, अचळ निश्चयवाळो, अने मारामां मन अने बुद्धिने जोडी राखनार एवो मारो जे भक्त ते मने प्रिय छे.

४० जन्मैव व्यर्थतां नीतं भवभोगप्रलोभिना। काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया ॥ २०५ ॥ (सुभाषितरत्नभाण्डा० शान्तरसनिर्देश-पश्चात्ताप)=संसारना भोगमां लोभायेला में जन्म व्यर्थ गुमाव्यो, में चिन्तामणि जेवो मनुष्य जन्म ते संसारना भोगरूप काचना ककडाने बदले वेच्यो.

४१. इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वंद्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥ २७ ॥ (श्री० भ० गीता-अ० ७)=इच्छा एटले राग अने द्वेषथी उत्पन्न थयेला द्वंद्वविषेना मोहथी, हे अर्जुन! सर्वे प्राणिओ संमोहने पामे छे.

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ। तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥ (श्री० भ० गीता-अ० ३)=इन्द्रियोना विषयमां इन्द्रियने राग अने द्वेष रहेला छे, तेना वशमां आववुं नहि; केम के राग द्वेष ए जीवना कल्याणमां आडे आवनार छे.

४२. यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतंगा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः। तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवाऽपि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥ (श्री० भ० गीता-अ० ११)=जेम नाशनेमाटे घणा वेगवाळां पतंगियां प्रज्वलित अग्निमां प्रवेशे छे, तेम ज घणा वेगवाळा आ लोको नाशने अर्थे तारां मुखमां प्रवेशे छे. अर्थात् सर्वे एक ज दिशामां गति करीने रहेला छे, अने एक ज कार्य जे विश्वसंकेत ते ज सिद्ध करवा प्रवृत्त थयेला छे.

४३. भीषास्माद्वातः पवते ॥ भीषोदेति सूर्यः ॥ भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्च ॥ मृत्युर्धावति पंचम इति ॥ (तैत्तिरीय उप० ब्रह्मानंदवल्ली-८ मो अनु-

वाक्)=आ परमात्म सत्ताना भयथी पवन वाय छे. तेना ज भयथी सूर्य उगे छे. तेना ज भयथी अग्नि अने इन्द्र पोतपोताना अधिकार बजावे छे, अने मृत्यु पण सर्वनो नाश करतुं दोडे छे. (ते परमात्माना ज धाकथी पृथ्वी आदि सर्व पोतपोतानुं काम करे छे).

४४. त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्......॥ ३१ ॥ (सुभाषितरत्न० भा० सामान्यनीतिः)=एकने आखा समुदाय कुलने माटे त्यजवो अने आखा कुलने गामने माटे त्यजवुं.

४८. साधुरेव प्रवीणः स्यात्सद्गुणामृतचर्वणे । नवचूताङ्कुरास्वादकुशलः कोकिलः किल ॥ ५४ ॥ (सुभाषितरत्नभाण्डा० सज्जनप्रशंसा)=सद्गुण रूपी अमृतनो स्वाद लेवामां सज्जन पुरुष ज प्रवीण होय छे, केमके आंबाना ताजा मोहोरनो स्वाद लेवामां कोयल ज कुशळ होय छे.

५० अप्रियस्याऽपि पथ्यस्य परिणामः सुखावहः । वक्ता श्रोता च यत्रास्ति रमन्ते तत्र संपदः ॥ ४८७ ॥ (सुभाषितरत्नभाण्डा० सामान्यनीतिः)=अप्रिय परंतु हितकारक वस्तुनो परिणाम सुख आणनार थाय छे. अप्रिय पण पथ्य कहेनार अने सांभळनार ज्यां होय छे त्यां संपत्ति खीले छे.

५६. वयं येभ्यो जाताश्चिरपरिगता एव खलु ते समं यैः संवृद्धाः-स्मृतिविषयतां तेऽपि गमिताः ॥ इदानीमेते स्म प्रतिदिवसमासन्नपतना-द्गतास्तुल्यावस्थां सिकतिलनदीतीरतरुभिः ॥ ३७ ॥ (श्रीभर्तृहरिवैराग्य-शतकम्)=अमे जेओथी उत्पन्न थया तेओ घणो वखत थयां चाल्या गया; जेओनी साथे अमे उछर्या तेओ पण हवे संभारवा मात्र रह्या छे-अर्थात् तेओ पण आ लोकमांथी गुजरी गया छे. अने हवे अमे पण दिन प्रतिदिन पडवानुं जेमनुं पासे आवतुं जाय छे एवा नदीना रेताळ किनारा उपर उगेलां झाड जेवी दशाए पहोंचेला छिये.

५७. त्रस्यत्यकस्माद्योऽभीक्ष्णं श्रुत्वा दृष्ट्वाऽपि यो जलम् । जलत्रासं तु विद्यात्तं रिष्टं तदपि कीर्तितम् ॥ सुश्रुत-कल्पस्थान-अध्याय ६ ॥ विपरीतेन गृह्णाति रसान्यश्चोपयोजितान् ।.................यो वा रसान्न संवेत्ति गतासुं तं प्रचक्षते ॥ (सुश्रुत-सूत्रस्थान-अध्याय ३०)=हडकायुं कूतरुं जेने करड्युं होय ते अकस्मात् जळने जोईने अथवा जळनो अवाज सांभळीने वारंवार त्रास पामे छे अथवा भडके छे ते दरदीने जळत्रास नामनुं मरणसूचक चिह्न थयेलुं जाणवुं. अर्थात् तेने हडकवा हालेलो समजवो. आवो रोगी बचतो नथी.

२७

जेने आपवामां आवेला रसोनो गुण अवळो ज थाय छे, अथवा खवरावेला पदार्थोना स्वाद जेने उलटा ज मालम पडे छे, अर्थात् जेने मध कडवुं लागे, लींबडो गळ्यो लागे, साकर कडवी लागे, लवण गळ्युं लागे वगेरे वगेरे उलटा स्वाद जणाय–अथवा तो बिलकुल स्वादनी खबर ज पडे नहि, ते मरी गयेलो ज समजवो, ते उगरे नहि.

निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम् । पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शंखमपि पीतम् ॥ ८०१ ॥ (सु० रत्नभाण्डा० प्र० ३–सामान्यनीतिः) = जेओनुं मन पोताना ज दोषवडे आवरण पामेलुं छे तेओने अत्यंत सुंदर वस्तु पण विपरीत जणाय छे तेने चंद्रमाना जेवो सफेत शंख पण पीळो जणाय छे.

५८. प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३३ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० ३) = सर्व भूत मात्र प्रकृति प्रमाणे वर्त्ते छे, तेमने कोई अटकावी शकतुं नथी.

स्कंध ७ मो.

१. धाता यथापूर्वमकल्पयत् ॥ (शुक्लयजुर्वेदीय संध्याना अघमर्षण मंत्रनो एक भाग) = विश्वकर्त्ताए जे पूर्वनी सृष्टिमां हतुं तेवुं ज बधुं रच्युं छे. कांई नवुं नथी. इतिहासनी हमेश पुनरावृत्ति ज थाय छे. (History repeats itself) ए विचारनो पण आमां ज समावेश छे.

३. सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि...॥ ३३ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० ३) = ज्ञानवान पण पोतानी प्रकृतिने अनुरूप ज वर्त्ते छे अर्थात् जे जे कार्यमां माणसो प्रवृत्ति करे छे ते ते कार्यो उपरथी तेओनी प्रकृतिनी किमत अंकाय छे.

४. सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु । हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ॥ (पंचतंत्र) = (जे कांई जोवा जाणवामां आवे) तेमांथी सार उपर लक्ष आपवो अने नकामुं होय ते छोडी देवुं, जेम हंस पाणीमांथी दुध खेंची ले छे तेम लक्ष्य वस्तु समजी लेवी.

५. अपि यत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् । विशेषतोऽसहायेन किन्तु राज्यं महोदयम् ॥ ५५ ॥ (मनुस्मृतिः अ० ७) = जो के सामान्य व्यक्तिने एक कार्य सहेलुं होय तो पण सहायता विना करवुं एक जणने माटे कठण पडे छे, तो मोटा उन्नत राज्यनी व्यवस्था बीजाओनी सहायता विना राजा एकलो चलावी शकतो नथी. (बादशाह मार्कस ओरेलियसे जे विचार आ फकरामां दर्शाव्यो छे, तेने श्रीमनु महाराजाना वचननुं प्रमाण मळे छे.)

९. एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा.......... (**ब्रह्मोपनिषद्**) = एक ज देव सर्व प्राणीओमां गूढ रहलो छे, ते सर्वव्यापी छे अने सर्वनो अंतरात्मा छे.

१३. उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः। अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते ॥ ४० ॥ (सु० र० भा० प्र० २. सज्जनप्रशंसा) = उपकार करनाराओ प्रति साधुता राखवामां साधुता शी ? जे अपकार करनारा होय तेओ प्रति साधुता राखे ते ज सत्पुरुषो वडे साधु कहेवाय छे.

१५. मणिं बध्नातु पादे वा काचं बध्नातु मस्तके। क्रयविक्रयवेलायां काचः काचो मणिर्मणिः ॥ (पंचतंत्रम्) = भले कोई मणिने पगे बांधे अने काचने माथे बांधे पण वेचवाखरीदवानी वेलाए काच ते काच अने मणि ते तो मणि ज ठरवानो.

१८. मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ (श्रीभ० गीता अ० ९) = मारी अध्यक्षतावडे एटले ईक्षणशक्ति वडे आ प्रकृति (कुदरत) चर अचर सघळी वस्तुओने जन्म आपे छे; अने कारणथी जगत्मां फेरफारो पण थाय छे.

१९. तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा। अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥ १३ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० ११) = भगवानना विराट शरीरमां एटले विश्वरूपमां अर्जुने विविध प्राणीपदार्थरूपे विभक्त थयेलुं आखुं जगत् एक ज ठेकाणे स्थित थयेलुं जोयुं. ते ज विश्वरूपना कालस्वरूपना मुखमां बधा भारतना रथिओ अने अतिरथिओ पण पेसता जणाया छे. ते बे बाबतो जोतां आ फकराना भावने पूरेपूरो आधार आपणी गीतानो छे.

२८. आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥ २५ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० ५) = मनने आत्ममां स्थापीने बीजुं कशुं चिन्तववुं नहि. (आत्मामां निवृत्त था).

२९. तस्मान्निदाघतृष्णां त्वं त्यज संकल्पवर्जनात् ॥ ३९ ॥ महोपनिषद् अ० ६ ॥ = तेथी संकल्पने त्यजीने उष्ण तृष्णाने तुं त्यजी दे. (कल्पनाने भूशी नांख).

३०. चित्तैकाग्र्याद्यतो ज्ञानमुक्तं समुपजायते। तत्साधनमतो ध्यानं यथावदुपदिश्यते ॥ (जीवन्मुक्तिविवेकः प्र० ३) = चित्तनी एकाग्रताथी जे कहेवामां आवे छे तेनुं बरोबर ज्ञान थाय छे. ते एकाग्रतानुं साधन ध्यान छे.

४४. अद्य ये महतां मूर्ध्नि ते दिनैर्निपतन्त्यधः । हन्त चित्त ! महत्तायाः कैषा विश्वस्तता तव ॥ (श्रीजनकनरेशवचनम्) ॥ = आजे जेओ मोटा माणसोमां शिरोमणि होय छे, तेओ थोडा ज दिवसमां कीर्ति उपरथी हेठा पडी जाय छे. रे चित्त ! एवी महत्ता उपर तारो आ ते केवो विश्वास ? !

४५. स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ (श्री गीता) = पोतानो धर्म बजावतां मरण थाय ते सारूं. परधर्म ए भयप्रद छे. (पाछा हठवुं नहि).

४६. अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम् । आयू रक्षति मर्माणि चायुरन्नं प्रयच्छति ॥ (श्रीमहाभारत) = अर्जुननी बे प्रतिज्ञाओ छे, ते ए के एक तो दीनता करवी नहि अने पलायन करवुं नहि. केमके मर्मस्थानोनुं रक्षण ते आयुष्य ज करे छे, अने आयुष्य ज आहारने आणी आपे छे.

४७. संसारदीर्घरोगस्य सुविचारो महौषधम् ॥ = संसाररूपी लांबा समयना रोगनुं मोटुं ओसड ते सुविचार ज छे.

५१. सुखमापतितं सेव्यं दुःखमापतितं तथा । चक्रवत्परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ॥ ४५१ ॥ (सुभा० रत्न० प्र० ३. सामान्यनीतिः) = जे आवी पडेलुं सुख होय ते पण भोगवीए ने आवी पडेलुं दुःख पण भोगवी लेवुं. सुख अने दुःख चक्रनी माफक फरताफरती आवे छे.

५५. परदोषान्नैव पश्येत्स्वयं धर्म्यं समाचरेत् ॥ = पराई खोडो जोवी नहि, पोते जे धर्मयुक्त होय ते ज करवुं.

५९. योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः । स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ २४ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० ५) = जेणे पोताना अंतरमां सुख अने आराम प्राप्त करेलां छे, ते ब्रह्मरूप थयेलो योगी ब्रह्ममां ज मळे छे.

६२. जानन्नपि नरो दैवात्प्रकरोति विगर्हितम् । न कर्म गर्हितं लोके कस्यचिद्रोच्यते कृतम् ॥ ३३५ ॥ (सुभा० रत्न० प्र० ३. सामान्यनीतिः ॥) = जाणतां छतां पण माणस दैवयोगे (अनिच्छाए) नठारुं काम करे छे, आ संसारमां पोताने हाथे नठारुं काम थयेलुं कोईने रुचतुं नथी.

६६–६७–६८. योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय । बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते । तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥ कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः । जन्मबन्धविनि-

मुक्ताः पदं गच्छंत्यनामयम् ॥ ५१ ॥ यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति । तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ ५२ ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला । समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० २ ॥)= हे अर्जुन! असंग रहीने कर्त्तव्यकर्म करतो रहे, सिद्धिमां अने असिद्धिमां एकसरखो रहीने काम करे अथवा सहन करी ले ते चित्तवृत्तिना निरोधरूप समता योग कहेवाय छे. ४८ बुद्धि द्वारा मनना निरोधरूप योगथी कर्म ए घणुं उतरता प्रकारनुं छे, माटे आम थाय तो सारुं अने तेम थाय तो खोटुं, एवा फळने माटे वलवलवा करतां बुद्धिमां ज आश्रय ले. ४९ जे बुद्धिथी ज मननो निरोध करे छे तेने सुकृत अने दुष्कृत छुटी जाय छे, तेथी तुं जे करे ते कुशळताथी अर्थात् यथायोग्य रीते करे ते प्रकारे चित्तवृत्तिना निरोधरूप योग करवामां जोडा. ५० बुद्धियोगयुक्त बुद्धिमान् मनुष्यो कर्मथी उत्पन्न थयेल फळनो मोह त्यजीने जन्मबंधनथी मुक्त थईने अविनाशी पदने पामे छे. ५१ ज्यारे तारी बुद्धि मोहरूप कलणनी पेली पार निकळी जशे, त्यारे तुं सांभळवा योग्य अने सांभळेला विषे तृप्ति पामीश. ५२ बीजानुं सांभळीने गुंचायली तारी बुद्धि ज्यारे निश्चल थईने समाधिमां रहेशे त्यारे तुं चित्तवृत्तिना निरोधरूप योगने पामीश. ५३ (त्यारे देहाध्यास त्यजाशे, मनने वशमां रखाशे अने प्रतिबंध तथा विक्षेपथी मुक्त थवाशे.)

७३. **बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥** = तुं बुद्धिनो ज आश्रय ले, अर्थात् जे बुद्धि प्रमाणे सारुं काम कर्युं होय अने तेथी बीजाओने लाभ थयो होय तो ते बस छे तेथी तने मान खाटवानुं फळ थाय छे के नहि ते तारे जोवानुं नथी. केमके जेओ फळनो हेतु धरावनार होय छे ते तो कृपण मनुष्यो छे.

७४. **संतोषस्त्रिषु कर्त्तव्यः स्वदारे भोजने धने । त्रिषु चैव न कर्त्तव्यो दाने तपसि पाठने ॥ ३३७ ॥ (सुभा० रत्न० प्र० ३. सामान्यनीतिः ॥)**= त्रण बाबतमां संतोष करवो–स्त्री परणवामां, भोजनमां, अने धन एकठुं करवामां. पण दान, तप अने भणवाभणाववामां संतोष करवो नहि. (सारां काम करवामां संतोष पामी अटकी पडवुं नहि. सारां कार्यो तो करतां ज रहेवुं).

स्कंध ८ मो.

१. **कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि । अकर्त्तव्यं न कर्त्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ ३१७ ॥ (सुभा० रत्नभाण्डा० प्र० ३)**=मनुष्यने करवा योग्य जे कांई सारुं होय ते ज करवुं, भले ने गळे प्राण आव्या होय तोए शुं?

गळे प्राण आव्या होय तो पण नहि करवा योग्य खोटुं कांई न ज करवुं. आ धोरणने वळगी रहेवुं.

२. **मा तात साहसं कार्षीर्विभवैर्गर्वमागतः । स्वगात्राण्यपि भाराय भवन्ति हि विपर्यये ॥ १३१ ॥ (सु० रत्न० प्र०)** = विभवथी गर्व पामीने हे बापु ! तुं वगर विचार्युं साहस करीश नहि. केम के ज्यारे अवळो परिणाम आवे छे त्यारे आपणां गात्र पण आपणने भारे थई पडे छे, अर्थात् पश्चात्ताप करवो पडे छे.

३. **कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनम् । येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते ॥ (भर्तृहरिः नीतिशतक)** = जेनो कल्पान्ते पण नाश थतो नथी एवुं विद्या नामनुं धन जेमनी पासे छे एवा विद्वानोनी सामे अभिमान करवुं हे राजाओ! छोडी दो तत्वविद् विद्वानोनी साथे कोण स्पर्धा करी शके ?

४. **प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३ ॥ (श्रीभ० गीता अध्या० ३३)**= तमे गमे तेम करो तो पण प्राणीओ तो जे करता हशे ते ज तेमनी प्रकृति प्रमाणे करवाना, तेमना पर दाब राखवाथी शुं थाय ?

६. **पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ (ईशावास्योपनिषद्)॥** = ए पूर्ण छे, आ पूर्ण छे. पूर्णमांथी पूर्ण लेई लेवामां आवे छे, तो पण पूर्णमांथी पूर्ण लीधा छतां बाकी पण पूर्ण ज रहे छे. वस्तुओनुं स्थानान्तर अने रूपान्तर थाय छे. पण कुदरतमां तेम ज तत्त्वमां कांई वधघट थती नथी.

७. **यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः । समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ २२ ॥ (श्रीभ० गीता अध्या० ४)** = दैवेच्छाथी प्राप्त थयेली दरेक वस्तुथी जे संतुष्ट होय छे, द्वन्द्वने ओळंघी गयेलो एटले दृढ तितिक्षावाळो होय छे, मत्सर रहित होय छे, तथा सिद्धि अने असिद्धिने सरखी गणनार होय छे, एवो मनुष्य कर्म करतां छतां पण बंधातो नथी.

८. **सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं सदा भूषणम् ॥ (भर्तृहरिः)** = विद्या कीर्ति, वगेरे न मेळवी शकाय तो चिन्ता नहि पण शील प्राप्त करवुं ए दरेकना हाथमां छे, अने ते शील बीजा बधा गुणोनुं कारणरूप अने परम भूषण छे.

१०. **भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः ॥ (भर्तृहरिः ॥ वै० श०)** = मोजमजा आपणे भोगवता नथी, पण मोजमजा आपणने खाई जाय छे. तेथी मोजमजा सारी नथी तेम ज उपयोगी पण नथी.

११. मा कुरु जनधनयौवनगर्वम् । हरति निमेषात्कालः सर्वम् ॥ मायामयमिदमखिलं हित्वा । ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥ (श्रीशंकराचार्यकृतमोहमुद्गरः) = माणस, धन अने यौवननो गर्व कर मा, केमके ते बंधुय काल एक क्षणमां हरी ले छे. आ बधुं देखाय छे ते मायामय छे, तेने छोडीने ब्रह्मने जाण अने ब्रह्मपदमां प्रवेश कर.

१७. यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ॥ (सुभा० रत्न० प्र० २ श्लो० ८६ कृष्णमिश्रस्य) = यत्न करतां कोई वस्तु सिद्ध न थाय तो तेमां शो दोष? अर्थात् आपणे बनतो प्रयत्न करवो पण कोईने दोष देवो जोईए नहि. कोईनो दोष काढवो ए शा उपयोगनुं छे?

१८. अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत । अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥ (श्रीभ० गीता अध्या० २) = अव्यक्तमांथी प्राणिमात्रनी उत्पत्ति थाय छे. पछी मध्यमां ते व्यक्त होवाथी जणाय छे, अने नाश पामी अव्यक्तमां शमी जाय छे. तेमां शोक शा माटे करवो? विश्वनी बहार कशुंए जतुं नथी.

२२. तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।... ॥१९॥ (श्रीभ० गीता अ० ३ ॥ = तेटला माटे तारी आगळ जे काम करवानुं होय ते आसक्ति राख्या विना बरोबर कर, अर्थात् तेना उपर ध्यान आप.

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् । नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य नवाऽकृतम् ॥ = काले करवानुं काम आज करवुं अने सांजे करवानुं काम सवारे करवुं, केमके मृत्यु ए जोतुं नथी आ काम करी रह्यो छे के आनुं काम अधुरुं छे.

२३. यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ २७ ॥ (श्रीभ० गीता, अध्या० ९) = श्रीभगवाने गीतामां एवी आज्ञा करेली छे के तुं जे कांई करे, खाय पिये, होम करे, दान करे, तप करे ते बधुं हे अर्जुन! मने अर्पण कर.

४२. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥ = पोताने प्रतिकूल पडे तेवी अने बीजाओने प्रतिकूल पडे तेवी प्रवृत्ति करवी नहि.

५०. प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः । अहंकारविमूढात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥ (श्रीभ० गीता, अध्या० ३) = प्रकृतिना गुण वडे सर्व कर्मो कराय छे. अहंकारथी मूढ थयेलो जीव ते एम माने छे के ते कार्योनो हुं करनारो छुं. (तेथी ते विश्वप्रकृतिए करेलां कार्योमां आ अनुकूळ अने आ प्रतिकूळ मानी बबडे छे.)

५३. बन्धुरात्माऽऽत्मनस्तस्य येनात्मैवात्मनाजितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥ ६ ॥ (श्रीभ० गीता, अध्या० ५) = जेणे पोताना आत्माने ज जित्यो छे, ते आत्मानो बंधु तेनो आत्मा छे. जेणे आत्माने जित्यो नथी तेनो आत्मा ज तेना शत्रुनुं काम सारे छे. (तेवाने कपाळे पश्चात्ताप लखेलो छे, ते बीजाने शी प्रसन्नता उपजाववानो हतो ?)

५४. बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते...... ॥ अने **यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधयः ॥ (श्रीगीताजी) ॥** = जे बुद्धियुक्त थाय छे, ते सुकृत अने दुष्कृतना फळाभिसंधानने त्यजी दे छे. ज्यां ज्यां तेनुं मन जाय छे, त्यां त्यां तेने समाधान मळे छे. (तेने बुद्धिशक्ति सर्वत्र प्रसरेली जणाय छे.)

५५. स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते । स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते ॥ २८३ ॥ (सुभा० रत्नभांडा० प्र० ३) = दरेक जीव पोते ज कर्म करे छे, तेनुं फळ पोते ज भोगवे छे; ते पोते ज संसारमां भ्रमे छे, अने ते पोते ज संसारमांथी मुक्त थाय छे. (एकनी दुष्टता बीजा कोईने के आखा विश्वने कांई इजा करती नथी.)

५७. सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥ ११ ॥ (कठोपनिषत्–अ० २ व० ५) = जेम जगचक्षु सूर्य जे बहारना नेत्रदोष वडे लेपातो नथी तेम सर्वभूतना एक ज अंतरात्मा बहारनां लोकदुःख वडे लेपातो नथी.

५८. मृत्योर्बिभेषि किं मूढ भीतं मुञ्चति किं यमः । अजातं नैव गृह्णाति कुरु यत्नमजन्मनि ॥ २३१ ॥ (सुभा० रत्नभाण्डा० प्र० ६) = हे मूढ ! मृत्युथी बिहे छे शुं ? ब्हीनेलाने यम शुं छोडे छे ? जे जन्मेलुं नथी तेने मोत पकडतुं नथी, माटे जेथी जन्म ज थाय नहि एवो यत्न कर.

५९. परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥ = आ शरीर परोपकार माटे छे. (माणस एक बीजाना उपकार माटे ज हयाती धरावे छे.)

स्कन्ध ९ मो.

१७. कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ॥ ८ ॥ (श्रीगीताजी अ० ३) = अक्रियता करतां सक्रियतानो दरज्जो वधारे मोटो छे.

२१. देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा । तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥ (श्रीभ० गीता अध्या० २) = जीवना आ

ज शरीरमां जेम बाल्यावस्था, युवावस्था अने वृद्धावस्था आवे तेम ज तेने बीजा देह पण धारण करवाना होय, तेमां धीर पुरुष मोह पामतो नथी.

२२–२३. अन्तर्मुक्तो बहिर्बद्धो लोके विचर राघव ॥ ए श्रीयोगवासिष्ठनुं वाक्य पण एवो ज आशय धरावे छे. आत्मदृष्टि माटे मुक्त एटले बीजाओना संबंधथी रहित थईने विचारवुं वर्त्तवुं; अने लोकसमुदाय पैकीना आपणे पण एक छीए तेथी बहारना व्यवहारनी अपेक्षाए आपणे एक व्यक्ति तरीके समष्टि साथे बंधायला छीए, तेथी ते व्यवहारमां आपणे बद्ध एटले बंधायला तरीके लोकसंग्रहार्थ वर्त्तवुं.

२५. यद्दृष्टं तन्नष्टम् = जे देखवामां आवे छे, ते अर्थात् नामरूप अने आकार वारंवार बदलई जनारां छे. ते लांबो काळ टकनारां नथी ज पण नाश पामनारां छे.

३८. कर्त्ता कर्मफलं भुङ्क्ते = जे करे ते भोगवे.

४०. दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५५ ॥ (श्रीभ० गीता अ० २) = दुखमां जेनुं मन उद्वेगने पामतुं नथी अने सुख विषे जेने स्पृहा नथी, जेनो राग, भय अने क्रोध जतो रह्यो छे ते स्थितप्रज्ञ मुनि कहेवाय छे (देवो अथवा परमेश्वर पासे मागवी तो एवी दशा मागवी; अने पुरुषार्थ करवो होय तो पण तेवी दशाने माटे करवो.

स्कन्ध १० मो.

१. यद्यद्धितं स्वभक्तस्य हरिः सर्वं करिष्यति ॥ = पोताना भक्तने माटे जेने कांई हितरूप हशे ते ते श्रीहरि करशे.

५. आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च । पंचैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ॥ ४२७ ॥ (सुभा० रत्नभा० प्र० ३)= आयुष्य, काम, धन, विद्या अने मृत्यु ए पांचे तो ज्यारे प्राणी माना गर्भमां होय छे त्यारथी सरजाय छे.

७. पितृभुक्तान्नजाद्वीर्याज्जातोऽन्नेनैव वर्धते । देहः सोऽन्नमयो नात्मा प्राक् चोर्ध्वं तदभावतः ॥ ३ ॥ (पंचदशी प्र० ३) = मातापिताए खाधेला अन्नथी बनेला रजस् अने वीर्यथी उपजेलो अने अन्नथी ज जेनी वृद्धि थाय छे एवो आ अन्नमय देह ते आत्मा नथी. केमके देह पहेलां हतो नहि अने हवे पछी एक वार ते रहेवानो नथी. आ ज प्रमाणे प्राणमय कोश माटे पण समजवुं. मार्कस ओरेलियसनो विचार पंचदशीकार जेटलो व्यवस्थावाळो नथी. आर्य ग्रंथकारनी विचारनी ए चढियाती कक्षा छे.

८. सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ॥......॥ ४८ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० १८) = जे जेनुं स्वाभाविक काम छे ते दोषवाळुं होय तो पण तेणे त्यजवुं नहि. (झाड झाडनुं, मधमांखी मधमाखीनुं, कुतरो कुतरानुं अने मनुष्य मनुष्यनुं काम कर्यां करे.)

९. विवेकिनो विरक्तस्य शमादिगुणशालिनः । मुमुक्षोरेव हि ब्रह्मजिज्ञासायोग्यता मता ॥ १७ ॥ (विवेकचूडामणिः) = नित्य अने अनित्य वस्तुओना विवेकवाळो, मोजशोख अने ठाठ विनानो (सादाईवाळो) विरागवान् शमादि छ संपत्तिवाळो (पोतानी लक्ष्य बाबतपर दृढ रीते लक्ष आपनार, इन्द्रियोने वश राखनार, सुखदुःखमां सहनशील, बहारना पदार्थोपर अवलंबन नहि राखनार अर्थात् उपरामवाळो, शास्त्र अने गुरुनां वचनपर विश्वासवाळो, शुद्ध ब्रह्मतत्वमां बुद्धि स्थापी समाधानमां रहेनारो, अज्ञानथी कल्पायलां अहंकारथी मांडीने देहलगीनां सर्व बंधनोथी छुटवानी इच्छावाळो) ए ज्ञाननो अधिकारी गणाय छे. (एवुं ज्ञान भोगववाने हे जीव! क्यारे तुं शक्तिमान थईश ?)

१०. इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् । इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि । ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥......प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ १३–१४...१६ ॥ (श्रीमद्भ० गीता) = आ में मेळव्युं, बीजुं पण आ हुं मारुं इच्छेलुं मेळवीश, आ मारुं छे अने बीजुं धन पण मारुं थशे; आ शत्रुने में हण्यो, बीजा शत्रुओने पण हुं हणीश; हुं समर्थ छुं, भोगी छुं, सिद्ध छुं, बलवान छुं अने सुखी छुं–ए प्रमाणे कामभोगमां आसक्त थयेला अशुचि नरकमां पडे छे.

१२. तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् । यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥ ४३ ॥ (श्रीभ० गीता–अ० ६) = त्यां तेने पूर्व जन्मनो करेलो बुद्धियोग प्राप्त थाय छे. अने त्यांथी आगळ चालीने ते पोताने लक्ष्ये पहोंचवारूप सिद्धिने माटे हे अर्जुन! प्रयत्न करे छे.

१३. प्रातर्मूत्रपुरीषाभ्यां मध्याह्ने क्षुत्पिपासया । तृप्ताः कामेन बध्यन्ते प्राणिनो निशि निद्रया ॥ १९ ॥ (सुभा० रत्न० भा० प्र० ६) = सवारमां मळमूत्र करीने, मध्याह्ने खाईपीने तृप्त थवामां, तृप्त थया एटले कामना वडे बंधाय छे, अने रात्रे निद्राथी बंधाय छे. धर्म के सदाचरण कांई पण प्राणीओ करता नथी.

१४. सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये ! नारायणि ! नमोस्तुते ॥ (श्रीसप्तशती) = समग्र विश्वनी उत्पत्ति, स्थिति

अने लय करनारी सनातन शक्ति प्रकृति (कुदरत)! त्रणे गुणना आश्रयरूप अने त्रिगुणमय अने पथ्थर वगेरे जड पदार्थमां अने नर वगेरे चेतन पदार्थमां शक्तिरूपे रहेली एवी तने नमस्कार.

१५. कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः॥...॥ २० (**श्रीभगवद्गीता अ० ३**) = (राज्यमां रही) पोतानां कर्तव्य बजाववाथी श्रीजनक महाराजा वगेरे पण (पहाड अने अरण्यमां वसनार) त्यागीओनी पेठे ज ज्ञान अने सिद्धिने पाम्या.

१६. आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः ॥ वेद भणे पण जे ते प्रमाणे आचरे नहि तेने वेद पण पवित्र करता नथी. केवळ सदाचार अने सद्गुणनी वातोथी कांई वळतुं नथी. **शुभस्य शीघ्रम्** ए लोकवायका प्रमाणे तत्काळ सारा थवुं. (सदाचार आचरवो.)

१७. कालः क्रीडति गच्छत्यायुः ॥ (**श्रीशंकराचार्य**)=काल तो क्रीडा करे छे, चक्रनी पेठे फर्यां करे छे, पण आयुष्य छेदी नांखे छे.

२२. मृत्युरप्युत्सवायते ॥ धर्मानुसार जीवन गाळी ज्ञानने पामेला माणसने तो मोत एक उत्सवरूप छे.

२३. इन्द्रस्याशुचिशूकरस्य च सुखे दुःखे च नास्त्यन्तरम् । स्वेच्छाकल्पनया तयोः खलु सुधा विष्ठा च काम्याशनम् ॥ रम्भा चाशुचिशूकरी च परमप्रेमास्पदं मृत्युतः संत्रासोऽपि समः स्वकर्मगतिभिश्चान्योन्यभावः समः ॥ २६० ॥ (सुभा० रत्नभा० प्र० ६) = इन्द्रना अने गंदा भूंडना सुखदुःखमां कांई ज फेर नथी, तेओए मानी लीधेली इच्छा वडे इन्द्रनुं भावतुं भोजन जेम अमृत छे तेम भूंडने भावतुं भोजन विष्टा छे; इन्द्रने जेम परमप्रेमनुं पात्र देवांगना रंभा छे तेम भूंडने परमप्रेमनुं पात्र गंदी भूंडणी छे. बंनेने मृत्युथी सरखो त्रास थाय छे अने कर्मगतियो वडे थती बीजी बाबत पण सरखी ज छे. (मार्कस ओरेलियसे तो आ पृथ्वीपर शहेर अने जंगलमां रहेनाराओनां सुखदुःख सरखां छे एम बताववा प्लेटोनुं वाक्य टांक्युं छे, पण आपणा आर्य तत्वज्ञानीओए तो मृत्युलोकनां सुखदुःख अने स्वर्गनां सुखदुःखविषय सुखदुःख तरीके एक सरखां ज छे एम श्लोकमां बतावी आप्युं छे.)

२४. निखिलं जगदेव नश्वरं पुनरस्मिन्नितरां कलेवरम् । अथ तस्य कृते कियानयं क्रियते हन्त जनैः परिश्रमः ॥ २७ ॥ (सुभा० रत्नभा० प्र० ६)= आखुं जगत ज नाशवान छे तेमां पण आ शरीर तो अत्यंत क्षणभंगुर छे; हवे ते शरीरनी ज खातर केटलो बधो परिश्रम लोको करे छे! आ एक मोटा खेदनी वात छे!

२५–२६. शक्तिरस्त्यैश्वरी काचित्सर्ववस्तुनियामिका । आनन्दमयमारभ्य गूढा सर्वेषु वस्तुषु ॥ ३८ ॥ वस्तुधर्मा नियम्येरञ्छक्त्या नैव यदा तदा । अन्योन्यधर्मसांकर्याद्विप्लवेत जगत्खलु ॥ ३९ ॥ (पंचदशी प्र० ३)= सर्व वस्तुओने नियममां राखनार एवी कोई एक शक्ति ईश्वरनी छे के जे आनंद-मय कोषथी मांडीने सर्व वस्तुओमां गूढ रहेली छे. ३८. ते शक्ति वडे जो वस्तुधर्मोने नियममां न राखवामां आवे, तो एक बीजाना धर्मोनी संकरता (खीचडी) थईने खरेखर आ जगत्‌नो विप्लव थई जाय.

२७. धाता यथापूर्वमकल्पयत्॥ (शु. यजु. सन्ध्याप्रयोग)=सृष्टि रचनार ब्रह्माए जेवुं पूर्वे हतुं तेवुं ज बधुं बनाव्युं (इतिहास पुनः पुनः पूर्वना बनावोथी भरेलो छे ए भावनो आमां समावेश थाय छे.)

२८. एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः । अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ १६ ॥ (श्रीगीता अ० ३)=ए प्रमाणे चलावेलुं (काम करवुं ज जोईए एवो चक्रने जे अनुसरतो नथी ते पापी जीवनवाळो अने इन्द्रियोमां आसक्त थयेलो माणस नकामो ज जीवे छे.

३२. मुहूर्तमपि जीवेत नरः शुक्लेन कर्मणा । न कल्पमपि कृष्णेन लोकद्वयविरोधिना ॥ २७६ ॥ (सुभा० रत्न० प्र० ३) = शुभ कर्म करीने एक मुहूर्त जेटलो थोडो समय जीववुं ए सारुं छे पण काळुं कर्म करीने कल्प लगी जीववुं ए खोटुं छे. केमके काळुं कर्म करवाथी आ लोक अने परलोक बंने वगडे छे.

३७. प्रत्याख्याने च दाने च सुखदुःखे प्रियाऽप्रिये । आत्मौपम्येन पुरुषः प्रमाणमधिगच्छति ॥ ४३७ ॥ (सुभा० रत्न० प्र० ३) = सामाने जवाब देवामां, दानमां, सुखदुःखमां, अने प्रिय तथा अप्रियमां, माणसे पोताने केवुं लागे छे तेनो विचार करवो, एटले तेने प्रमाणभूत जे खरेखरुं हशे ते ज समजाशे.

३८. ननु देहमुपक्रम्य निद्रानन्दान्तवस्तुषु । मा भूदात्मत्वमन्यस्तु न कश्चिदनुभूयते ॥ ११ ॥ (पंचदशी प्र० ३) आ स्थूळ देहरूप अन्नमय कोषथी मांडीने छेक आनन्दमय कोष लगीनी सघळी वस्तुओमांथी कोई पण आत्मा नथी, अर्थात् शरीर वगेरे दृश्यने आत्मा समजवानी भूल न करवी, ते वस्तुओ पैकीनी कोईने आत्मामां गणवी नहि.

स्कन्ध ११ मो.

१. स्वयमेव स्वयं हंसः स्वयमेव स्वयं स्थितः । स्वयमेव स्वयं पश्येत्स्वात्मराज्ये सुखं वसेत् ॥ ३१ ॥ (तेजोबिन्दूपनिषद्)= बुद्धियुक्त जीवात्मा पोते

पोतानुं हंसनी पेठे नीरक्षीरविवेकपूर्वक पृथक्करण करे छे, पोते चहाय तेवी स्थितिमां स्थित थाय छे, अर्थात् पोते चहाय तेवो पोते पोताने बनावे छे, पोते पोताने जुवे छे, अने पोताना राज्यमां पोते सुखपूर्वक रहे छे. वळी **स्थाली-पुलाकन्याये** एटले चोखा रांधवा एक तपेलीमां मूक्या होय, ते चढ्या छे के नहि ते जणवाने ते चोखामांथी एक दाणो लेई दबावी जोवामां आवे छे, ते प्रमाणे ते आत्माए एकसरखापणाने लीधे जे थयुं छे अने जे थवानुं छे ते सघळुं जोई लीधुं होय छे.

२. नृत्य, गान अने मल्लकुस्ती वगेरे गम्मतोनुं पृथक्करण करवामां आवे तो तो तेमना पृथक् करायला भागोमां कशुं मोहक होतुं नथी. जे कांई आकर्षक छे ते तो ते सर्व भागोना संमेलनमां ज छे. आ ज सिद्धान्तने आगळ वधीने स्पष्ट करनार एक दाखलो आपणा संस्कृत साहित्यमांथी जुओः—**त्वङ्मांसरुधिरस्नायुमेदोमज्जास्थिसंहतौ विण्मूत्रपूये रमतां कृमीणां कियदन्तरम् ॥ १२२ ॥ (सुभा० रत्न० प्र० ६, शान्तरसनिर्देश ॥)**= चामडी, मांस, लोही, स्नायु, मेद, मज्जा अने हाडकांना जोडाणमां विष्टा, मूत्र अने परुमां रमनाराओमां अने कीडाओमां शो तफावत छे? स्त्रीपुरुषादिक शरीरो जे उपरथी जोतां मनोहर जणाय छे तेनुं पृथक्करण करतां केवां सुग उपजावे एवां गंदां जणाय छे?

६. **न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥ (श्री० भ० गीता, अ० ५)**=जगदीश्वर आ लोकोनां कर्तृत्वने अने कर्मोने सृजतो नथी; तेम ज कर्मना अने फळना संयोगने पण सृजतो नथी. पण स्वभाव (कुदरत) तो प्रवर्त्ते छे.

८. **भिन्ने चित्ते कुतः प्रीतिः स्याद्वा प्रीतिः कुतः सुखम् ॥ (पंचतंत्रम्)**= जो मन जूदां थयां तो पछी प्रीति क्यांथी? कदी प्रीति होय तो पण तूटेलां मनथी सुख क्यांथी?

सौवर्णानि सरोजानि निर्मातुं सन्ति शिल्पिनः । तत्र सौरभनिर्माणे चतुरश्चतुराननः ॥ १५४ ॥ (सु० र० भा० प्र० ३, सामान्यनीतिः) = सुवर्णनां कमळ बनाववाने माटे कळाकुशळ पुरुषो जगतमां छे, पण तेमां सुगंधने निर्माण करवामां कुशळ तो एकला ब्रह्माजी ज छे. (कुदरतनुं काम कुदरतथी ज थाय छे, कळाथी नहि.)

१२. **यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ (श्री० भ० गीता, अ० २ ॥)**=जेम काचबो चारे तरफथी पोतानां अंगोने पोतानी ढालमां खेंची ले छे तेम आ आत्मा

विषयोमांथी पोतानी इन्द्रियोने खेंची ले छे, त्यारे तेनी बुद्धि स्थिर थयेली होय छे. (आ स्थितिमां आत्मा तो अखंड मंडलाकार बन्यो रहे छे.)

१५. **मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्कार्ये चान्यद्दुरात्मनाम् । मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ॥ ५० ॥ (सु० र० भा० प्र० २ दुर्जननिन्दा०)** = दुरात्माओना मनमां कांई, वचनमां बीजुं कांई, अने वर्तवामां त्रीजुं ज कांई होय छे; पण महात्माओनां मन, वाणी अने कर्ममां एक ज वात होय छे. दुरात्माओ डोळ करीने छेतरे छे, महात्माओ तेम करता नथी.

१८. **क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणाम् । देहस्थितो देहविनाशनाय ॥ यथा स्थितः काष्ठगतो हि वह्निः । स एव वह्निर्दहते शरीरम् ॥ ८८० ॥ (सु० र० भा० प्र० ३ सामान्यनीतिः)** = क्रोध ए ज मनुष्यनो पहेलो शत्रु छे, ते देहनो विनाश करवाने माटे काष्ठमां रहेला अग्निनी माफक देहमां ज रहेलो छे ते ज अग्नि शरीरने बाळे छे. केम के **अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः** ॥ ए श्रीगीताजीना वचन प्रमाणे–अज्ञान वडे ज्ञान ढंकाई जाय छे, तेथी खोटुं करनार प्रत्ये पण क्रोध करवो नहि.

१९. **दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च । अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥ ४ ॥ (श्री० भ० गीता, अ० १६)** = दंभ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोरता, अने अज्ञान ए आसुरी संपत्तिवाळाने होय छे. (ए आसुरी संपत्तिथी चार प्रकारना भ्रंश थाय छे. तेनुं कथन आ अंक १९ मा करेलुं छे.)

२१. **सर्वथा स्वहितमाचरणीयम् । किं करिष्यति जनो बहुजल्पः ? विद्यते नहि स कश्चिदुपायः । सर्वलोकपरितोषकरो यः ॥ ८०७ ॥ (सु० र० भा० प्र० ३ सामान्यनीतिः ॥)** = हमेशां मनुष्ये पोतानुं प्रिय नहि पण हित करवुं, लोक बहु बोले तेथी शुं ? जेथी बधायने संतोष थाय एवो तो कोई उपाय नथी. तेथी **लोकसंग्रहमेवाऽपि संपश्यन्कर्तुमर्हसि** ॥ ए गीतावचन प्रमाणे लोकसंग्रहार्थ जनसमाजना हितनी प्रवृत्ति करवी.

२२. **पानीयं वा निरायासं स्वाद्वन्नं वा भयोत्तरम् । विचार्य खलु पश्यामि तत्सुखं यत्र निर्वृतिः ॥ ४५६ ॥ (सु० र० भा० प्र० ३ सामान्यनीतिः ॥)** = कांई पण जेमां आयास न पडे तेवुं पाणी मात्र एक तरफ होय, अने जेमां पाछळथी भय होय एवुं मिष्टान्न भोजन बीजी तरफ होय, तो ते बेमांथी शुं पसंद करवुं तेनो विचार करीने जोउं छुं तो ए ज निर्णय खरो छे के जेमां निर्वृत्ति होय ते ज सुखरूप छे. (गामडीआ अने शहेरी उंदरनी वातनो आ सार छे.)

२६. **पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः। पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥ (आचारमयूखः॥)**=श्री नळराजा, श्री युधिष्टिर राजा, श्री जानकीजी अने श्री विष्णुभगवान् ए पुण्यश्लोक छे, तेमने सवारना पहोरमां मनुष्योए याद करवां. ते ज प्रमाणे बीजी प्रातःस्मरणीय व्यक्तियो पण ए ग्रंथमां दर्शावेली छे. तेम ज प्रत्येक प्रसंगे अने कार्यारंभमां स्मरण करवा योग्य व्यक्तियो पण ए आचारमयूखमां जणावेली छे.

२७. पृथ्वी, जल, तेज, वायु अने आकाश तत्वनी धारणाओ आपणा योगग्रन्थोमां आपी छे.

स्कन्ध १२ मो.

१. **एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति। स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥ ७२॥ (श्री० भ० गीता, अ० २॥)** = ए ब्राह्मी स्थिति छे, हे अर्जुन! ए स्थिति प्राप्त कर्या पछी मोह प्राप्त थतो नथी. अंतकाल पण ए स्थितिमां रहेवाथी ब्रह्मस्वरूपमां ज आत्मा शमी जाय छे, मुक्त थाय छे. मार्कसे कहेली स्थिति करतां कांइक अधिक उच्च स्थिति गीतामां उद्देशेली छे.

२. **सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः। मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च...॥१५॥ ......एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत॥ २०॥ (श्री० भ० गीता, अ० १५॥)**= सर्वनां हृदयमां हुं संपूर्ण रीत्ये वसी रहेलो छुं, माराथी ज स्मृति, ज्ञान अने विस्मृति उपजे छे......आ जाणीने मनुष्य बुद्धिमान् थाय छे, अने कृतकृत्य थाय छे, अर्थात् तेने कांई करवानुं रहेतुं नथी. (ते बधी कडाकूटमांथी मुक्त थाय छे, अने तेने कशी माथाकूट नथी.)

३. **देहादभ्यन्तरः प्राणः प्राणादभ्यन्तरं मनः। ततः कर्त्ता ततो भोक्ता गुहा सेयं परंपरा॥ २॥ (पंचदशी प्र० ३॥)**= देह ते अन्नमय कोश, तेनी अंदर प्राणमय कोश, प्राणमयनी अंदर मनोमय कोश, मनोमयनी अंदर विज्ञानमय कोश अने विज्ञानमय कोशनी अंदर आनंदमय कोश. (आमां विज्ञानमय अने आनंदमय कोशमां आत्माना स्वरूपनी अधिक अंशे प्रतीति छे.)

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ ए श्लोक श्री गीताजीना मंगलाचरणमां छे. तेनो अर्थ एवो छे केः—जे अखंडमंडलाकार चराचर विश्वने भरी पूरीने रहेल छे ते ब्रह्मपद जेमणे बताव्युं ते श्रीसद्गुरुने नमस्कार.

६. **समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वाऽपि न निबध्यते ॥ २२ ॥ (श्री० भ० गीता, अ० ४ ॥) योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ अ० २ ॥)**= सिद्धिमां अने असिद्धिमां जेनुं मन एकसरखुं रहे छे, ते कर्म करवा छतां पण बंधनमां आवतो नथी.

२८. **को देवो यो मनो वेत्ति । मनो मे ज्ञायते मया......॥** = देव कोण ? के जे मनने जाणे छे ते. हुं मारा मनने जाणुं छुं.

३०. **सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम् ॥ २० ॥ (श्री० भ० गीता, अ० १८ ॥)**= जेथी सर्व भूतोमां विभक्त छतां एक अविभक्त अविनाशी भाव जोवामां आवे छे, ते सात्विक जाणवुं.

३२. **येषां निमेषोन्मेषाभ्यां जगतां प्रलयोदयौ । तादृशाः पुरुषा याता मादृशां गणनैव का ॥ १४६ ॥ (सु० र० भा० प्र० ६, शान्तरसनिर्देश ॥)** जेमना नेत्रना पलकारामां आखा जगतना, जगतनी उत्पत्ति अने संहार थतां, तेवा पुरुषो पण चाल्या गया, तो मारा जेवानी शी ज गणतरी ?

३६. **कर्मण्येवाधिकारस्ते ॥ (गीताजी ॥)**=तारो अधिकार तो फक्त काम करवानो छे. छेवट लगी काम पूरूं कराववुं के वचमांथी तने काम करतां अटकाववो ते पण तारा अधिकारमां नथी. "प्रभुने गमे तेम ते करे.—" ए उक्ति सत्य छे.

☞ संस्कृत भाषाना ग्रन्थमां हरकोई इतर भाषाना साहित्यभंडारमांना शिष्ट विचारना समान भावनां वचनो मळी आव्या विना रहे तेम नथी. आ परिशिष्टमां प्रकारान्तरे अथवा फलित रूपे आवेला विचारोना समान भाववाळां वाक्यो फरीफरीने आप्यां नथी. तो पण संस्कृत वाङ्मयनी समृद्धतानी कांईक झांखी आथी थया विना रहेशे नहि.

प्रकाशक.

श्री फार्बस गुजराती सभानां साहित्यकार्यो.

प्रसिद्ध—

(१) रासमाळा—१–२ (भाषान्तर) दि. ब. रणछोडभाई उदयराम दवे. आवृत्ति १ ली [illegible] सचित्र; मळवानुं ठेकाणुंः—मेसर्स एन. एम त्रिपाठीनी कुं. प्रीन्सेसस्ट्रीट मुंबई.

(२) फार्बस जीवनचरित—रा. रा. मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठी.

(३) मॅटर लींकना केटलाक निबंधो—(भाषान्तर). स. रा. धनसुखलाल कृष्णलाल महेता.

(४) वैष्णव धर्मनो संक्षिप्त इतिहास—शास्त्री दुर्गाशंकर केवळराम.

(५) मार्कस ओरेलियस एन्टोनिनसना सुविचारो—ईडरना महाराजश्री सर केसरीसिंहजी.

(६) शैव मतनो संक्षिप्त इतिहास, गुजरातमां तन्मूलक संप्रदायो अने सिद्धान्तो—रा. रा. दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री.

मुद्रालयमां—

(१) रासमाळा—१–२ (भाषान्तर) सचित्र—त्रीजी आवृत्ति—दि. ब. रणछोडभाई उदयराम दवे.

(२) देह, जीव ने आत्मानी वैज्ञानिक मीमांसा (भाषान्तर)—रा. रा. प्रेमशंकर नारणजी दवे.

(३) श्री फार्बस गुजराती सभानां हस्तलिखित पुस्तकोनी सविस्तर नामावलि—भाग १ लो—रा. रा. अंबालाल बुलाखीराम जानी, बी. ए.

(४) काठीयावाडनुं कंठस्थ साहित्य—(प्राचीन संग्रह) रा. रा. हरगोविन्द प्रेमशंकर महुवाकर.

तैयार थतां—

(१) लोर्ड मोरलीकृत कोम्प्रोमाईझ—(भाषान्तर) रा. रा. महादेव हरिभाई देसाई, बी. ए. एलएल. बी.

(२) बौद्ध अने जैन मतना संक्षिप्त इतिहासादि (नवो निबंध)—रा. रा. मोहनलाल दलीचंद देसाई, बी. ए. एलएल. बी.

(३) केशवकृत भागवत दशमस्कंध (प्राचीन)—रा. रा अंबालाल बुलाखीराम जानी, बी. ए.

(४) रा. रा. नरसिंहराव भोळानाथ दिवेटीआनां "फाइलोलोजीकल लेकचर्स"—गुजराती भाषा अने साहित्यनां भाषणोनुं भाषान्तर—रा. रा. रामप्रसाद प्रेमशंकर बक्षी, बी. ए.

(५) रुस्तम बहादूरनो पवाडो—(प्राचीन)—रा. रा. अंबालाल बुलाखीराम जानी, बी. ए.